अग्नि शिखा

VOl. 19 1989 No. 6,11-12 Vol. 20 No. 1-5

G.K.V. Lib.
Hardwar

ya Samaj Foundation C

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

67983

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Stock Verification-2[illegible]

Stock Verification-2[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

36
Complete

अखिल भारतीय पत्रिका

21C
079503
पुस्तकालय
Vol. 14
1989
No. 6, 11, 12
Vol. 22
No. 1-5
079503

अग्निशिखा

जनवरी १९८९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

मानवजाति के भविष्य के विकल्प		१
'संपादकीय' : उपहार	अनुबेन	२
दैवनन्दिनी		३
नयी चेतना के लिये नयी शिक्षा		६
शरीर की पूर्णता		१३
प्राण की शिक्षा		२१
इतरा का पुत्र		३४
सोसायटी समाचार		३६
स्फुट वचन		३७

चंदा मासिक रु. १० वार्षिक रु. २२५

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

मानवजाति के भविष्य के विकल्प

क्या हमारी सत्ता का सत्य प्रकृति में शरीरधारी आत्मा नहीं है जो अपने-आपको जानने का, अपने-आपको पाने का प्रयास कर रही है ताकि चेतना को विस्तृत किया जाय, अस्तित्व के अधिक महान् मार्ग को अपनाया जाय, सत्ता में प्रगति की जाय, आत्म-ज्ञान के प्रकाश और आन्तरिक पूर्णता में विकास किया जाय ? क्या धर्म, दर्शन, विज्ञान, चिन्तन, कला, समाज, यहां तक कि समस्त जीवन इस विकास के साधन नहीं हैं ? उसकी सेवा में उपयुक्त होनेवाले आत्मा के यन्त्र नहीं हैं और उनकी चरम तल्लीनता का या इस आध्यात्मिक लक्ष्य का मुख्य अंग नहीं हैं ? यही है जीवन और सत्ता की परिकल्पना। इसी ज्ञान के पक्ष में भारत भूतकाल में खड़ा था और आज भी उसके अन्दर जो भी अति-आग्रही और शक्तिशाली है उस सब के साथ इसीके लिये खड़े रहने की कोशिश कर रहा है। यह एक ऐसी आध्यात्मिक भावापन्न संस्कृति का सूत्र है जो पूर्णता द्वारा और मन, प्राण और शरीर के अतिक्रमण द्वारा आत्मा की उच्च संस्कृति की ओर संघर्ष करती हुई बढ़ती है।

मानव जाति के भविष्य की आशा तर्क और बुद्धिप्रधान यन्त्रीकरण में है या आध्यात्मिक, अन्तःप्रेरित और धार्मिक संस्कृति में है—यही महत्त्वपूर्ण प्रश्न है।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय :

उपहार

नव वर्ष ! गुलाबी, हंसता, आशा-उमंगों से भरा एक बालक-सा, हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। हम उसका स्वागत कैसे करें ? उसे दुलार कर ? वह हमारे लिये जो उपहार लाया है, उसको ग्रहण करने के लिये तत्पर रह कर, हम उसका स्वागत करेंगे।

प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह वर्ष विभिन्न उपहार लाएगा और हर नागरिक अपने-आपको उसके लिये अपने ढंग से तैयार करेगा।

जिस उपहार के लिये हमें चिन्तन करना होगा वह है नव वर्ष के उसी उपहार की पुनरावृत्ति जिसे वह बार-बार हमारे सामने, हमारे राष्ट्र भारत के सामने ला कर खड़ा करता है। बार-बार ठुकराया हुआ वह उपहार है भारत के उज्ज्वल भविष्य का आश्वासन।

इस भविष्य की झांकी हमें वैदिक काल से मिलती आ रही है। हमारे ऋषि, मुनियों ने कई रूपों में घोषणा की है कि यही वह राष्ट्र है जहां संसार के सारे प्राणी अपने-अपने चरित्र और अपने "स्व" को पहचानने के लिये आयेंगे। इसी घोषणा का स्पष्टीकरण आधुनिक समय में श्रीअरविन्द ने यह कह कर किया है कि भारत को भगवान् ने इस युग में संसार का नेतृत्व करने का कार्य सौंपा है और वह कार्य है संसार को अपनी गहनतम आत्मा से परिचित कराना, जिस अदृश्य जगत्, हमारे आन्तरिक जगत् का अन्वेषण हमारे पूर्वजों ने किया है, उससे संसार को परिचित कराना। संक्षेप में संसार को आध्यात्मिकता की ओर मोड़ना भारत का महत् कार्य है किन्तु अंग्रेजी में कहावत है charity begins at home मतलब जो तुम दूसरों से करवाना चाहो, उसे पहले स्वयं करो—जो बोले सो कुंडा खोले।

हम अपने अन्दर झांक कर देखें। क्या हमारा चरित्र आध्यात्मिक है ? फिर भी भारतीय होने के नाते यह हमारा कर्तव्य बन जाता है कि हम भगवान् की इच्छा को पूरा करने में पूरा सहयोग दें। यह हमारा सौभाग्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा यदि हम इस महान् कार्य को शीघ्र पूर्ण करने में सहायक बन सकें।

आज से हमें हर क्षण यह याद रखना है कि हम भारत जैसे महान् राष्ट्र के सुयोग्य नागरिक बन पायें।

भगवान् की इस इच्छा के आगे हमारे आज के स्खलन, घूसखोरी, धूर्तता आदि न टिक पायेंगे। हम रोज भगवान् से यही प्रार्थना करें कि वे हमें भारत के नागरिक, सच्चे नागरिक बनने की क्षमता प्रदान करें।

—अनुबेन

दैनन्दिनी

जनवरी

१. हम तेरे सम्मुख खड़े हैं ताकि तेरी इच्छा हमारे अन्दर परिपूर्ण हो, प्रत्येक तत्त्व में, हमारी सत्ता की प्रत्येक क्रिया में, चरम ऊंचाइयों से लेकर शरीर के कोषाणुओं तक तेरी इच्छा पूर्ण हो।

२. हमें अपनी विजय में सक्रिय, तीव्र और अविचलित श्रद्धा प्रदान कर।

३. मैं तुझमें डुबकी लगाती हूं और बालक के विश्वास के साथ अपने-आपको खो देती हूं, और तुझसे उस प्रेरणा और बल की प्रतीक्षा करती हूं जो मेरे अन्दर और मेरे चारों ओर की भूलों को ठीक करने के लिये आवश्यक है।

४. वर दे कि तेरा प्रकाश मेरे अन्दर उस अग्नि की तरह हो जो सब चीजों को अनुप्राणित करता है।

५. वर दे कि तेरा दिव्य प्रेम मुझमें प्रवेश करे।

६. मैं अपनी सारी सत्ता के साथ अभीप्सा करता हूं कि मेरे मन, हृदय और शरीर पर तेरा शासन सम्राट् और स्वामी के रूप में हो।

७. मेरा मन, हृदय और शरीर तेरे आज्ञाकारी यन्त्र और विश्वास-पात्र सेवक हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. मेरे समस्त विचार तेरी ओर जायं, मेरे सारे कार्य तुझे अर्पित हों।
९. तेरी सर्वशक्तिमत्ता में प्रशान्त विश्वास कितना आश्वासन देनेवाली निश्चिति है !
१०. तू ही सब कुछ है, सर्वत्र है और सब में विद्यमान है और यह शरीर जो चलता-फिरता है वह तेरा ही शरीर है।
११. मुझे हर क्षण कृतज्ञता प्रकट करते हुए तेरे आगे कैसा स्तुति गान करना चाहिये ! तू सर्वत्र और सब जगह मेरे चारों ओर स्वयं को प्रकट कर रहा है . . .
१२. तू ही अनुभूति को फलप्रद बनाता है, तू जीवन को प्रगतिशील बनाता है, तू ही दिव्य प्रकाश के आगे अन्धकार को अदृश्य कर देता है।
१३. जो होने की मुझे आवश्यकता है तू मुझे वही बना देगा।
१४. अब भय नहीं, बेचैनी नहीं, वेदना नहीं, पूर्ण प्रशान्ति, दृढ़ विश्वास, चरम अविचलित शान्ति के सिवा कुछ नहीं।
१५. तेरी इच्छा के सिवा और कुछ भी नहीं . . .
१६. समस्त समस्याओं का सामना पूर्ण समता से करो तो शाश्वत वहां उपस्थित होंगे . . .
१७. कोई उतावली नहीं, कोई अशान्ति नहीं, कोई तनाव नहीं केवल तुझे छोड़ कर कुछ भी नहीं।
१८. नीरवता में जलती शिखा की तरह, बिना हिले-डुले सीधी ऊपर उठती सुगन्ध की तरह, मेरा प्रेम तेरी ओर जा रहा है।
१९. तेरी शान्ति मेरे अन्दर विद्यमान है और उस शान्ति में मैं सर्वत्र केवल तुझे ही शाश्वत की निश्चल नीरवता के साथ उपस्थित देखता हूं।
२०. प्रत्येक वस्तु में, प्रत्येक सत्ता में, तू ही कर्त्ता है और जो बिना अपवाद के तुझे सब कार्यों में देखने लायक तेरे निकट होगा, वही जानेगा कि कैसे प्रत्येक कार्य को आशीर्वाद में बदला जा सकता है।
२१. कर्ता तू है, मैं तेरा यन्त्र हूं।
२२. सुन, हे पृथ्वी, ऊपर उठती हुई आवाज को सुन और नया साहस बटोर !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३. जो लोग तुझे उत्कंठा से ढूंढते हैं उन्हें समझना चाहिये कि जहां कहीं तेरी आवश्यकता होगी, वहां तू उपस्थित रहेगा ही।

२४. वर दे कि तेरी महिमा प्रमाणित हो और जीवन पवित्र हो उठे; वह मनुष्यों के हृदयों को रूपान्तरित करे और तेरी शान्ति पृथ्वी पर शासन करे।

२५. तेरी इच्छा के बारे में सचेतन होकर और अपनी इच्छा का तेरी इच्छा के साथ तादात्म्य साध कर ही सच्ची स्वाधीनता और सर्व-शक्तिमत्ता का रहस्य पाया जा सकता है।

२६. तेरे साथ हमेशा और पूर्ण रूप से एक होकर ही हमें यह निश्चिति प्राप्त हो सकती है कि चाहे बाहर की हो या भीतर की, हम प्रत्येक बाधा को पार करेंगे, प्रत्येक कठिनाई पर विजयी होंगे।

२७. हे प्रभु, तू मेरा आशय और आशीर्वाद है, मेरी शक्ति, मेरा स्वास्थ्य, मेरी आशा और मेरा साहस तू ही है।

२८. मेरी सारी सत्ता तेरे सामने असीम कृतज्ञता में और अनवरत पूजा में साष्टांग प्रणाम में पड़ी है।

२९. प्रभु, वर दे कि मैं उस अग्नि की न्याईं होऊं जो प्रकाशित करे, उस फव्वारे की तरह होऊं जो प्यास बुझाये, उस वृक्ष की तरह होऊं जो आश्रय देता हो और रक्षा करता हो।

३०. तेरे अंदर मेरा विश्वास दिन-पर-दिन अधिक गहरा होता जा रहा है . . .

३१. दिन-पर-दिन मैं तेरे प्रेम को अपने हृदय में अधिक तीव्रता से, तेरे प्रकाश को अधिक उज्ज्वल और फिर भी अधिक मधुर रूप में अनुभव करता हूं।

*

भगवान्, जगद्गुरु, तेरे मन से कहीं अधिक ज्ञानी हैं; बस, उन्हीं पर विश्वास रख, न कि उस चिर-स्वार्थपरायण, उद्धत संदेहवादी पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी चेतना के लिये नयी शिक्षा

इस क्षण जो चीज सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है वह है चेतना का परिवर्तन।

—माताजी

श्रीअरविन्द मेमोरियल कन्वेन्शन के लिये उद्घाटन सन्देश

श्रीअरविन्द हमारे बीच उपस्थित हैं। और अपनी समस्त सृजनात्मक प्रतिभा की शक्ति के साथ वे इस विश्व-विद्यालय-केन्द्र की रचना की अध्यक्षता कर रहे हैं जिसे वे वर्षों से भावी मानव जाति को उस अतिमानसिक प्रकाश को ग्रहण करने योग्य बनाने का सर्वोत्तम साधन मानते थे जो आज के श्रेष्ठ वर्ग को एक नयी जाति में बदल देगा जो पृथ्वी पर नये प्रकाश, शक्ति और जीवन को अभिव्यक्त करेगी।

उनके नाम से मैं आज इस सम्मेलन का उद्घाटन करती हूं जो उनके सब से अधिक प्रिय विचारों में से एक को चरितार्थ करने के उद्देश्य से मिल रहा है।

—माताजी

२४ अप्रैल १९५१

हम यहां इसलिये नहीं हैं कि दूसरे जो करते हैं उसीको, (जरा ज्यादा अच्छी तरह) करें।

हम यहां वह करने के लिये हैं जो और लोग नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें यह ख्याल तक नहीं है कि यह किया जा सकता है।

हम यहां भविष्य के बालकों के लिये भविष्य का मार्ग खोलने के लिये हैं।

इससे कम कोई चीज परिश्रम करने लायक नहीं, श्रीअरविन्द की सहायता पाने योग्य नहीं है।

—माताजी

६ सितम्बर १९६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें शूरवीर योद्धा बना, जो बनने के लिये हम अभीप्सा करते हैं। जो भविष्य अभी पैदा होने को है उसके महान् युद्ध में टिके रहने का प्रयास करनेवाले अतीत के विरुद्ध, हम सफलता के साथ लड़ सकें ताकि नयी वस्तुएं अभिव्यक्त हो सकें और हम उन्हें ग्रहण करने के लिये तैयार हों।

—माताजी

६ जनवरी १९५२

हम जो पढ़ाना चाहते हैं वह केवल एक मानसिक आदर्श नहीं है। यह है जीवन का एक नया भाव और चेतना की उपलब्धि। यह उपलब्धि सब के लिये नयी है और दूसरों को यह ठीक तरह पढ़ाने का एक ही तरीका है—इस नयी चेतना के अनुसार जीना और अपने-आपको उसके द्वारा रूपान्तरित होने देना।

—माताजी

४ नवम्बर १९६९

हम जिस चीज का प्रस्ताव कर रहे हैं वह इससे कम नहीं है कि अपने अतीत और वर्तमान की सभी रचनाओं को तोड़ कर—यही सामान्य भौतिक और मानसिक मनुष्य का निर्माण करती हैं,—अपने अन्दर दृष्टि का एक नया केन्द्र और क्रिया-कलाप के एक नये विश्व की रचना करना . . .।

—श्रीअरविन्द

प्रगति करने के लिये तुम्हें पुरानी रचनाओं को ढाना, गिराना, पूर्व कल्पित विचारों को समाप्त करना होगा। पूर्व कल्पित विचार वे अभ्यासगत मानसिक रचनाएं हैं जिनमें आदमी रहता है, जो स्थिर होती हैं, जो कठोर दुर्ग बन जाती हैं और स्थिर होने के कारण प्रगति नहीं कर सकतीं, जो कुछ स्थिर हो वह प्रगति नहीं कर सकता। इसलिये सलाह यह है कि सभी पूर्व कल्पित विचारों को, यानी, सभी बंधी हुई मानसिक रचनाओं को तोड़ डालो। यही सच्चा तरीका है नये भावों या नये विचार को जन्म देने का, ऐसे सक्रिय विचार को जो सृजनात्मक है।

१९ दिसम्बर १९५६

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम जगत् के इतिहास के एक निर्णायक मुहूर्त में हैं। वह अतिमानस के आने की तैयारी कर रहा है और इस कारण जीवन का पुराना तरीका अपना मूल्य खो रहा है। हमें अपने-आपको हिम्मत के साथ, उसकी नयी मांगों के बावजूद, भविष्य के मार्ग पर फेंक देना चाहिये। एक समय जो तुच्छताएं सह ली जाती थीं अब उन्हें न सहा जायगा। हमें अपने-आपको अधिक विस्तृत करना होगा ताकि जो जन्म लेनेवाला है उसे हम ग्रहण कर सकें।

२९ दिसम्बर १९७१ —माताजी

प्रकृति में एक आरोहणकारी विकास है जो पत्थर से वनस्पति और वनस्पति से पशु की ओर जाता है, पशु से मनुष्य की ओर। अभी के लिये आरोहणकारी विकास की अन्तिम सीढ़ी है मनुष्य, इस कारण वह अपने-आपको इस आरोहण की अन्तिम अवस्था मानता है और सोचता है कि धरती पर उससे श्रेष्ठतर कुछ और हो ही नहीं सकता। यह उसकी भूल है। अपनी भौतिक प्रकृति में वह अभी तक लगभग पूरी तरह से पशु है, एक विचारशील और बोलनेवाला पशु, फिर भी अपनी जड़ भौतिक आदतों और सहज वृत्तियों में है पशु ही। निस्सन्देह प्रकृति ऐसे अपूर्ण परिणाम से सन्तुष्ट नहीं हो सकती। वह एक ऐसी सत्ता को लाने के प्रयास में है जो मनुष्य की तुलना में वैसा ही होगा जैसा मनुष्य पशु की तुलना में है—एक ऐसी सत्ता जो अपने बाहरी रूप में तो मनुष्य ही रहेगी पर जिसकी चेतना मन के और अज्ञान के प्रति उसकी दासता के बहुत ऊपर होगी।

श्रीअरविन्द मनुष्यों को यह सत्य सिखाने के लिये धरती पर आये। उन्होंने उनसे कहा कि मनुष्य केवल एक मध्यवर्ती सत्ता है जो मानसिक चेतना में निवास करता है लेकिन उसमें एक नयी चेतना, सत्य चेतना प्राप्त करने की सम्भावना है, वह पूर्णतया सुव्यवस्थित, शुभ, सुन्दर, सुखमय और पूर्णतया सचेतन जीवन जीने में समर्थ है, अपने सारे पार्थिव जीवन में श्रीअरविन्द ने अपना सारा समय अपने अन्दर इस चेतना को प्रतिष्ठित करने में लगाया जिसे वे अतिमानस कहते हैं और जो लोग उनके चारों ओर थे उन्हें इसे प्राप्त करने में सहायता दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हें यह बहुत बड़ा विशेष सौभाग्य प्राप्त है कि तुम बहुत छोटी अवस्था में ही यहां आश्रम में आ गये हो, इस अवस्था में तुम अभी नमनीय हो, यानी तुम्हें इस नवीन आदर्श के अनुसार ढाला जा सकता है और इस तरह तुम नूतन जाति के प्रतिनिधि हो सकते हो . . .

अब सब कुछ तुम्हारे संकल्प और तुम्हारी सच्चाई और निष्कपटता पर निर्भर है।

२४ जुलाई १९५१ —माताजी

बच्चों के लिये, और ठीक इस कारण कि वे बच्चे हैं, ज्यादा अच्छा यह होगा कि उनके अन्दर भविष्य को जीतने का संकल्प भरा जाय, हमेशा आगे नजर रखने का और जितनी तेजी से हो सके उतनी तेजी से जो होनेवाला है उसकी ओर गति करने का संकल्प। लेकिन वे अपने साथ भार, सारे अतीत का असह्य, चक्की का पत्थर न खींचते जाएं। केवल तभी जब हम चेतना और ज्ञान में बहुत ऊंचे पहुंच जाएं तभी यह देखने के लिये पीछे नजर डालना अच्छा होता है कि किन बिन्दुओं पर यह भविष्य अपने-आपको प्रकट करना शुरू करता है। जब हम समस्त चित्र को देख सकें, जब हमारे अन्दर सार्वभौम दृष्टि हो तो यह जानना बहुत रुचिकर होता है कि जो उपलब्धि आगे चलकर होगी, उसकी पहले से ही घोषणा की जा चुकी है, उसी तरह जैसे श्रीअरविन्द ने कहा कि दिव्य जीवन धरती पर अभिव्यक्त होगा क्योंकि वह **अब भी** जड़ की गहराइयों में अन्तर्लीन है। इस दृष्टिकोण से पीछे की ओर या नीचे देखना मजेदार होता है—यह जानने के लिये नहीं कि क्या हुआ या यह जानने के लिये कि मनुष्यों को क्या पता था, वह बिल्कुल बेकार है।

बच्चों से कहना चाहिये : अद्‌भुत चीजें अभिव्यक्त होनेवाली हैं, अपने-आपको उन्हें ग्रहण करने के लिये तैयार करो। तब अगर वे कुछ अधिक ठोस और अधिक सरल चीज जानना चाहें तो तुम उनसे कह सकते हो कि श्रीअरविन्द इन चीजों की घोषणा करने आये थे, जब तुम उन्हें पढ़ने योग्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाओगे तो समझ सकोगे, तो इससे रस जागेगा और जानने की इच्छा होगी।

५ अप्रैल १९६७ —माताजी

श्रीअरविन्द न तो अतीत के हैं न इतिहास के।

श्रीअरविन्द वह भविष्य हैं जो चरितार्थ होने के लिये आगे बढ़ रहा है।

इसलिये हमें तेज प्रगति के लिये आवश्यक चिर यौवन की रक्षा करनी चाहिये ताकि हम मार्ग में फिसड्डी न बन जाएं।

२ अप्रैल १९६७ —माताजी

जब तुम मौज करते और भूल जाते हो, जब चीजें जैसे आती हैं, तुम उन्हें उसी तरह ग्रहण कर लेते हो, गम्भीर होने और जीवन से आंखें चार करने से बचते हो, एक शब्द में कहें तो भूल जाना चाहते हो, यह भूल जाना चाहते हो कि कोई समस्या है जिसे सुलझाना है, कि किसी चीज का अन्वेषण करना है, कि हमारे अस्तित्व और जीवन का कोई कारण है, हम यहां केवल अपना समय काटने के लिये और बिना कुछ सीखे और बिना कुछ किये चले जाने के लिये नहीं हैं; अगर ऐसा हो तो हम सचमुच अपना समय नष्ट करते हैं और हमें जो अवसर दिया गया है उसे खो देते हैं—मैं यह नहीं कह सकती कि यह अद्वितीय अवसर है, हां, एक ऐसे जीवन के लिये अद्‌भुत अवसर है जो प्रगति का क्षेत्र है, जो शाश्वत काल में वह क्षण है जब तुम जीवन का रहस्य जान सकते हो; क्योंकि यह जड़ भौतिक जीवन एक अद्‌भुत अवसर है, जीवन के प्रयोजन को जानने के लिये, तुम्हें दी गयी सम्भावना है जिससे तुम इस गहनतर सत्य की ओर एक कदम और बढ़ सको, तुम उस रहस्य को जान सको जो दिव्य जीवन के शाश्वत आनन्द के साथ तुम्हारा नाता जोड़ सकता है।

१३ फरवरी १९५७ —माताजी

युवा होने का अर्थ है भविष्य में निवास करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवा होने का अर्थ है तुम जो कुछ हो उसे छोड़ने के लिये सदा तैयार रहना ताकि तुम वह बन सको जो तुम्हें होना चाहिये।

युवा होने का अर्थ है कभी असुधार्य को स्वीकार न करना।

—माताजी

२८ मार्च १९६७

हमारे यहां शिक्षा केन्द्र क्यों है ? अगर हर जगह वही चीजें की जायें तो हमें उन्हें दोहराने की जरूरत नहीं है, हम उन्हें औरों से कुछ ज्यादा अच्छा न करेंगे।

और जब वे ये प्रश्न मेरे आगे रखते हैं तो वे मेरे सामने ऐसी कोई बात नहीं कह सकते जो मुझे ज्यादा मूढ़ताभरी लगती हो। यह हर जगह किया जाता है ? उसे न करने का बस ठीक यही कारण है क्योंकि अगर हम वही करें जो दूसरे करते हैं तो यह कुछ भी करने का कष्ट उठाने के योग्य नहीं है। हम जगत् में ठीक ऐसी चीज लाना चाहते हैं जो यहां नहीं है। लेकिन अगर हम दुनिया की सभी आदतों को बनाये रखें, दुनिया भर की सभी अभिरुचियों को, दुनिया भर की रचनाओं को बनाये रखना चाहें तो मेरी समझ में नहीं आता कि तब हम लीक से कैसे हट सकेंगे और कोई नयी चीज कैसे कर सकेंगे।

मेरे बच्चो, मैंने तुमसे कहा है, हर लहजे में, हर तरीके से कहा है कि अगर तुम सचमुच यहां रहने से लाभ उठाना चाहते हो तो चीजों को एक नयी दृष्टि से देखने और समझने की कोशिश करो, तुम्हारी समझ किसी उच्चतर वस्तु, किसी गहनतर, बृहत्तर, सत्यतर, किसी ऐसी चीज पर आधारित हो जो अभी है तो नहीं पर एक दिन होगी। और चूंकि हम इस भविष्य का निर्माण करना चाहते हैं इसलिये हमने यह विशेष आधार अपनाया है।

२५ जुलाई १९५६

—माताजी

नया लक्ष्य है बच्चों को अपनी बौद्धिक, सौन्दर्यबोधात्मक, भावात्मक, नैतिक, आध्यात्मिक सत्ता और सामुदायिक जीवन और आवेगों को उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने स्वभाव और क्षमताओं में से विकसित करना—यह पुरानी शिक्षण-पद्धति से बहुत भिन्न है जो इतना रूढ़िबद्ध ज्ञान बालक के प्रतिरोध करनेवाले मस्तिष्क में ठूंसना चाहता था, जो उसके संघर्षरत और अधीनस्थ आवेशों पर रूढ़िबद्ध आचार-संहिता को आरोपित करना चाहता था।

—श्रीअरविन्द

व्यष्टिगत जीवन का आद्य विधान और प्रयोजन है आत्म-विकास की खोज। वह सचेतन, अर्द्ध-चेतन या एकदम निश्चेतन के अन्धेरे में सदा आत्म-निर्माण की खोज करता है और ठीक ही करता है—अपने-आपकी खोज, अपने अन्दर अपनी सत्ता के विधान और शक्ति की खोज और उसकी परिपूर्ति। उसके अन्दर यह लक्ष्य मौलिक, उचित और अनिवार्य है क्योंकि सभी उपाधियां पा लेने के बाद, सभी चेतावनियों में धंसने के बाद व्यक्ति केवल क्षणभंगुर भौतिक प्राणी नहीं है, मन और शरीर का रूप नहीं है जो जुड़ता और घुलता है बल्कि एक सत्ता, शाश्वत सत्य की एक जीवित शक्ति, आत्माभिव्यक्ति करनेवाली आत्मा है।

—श्रीअरविन्द

मनुष्य की शिक्षा जन्म से शुरू होनी चाहिये और सारे जीवन चलती रहनी चाहिये।

वस्तुतः अगर हम चाहते हैं कि इस शिक्षा का अधिकतम परिणाम आये तो उसे जन्म से भी पहले शुरू हो जाना चाहिये . . .

शिक्षा के पूर्ण होने के लिये उसके पांच मुख्य पक्ष होने चाहियें जो मनुष्य के पांच मुख्य क्रिया-कलाप के साथ मेल खाते हों: भौतिक, प्राणिक, मानसिक, चैत्य और आध्यात्मिक। सामान्यतः शिक्षा के ये पक्ष कालानुसार व्यक्ति की प्रगति का अनुसरण करते हैं लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि एक को दूसरे का स्थान लेना चाहिये बल्कि सभी को एक दूसरे को पूरा करते हुए जीवन के अन्त तक चलते रहना चाहिये।

१९५१ —माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर की पूर्णता

शारीरिक व्यायाम का अन्तिम उद्देश्य होना चाहिये शरीर की पूर्णता, उतनी अधिक पूर्णता जितनी हम अपने उपलब्ध साधनों से ला सकते हैं। पूर्णता सभी शिक्षण का सच्चा उद्देश्य है, चाहे वह आध्यात्मिक हो, चैत्य हो, मानसिक या प्राणिक शिक्षण हो। शारीरिक शिक्षण का भी यही उद्देश्य होना चाहिये। क्योंकि शरीर जड़ आधार है। शरीर वह उपकरण भी है जिसका हमें उपयोग करना है।

—श्रीअरविन्द

हर बार जब अन्तरात्मा किसी नये शरीर में जन्म लेती है तो वह एक नया अनुभव पाने के लिये आती है, एक ऐसा अनुभव जो उसे अपने व्यक्तित्व को विकसित करने और पूर्ण बनाने में सहायक होगा . . .।

भौतिक शरीर में उसका अवतरण निश्चित रूप से अन्धकार, अज्ञान, निश्चेतना में अवतरण होता है और बहुत लम्बे समय तक उसे इसलिये श्रम करना पड़ता है कि वह जिस अनुभूति के लिये आयी है उसके लिये इस द्रव्य का उपयोग कर सकने से पहले शरीर के जड़ भौतिक तत्त्व में थोड़ी बहुत चेतना उतार सके, तो अगर हम स्पष्ट दृष्टि और युक्तियुक्त पद्धति से शरीर को प्रशिक्षित करते हैं तो हम साथ ही साथ अन्तरात्मा के विकास, उसकी प्रगति और उसके प्रबोध में भी सहायक होते हैं।

शारीरिक व्यायाम शरीर के कोषाणुओं में चेतना को अनुप्राणित करने की पद्धति है। आदमी जाने या न जाने परन्तु यह है एक तथ्य।

२८ नवम्बर १९५८

—माताजी

हम अपने शरीर के साथ व्यवहार करने में, उसकी देख-रेख करने और उसे स्वस्थ रखने, उसे सुधारने और ठीक-ठाक रखने के लिये जिस तरीके का उपयोग करते हैं वह ऐकान्तिक रूप से उस चेतना की अवस्था पर निर्भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जिसमें हम हैं क्योंकि हमारा शरीर हमारी चेतना का उपकरण है और यह चेतना उस पर सीधा कार्य कर सकती है और उससे जो चाहे करवा सकती है।

२९ मई १९५७ —माताजी

क्या तुम अपने भौतिक कोषाणुओं और उनकी विभिन्न विशेषताओं, उनकी क्रियाओं, उनकी ग्रहणशीलता की कोटि के बारे में, इस बारे में कि क्या स्वस्थ स्थिति है और क्या अस्वस्थ, सचेतन हो ? क्या तुम निश्चित रूप से कह सकते हो कि तुम कब थके होते हो और क्यों थके होते हो ? जब कहीं कुछ गड़बड़ हो तो क्या तुम कह सकते हो कि, "मैं इस कारण कष्ट पा रहा हूं ?" . . . लोग डॉक्टर के यहां क्यों दौड़े जाते हैं ? क्योंकि वे इस भ्रम में रहते हैं कि डॉक्टर उनकी अपेक्षा ज्यादा अच्छी तरह जानता है कि उनके शरीर के अन्दर कैसे देखे और पता लगाये कि वहां क्या हो रहा है—बात तो बहुत समझदारी की नहीं है पर लोगों की आदत यही है ! लेकिन कौन है जो अपने अन्दर ठीक तरह से, भली-भांति देख सके और जान सके कि कौन सी चीज अव्यवस्थित है, कौन सी चीज विक्षुब्ध है और क्यों ? और यह सब तो सीधा-सा अवलोकन-कार्य है; बाद में तुम्हें यह जानना चाहिये कि सब कुछ ठीक व्यवस्था में लाने के लिये क्या जरूरी है—यह ज्यादा कठिन है।

हां, यह शरीर के रूपान्तर का ककहरा है।

२४ फरवरी १९५४ —माताजी

मानव चेतना के सभी क्षेत्रों में भौतिक ही प्रक्रिया, व्यवस्था अनुशासन और पद्धति से सब से ज्यादा शासित है। जड़-भौतिक में नमनीयता और ग्रहणशीलता की कमी के स्थान पर ऐसी विस्तृत व्यवस्था लानी चाहिये जो यथार्थ और व्यापक, दोनों हो। इस व्यवस्था में हमें सत्ता के सभी क्षेत्रों के अन्योन्याश्रय और अन्तर्व्याप्ति को न भूलना चाहिये। फिर भी, मानसिक या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणिक आवेश को भी अपने-आपको भौतिक रूप में प्रकट करने के लिये एक ठीक-ठीक पद्धति के आधीन होना पड़ता है। इसीलिये शरीर की सारी शिक्षा को, यदि उसे प्रभावकारी बनाना है तो उसे कठोर, विस्तृत, दूर दृष्टिवाली और पद्धति के अनुसार होना चाहिये।

—माताजी

१९५१

स्वभावतः, अगर इस शिक्षा को न्यायसंगत, प्रबुद्ध और प्रभावकारी बनना है तो इसे मानव शरीर के, उसकी रचना और उसके क्रिया-कलापों के बारे में अल्पतम ज्ञान पर तो आधारित होना ही चाहिये। जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता है उसे क्रमशः यह आदत अपनानी चाहिये कि वह अपने अवयवों के क्रिया-कलापों का निरीक्षण करे ताकि वह उन पर अधिकाधिक नियन्त्रण रख सके, साथ ही इस बात का ध्यान रखे कि यह क्रिया-कलाप सामान्य और सामंजस्यपूर्ण हो।

१९५१

—माताजी

बच्चों की शिक्षा के सामान्य कार्यक्रम में खेल-कूद और बाहरी क्रीड़ा को उचित स्थान देना चाहिये, सारी दुनिया की दवाइयों से बढ़ कर वह उन्हें ज्यादा अच्छे स्वास्थ्य का आश्वासन देगा। घंटे भर के लिये धूप में घूमना दुर्बलता और अरक्तता को ठीक करने के लिये ढेरों टॉनिकों से ज्यादा लाभकर हो सकता है। मेरी सलाह यह है कि जब तक उनके बिना काम चलाना असम्भव ही न हो जाय तब तक दवाई न ली जाय। और यह 'एकदम असम्भव' सचमुच एकदम असम्भव होना चाहिये . . .। अगर इस पद्धति को पूरी तरह प्रभावकारी होना हो तो हर व्यक्ति को अलग-अलग देखना चाहिये। अगर हो सके तो किसी समर्थ व्यक्ति की सहायता भी ली जाय।

१९५१

—माताजी

लेकिन यह याद रखना बहुत जरूरी है कि शरीर की सहज वृत्ति, यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह एकदम अक्षुण्ण रहे, किसी भी सिद्धान्त से अधिक प्रामाणिक है . . .

अपनी सामान्य स्थिति में, यानी, जब मानसिक धारणाओं या प्राणिक आवेगों का हस्तक्षेप न हो, शरीर बहुत अच्छी तरह जानता है कि उसके लिये क्या अच्छा और जरूरी है लेकिन व्यवहार में इसके प्रभावकारी होने के लिये बच्चे को सावधानी के साथ प्रशिक्षित करना जरूरी है और उसे अपनी कामनाओं और आवश्यकताओं में फर्क करना सिखाना चाहिये।

१९५१ —माताजी

ठीक बचपन से ही तुम्हें यह जानना चाहिये कि तुम जीभ के मजे के लिये नहीं, शरीर को बल और स्वास्थ्य देने के लिये खाते हो। बच्चों को ऐसा भोजन देना चाहिये जो उनकी प्रकृति के साथ मेल खाता हो, जो सफाई और स्वास्थ्य को दृष्टि में रखते हुए पकाया गया हो, स्वाद में अच्छा फिर भी बहुत सीधा-सादा हो।

१९५१ —माताजी

बच्चों को एक और चीज छोटी उम्र से ही सिखानी चाहिये वह है सफाई और स्वास्थ्यकर आदतों के लिये रुचि। लेकिन अगर तुम बच्चे में सफाई के लिये रुचि और स्वास्थ्य के नियमों के लिये मान पैदा करना चाहते हो तो तुम्हें बहुत सावधान रहना चाहिये कि उसके अन्दर रोग का भय न भर दो। भय शिक्षा के लिये सब से बुरा प्रेरणा-स्रोत है और जिस चीज से डर लगता है उसे आकर्षित करने का पूरी तरह निश्चित उपाय है . . . बहरहाल, बच्चों को सिखाना चाहिये कि वे स्वास्थ्य के लिये मान रखें, ऐसे आदमी को सराहें जिसका शरीर रोग के आक्रमणों को पीछे धकेलने में समर्थ हो।

१९५१ —माताजी

प्राणिक शरीर भौतिक शरीर को एक तरह के आवरण से लपेटे रहता है जो गरमी के स्पन्दनों जितना घना होता है, उन स्पन्दनों की तरह जो, दिन गरम हो तो, अनुभव किये जा सकते हैं और यह अत्यन्त स्थूल जड़ प्राणिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर और सूक्ष्म शरीर के बीच में मध्यस्थ की तरह रहता है। यही शरीर को सब तरह की छूत, थकान, परिक्लान्ति, यहां तक कि दुर्घटनाओं से भी बचाता है . . . अगर तुम्हारे अन्दर यह सन्तुलन, यह आन्तरिक सामंजस्य हो जो इस आवरण को ठीक-ठीक रखता है तो यह हर चीज से तुम्हारी रक्षा करता है . . . यह ऐसी क्षमता है जिसे तुम अपने अन्दर पैदा कर सकते हो। अगर तुम अपने आवरण के दुर्बल स्थान के बारे में अभिज्ञ हो जाओ तो कुछ क्षणों के लिये एकाग्रता, शक्ति का आह्वान, आन्तरिक शान्ति उसे ठीक कर लेने के लिये काफी है, उससे तुम स्वस्थ हो सकते हो और अप्रिय चीजें गायब हो सकती हैं।

२७ जनवरी १९५१ —माताजी

पालने में बच्चे को जागने की अपेक्षा सोना अधिक चाहिये। जैसे-जैसे बच्चा बढ़ेगा, उसके सोने के घंटे कम होते जायंगे। लेकिन परिपक्व अवस्था तक वे शान्त हवादार स्थान पर आठ घंटे से कम तो न होने चाहियें। बच्चे को किसी भी कारण से रात को अधिक देर तक न जगाना चाहिये। स्नायुओं के विश्राम के लिये आधी रात से पहले के घंटे सबसे अच्छे रहते हैं। जाग्रत अवस्था में भी, उन सब के लिये जो अपनी स्नायुओं के सन्तुलन को ठीक रखना चाहते हैं, विश्राम अनिवार्य है। जब बच्चे बहुत छोटे हों तभी से उन्हें मांसपेशियों और स्नायुओं को आराम देने की कला सिखानी चाहिये। इसके विपरीत बहुत से मां-बाप ऐसे होते हैं जो अपने बच्चों को सतत हलचल में लगाये रखते हैं और जब वह चुपचाप रहता है तो मान लेते हैं कि वह बीमार है।

१९५१ —माताजी

जब सूर्य अस्त होता है तो धरती पर एक तरह की शान्ति उतरती है। यह शान्ति सोने में सहायक होती है।

जब सूर्य उदय होता है तो एक स्फूर्तिभरी ऊर्जा धरती पर उतरती है और यह ऊर्जा काम के लिये सहायक होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर तुम देर में सोओ और देर में उठो तो तुम प्रकृति की शक्तियों का विरोध करते हो और यह बहुत बुद्धिमत्ता की बात नहीं है।

२१ दिसम्बर १९६९ —माताजी

केवल वातावरण से मिलनेवाली मिथ्या शिक्षा द्वारा ही धीरे-धीरे शरीर को यह सिखाया जाता है कि ऐसी बीमारियां हैं जो ठीक नहीं हो सकतीं, ऐसी दुर्घटनाएं होती हैं जिनका निस्तार नहीं, और शरीर बूढ़ा होता है और ऐसी सभी कहानियां जो उसके श्रद्धा-विश्वास को नष्ट करती हैं। लेकिन सामान्यतः, सामान्य बच्चे का शरीर—मैं यहां विचार की नहीं, स्वयं शरीर की बात कह रही हूं—जब कोई गड़बड़ हो तो स्वयं शरीर अनुभव करता है कि वह फिर से ठीक हो जायगा और अगर ऐसा न हो तो इसका अर्थ यह होगा कि वह अभी से ही विकृत हो चुका है। उसे स्वस्थ रहना **सामान्य** मालूम होता है। उसे एकदम असामान्य मालूम होता है जब कुछ गड़बड़ हो जाय या वह बीमार पड़ जाय : और अपनी वृत्ति, सहज वृत्ति के अनुसार उसे विश्वास होता है कि सब कुछ ठीक हो जायगा। केवल विचार की विकृति इसे नष्ट कर देती है . . .

३१ जुलाई १९५७ —माताजी

ऐसा शरीर बनाये रखने में कोई लाभ नहीं जिसके रहने का कोई प्रयोजन न हो क्योंकि वह फिर किसी काम का न रहेगा। किसी काम का न रहना ही ठीक वह चीज है जो उसे गायब कर देती है। शरीर ऐसा भी हो सकता है जो पूर्णता से पूर्णता की ओर बढ़ता है। तुम कहीं कुछ असामंजस्य देखते हो और कहते हो, "अगर यह असामंजस्य दूर हो जाय तो कितना अच्छा हो!" . . . लेकिन तुम यह क्यों नहीं सोचते कि यह किया जा सकता है? . . .

अगर तुम ज्यादा बारीकी से देखो तो चीज ज्यादा मजेदार हो जाती है; तुम पाते हो कि यह असामंजस्य तुम्हारे चरित्र के किसी दोष की अभिव्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। चूंकि तुम्हारे चरित्र में कोई ऐंठन है, ठीक सामंजस्य नहीं है, और यही चीज तुम्हारे शरीर में कहीं पर दोहराई जाती है। तुम उसे शरीर में व्यवस्थित करने की कोशिश करते हो और तुम्हें पता चलता है कि इस भौतिक असामंजस्य के मूल स्रोत तक पहुंचने के लिये तुम्हें अपनी आन्तरिक सत्ता के अन्दर के दोष तक पहुंचना होगा। तब तुम उसपर काम करना शुरू करते हो और परिणाम प्राप्त हो जाता है।

तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर किस हद तक नमनीय है! एक और दृष्टिकोण से मैं कहूंगी कि वह भयानक रूप से कठोर है और इसीलिये उसका ह्रास होता है। लेकिन इसका कारण तो यह है कि हम उसका उपयोग करना नहीं जानते। जब हम नन्हीं ताजा पत्तियों जैसे होते हैं तो यह नहीं जानते कि किस तरह प्रचुर, सुन्दर, निर्दोष पुष्पन के लिये संकल्प करें।

१७ जून १९५३ —माताजी

सौन्दर्य के महान् महत्त्व पर भी जोर देना चाहिये। छोटे बच्चे को सौन्दर्य के लिये अभीप्सा करनी चाहिये, औरों को खुश करने या उनकी सराहना पाने के लिये नहीं बल्कि स्वयं सौन्दर्य के प्रेम के लिये क्योंकि सौन्दर्य वह आदर्श है जिसे समस्त भौतिक जीवन को प्राप्त करना चाहिये। हर मनुष्य के अंदर यह संभावना होती है कि वह अपने शरीर के विभिन्न भागों और गतिशील शरीर की विभिन्न गतिविधियों में सामंजस्य स्थापित कर सके। हर मानव शरीर जो जीवन के शुरू से ही विधिवत् रूप से प्रशिक्षण पाता है, अपने निजी सामंजस्य को प्राप्त कर सकता है और इस भांति सौन्दर्य को प्रकट करने के योग्य बन सकता है।

अप्रैल १९५१ —माताजी

. . . सत्ता के हर भाग में भगवान् अपने-आपको अलग-अलग ढंग से प्रकट करते हैं। उच्चतर भागों में वे शक्ति, प्रेम आदि द्वारा अभिव्यक्त होते हैं लेकिन भौतिक में वे सामंजस्य और सौन्दर्य के रूप में प्रकट होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः भौतिक सौन्दर्य की अभिव्यक्ति की समस्या एक आध्यात्मिक समस्या है।

२२ जनवरी १९५१ —माताजी

शरीर निश्चेतना की सृष्टि और अपने-आप निश्चेतन है या कम-से-कम अपने कुछ भागों में और अपनी बहुत-सी प्रच्छन्न क्रियाओं में अवचेतन है, लेकिन जिसे हम निश्चेतन कहते हैं वह एक आभास, एक निवास स्थान, एक यन्त्र है प्रच्छन्न चेतना या अतिचेतना का जिसने उस चमत्कार की रचना की है जिसे हम विश्व कहते हैं। जड़ तत्त्व निश्चेतना का क्षेत्र और उसका सृजन है और निश्चेतन जड़ तत्त्व की क्रियाओं की पूर्णता, उनका किसी लक्ष्य या उद्देश्य के साथ पूर्ण अनुकूलन, वे जो अद्भुत चीजें करते हैं और सौन्दर्य के जिन चमत्कारों का सृजन करते हैं, हम उनका चाहे जितना अज्ञानभरा नकार और विरोध करें, इस अतिचेतन की चेतन शक्ति के जड़ जगत् के हर भाग में, उसकी हर गति में उपस्थित होने का प्रमाण देते हैं। वह शरीर में उपस्थित है, उसीने इसकी रचना की है, हमारी चेतना में उसका आविर्भाव विकास का गुप्त लक्ष्य और हमारे जीवन के रहस्य की चाबी है।

—श्रीअरविन्द

जो श्रीअरविन्द के पूर्ण योग का अनुसरण करते हैं अपनी चैत्य सत्ता को पा लेने और उसके साथ एक हो जाने के बाद वे उससे मांग करते हैं कि वह अपनी दृष्टि भौतिक सत्ता की ओर मोड़े, चैत्य के अन्दर अन्तर्निहित भागवत सम्पर्क से उत्पन्न चेतना के साथ उसपर क्रिया करे और शरीर को इस तरह रूपान्तरित करे कि वह भागवत चेतना और सामंजस्य को ग्रहण और अभिव्यक्त कर सके।

तो यहां हमारे प्रयास का लक्ष्य यही है : इस अन्तर्राष्ट्रीय विश्व विद्यालय के केन्द्र में अध्ययन का चरम बिन्दु भी यही होगा।

१९५२ —माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

प्राण की शिक्षा

शायद सब प्रकार की शिक्षाओं में प्राणिक शिक्षा सब से अधिक महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य है लेकिन कभी-कदास ही इसे विवेक और पद्धति के साथ अपनाया जाता है। इसके बहुत-से कारण हैं। पहला, मानव मन इस विषय विशेष के बारे में बहुत ज्यादा अस्त-व्यस्त रहता है, दूसरे, इसे हाथ में लेना बहुत ही कठिन है और उसमें सफल होने के लिये तुम्हारे अन्दर अन्तहीन सहिष्णुता और अध्यवसाय और ऐसे संकल्प-बल की जरूरत होती है जिसे कोई असफलता कमजोर न कर सके।

१९५१ —माताजी

इस प्राणिक शिक्षा के दो मुख्य पक्ष होते हैं। दोनों अपने लक्ष्य और पद्धति में तो बहुत भिन्न होते हैं पर हैं समान रूप से महत्त्वपूर्ण। पहले का सम्बन्ध है इन्द्रियों के विकास और उपयोग के साथ और दूसरा है चरित्र की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई अभिज्ञता और संयम। इनका चरम-बिन्दु है रूपान्तर।

१९५१ —माताजी

विचार के मन्त्रियों के रूप में इन्द्रियों की पूर्णता अध्यापकों की पहली जिम्मेदारी होनी चाहिये। इन्द्रियों के लिये जिन दो चीजों की आवश्यकता है वे हैं यथार्थता और सम्वेदनशीलता . . .।

इन्द्रियां अपनी यथार्थता और सम्वेदनशीलता के लिये स्नायुओं की अविकृत क्रिया पर निर्भर हैं, ये उनकी सूचना-वाहिनियां हैं, दूसरी चीज है, मन द्वारा, जो ग्रहणकर्ता है, निष्क्रियता के साथ स्वीकृति . . .

स्नायु संस्थान में सभी विकारों का मूल स्नायु-वाहिनियों में क्रियारत किसी भावात्मक क्षुब्धता में पाया जाता है। इनका एकमात्र उपचार है स्नायुओं की अचंचल स्थिरता की आदत। इसे नाड़ी-शुद्धि से भी प्राप्त किया जा सकता है जो शरीर को शान्त करती, सभी आन्तरिक प्रक्रियाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को सुविवेचित स्थिरता देती है और मन को शुद्धि के लिये तैयार करती है।

—श्रीअरविन्द

लेकिन तुम सम्वेदनों द्वारा ही, देख कर, अवलोकन कर के, सुन कर ही सीखते हो। कक्षाएं तुम्हारे सम्वेदनों को विकसित करती हैं, अध्ययन तुम्हारे सम्वेदनों को विकसित करता है, मन सम्वेदनों के द्वारा चीजें प्राप्त करता है। इन्द्रियों की शिक्षा से सामान्य शिक्षा को सहायता मिलती है। अगर तुम अच्छी तरह देखना सीखो, ठीक-ठीक, यथार्थ रूप से, अगर तुम अच्छी तरह सुनना सीखो, अगर तुम स्पर्श द्वारा चीजों की प्रकृति को पहचानना सीखो, अगर तुम गंध द्वारा विभिन्न गन्धों में फर्क कर सको—तो ये सब शिक्षा के लिये सशक्त साधन हैं।

३१ मार्च १९५४ —माताजी

हां, तो ऐसी गन्धें हैं जो मेल नहीं खातीं, अगर तुम उन्हें एक साथ रख दो तो वे अखरने लगती हैं जिनमें कोई सामंजस्य, कोई ऐक्य नहीं होता। लेकिन अगर तुमने अपनी घ्राणशक्ति को प्रशिक्षित किया होता तो एक कोई विशेष गन्ध पाने पर तुम जान जाते कि और कौन-कौन-सी गन्ध उसके साथ मेल खा सकती है। तब तुम ऐसी चीजों को साथ ला सकते जो साथ जा सकती हैं।

रंगों के साथ भी यही बात है, रंगों की शिक्षा आश्चर्यजनक होती है—अपने विस्तार में और जटिलता में भी।

३१ मार्च १९५४ —माताजी

यह बहुत वांछनीय है कि हाथ में यह क्षमता हो कि यथार्थता को ठीक-ठीक बनाये रखने के लिये वह आंख के बहुत सारे क्रिया-कलाप में आंख की सहायता कर सके। यह एक स्पष्ट और अत्यधिक आवश्यक उपयोग है जिसपर विस्तार में जाने की जरूरत नहीं। आंख से देखी चीज की हाथ से नकल करने की आदत दोनों तरह से उपयोगी हो सकती है, मन की त्रुटियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भूलों को पकड़ने में और इन्द्रियों के विषयों को ध्यान से देखने और जो देखा गया है उसका ठीक-ठीक आलेखन करने में। यह चित्रांकन के पहले उपयोगों में से है और यह अपने-आपमें इन्द्रियों के प्रशिक्षण के एक अंग के रूप में इस विषय को जरूरी बनाने के लिये काफी है।

—श्रीअरविन्द

जैसे शारीरिक स्वास्थ्य होता है उसी तरह एक मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य होता है, शरीर और उसकी गतिविधियों के सौन्दर्य और सामंजस्य की तरह सम्वेदनों की सुन्दरता और सामंजस्य भी होता है। जैसे-जैसे बच्चे में समझने की क्षमता बढ़ती है उसे शिक्षा की प्रक्रिया में यह भी सिखाना चाहिये कि वह शक्ति और यथार्थता के साथ कलात्मक रुचि और सुसंस्कृति को भी जोड़ दे। उसे चाहे प्रकृति में हो या मानव सृष्टि में सुन्दर, महान्, स्वस्थ और उदात्त चीजों को देखना, उनकी सराहना करना और उनसे प्रेम करना सिखाना चाहिये। यह एक सच्ची सौन्दर्यात्मक संस्कृति होगी जो उसे गिरानेवाले प्रभावों से बचायेगी। इन्द्रियों का सुव्यवस्थित और प्रबुद्ध प्रशिक्षण, थोड़ा-थोड़ा करके बच्चे में से उस सब की सफाई कर सकता है जो कुछ गंवारू, घिसी-पिटी अनगढ़ छूत से आया है। इस शिक्षा का उसके चरित्र पर भी बहुत सुखद प्रभाव होगा।

१९५१

—माताजी

. . . अवलोकन की शक्ति के साथ प्रगति और पूर्णता के लिये इच्छा भी बढ़नी चाहिये। जैसे ही बच्चा इच्छा करने में समर्थ हो, यानी जिस उम्र में उसे योग्य माना जाता है उससे बहुत पहले उसके अन्दर यह इच्छा पैदा करनी चाहिये . . .

एक बार यह निश्चय दृढ़ता के साथ ले लिया जाय तो उसके बाद तुम्हें कठोरता और अध्यवसाय के साथ चलते चलना चाहिये, किसी भी पराजय को अन्तिम न मानो। कमजोरी या पीछे खिसकने की वृत्ति से बचने के लिये एक महत्त्वपूर्ण बात है जिसे तुम्हें कभी न भूलना चाहिये। इच्छा को उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह प्रशिक्षित और विकसित किया जा सकता है जैसे मांसपेशियों को विधिवत्, क्रमिक व्यायाम द्वारा। तुम्हें एकदम महत्त्वहीन दीखनेवाली चीज के लिये भी अपनी अधिक-से-अधिक इच्छा-शक्ति लगाने की मांग करने में संकोच न करना चाहिये। प्रयास द्वारा ही उसकी क्षमता बढ़ती है और धीरे-धीरे कठिन-से-कठिन चीजों के लिये भी उसका उपयोग करने की शक्ति आ जाती है।

१९५१ —माताजी

माताजी, हम अपनी इच्छा शक्ति को मजबूत कैसे बना सकते हैं?

ओह, उसी तरह जैसे तुम अपनी मांसपेशियों को मजबूत बनाते हो, विधिवत् व्यायाम द्वारा। तुम एक छोटी-सी चीज लो जिसे तुम करना या नहीं करना चाहते। आरम्भ किसी छोटी-सी चीज से ही करो, सत्ता के लिये किसी अनिवार्य चीज से नहीं बल्कि छोटे-से ब्योरे से, और तब, यदि, उदाहरण के लिये, अगर वह कोई ऐसी चीज है जिसे करने का तुम्हें अभ्यास है तो तुम समान नियमितता के साथ उसे करने या न करने पर आग्रह करो—तुम उस पर आग्रह करो और अपने-आपको उसे करने के लिये बाधित करो जैसे तुम अपने-आपको भार उठाने के लिये बाधित करते हो—बात एक ही है। तुम एक ही प्रकार का प्रयास करते हो परन्तु यह ज्यादा आन्तरिक प्रयास है। इस तरह छोटी-छोटी चीजें लेने के बाद, जो तुम जानते हो अधिक आसान हैं—इन्हें लेने और इनमें सफल होने के बाद तुम एक महत्तर शक्ति के साथ एक होकर अधिक जटिल परीक्षण कर सकते हो। और धीरे-धीरे, यदि तुम नियमित रूप से करते रहो तो अन्त में तुम स्वतन्त्र और बहुत बलवान संकल्प-शक्ति पाने में सफल हो जाओगे।

३ नवम्बर १९५४ —माताजी

जब तुम कोई चीज प्राप्त करना चाहते हो तो सहज रूप से उसके लिये आवश्यक प्रयास करते हो। इससे तुम्हारी ऊर्जाएं उस चीज पर केन्द्रित हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती हैं जिसे तुम प्राप्त करना चाहते हो और यह तुम्हारे जीवन को अर्थ देता है। यह तुम्हें अपनी एक प्रकार की व्यवस्था करने के लिये, एक तरह से अपनी ऊर्जाओं के केन्द्रीकरण के लिये बाधित करता है क्योंकि तुम ठीक यही चीज करना चाहते हो, वे पचास चीजें नहीं जो उसका विरोध करती हैं। और इस एकाग्रता में, इच्छा की इस तीव्रता में आनन्द का मूल है। इससे तुम्हें वह शक्ति मिलती है जिससे तुम अपनी खर्च की हुई शक्ति के बदले में और ऊर्जाएं पाते हो।

—माताजी

१३ जनवरी १९५१

. . . चरित्र का मूलभूत परिवर्तन अवचेतना पर लगभग पूरे प्रभुत्व की और जो कुछ निश्चेतना से ऊपर उभरे, जो सामान्य प्रकृतियों में अपने-आपको पुराण-पंथ और तुम जहां पैदा हुए थे उस पर्यावरण के प्रभाव के रूप में प्रकट करता है—के कठोर अनुशासन की मांग करता है। केवल चेतना की असाधारण वृद्धि और भागवत कृपा की सतत सहायता इस भगीरथ कार्य को पूरा कर सकती हैं। इसीलिये इसके लिये कभी-कदास ही प्रयत्न किया गया है और बहुत-से प्रसिद्ध शिक्षकों ने इसे असाध्य और ख-पुष्पवत् बतलाया है। लेकिन यह असाध्य नहीं है। वस्तुतः चरित्र का रूपान्तर स्पष्टदर्शी अनुशासन और ऐसे हठीले अध्यवसाय द्वारा प्राप्त किया जा चुका है जिसे कोई भी, अत्यधिक हठीली असफलताएं भी हतोत्साह नहीं कर सकतीं।

—माताजी

१९५१

अपने भीतर की विभिन्न गतिविधियों के बारे में सचेतन होना और तुम क्या करते और क्यों करते हो उससे अभिज्ञ होना अनिवार्य आरम्भ-बिन्दु है। बच्चे को अवलोकन करना, अपनी प्रतिक्रियाओं, आवेशों और उनके कारणों को देखना सिखाना चाहिये। अपनी कामनाओं का, अपनी उग्रता, और आवेगों की गतिविधियों का, अपनी अधिकार करने, हड़पने और शासन करने की वृत्ति का और पीछे से उन्हें सहारा देनेवाली अहम्मन्यता तथा साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही साथ उनकी दुर्बलता, हतोत्साह, अवसाद और निराशा का विवेकशील साक्षी होना सिखाना चाहिये।

१९५१ —माताजी

अनिवार्य आरम्भ-बिन्दु है, जिस चरित्र का रूपान्तर करना हो उसका विस्तृत और विवेकपूर्ण अवलोकन। अधिकतर लोगों के लिये यह अपने-आपमें कठिन और चकरानेवाला काम होता है। लेकिन एक तथ्य है जिसे पुरानी परम्पराएं जानती थीं और जिसका उपयोग आन्तरिक शोध की भूल-भुलैया की चाबी का काम दे सकता है। वह हर एक के पास बड़ी मात्रा में है और अपवादिक व्यक्ति, यथार्थता की बढ़ती हुई मात्रा में, चरित्र की दो विरोधी वृत्तियों में, लगभग समान अनुपात में है जो एक ही वस्तु के प्रकाश और छाया की तरह है . . . इस तरह ऐसा लगता है कि जीवन न केवल हर व्यक्ति को किसी आदर्श को प्रकट करने की सम्भावना प्रदान करता है बल्कि साथ ही विरोधी तत्त्व भी देता है जो ठोस रूप में उस युद्ध का प्रतिनिधित्व करते हैं जो उसे लड़ना है और जो विजय उसे प्राप्त करनी है ताकि उपलब्धि सम्भव हो सके।

१९५१ —माताजी

अपने-आपको जान लेना और अपने ऊपर प्रभुत्व पा लेना हर जीवित प्राणी के लिये एक अमूल्य आधिपत्य है। अपने-आपको जानने का अर्थ है अपनी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के हेतु को, अपने अन्दर जो कुछ होता है उसके क्यों और कैसे को जानना। अपने ऊपर प्रभुत्व पाने का अर्थ है वही करना जिसका तुमने निश्चय कर लिया है, उसके सिवा कुछ और नहीं, आवेशों, कामनाओं और सनकों पर कान न देना, उनका अनुसरण न करना।

स्पष्ट है कि बच्चे को नैतिक विधान बतलाना कोई आदर्श चीज नहीं है लेकिन उसके बिना रहना भी बहुत मुश्किल है। बच्चा जैसे-जैसे बढ़ता है, उसे सभी सामाजिक और नैतिक विधानों की सापेक्षता बतलाई जा सकती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताकि वह अपने अन्दर उच्चतर और सत्यतर विधान को पा सके। लेकिन इस बात में तुम्हें सावधानी से आगे बढ़ना चाहिये और सच्चे विधान को खोजने की कठिनाई पर बल देना चाहिये। जो लोग मानव विधानों को अस्वीकार करते और अपनी स्वाधीनता की घोषणा और "अपना जीवन जीने" का निश्चय करते हैं वे केवल अत्यधिक सामान्य प्राणिक गतिविधियों की—जिन्हें वे छिपाना चाहते हैं—आज्ञा मान कर ऐसा करते हैं और अपनी आंखों में न सही औरों की आंखों में उसका औचित्य सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। वे नैतिकता को केवल इसलिये लात मारते हैं क्योंकि वह उनकी प्राणिक वृत्तियों की तुष्टि में बाधक होती है।

किसी को भी नैतिक और सामाजिक विधानों पर निर्णय देने का अधिकार नहीं है—जब तक कि वह अपना आसन उनके ऊपर न जमा ले; तुम उन्हें तब तक नहीं त्याग सकते जब तक कि उनके स्थान पर किसी श्रेष्ठतर चीज को न ले आओ और यह इतना आसान नहीं है।

बहरहाल, बच्चे को तुम जो अच्छे-से-अच्छा उपहार दे सकते हो वह होगा उसे यह सिखाना कि वह अपने-आपको जान सके और अपने ऊपर अधिकार पा सके।

जुलाई १९३० —माताजी

आवश्यक रूप से वह **एकमात्र चीज** जो तुम्हें अध्यवसाय के साथ करनी चाहिये वह है, उन्हें यह सिखाओ कि वे अपने-आपको जानें और अपनी नियति का चुनाव करें—उस मार्ग को चुनें जिस पर वे चलनेवाले हैं; उन्हें अपने-आप पर नजर डालना सिखाओ, अपने-आपको समझाना और जो वे करना चाहते हैं उसके लिये संकल्प करना सिखाओ। यह उन्हें यह सिखाने की अपेक्षा अनन्तगुना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि पिछले जमाने में धरती पर क्या हुआ था या धरती कैसे बनी या . . . वस्तुतः वे सब तरह की चीजें जो बहुत जरूरी आधार हैं. यदि तुम दुनिया में सामान्य जीवन जीना चाहते हो . . .

१३ जून १९५६ —माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अपने-आपको जानना और अपने ऊपर अधिकार करना" इसका क्या मतलब है ?

इसका अर्थ है अपने आन्तरिक सत्य के बारे में सचेतन होना, अपनी सत्ता के अलग-अलग भागों और उनकी अपनी-अपनी क्रियाओं के बारे में सचेतन होना। तुम्हें यह मालूम होना चाहिये कि तुम यह क्यों करते हो, वह क्यों करते हो, तुम्हें अपने विचारों, अपने भावों, अपनी क्रियाओं, अपनी सारी गतिविधियों के बारे में, अपनी क्षमताओं के बारे में जानना चाहिये। और फिर अपने को जानना काफी नहीं है; इस ज्ञान के साथ सचेतन नियन्त्रण आना चाहिये। अपने-आपको पूरी तरह जानने का अर्थ है अपने ऊपर पूरी तरह नियन्त्रण करना।

लेकिन हर क्षण अभीप्सा होनी चाहिये।

आरम्भ करने के लिये कभी बहुत जल्दी या जारी रखने के लिये कभी बहुत देर नहीं होती। मतलब यह कि जब तुम बहुत छोटे होते हो तभी तुम अपना अध्ययन शुरू कर सकते हो और अपने-आपको जान सकते हो और धीरे-धीरे अपने ऊपर नियन्त्रण कर सकते हो। और जब तुम "बूढ़े" कहाने लगते हो, वयस्क हो जाते हो तब भी अपने-आपको ज्यादा-से-ज्यादा अच्छी तरह जानने, अपने ऊपर ज्यादा नियन्त्रण कर सकने के लिये बहुत देर नहीं हुई होती। यही है जीवन-विज्ञान।

अपने-आपको पूर्ण करने के लिये, पहले तुम्हें अपने बारे में सचेतन होना चाहिये।

१३ जनवरी १९५१ —माताजी

. . . तुम किसी देश विशेष में, किसी समाज या धर्म में पैदा हुए हो, इस समाज की एक अपनी ही सामुदायिक कल्पना होती है, इस देश या जाति की सामुदायिक कल्पना होती है, इस धर्म की एक सामुदायिक "रचना" होती है जो सामान्यतः बहुत दृढ़ होती है। तुम उसमें जन्म लेते हो। स्वभावतः जब तुम बहुत छोटे होते हो तो तुम इस विषय से बिल्कुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनभिज्ञ होते हो लेकिन तुम्हारे निर्माण पर इसकी क्रिया होती है—वह रचना, वह मन्द रचना घंटों पर घंटे, दिनों पर दिन, अनुभवों पर अनुभव जोड़ते हुए धीरे-धीरे चेतना की रचना करती है। तुम उसके नीचे होते हो मानों किसी घंटे (परिच्छादक) के नीचे हो। यह इस तरह की रचना है जो तुम्हें ढक लेती है और एक तरह से तुम्हारी रक्षा करती है और और तरह से तुम्हें काफी हद तक सीमित कर देती है। तुम इस सब को बिना जाने ही आत्मसात् करते जाते हो और इससे तुम्हारी अपनी रचना का अवचेतन आधार बनता है। यह अवचेतन आधार सारे जीवन तुम्हारे ऊपर क्रिया करता रहेगा—अगर तुम अपने-आपको उससे मुक्त करने की परवाह न करो। और उससे अपने-आपको मुक्त करने के लिये, सब से पहले तुम्हें उसके बारे में जानना चाहिये और पहला कदम ही सब से कठिन होता है क्योंकि यह रचना इतनी सूक्ष्म थी, इसका निर्माण तब हुआ था जब तुम सचेतन सत्ता भी नहीं बने थे, जब तुम किसी और जगत् से इस जगत् में चौंधियाते हुए गिरे थे। (हंसी) और यह सब तुम्हारे सहयोग के बिना ही हुआ था। अतः, तुम्हें कभी यह ख्याल तक नहीं आता कि उसमें कोई जानने लायक चीज हो भी सकती है। और यह तो दूर की बात है, कि वह चीज ऐसी है जिसे तुम्हें निकालना होगा।

१२ दिसम्बर १९५६ —माताजी

यहां मैं तुम्हें सो नहीं जाने देती। मैं तुम्हें समय-समय पर सच्ची चीज की याद दिलाती रहती हूं लेकिन अभी तुम सब बहुत छोटे हो, और हां, कुछ वर्षों की **जरूरत** होती है, गभीर आन्तरिक निर्माण के वर्षों की ताकि तुम ऐसी सत्ता बन सको जो अपने लिये सोचती है, अपनी निजी इच्छा के बारे में सचेतन है, अपनी प्रकृति के बारे में सचेतन है, मानव समूह से अलग अपने जीवन के प्रयोजन के बारे में सचेतन है। कुछ समय की जरूरत होती है। कुछ बच्चे **बहुत छोटी अवस्था** में ही शुरू कर देते हैं। अगर कोई बहुत जल्दी शुरू कर दे तो बीस बरस का होते न होते वह पूरी तरह निर्मित हो जाता है। लेकिन तुम्हें बहुत छोटी अवस्था में शुरू कर देना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये; सचेतन रूप से, बहुत सचेतन रूप से, तुम्हें अवलोकन के भाव के साथ अपने अन्दर की सारी गतिविधियों तथा उनका अन्यों के साथ सम्बन्ध से शुरू करना चाहिये . . . अपने अन्दर की सभी गतिविधियों का लम्बा अध्ययन जरूरी है ताकि तुम बस एक ऐसी सत्ता को मूर्त कर सको जो जरा सचेतन, **जरा** सचेतन है।

२२ सितम्बर १९५४ —माताजी

लेकिन यह जानना बहुत कठिन है कि अपनी स्वाधीनता को अपने-आप कैसे व्यवस्थित किया जाय। फिर भी अगर तुम्हें इसमें सफलता पानी है, अपने-आपको अपना अनुशासन देना है, केवल परीक्षाएं पास करने, अपनी जीवन-वृत्ति बनाने, अपने अध्यापकों को खुश करने, बहुत से इनाम पाने, उन सभी सामान्य कारणों के लिये नहीं जो बच्चों के आगे आते हैं, जैसे डांट या सजा न पाने के लिये—हम इन सब कारणों को छोड़ देते हैं बल्कि उच्चतर कारणों के लिये अगर तुम अपने ऊपर कोई अनुशासन लगा सको, हर एक अपना अलग अनुशासन लगाये, दूसरे की नकल करने की जरूरत नहीं, इसलिये अनुशासन लगाओ कि तुम प्रगति करना और अपने अन्दर से अच्छे-से-अच्छा निकालना चाहते हो, तो, . . . ओह ! तुम उनसे कहीं अधिक श्रेष्ठ होगे जो सामान्य विद्यालयों के अनुशासन का अनुसरण करते हैं। मैं इसीका परीक्षण करना चाहती थी।

१३ जून १९५६ —माताजी

सभी व्यक्तिगत सत्ताओं और चेतना के सभी छोटे-छोटे केन्द्रों का सृजन यही काम करने के लिये किया गया था—जीवन का यही कारण है—व्यक्तिगत सत्ता का प्रतिनिधित्व करनेवाले स्पन्दनों के किसी कुलयोग के बारे में पूरी तरह सचेतन होना, उनमें व्यवस्था लाना, अपना मार्ग ढूंढ निकालना और उस पर चलना।

और चूंकि मनुष्य उसे नहीं जानते और नहीं करते तो जीवन आकर उन्हें एक थप्पड़ इधर और एक थप्पड़ उधर लगाता है . . . वे कष्ट पाते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीखते-चिल्लाते और कराहते हैं। लेकिन इसका कारण केवल वही है और कोई कारण नहीं। कारण यही है कि उन्होंने वह छोटा-सा काम नहीं किया है। अगर, जब वे बहुत छोटे थे तब कोई उन्हें यह काम सिखानेवाला होता और समय बरबाद किये बिना उन्होंने वह काम कर लिया होता तो उन्होंने जीवन यशस्वी ढंग से बिताया होता और कष्ट पाने की जगह वे अपनी नियति के सर्वशक्तिमान् स्वामी होते।

—माताजी

२९ जुलाई १९५३

सब से अधिक परेशान करनेवाली खोज यह है कि हमारा हर भाग, बुद्धि, इच्छा, ऐन्द्रिय-मन, स्नायविक या कामना-पुरुष, हृदय, शरीर में से हर एक का मानों एक पृथक् जटिल व्यक्तित्व तथा औरों से एकदम अलग व्यक्तित्व है। हमें पता चलता है कि हम एक नहीं, बहुत-से व्यक्तित्वों से बने हैं और हर एक की अपनी प्रकृति और अपनी मांगें होती हैं। हमें इस सब का लेखा-जोखा देखना और उनके साथ व्यवहार करना होता है, यह जानने के लिये कि हमारी प्रकृति का गुप्त द्रव्य क्या है, उसकी घटक और परिणामी गतिविधियां क्या हैं और उस सारे के अन्दर एक दिव्य चक्र, सच्चे सामंजस्य और आलोकमय व्यवस्था का निर्माण करना होता है।

—श्रीअरविन्द

एक और गुण है जिसे बच्चे में छोटी उम्र से ही पैदा करना चाहिये, वह है बेचैनी की भावना, एक नैतिक असन्तुलन जिसका अनुभव उसे तब होता है जब वह अमुक चीजें करता है, इसलिये नहीं कि ऐसा करने के लिये उसे मना किया गया है, इसलिये नहीं कि उसे दण्ड पाने का डर है, बल्कि सहज भाव से। उदाहरण के लिये जो बच्चा शरारत से अपने साथी को चोट लगा देता है, यदि वह अपनी सामान्य स्वाभाविक स्थिति में हो तो बेचैनी, अपनी सत्ता में एक गहरे दुःख का अनुभव करेगा क्योंकि उसने जो किया है वह उसके आन्तरिक सत्य के विपरीत है।

क्योंकि सभी शिक्षाओं के बावजूद, विचार जो कुछ सिखा सकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके बावजूद, गहराई में कोई चीज है जिसे पूर्णता की, महानता की, सत्य की अनुभूति है और इस सत्य के विरुद्ध जितनी गतिविधियां हैं वे सब इसका दुखद रूप से विरोध करती हैं। अगर बच्चा आस-पास के वातावरण से बिगड़ नहीं गया है, अपने चारों ओर के शोचनीय उदाहरणों से बिगड़ नहीं गया है तो अगर वह सामान्य अवस्था में है तो सहज भाव से, किसीके कुछ कहे बिना ही अपनी सत्ता के सत्य के विपरीत कोई चीज करने पर बेचैनी का अनुभव करेगा। बाद में प्रगति के लिये उसके प्रयास ठीक इसीपर आधारित होने चाहियें।

८ जनवरी १९५१ —माताजी

नैतिक प्रशिक्षण का पहला नियम है सुझाव देना और आकृष्ट करना, हुकुम देना या आरोपित करना नहीं। सुझाव का सबसे अच्छा तरीका है व्यक्तिगत उदाहरण द्वारा, दैनिक बातचीत और दिन-पर-दिन पढ़ी जानेवाली किताबों से . . .

. . . इस बात का खास ख्याल रखना होगा कि अनगढ़ गुणों को असफलता मानकर त्याग न दिया जाय। कई युवा प्रकृतियों में जंगलीपन या लापरवाही बल, महानता और उदात्तता के अतिशय छलकने के कारण होती है। उन्हें हतोत्साह नहीं, शुद्ध करना चाहिये।

—श्रीअरविन्द

और अगर तुम ऐसे सौभाग्यशाली हो कि ऐसी अवस्था में हो जहां तुम बचपन से ही सहायता और पथ-प्रदर्शन पा सकते हो तो छोटी अवस्था से ही जीवन की भगोड़ी खुशियों और आभासी सुखों और पूर्णता और सत्य के जगत् के अद्‌भुत जीवन, क्रिया और वृद्धि में विवेक करना सीखो, उस जगत् में सभी सामान्य सीमाएं, सभी सामान्य अक्षमताएं दूर हो जाएंगी।

जब तुम बहुत छोटे होते हो और जैसा कि मैं कहती हूं "सुजन्मे" होते हो यानी अपने भीतर सचेतन चैत्य लेकर आते हो तो हमेशा बालक के स्वप्नों में एक तरह की अभीप्सा होती है जो बच्चे की चेतना में एक तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की महत्त्वाकांक्षा होती है, किसी ऐसी चीज के लिये जो कुरूपता के बिना सुन्दरता, अन्यायरहित न्याय, बिना सीमा के अच्छाई, चेतना, सतत सफलता, सतत चमत्कार हो। जब तुम छोटे होते हो तो चमत्कारों के स्वप्न देखते हो, तुम चाहते हो कि समस्त दुष्टता गायब हो जाये, हर चीज हर समय आलोकमय, सुन्दर, सुखी हो, तुम्हें ऐसी कहानियां पसन्द आती हैं जिनका अन्त सुखद हो। तुम्हें इसी पर भरोसा करना चाहिये। जब शरीर अपने दुःखों और सीमाओं का अनुभव करे तो तुम्हें उनके स्थान पर इस स्वप्न को स्थापित करना चाहिये, एक ऐसे बल का स्वप्न जिसकी कोई सीमा न होगी, एक ऐसे सौन्दर्य का जिसमें कोई कुरूपता न होगी और अद्भुत क्षमताओं का स्वप्न। तुम हवा में ऊपर उठने के स्वप्न देखते हो, जहां भी जरूरत हो वहीं पहुंच जाने के, जब चीजों में गड़बड़ हो तो उन्हें ठीक करने के, रोगियों को चंगा करने के सपने देखते हो, वस्तुतः जब तुम छोटे होते हो तो सब प्रकार के सपने देखते हो . . .। साधारणतः मां-बाप और अध्यापक ऐसे सपनों पर ठंडा पानी डाल देते हैं, वे कहते हैं, "अरे ! यह तो स्वप्न है, यह सच नहीं है।" सचमुच उन्हें इससे उल्टा करना चाहिये ! बच्चों से कहना चाहिये, "हां, तुम्हें यह चरितार्थ करने की कोशिश करनी चाहिये, यह केवल सम्भव ही नहीं **निश्चित** है अगर तुम अपने अन्दर उस भाग के सम्पर्क में आओ जो इसे करने में सक्षम है। तुम्हें अपने जीवन को इसी दिशा में ले जाना, उसे संगठित करना और सच्ची यथार्थता की उस दिशा में विकसित होना चाहिये जिसे सामान्य जगत् भ्रम कहता है।

३१ जुलाई १९५७ —माताजी

. . . समस्त जीवन एक शिक्षा है जिसे न्यूनाधिक सचेतन रूप से, न्यूनाधिक इच्छा के साथ आगे बढ़ाया जाता है। कुछ स्थलों पर यह ऐसी गतिविधियों को बढ़ावा देती है जो प्रकाश को प्रकट करती हैं और कुछ अन्य स्थलों पर इसके विपरीत उन्हें जो छाया को व्यक्त करती हैं। अगर परिस्थितियां और वातावरण अनुकूल हों तो प्रकाश बढ़ेगा और छाया को हटायेगा अन्यथा इससे उल्टा होगा। इस तरह व्यक्ति का चरित्र प्रकृति की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनकों तथा जड़ भौतिक तथा प्राणिक जीवन के नियतिवाद के अनुसार ठोस रूप लेना शुरू करता है, यदि कोई उच्चतर तत्त्व समय रहते आ जाय, एक सचेतन इच्छा-शक्ति आ जाय जो प्रकृति को अपनी सनक भरी राह न लेने दे और वह आकर इनके स्थान पर स्पष्टदर्शी अनुशासन को ला बिठाये। शिक्षा की युक्तिसंगत पद्धति से हमारा मतलब इस सचेतन इच्छा-शक्ति से ही है।

इसीलिये यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि बच्चे की प्राणिक-शिक्षा यथासम्भव जल्दी-से-जल्दी शुरू की जाय, वस्तुतः जैसे ही वह अपनी इन्द्रियों का उपयोग करना सीखे। इस तरह बहुत-सी बुरी आदतों से बचा जा सकेगा और बहुत-से हानिकर प्रभावों को दूर किया जा सकेगा।

—माताजी

१९५१

इतरा का पुत्र

इतरा का बेटा ऋषि उद्दालक का पुत्र था। उसकी मां एक नीच जाति की स्त्री थी जिसे कोई नाम देने की भी जरूरत न समझी गयी। सब लोग उसे इतरा या अन्या कह कर पुकारते थे। जहां उद्दालक के अन्य पुत्रों को सुशिक्षित, सुसंस्कृत ब्राह्मण बनाने की तैयारी हो रही थी वहां इतरा के बेटे को कोई नाम तक देने में कंजूसी की जा रही थी। इस बालक में उच्च जीवन के लिये अदम्य अभीप्सा और अद्भुत अन्तर्दृष्टि थी। बार-बार लांछन और अपमान सहकर भी वह हर यज्ञ या होम में भाग लेने के लिये ललचाया करता था परन्तु असफलता और तीक्ष्ण व्यंग ही उसके पल्ले पड़ते थे। एक दिन बेटे के दुःख और अपमान से दुःखी होकर इतरा ने उसका मन बहलाने के लिये एक वेदी की रचना की। मां-बेटे की भोली-भाली प्रार्थना से आर्द्र होकर देवी मही (पृथिवी) ने दर्शन दिये और इतरा के बेटे को महीदास नाम दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ वर्ष बाद युवक महीदास ने दुर्भिक्ष का भयानक मुख देखा। उस विकराल दुर्भिक्ष ने चराचर प्राणियों को, यहां तक कि धरती को भी शुष्क और निष्प्राण बना दिया। जब महीदास के प्रिय मित्र संदीप ने बीमार इतरा के हिस्से का भोजन भी लुक-छिप कर खा लिया तो महीदास ने निश्चय किया कि मनुष्य को जानवर बना देनेवाली इस भयंकर भूख के रहस्य को जानकर ही रहेंगे। इस निश्चय के साथ उन्होंने ध्यान करना शुरू किया। कई बार इतरा तथा संदीप उन्हें बुलाने आये किन्तु उन्होंने पलक न खोली। ध्यान में ही भगवान् ने उन्हें सृष्टि तथा अन्न का रहस्य बता दिया। उन्होंने शक्ति के अनन्त सागर को देखा, उसकी तरंगों में से एक विराट् दिव्य मानव आकृति ने जन्म लिया। इस विराट् पुरुष के चारों ओर अन्य देव मूर्तियां दिखायी दीं। अन्त में उन्हें समझाया गया कि भगवान् ने अपनी सृष्टि के लिये अन्धकारमय जड़ पदार्थ तक में प्रवेश किया। भौतिक जीवन के लिये पोषण की आवश्यकता थी इसलिये प्रकाशमय सर्वोच्च ब्रह्म ने प्रेम से अपनी आहुति दी और अन्न बन गया (अन्नं वै ब्रह्म)।

दुर्भिक्ष से विचलित होकर इस प्रदेश के राजा त्रिविक्रम ने यज्ञ-याग तथा श्रद्धा-भक्ति का त्याग कर दिया।

राजपुरोहित वगैरह चिन्तित होकर उपाय सोच रहे थे कि महीदास वहां आ पहुंचे। उन्होंने राजा के साथ बात-चीत करके उन्हें यह समझाया कि समस्त सृष्टि में एक अद्भुत सामंजस्य है। उस सामंजस्य का प्रणेता है ब्रह्म। इसलिये स्थूल, सूक्ष्म पदार्थ या भावना किसी को ब्रह्म से पृथक् नहीं गिना जा सकता। इस तरह महीदास ने त्रिविक्रम के अन्दर श्रद्धा-भक्ति को फिर से स्थापित किया। इस विजय के बाद महीदास का नाम सारे प्रदेश में सुविख्यात हो गया। अन्त में ऋषि उद्दालक अपनी अवज्ञा के लिये पछताते हुए पुत्र को अपनाने के लिये उसकी कुटिया पर पधारे। एक अन्त्यज, महीदास के मन्त्र आज ऐतरेयोपनिषद् के नाम से प्रसिद्ध हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

हम अपने सभी पाठकों को नये साल की शुभ कामनाएं भेजते हैं। आश्रम में नववर्ष के लिये विशेष रूप से तैयार किया गया संगीत सवेरे-ही-सवेरे बजाया जाता है फिर नौ बजे से कैलैंडर-वितरण होता है और शाम को शारीरिक प्रशिक्षण विभाग की ओर से बैंड बजता है और अन्त में ध्यान होता है।

सोसायटी बीच ऑफिस में सदस्यगण सवेरे ८.३० बजे इकट्ठे होते हैं। दिव्य ज्योति प्रेम और शक्ति के लिये अभीप्सा के साथ दीपक जला कर अपने-आपको विश्व प्रभु की सेवा में फिर से समर्पित करते हैं।

३ जनवरी नवजात जी का जन्मदिन है। ३ और ४ को पांडिचेरी विश्व-विद्यालय में नवजात स्मारक निधि की ओर से माताजी और श्रीअरविन्द के बारे में डा. नाडकर्णी के भाषण होंगे।

१३ जनवरी श्री नलिनी कान्त गुप्त की जन्म शताब्दी का दिन है जो बहुत से स्थानों पर मनायी जायेगी।

नवम्बर-दिसम्बर के विशेष अवसरों के उपलक्ष्य में निम्नलिखित सन्देश बांटे गये थे।

१७ नवम्बर १९८८

जिस चीज की सब से अधिक मांग की जाती है वह है प्रकाश की ओर मुड़ने में अध्यवसाय। हम जितना सोचते हैं उसकी अपेक्षा प्रकाश हमारे अधिक नजदीक है और किसी भी समय उसका मुहूर्त्त आ सकता है।

—श्रीअरविन्द

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्फुट वचन

अपने अज्ञान में हम बच्चों जैसे हैं, हम सीधे और बिना सहारे चलने में अपनी सफलता पर गर्व करते हैं तथा चलने के लिये इतना उत्सुक रहते हैं कि अपने कंधों पर मां के सम्भालने वाले स्पर्श को अनुभव ही नहीं करते। जब हम जागते और पीछे देखते हैं तो पाते हैं कि सर्वदा भगवान् ही हमें पकड़े हुए चला रहे थे।

*

पहले-पहल जब मैं पाप में जा गिरता तो रोया करता था और अपने ऊपर क्रुद्ध हो उठता था और भगवान् से भी नाराज हो जाता कि उन्होंने यह कैसे होने दिया। उसके बाद मैं बस इतना ही पूछ पाता था कि ऐ मेरे बाल सखा, तूने मुझे फिर से कीचड़ में क्यों लुढ़का दिया? फिर मुझे यह भी बहुत दुस्साहस और धृष्टता की बात लगी। मैं बस चुपचाप उठ खड़ा होता, उसे कनखियों से देखता और अपने-आपको धो डालता था।

*

भगवान् ने जीवन को ऐसे व्यवस्थित किया है कि संसार आत्मा का पति बन गया है और कृष्ण हैं उसके दिव्य यार। हमारे ऊपर संसार की सेवा करने का एक ऋण है और हम उससे एक विधान के द्वारा, एक बाध्य करनेवाले मत के द्वारा तथा दुःख-सुख के सार्वजनीन अनुभव के द्वारा बंधे हुए हैं, परन्तु हमारे हृदय की पूजा, हमारी शक्ति और गुप्त आनन्द तो हमारे दिव्य प्रेमी के लिये ही हैं।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् का आनन्द गूढ़ और अद्भुत है; यह एक रहस्य की वस्तु है और एक ऐसा परमोल्लास है जिस पर समझदारी उपहास करने के लिये मुंह बनाया करती है, परन्तु जिस आत्मा ने उसे एक बार चख लिया है वह कभी उसका त्याग नहीं कर सकती, भले ही उसके कारण संसार में चाहे जितनी बदनामी, पीड़ा और परेशानी उठानी पड़े।

—श्रीअरविन्द

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर—२४७००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'Live in His Being, Shine with His Light, Act with His power, Rejoice with His Bliss."

—The Mother

With Best Compliments from:

Auroplast India Limited

Manufacturers of HDPE/PP Circular Woven Sacks

Administrative Office:

77, 'ATLANTA', NARIMAN POINT, BOMBAY-400 021

Phones: 240277, 240367 Telex: 011-4104 AEPL IN

Gram: AUROSACK, BOMBAY

WORKs:

PLOT NO. G 1/3 MIDC AREA, BOISAR,

DIST. THANE, MAHARASHTRA

Phone: 682, 491, 591 Telex: 132-219 APPL IN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
A good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

new Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

PONDICHERRY

Telegram: SAKAR
Phone: Town Office: 26780
Factory: 24423 24424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४ नवंबर १९८८

अतिमानस एक सत्य है और वस्तुओं की प्रकृति के अनुसार उसका आविर्भाव अनिवार्य है।

—श्रीअरविंद

५ दिसंबर १९८८

तूने हमें स्पष्ट शब्दों में आश्वासन दिया है कि तू हमें तब तक कभी न छोड़ेगा, जब तक कि तेरा काम चरितार्थ न हो जाय।

हम तेरे रूपान्तर के कार्य को चरितार्थ करने के लिये धरती पर हैं। यही हमारी एकमात्र इच्छा, हमारी एकमात्र तल्लीनता है। वर दे कि यही हमारी एकमात्र व्यस्तता भी हो, हमारे सभी कर्म इस एकमात्र लक्ष्य की ओर बढ़ने में हमारी सहायता करें।

—माताजी

फरवरी के तीसरे सप्ताह में सोसायटी बीच ऑफिस में स्वाध्याय मण्डल होगा जिसमें श्रीअरविंद की पुस्तक "द मदर" का अध्ययन किया जायगा। मई के अन्तिम सप्ताह में, मुख्य रूप से भारत के विभिन्न भागों से आये हुए अध्यापकों के लिये शिक्षा शिविर होगा जिसमें शिक्षा के सच्चे सिद्धान्तों के बारे में बातचीत होगी। अगस्त में सोसायटी का वार्षिक अधिवेशन होगा। सभी सदस्यों को सस्नेह निमन्त्रण है, इन कार्यक्रमों के बारे में अधिक जानकारी के लिये श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी–६०५००२ से पत्र-व्यवहार करें।

श्री किशोरी लाल ढांढणिया भोपाल, इन्दौर, बड़ौदा, किशनपुर आदि का चक्कर लगाने गये थे। इन्दौर में "मध्य प्रदेश कॉनफरेंस" हुई जिसमें साधना और संगठन के बारे में बातचीत हुई। सभा में अच्छी हाजिरी थी और अखबारों ने भी काफी रस लिया।

बड़ौदा में "अखिल भारतीय दर्शन परिषद्" की बैठक हुई। उसका एक अधिवेशन श्रीअरविंद निवास में हुआ जिसका विषय था, "श्रीअरविंद दर्शन की विशेषताएं" इस विषय पर अनेक निबन्ध पढ़े गये, लगभग १०० प्रतिनिधि उपस्थित थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

किशनपुर में उत्तर प्रदेश के केंद्रों और शाखाओं की सभा हुई। यह एक छोटा सा गांव है पर यहां काफी वर्षों से लोगों को श्रीअरविंद और माताजी का परिचय प्राप्त है। यहां के युवकों में भी काफी उत्साह है और आस-पास के गांवों में भी कई केंद्र हैं। यहां निश्चय किया गया कि प्रयाग के कुम्भ के अवसर पर श्रीअरविंद साहित्य की एक दुकान खोली जाय जिसमें काम करने के लिये कई युवकों ने आगे कदम उठाया। श्रीअरविंद के जीवन की झांकी, आश्रम में नयी शिक्षा, फूलों की मूक वाणी आदि पर हिन्दी में वीडियो तैयार किये जाएं, हिन्दी पुस्तक-विक्रय के काम को भी बढ़ाने की योजना बनी।

श्री चम्पक लाल जी की उपस्थिति में बड़ौदा में 'गुजरात श्रीअरविंद सोसायटी' का अधिवेशन हुआ जिसका उद्घाटन वहां के राज्यपाल ने मंगल दीप जला कर किया। श्रीअरविंद आरोग्य भवन की नींव रखी गयी।

श्री गोपाल भट्टाचार्य ने नवम्बर में मणिपुर का चक्कर लगाया और वहां के कार्य-कर्ताओं से संगठनसम्बन्धी बातचीत की और कई भाषण दिये।

बंगाल में श्री नलिनी कान्त गुप्त और सुधीर सरकार की जन्म शताब्दी के सिलसिले में भारत के साथ सम्बन्ध रखनेवाले बहुत से कार्यक्रम हुए। दीघीरिआ में सर्वश्री बारीन घोष, नलिनी कान्त गुप्त, विभूति सरकार, प्रफुल्ल चक्रवर्ती आदि श्रीअरविंद के क्रान्तिकारी साथियों की स्मृति में एक संगमरमर के फलकका उद्घाटन हुआ।

पाटन (गुजरात) में एक नया केंद्र खुला, उसका पता है—

श्रीअरविन्द सोसायटी सेंटर
द्वारा/ श्रीमती अमृता. पी. पटेल
४ कॉलेज टीचर्स सोसायटी, राजमहल रोड, पाटन—३८४२६५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा

अखिल भारतीय पत्रिका

DUPLICATE

जून १९८९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

सन्देश : महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष	श्रीअरविंद	१
'संपादकीय' : आशा—कुछ सहमी-सहमी	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		३
कारावास की कहानी		६
सोसायटी समाचार		३८

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के १० और पुरोधा के १४ शीघ्र भेजें अन्यथा अगला अंक वी. पी. पी. से जायगा। वी. पी. पी लौट आने से हमें बहुत हानि होती है। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो २२५ और २७५ एक साथ या किस्तों में देकर अग्निशिखा और पुरोधा के या ५०० देकर दोनों के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

अग्निशिखा वार्षिक १०.०० आजीवन २२५.००

श्रीअरविंद सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष

जो घटनाएं संसार को विचलित कर देती हैं, बहुधा मामूली परिस्थितियों का परिणाम होती हैं। जब बृहद् परिवर्तन और अप्रतिरोध्य आंदोलन आगे बढ़ते रहते हैं तब आश्चर्य होता है कि कैसे एक घटना मात्र, एक संयोग ऐसी परिस्थितियों की शृंखला की ओर ले जाता है जो किसी राष्ट्र का या पृथ्वी का चेहरा बदल देती है। ऐसे समय जरा-सा इधर-उधर मुड़ने के कारण अनुपात में बेहद बड़े परिणाम आते हैं। ऐसे प्रसंग पर ही हमें अत्यधिक तीखा अनुभव होता है एक ऐसी शक्ति की वास्तविकता का जो घटनाओं की व्यवस्था करती है और मनुष्यों के तोड़-जोड़ को पराजित कर देती है। केवल एक व्यक्ति के आकस्मिक कार्य द्वारा बहुत-सी चीजों का अंत आ जाता है। एक स्पर्श मात्र से एक पूरा संसार लुप्त हो जाता है और दूसरे का सृजन होता है। निश्चिति गायब हो जाती है और हम अनुभव करते हैं कि हिंदुओं के प्रलय, एक युग से दूसरे युग के संक्रमण का सचमुच अर्थ क्या होता है और यह विचार कितना सच है कि लंबे अर्से से तैयार होते हुए परिवर्तनों को द्रुत संक्रमणों द्वारा प्रभावित किया जाता है। ऐसा परिवर्तन सारे संसार में आ रहा है और प्रायः सभी देशों में ऐसी घटनाएं घट रही हैं जिनका परिणाम उनके अभिनेता देख नहीं पाते। बड़े देशों की सतहपर छोटे-मोटे प्रसंग गुजरते हैं, इनमें से कई गुजर जाते हैं, भुला दिये जाते हैं और कई भविष्य को तेजी से आगे बढ़ाते हैं।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

आशा—कुछ सहमी-सहमी

दो घटनाओं को याद कर मन चिंता और आशा के झकोलों में ऊभ-चू कर रहा है।

हमारा नगर न बहुत बड़ा है न छोटा। एक दिन कराटे-प्रेमी मित्र ने अपना दंगल देखने का निमंत्रण दिया। वहां का दृश्य देखकर विचारों का तूफान जागा। सबसे पहले घोषित समय के आधा घंटा बाद कार्यक्रम शुरू हुआ; फिर उनकी मार्च पास्ट होनी थी। पांच दल थे, उन्हें पंक्ति में ढंग से खड़ा करने में और बीस मिनट लग गये। मन में यह विचार कौंधा, भारतीय खिलाड़ियों की अनुशासनहीनता उनकी पराजय का बड़ा अंग है। यहां भी उसीका प्रदर्शन देखकर निराशा हुई, लेकिन उसके बाद जब दंगल शुरू हुआ तो खिलाड़ियों का जो अनुशासन और संयम देखा तो आश्चर्य तो हुआ ही साथ-साथ यह आशा भी बनी कि भारतीय जनता एक बार ठान ले तो अनुशासन और संयम-पालन में किसीसे कम नहीं।

उसके बाद लड़कियों ने अपने करतब दिखाये तो दिल बल्लियों उछलने लगा। दक्षिण के इस कोने में लड़कियां इस तरह आगे बढ़कर कराटे जैसी वीर-विद्या को अपनायेंगी ऐसी आशा कतई न थी। मन में सोचा, जब स्त्री-शक्ति जाग रही है, मतलब आधी आबादी जाग उठी है, तब भारत का उत्थान निकट है।

दूसरी घटना से भारतीय जनता में अंतर्निहित आस्था, श्रद्धा का प्रमाण मिला। एक अधेड़, सामान्य स्त्री रेल द्वारा लंबी यात्रा कर रही थीं। रेल के डिब्बे की खिड़की में सीखचों के कारण बाहर से चोरी का खास डर नहीं रहता इसलिये महिला ने खिड़की के पास ही रात को विश्राम करने की व्यवस्था की। आधी राततक निश्चिंत सोती रही, फिर एक बिजली का झटका-सा लगा और उन्हें लगा कि कोई उनके बाल झटके दे-देकर खींच रहा है, और वह भी खिड़की के बाहर खड़ा कोई व्यक्ति। यह स्त्री न कराटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानती थीं, न कसरतबाज थीं; एकदम सामान्य घरेलू स्त्री। वह न चिल्लायीं, न घबरायीं, उन्होंने अपने इष्टदेव का स्मरण किया और दोनों हाथ उठाकर उस व्यक्ति के दोनों हाथ कसकर पकड़ लिये। वे उसे देख तो न पाती थीं किंतु उन्होंने अनुभव किया कि वह कसमसा रहा है। कुछ देर पकड़े रखने के बाद उन्होंने उसे धकेल दिया। बहुत संभव है, उसकी नजर उनके गले की जंजीर पर हो। यह छोटी घटना जन-मानस की श्रद्धा की पुष्टि करती है क्योंकि उन महिला के अंदर सामान्य अवस्था में ऐसी शक्ति न थी कि वे एक वयस्क पुरुष का भार केवल अपने दो हाथोंपर ले सकें। वे बार-बार कह रही थीं कि मेरी देवी मां ने ही मेरी सहायता की।

ये हैं हमारे आधुनिक भारत के चित्र जिनसे आशा जागती है किंतु थोड़ी सहमी-सहमी।

—अनुबेन

दैनन्दिनी

जून

१. ज्यादा ऊंचा, और भी ऊंचा, जो चरितार्थ हो चुका है, उससे हम कभी संतुष्ट न हों। किसी उपलब्धि को पाकर हमें वहीं रुक जाना न चाहिये। हम हमेशा आगे, बिना रुके, ऊर्जा के साथ, अधिक पूर्ण अभिव्यक्ति की ओर कूच करते रहें।

२. बीते कल की विजय आनेवाले कल की विजय के लिये एक सीढ़ी मात्र है।

३. हे दिव्य मां, तेरी कूच विजयिनी और अबाधित है, और तेरे साथ सर्वांगीण प्रेम में जो एक हो जाता है, वह हमेशा बढ़ते क्षितिजों की ओर अबाध गति से यात्रा करता रहता है . . .

४. हे दिव्य मां, बाधाओं पर विजय प्राप्त होगी, शत्रु को शांत किया जायेगा। अपने सर्व-श्रेष्ठ प्रेम से तू समस्त पृथ्वीपर शासन करेगी और प्रत्येक चेतना तेरी शांत प्रसन्नता से प्रकाशित हो उठेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. देखो ! ये रहे पुष्प और आशीर्वाद ! यह है दिव्य प्रेम का स्मित। उसमें न पसंद है, न विकर्षण। वह सबकी ओर उदार धारा की नाईं बहता है और अपने अद्‌भुत उपहारों को कभी वापस नहीं लेता।

६. प्रत्येक बार जब तेरी दिव्य सांस के स्पर्श से एक हृदय उछल पड़ता है, तो थोड़ा अधिक सौंदर्य धरती पर जन्म लेता है, मधुर सुगंध से वातावरण मादक हो उठता है, सब कुछ अधिक मैत्रीपूर्ण हो जाता है।

७. सभी अस्तित्वों के स्वामी, तेरी शक्ति कितनी महान् है कि तेरे आनंद का एक अणु इतने सारे अंधकार को, इतने सारे दुःखों को मिटाने के लिये पर्याप्त है।

८. इन धन्य मुहूर्तों पर पृथ्वी उल्लास की स्तुतियां गाती है, हरियाली सुख से रोमांचित हो कांप-कांप उठती है, हवा प्रकाश से स्पंदित हो रही है, वृक्ष अपनी सबसे आर्द्र प्रार्थना स्वर्गतक ऊपर उठाते हैं।

९. अपने सर्व-शक्तिमान् प्रेम की जीवंत और उद्धारक ज्वाला को जीवनदायिनी वर्षा की तरह बूंद-बूद बनकर तू नीचे गिरने देता है।

१०. मैं जानती हूं कि हम अयोग्य हैं, मैं जानती हूं कि संसार अबतक तैयार नहीं है। लेकिन मैं तेरी दिव्य कृपा में पूर्ण विश्वास रखकर तुझे पुकारती हूं और मैं जानती हूं कि तेरी दिव्य कृपा रक्षा करेगी।

११. मैं तेरे अंदर डुबकी मारती हूं और स्वयं को एक बालक के विश्वास के साथ तुझमें लीन होकर तुझसे उस आवश्यक प्रेरणा और शक्ति की प्रतीक्षा करती हूं ताकि अपने अंदर और अपने चारों ओर की भूलें ठीक कर सकूं।

१२. मैं अपनी सारी सत्ता से अभीप्सा करती हूं कि तू सम्राट् बनकर शासन करे और मेरे मन, हृदय और शरीर का स्वामी बन जाये। वर दे कि वे तेरे अज्ञाकारी यंत्र और विश्वसनीय चाकर बन जायें।

१३. मेरे सारे विचार तेरी ओर मुड़ते हैं, मेरे सब कार्य तुझे समर्पित हैं।

१४. तू ही अनुभूति को सारगर्भित बनाता है। तू जीवन को प्रगतिशील बनाता है, प्रकाश के आगे अंधकार को अदृश्य होने के लिये बाधित करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५. हे परम स्वामी जो मेरी सत्ता में और प्रत्येक वस्तु में चमकता है, वर दे कि तेरा प्रकाश सर्वत्र हो, कि सबके लिये तेरी शांति का राज्य स्थापित हो।

१६. मुझे जो बनना चाहिये उसे तू बना सकेगा।

१७. अब भय नहीं, बेचैनी नहीं, कोई दुःख नहीं, प्रसन्न शांति के सिवा कुछ नहीं, संपूर्ण विश्वास, परम अडिग शांति !

१८. परछाईं और भ्रम, घुल जाओ, हे दुःख, धूमिल होकर अदृश्य हो जा, परम प्रभु, क्या तू इनमें विद्यमान नहीं ?

१९. सबके आगे पूर्ण समता बनाये रखो तो शाश्वत वहां विद्यमान रहेगा।

२०. जिस तरह निस्तब्धता में लौ जलती है, उस सुगंध की तरह जो बिना लहराए सीधी ऊपर उठती है, मेरा प्रेम तेरी ओर उठता है।

२१. तेरी शांति मेरे अंदर विद्यमान है और उस शांति में मैं केवल तुझे हर वस्तु में शाश्वत की अचंचलता के साथ उपस्थित देखती हूं।

२२. करनेवाला केवल तू है, मैं केवल एक यंत्र . . .

२३. सुन, ओ पृथ्वी, उठती हुई आवाज की ओर कान दे और नया साहस बटोर ले।

२४. तू चरम शांति है, अमिश्रित हर्ष और पूर्ण प्रसन्न शांति है।

२५. जो तेरी खोज उत्कटता से करते हैं उन्हें समझना चाहिये कि जब तेरी आवश्यकता होगी तू वहां अवश्य होगा।

२६. तेरी महिमा की घोषणा की जाये और जीवन पवित्र बन जाये, मनुष्यों के हृदय को वह रूपांतरित कर दे और तेरी शांति का शासन हो।

२७. गाओ, महाद्वीपो जातियो, हे मनुष्यो गाओ, दिव्य सामंजस्य यहां आ गया है।

२८. तेरी निश्चित विजय के पूर्ण विश्वास में मुझे सर्वोत्तम शांति और अपराजेय शक्ति मिलती है।

२९. हे प्रभु, तू ही मेरी शरण और मेरा आशीर्वाद है, मेरी शक्ति, मेरा स्वास्थ्य, मेरी आशा और मेरा साहस तू ही है।

३०. मेरी सारी सत्ता तेरे सामने अबाध कृतज्ञता और अनवरुद्ध आराधना में दंडवत् है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारावास की कहानी

[इस अनुवाद में जहांतक हो सका हमने श्रीअरविन्द की मूल बंगला के साथ-साथ चलने की कोशिश की है। —सं०]

मैं पहली मई सन् १९०८ ई., शुक्रवार के दिन 'वंदेमातरम्' के दफ़्तर में बैठा था, तभी श्रीयुत श्यामसुंदर चक्रवर्ती ने मुजफ्फरपुर का एक टेलीग्राम मेरे हाथ में थमाया। पढ़कर मालूम हुआ कि मुजफ्फरपुर में बम फटा है, जिससे दो मेमों की मृत्यु हो गयी है। उसी दिन के 'एम्पायर' अंग्रेज़ी अखबार में यह भी पढ़ा कि पुलिस कमिश्नर ने कहा है—हम जानते हैं, इस हत्याकांड में किन-किन का हाथ है और वे शीघ्र ही गिरफ़्तार किये जायेंगे। तब मैं यह नहीं जानता था कि मैं ही था इस संदेह का मुख्य निशाना, पुलिस के विचार में प्रधान हत्यारा, राष्ट्र-विप्लव-प्रयासी युवकदल का मंत्रदाता और गुप्त नेता। नहीं जानता था कि आज का दिन ही होगा मेरे जीवन के एक अंक का अंतिम पृष्ठ, मेरे सम्मुख था एक वर्ष का कारावास, इस समय से ही मनुष्य जीवन के साथ जितने बंधन हैं, सब छिन्न-भिन्न होंगे, एक वर्ष के लिये मानव समाज से अलग पशुओं की तरह पिंजरे में बंद रहना पड़ेगा। फिर जब कर्मक्षेत्र में वापस आऊंगा तब वह पुराना परिचित अरविंद घोष प्रवेश नहीं करेगा वरन्, एक नया मनुष्य, नया चरित्र, नयी बुद्धि, नया प्राण, नया मन ले और नये कार्य का भार उठा अलीपुरस्थ आश्रम से बाहर होगा। कहा है एक वर्ष का कारावास पर कहना उचित था एक वर्ष का वनवास, एक वर्ष का आश्रमवास। बहुत दिनों से हृदयस्थ नारायण के साक्षात् दर्शन करने की प्रबल चेष्टा में लगा था; उत्कट आशा संजोये हुए था कि जगद्धाता पुरुषोत्तम को बंधुभाव में, प्रभुभाव में प्राप्त करूं। किंतु संसार की सहस्त्रों वासनाओं के आकर्षणों, नाना कर्मों में आसक्ति और अज्ञान के प्रगाढ़ अंधकार के कारण कर न पाया। अंत में परमदयालु सर्वमंगलमय श्री हरि ने इन सब शत्रुओं को एक ही वार में समाप्त कर उसके लिये सुविधा कर दी, योगाश्रम दिखलाया और स्वयं गुरु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में, सखा रूप में उस क्षुद्र साधन कुटीर में अवस्थान किया। वह आश्रम था अंग्रेजों का कारागार। मैं अपने जीवन में बराबर ही यह आश्चर्यमय असंगति देखता आ रहा हूं कि मेरे हितैषी बंधुगण मेरा जितना भी उपकार क्यों न करें, अनिष्टकारी—शत्रु किसे कहूं, मेरा अब कोई शत्रु नहीं—शत्रुओं ने ही अधिक उपकार किया है। उन्होंने अनिष्ट करना चाहा पर इष्ट ही हुआ। ब्रिटिश गवर्नमेंट की कोप-दृष्टि का एकमात्र फल—मुझे भगवान् मिले। कारावास के आंतरिक जीवन का इतिहास लिखना इस लेख का उद्देश्य नहीं है, कुछ एक घटनाओं को वर्णित करने की ही इच्छा है, किंतु कारावास के मुख्य भाव का उल्लेख लेख के आरंभ में करना उचित समझा, नहीं तो पाठक समझ बैठेंगे कि कष्ट ही है कारावास का सार। कष्ट नहीं था ऐसी बात नहीं। किंतु अधिकांश समय आनंद से ही बीता।

शुक्रवार की रात को मैं निश्चिंतता से सो रहा था। सवेरे करीब पांच बजे मेरी बहिन एकदम डरी-सी मेरे कमरे में आयी और मेरा नाम ले मुझे पुकारने लगी। मैं जाग पड़ा। क्षण-भर में मेरा छोटा-सा कमरा सशस्त्र पुलिस से भर गया; उनमें थे सुपरिंटेंडेंट क्रेगन, २४ परगना के क्लार्क साहब, हमारे सुपरिचित श्रीमान् विनोदकुमार गुप्त की आनंदमयी और लावण्यमयी मूर्त्ति और कई एक इंस्पेक्टर, लाल पगड़ियां, जासूस और खानातलाशी के साक्षी। हाथों में पिस्तौल लिये वे वीर-दर्प से ऐसे दौड़े आये मानों तोपों और बंदूकों से सुरक्षित किले पर दखल करने आये हों। आंखों से तो नहीं देखा पर सुना कि एक श्वेतांग वीर पुरुष ने मेरी बहिन की छाती पर पिस्तौल तानी थी। मैं बिछौने पर बैठा हुआ हूं, अर्द्धनिद्रित अवस्था, क्रेगन साहब ने पूछा, "अरविंद घोष कौन हैं? क्या आप ही हैं?" मैंने कहा, "हां, मैं ही हूं अरविंद घोष।" तुरंत उन्होंने एक सिपाही को मुझे गिरफ्तार करने को कहा, उसके बाद क्रेगन साहब की किसी एक अश्लील बातपर क्षण-भर के लिये आपस में कहा-सुनी हो गयी। मैंने खानातलाशी का वारंट मांगा, पढ़कर उसपर सही की। वारंट में बम की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात देखकर समझ गया कि इस पुलिस सेना का आविर्भाव मुजफ्फरपुर में हुए खून से संबंधित है। परंतु यह समझ में नहीं आया कि बम या कोई स्फोटक पदार्थ मेरे मकान में पाये जाने के पहले ही और बिना 'बॉडी-वारंट' के मुझे क्यों गिरफ्तार किया गया। तो भी इस बारे में व्यर्थ कोई आपत्ति नहीं उठायी। इसके बाद ही क्रेगन साहब के हुकुम से मेरे हाथों में हथकड़ी और कमर में रस्सी बांध दी गयी। एक हिंदुस्तानी सिपाही वह रस्सी पकड़े मेरे पीछे खड़ा रहा। ठीक उसी समय श्रीयुत अविनाशचंद्र भट्टाचार्य और श्रीयुत शैलंद्र वसु को पुलिस ऊपर ले आयी, उनके भी हाथों में हथकड़ी और कमर में रस्सी थी। करीब आधे घंटे बाद, न जाने किस के कहने से उन्होंने हथकड़ी और रस्सी खोल दीं। क्रेगन की बातों से ऐसा लगता था मानों वह किसी खूंखार पशु की मांद में घुस आये हों, मानो हम थे अशिक्षित, हिंस्र और स्वभाव से कानून-भंगी, हमारे साथ भद्र व्यवहार या भद्रता से बात करना बेकार है। परंतु झगड़े के बाद साहब जरा नरम पड़ गये थे। विनोद बाबू ने मेरे बारे में उन्हें कुछ समझाने की चेष्टा की। उसके बाद क्रेगन ने मुझसे पूछा, "आपने शायद बी. ए. पास किया है? ऐसे मकान में, ऐसे सज्जाविहीन कमरे में जमीन पर सोये थे, इस तरह रहना आप जैसे शिक्षित व्यक्ति के लिये क्या लज्जाजनक नहीं?" मैंने कहा, "मैं दरिद्र हूं, दरिद्र की तरह ही रहता हूं।" साहब ने तुरंत गरजकर कहा, "तो क्या आपने धनी बनने के लिये ही यह सब षड्यंत्र रचा है?" देश-हितैषिता, स्वार्थत्याग या दारिद्र्य-व्रत का माहात्म्य इस स्थूल बुद्धि अंग्रेज को समझाना असाध्य जान मैंने वैसी चेष्टा नहीं की।

इस बीच खानातलाशी चलती रही। यह सवेरे साढ़े पांच बजे आरंभ हुई और प्रायः साढ़े ग्यारह बजे समाप्त हुई। बक्से के बाहर, भीतर जितनी कापियां, चिट्ठियां, कागज, कागज के टुकड़े, कविताएं, नाटक, पद्य, गद्य, प्रबंध, अनुवाद—जो कुछ भी मिला कुछ भी इन सर्वग्रासी खानातलाशियों के कवल से नहीं बच पाया। खानातलाशी के गवाहों में रक्षित महाशय क्षुण्णमना-से थे। बाद में बड़े दुःख के साथ उन्होंने मुझे बताया कि पुलिस अचानक बिना कुछ कहे-सुने उन्हें यहां घसीट लायी है, उन्हें रत्तीभर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी भनक नहीं थी कि ऐसे घृणित कार्य में उन्हें योगदान करना होगा। रक्षित बाबू ने बड़े ही करुण भाव से इस हरण-कांड की कथा सुनायी। दूसरे साक्षी समरनाथ का भाव कुछ और ही था। उन्होंने बड़ी स्फूर्ति से एक सच्चे राजभक्त की तरह यह खानातलाशी का कार्य सुसंपन्न किया मानों to the manner born—इसीके लिये जनमे हों। खानातलाशी के समय और कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी। पर याद आती है गत्ते के एक छोटे डिब्बे में दक्षिणेश्वर की जो मिट्टी रखी थी क्लार्क साहब उसे बड़े संदिग्ध चित्त से बहुत देरतक परखते रहे मानों उनके मन में शंका थी कि हो न हो यह कोई नया, भयंकर, तेजविशिष्ट स्फोटक पदार्थ है। एक तरह से क्लार्क साहब का संदेह निराधार भी नहीं कहा जा सकता। अंत में यह मान लिया गया कि यह मिट्टी के सिवा और कुछ नहीं, और इसे रासायनिक विश्लेषणकारियों के पास भेजना अनावश्यक है। खानातलाशी के समय बक्स खोलने के सिवा मैंने और कुछ नहीं किया। मुझे कोई भी कागज या चिट्ठी दिखलायी या पढ़कर सुनायी नहीं गयी, केवल अलकधारी की एक चिट्ठी क्रेगन साहब ने अपने मनोरंजन के लिये उच्च स्वर में पढ़ी। बंधुवर विनोदगुप्त अपने स्वाभाविक ललित पदविन्यास से घर को कंपाते हुए चक्कर काट रहे थे, शेल्फ में से या और कहीं से कागज या चिट्ठी निकालते, बीच-बीच में "बहुत जरूरी, बहुत जरूरी" कह उसे क्रेगन साहब को थमाते जाते। मैं जान नहीं पाया कि ये आवश्यक कागज क्या थे? इस बारे में कोई कुतूहल भी नहीं था क्योंकि मुझे पता था कि मेरे घर में विस्फोटक पदार्थ बनाने की प्रणाली या षड्यंत्र में हाथ होने का कोई भी सबूत मिलना असंभव है।

मेरे कमरे का कोना-कोना छान मारने के बाद पुलिस हमें पासवाले कमरे में ले गयी। क्रेगन ने मेरी छोटी मासी का बक्स खोला, एक-दो बार चिट्ठियों पर नजर भर डालकर "औरतों की चिट्ठियों की जरूरत नहीं" कह उन्हें छोड़ दिया। इसके बाद एकतल्ले पर पुलिस महात्माओं का आविर्भाव हुआ। वहां क्रेगन का चाय-पानी हुआ। मैंने एक प्याला कोको और रोटी ली। ऐसे सुअवसर पर साहब अपने राजनीतिक मतों को युक्तितर्क द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिपादित करने की चेष्टा करने लगे। मैं अविचलित चित्त से यह मानसिक यंत्रणा सहता रहा। तो भी जिज्ञासा होती है कि शरीर पर अत्याचार करना तो पुलिस की सनातन प्रथा रही है, मन पर भी ऐसा अमानुषिक अत्याचार करना unwritten law—अलिखित कानून की चौहद्दी में पड़ता है क्या? आशा है हमारे परम मान्य देशहितैषी श्रीयुत योगेंद्रचंद्र घोष इस बारे में व्यवस्थापक सभा में प्रश्न उठायेंगे।

नीचे के कमरों और 'नवशक्ति कार्यालय' की खानातलाशी के बाद 'नव शक्ति' के एक लौह-संदूक को खोलने के लिये पुलिस फिर से दोतल्ले पर गयी। आध घंटेतक व्यर्थ सिर फोड़ने के बाद उसे थाने ले जाना ही निश्चित हुआ। इस बार एक पुलिस साहब ने एक द्विचक्र-यान ढूंढ़ निकाला, उसपर लगे रेलवे लेबल पर 'कुष्टिया' लिखा था। तुरत ही कुष्टिया में साहब पर गोली चलानेवाले का वाहन मान इसे एक गुरुतर प्रमाण समझ सानंद साथ ले गये।

प्रायः साढ़े ग्यारह बजे हम घर से रवाना हुए। फाटक के बाहर मेरे मौसा जी एवं श्रीयुत भूपेंद्रनाथ वसु गाड़ी में उपस्थित थे। मौसाजी ने मुझसे पूछा, "किस अपराध में गिरफ़्तार हुए हो?" मैंने कहा, "मैं कुछ नहीं जानता, इन्होंने घर में घुसते ही गिरफ़्तार कर लिया, हाथों में हथकड़ी पहनायी, 'बॉडी वारंट' तक नहीं दिखाया।" मौसाजी के हथकड़ी पहनाये जाने का कारण पूछने पर विनोद बाबू बोले, "महाशय, मेरा दोष नहीं, अरविन्द बाबू से पूछिये, मैंने ही साहब से कहकर हथकड़ी खुलवायी है।" भूपेन बाबू के क्या अपराध हैं पूछने पर गुप्त महाशय ने नरहत्या की धारा दिखायी। यह सुन भूपेन बाबू स्तंभित रह गये और कोई भी बात नहीं की। बाद में सुना, मेरे सौलिसिटर श्रीयुत हरेंद्रनाथ दत्त ने ग्रे स्ट्रीट में खानातलाशी के समय मेरी ओर से उपस्थित रहने की इच्छा प्रकट की थी पर पुलिस ने उन्हें लौटा दिया।

हम तीनों को थाने ले जाने का भार था विनोद बाबू पर। थाने में उन्होंने हमारे साथ विशेष भद्र व्यवहार किया। वहीं नहा-धोकर, खा-पीकर लालबाजार के लिये चले। कुछ घंटे लालबाजार में बिठा रखने के बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायड स्ट्रीट में ले गये। शामतक उसी शुभ स्थान पर अपना समय काटा। वहीं जासूस-पुंगव मौलवी शम्स-उल् आलम के साथ मेरा पहला आलाप व प्रीति स्थापित हुई। मौलवी साहब का तबतक न इतना प्रभाव था और न उनमें इतना उत्साह और उद्यम, बम-केस के प्रधान अन्वेषक या नार्टन साहब के Prompter (प्रेरक) या जीवंत स्मरण-शक्ति के रूप में तबतक नहीं चमके थे, रामसदय बाबू ही थे इस केस के प्रधान पंडा। मौलवी साहब ने मुझे धर्म पर अतिशय सरस वक्तृता सुनायी। हिंदू-धर्म और इस्लाम धर्म का मूल-मंत्र एक ही है, हिंदुओं के ओंकार में तीन मात्राएं हैं—अ उ म्, कुरान के पहली तीन अक्षर हैं अ ल म, भाषातत्त्व के नियम से ल के बदले उ व्यवहृत होता है अतएव हिंदू और मुसलमान का मंत्र एक ही है। तथापि अपने धर्म का पार्थक्य अक्षुण्ण रखना होता है, मुसलमान के साथ खाना खाना हिंदू के लिये निंदनीय है। सत्यवादी होना भी धर्म का एक प्रधान अंग है। साहब लोग कहते हैं कि अरविंद घोष हत्याकारी दल के नेता हैं, भारतवर्ष के लिये यह बड़े दुःख और लज्जा की बात है, फिर भी सत्यवादिता अपनाने से situation saved (स्थिति संभाली जा) हो सकती है। मौलवी का दृढ़ विश्वास था कि विपिन पाल और अरविंद घोष जैसे उच्च चरित्रवान् व्यक्तियों ने चाहे जो भी किया हो, उसे मुक्तकंठ से स्वीकार करेंगे। श्रीयुत पूर्णचंद्र लाहिड़ी वहीं बैठे थे, उन्होंने इसपर संदेह प्रकट किया किंतु मौलवी साहब अपनी बात पर अड़े रहे। उनकी विद्या-बुद्धि और उत्कट धर्मभाव देख मैं अतिशय चमत्कृत और हर्षित हुआ। ज्यादा बोलना धृष्टता होगी यह सोच मैंने नम्र भाव से उनका अमूल्य उपदेश सुना और उसे सयत्न हृदयांकित किया। धर्म के लिये इतने मतवाले होने पर भी मौलवी साहब ने जासूसी नहीं छोड़ी। एक बार कहने लगे, "अपने छोटे भाई को बम बनाने के लिये आपने जो बगीचा दे दिया सो बड़ी भूल की, यह बुद्धिमानी का काम नहीं हुआ।" उनकी बात का आशय समझ मैं मुस्कराया; बोला, "महाशय, बगीचा जैसा मेरा वैसा मेरे भाई का, मैंने उसे दे दिया है या दिया भी तो बम तैयार करने के लिये दिया, यह खबर आपको कहां से मिली?" मौलवी साहब अप्रतिभ हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोले, "नहीं, नहीं, मैं कह रहा था यदि आपने ऐसा किया हो तो।" यह महात्मा अपने जीवन-चरित का एक पन्ना खोल, मुझे दिखाते हुए बोले, "मेरे जीवन में जितनी नैतिक या आर्थिक उन्नति हुई है उसका मूल कारण है मेरे बाप का एक अतिशय मूल्यवान् उपदेश। वे हमेशा कहा करते थे, परोसी थाली कभी नहीं ठुकराना। यही महावाक्य है मेरे जीवन का मूलमंत्र, इसे सदा याद रखने के कारण ही हुई मेरी यह उन्नति।" ऐसा कहते समय मौलवी साहब ने ऐसी तीव्र दृष्टि से मेरी ओर घूरा मानों मैं ही हूं उनके सामने परोसी थाली। संध्या-समय स्वनामधन्य श्रीयुत रामसदय मुखोपाध्याय का आविर्भाव हुआ। उन्होंने मेरे प्रति अत्यंत दया और सहानुभूति दिखायी, सभी को मेरे खाने और सोने का प्रबंध करने को कहा। अगले ही क्षण कुछ लोग आकर मुझे और शैलेन्द्र को मूसलाधार वर्षा में लालबाजार हवालात में ले गये। रामसदय के साथ बस यही एक बार ही मेरी बातचीत हुई। समझ गया कि आदमी बुद्धिमान और उद्यमी हैं किंतु उनकी बातचीत, भावभंगी, स्वर, चलन, सब कुछ कृत्रिम और अस्वाभाविक है, हमेशा जैसे रंगमंच पर अभिनय कर रहे हों। ऐसे भी आदमी होते हैं जिनका शरीर, बात, क्रिया सब मानो अनृत के अवतार हों। कच्चे मन को भुलाने में वे पक्के हैं, किंतु जो मानव चरित्र से अभिज्ञ हैं एवं बहुत दिनोंतक मनुष्यों के साथ मिलते-जुलते रहे हैं, उनकी पकड़ में वे प्रथम परिचय में ही आ जाते हैं।

लालबाजार में दो तल्ले के एक बड़े कमरे में हम दोनों को एक साथ रखा गया। खाने को मिला थोड़ा-सा जलपान। कुछ देर बाद दो अंगरेज कमरे में घुसे, बाद में पता चला कि उनमें से एक थे स्वयं पुलिस कमिश्नर हैलिडे साहब। हम दोनों को एक साथ देख हैलिडे सार्जंट पर बरस पड़े, मुझे दिखाकर बोले, "खबरदार, इस व्यक्ति के साथ न कोई रहे न कोई बोले।" तुरंत ही शैलेन्द्र को दूसरे कमरे में हटा बंद कर दिया गया। और जब सब चले गये तो हैलिडे साहब मुझसे पूछते हैं—"इस कापुरुषोचित दुष्कर्म में भाग लेते हुए आपको शर्म नहीं आती ?" "मैं इसमें लिप्त था यह मान लेने का आपको क्या अधिकार है ?" उत्तर में हैलिडे ने कहा, "मैंने मान नहीं लिया, मैं सब जानता हूं ?" मैंने कहा, "क्या जानते हैं या क्या नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह आपको ही पता होगा पर मैं इस हत्याकांड के साथ अपना संपर्क पूर्णतया अस्वीकार करता हूं।'' हैलिडे ने और कोई बात नहीं की।

उस रात मुझे देखने और कई दर्शक आये, सभी पुलिस के। इनके आने में एक रहस्य निहित था, उस रहस्य की आजतक मैं थाह नहीं ले पाया। गिरफ्तारी से डेढ़ माह पहले एक अपरिचित सज्जन मुझसे मिलने आये थे, उन्होंने कहा था, ''महाशय, आपसे मेरा परिचय नहीं है फिर भी आपके प्रति श्रद्धा-भक्ति है, इसीलिये आपको सतर्क करने आया हूं और जानना चाहता हूं कि कोननगर में किसीसे आपका परिचय है क्या ? वहां कभी गये थे या वहां कोई घर-बार है क्या ?'' मैंने कहा, ''घर नहीं है, कोननगर एक बार गया था, कइयों से परिचय भी है।'' उन्होंने कहा, ''और कुछ नहीं कहूंगा पर कोननगर में अब और किसीसे मत मिलियेगा, आप और आपके भाई बारींद्र के विरुद्ध दुष्टजन षड्यंत्र रच रहे हैं, शीघ्र ही वे आप लोगों को विपत्ति में डालेंगे। मुझसे और कोई बात न पूछें।'' मैंने कहा, ''महाशय, मैं समझ नहीं पाया इस अधूरे संवाद से मेरा क्या उपकार हुआ, फिर भी आप उपकार करने आये थे उसके लिये धन्यवाद। मैं और कुछ नहीं जानना चाहता। भगवान् पर मुझे पूर्ण विश्वास है, वे ही सदा मेरी रक्षा करेंगे, उस विषय में स्वयं यत्न करना या सतर्क रहना निरर्थक है।''

उसके बाद इस संबंध में और कोई खबर नहीं मिली। मेरे इस अपरिचित हितैषी ने मिथ्या कल्पना नहीं की थी, इसका प्रमाण उस रात मिला। एक इंस्पेक्टर और कुछ पुलिस कर्मचारियों ने आकर कोननगर की सारी बातें जान लीं। उन्होंने पूछा, ''कोननगर क्या आपका आदि स्थान है ? वहां मकान है क्या ? वहां कभी गये थे ? कब गये थे ? क्यों गये थे ? कोननगर में बारींद्र की कोई संपत्ति है क्या ?''—इस तरह के अनेक प्रश्न पूछे गये। बात क्या है यह जानने के लिये मैं इन सब प्रश्नों का उत्तर देता गया। इस चेष्टा में सफलता नहीं मिली, किंतु प्रश्नों से और पुलिस के पूछने के ढंग से लगा कि पुलिस को जो खबर मिली है वह सच है या झूठ इसकी छान-बीन चल रही है। अनुमान लगाया जैसे ताई महाराज के मुकदमें में तिलक को भंड, मिथ्यावादी, प्रवंचक और अत्याचारी करार कर देने की चेष्टा हुई थी एवं उस चेष्टा में बंबई सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने योग दे प्रजा के धन का अपव्यय किया था,—वैसे ही मुझे भी कुछ एक लोग मुसीबत में डालने की चेष्टा कर रहे हैं।

रविवार का सारा दिन हवालात में कटा। मेरे घर के सामने सीढ़ी थी। सवेरे देखा कि कुछ अल्पवयस्क लड़के सीढ़ी से उतर रहे हैं। शक्ल से नहीं जानता था पर अंदाज लगाया कि ये भी इसी मुकदमे में पकड़े गये हैं, बाद में जान पाया कि ये थे मानिकतला बगीचे के लड़के। एक माह बाद जेल में उनसे बातचीत हुई। कुछ देर बाद मुझे भी हाथ-मुंह धोने नीचे ले जाया गया—नहाने का कोई प्रबंध नहीं था अतः नहीं नहाया। उस दिन सवेरे खाने को मिला दाल-भात, जबरदस्ती कुछ-एक कौर उदरस्थ किये, बाकी छोड़ना पड़ा। शाम को मिले मुरमुरे। तीन दिनतक यही था हमारा आहार। किंतु इतना जरूर कहूंगा कि सोमवार को सार्जेंट ने स्वयं ही मुझे चाय और टोस्ट खाने को दिये।

बाद में सुना कि मेरे वकील ने कमिश्नर से घर से खाना भेजने की अनुमति मांगी थी पर हैलिडे साहब नहीं माने। यह भी सुना कि आसामियों से वकील या अटर्नी का मिलना निषिद्ध है। पता नहीं यह निषेध कानूनन ठीक है या नहीं। वकील का परामर्श मिलने से यद्यपि मुझे कुछ सुविधा होती फिर भी नितांत आवश्यकता नहीं थी, किंतु उससे अनेकों को मुकदमे में क्षति पहुंची। सोमवार को हमें कमिश्नर के सामने हाज़िर किया गया। मेरे साथ अविनाश और शैलेन थे। सबको अलग-अलग दल में ले जाया गया। पूर्वजन्म के पुण्यफल से हम तीनों पहले गिरफ़्तार हुए थे और कानून की जटिलता काफी अनुभव कर चुके थे इसलिये तीनों ने ही कमिश्नर के आगे कुछ भी बोलने से इंकार कर दिया। अगले दिन हमें थौर्नहिल मैजिस्ट्रेट की कचहरी में ले जाया गया। इसी समय श्रीयुत कुमारकृष्ण दत्त, मान्युएल साहब और मेरे एक संबंधी से भेंट हुई। मान्युएल साहब ने मुझसे पूछा, "पुलिस कहती है आपके घर में अनेक संदेहजनक चिट्ठी-पत्री मिली हैं। ऐसी चिट्ठियां या कागजात क्या सचमुच थे?" मैंने कहा, "निस्संदेह कह सकता हूं, नहीं थे, होना बिल्कुल असंभव है।" निश्चय ही तब "मिष्टान्न पत्र" ('sweets letter') या scribbling (घसीट लेख) की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात नहीं जानता था। अपने संबंधी से कहा, "घर में कह देना कि डरें नहीं, मेरी निर्दोषिता संपूर्णतया प्रमाणित होगी।" उस समय से मेरे मन में दृढ़ विश्वास उपजा कि यह होगा ही। पहले-पहल निर्जन कारावास में मन जरा विचलित हुआ किंतु तीन दिन प्रार्थना और ध्यान में बिताने के फलस्वरूप निश्चला शांति और अविचलित विश्वास ने प्राण को पुनः अभिभूत किया।

थौर्नहिल साहब के इजलास से हमें गाड़ी में अलीपुर ले जाया गया। उस दल में थे निरापद, दीनदयाल, हेमचंद्र दास आदि। इनमें हेमचंद्र दास को पहचानता था, एक बार मेदिनीपुर में उनके यहां ठहरा था। तब किसे पता था कि इस तरह बंदी भाव में जेल जाते हुए उनसे मिलना होगा। अलीपुर में मजिस्ट्रेट की अदालत में हमें काफी देर ठहरना पड़ा पर मजिस्ट्रेट के सामने हमें हाज़िर नहीं किया गया, केवल अंदर से वे हुकुम लिखा लाये। हम फिर से गाड़ी में चढ़े, तब एक सज्जन मेरे पास आकर बोले, "सुनता हूं कि इन्होंने आपके निर्जन कारावास की व्यवस्था की है, हुकुम लिखा जा रहा है। शायद किसीसे भी भेंट मुलाकात करने नहीं देंगे। इस बार यदि घरपर कुछ कहलाना चाहें तो मैं संदेश पहुंचा दूंगा।" मैंने उन्हें धन्यवाद दिया, किंतु जो कहना था वह मैं अपने आत्मीय द्वारा कहला चुका था अतः उनसे और कुछ नहीं कहा। अपने प्रति देशवासियों की सहानुभूति और अयाचित अनुग्रह के दृष्टांत के रूप में मैंने इस घटना का उल्लेख किया। इसके बाद कोर्ट से जेल में पहुंचा, हमें जेल के कर्मचारियों के हाथों में सौंप दिया गया। जेल में घुसने से पहले हमें स्नान कराया, जेल की पोशाक पहनने को दी और हमारे कुर्ते, धोती आदि धोने के लिये ले गये। चार दिन बाद स्नान करने पर हमें स्वर्गसुख की अनुभूति हुई। स्नान के बाद सबको अपनी-अपनी कोठरी में पहुंचा दिया गया। मैं भी अपने निर्जन कारागार में घुसा, छोटी-सी कोठरी के लौह-कपाट बंद हो गये। अलीपुर कारावास का आरंभ हुआ था ५ मई को। मुक्त हुआ अगले साल ६ मई को।

मेरा निर्जन कारागृह था नौ फीट लंबा और पांच-छः फीट चौड़ा, इसमें कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिड़की नहीं, सामने था एक बृहत् लौह कपाट; यह पिंजरा ही बना मेरा निर्दिष्ट वासस्थान। कमरे के बाहर था एक छोटा-सा पथरीला आंगन और ईंट की ऊंची दीवार, सामने था लकड़ी का दरवाजा। उस दरवाजे के ऊपरी भाग में मनुष्य की आंख की ऊंचाई पर था एक गोलाकार छेद, दरवाजा बंद होने पर संतरी उसमें आंख सटा थोड़ी-थोड़ी देर में झांकता था कि कैदी क्या कर रहा है। किंतु मेरे आंगन का दरवाजा प्रायः खुला रहता। ऐसे छः कमरे पास-पास थे, इन्हें कहा जाता था ६ 'डिक्री'। डिक्री का अर्थ है विशेष दंड का कमरा, न्याधीश या जेल सुपरिंटेंडेंट के हुकुम से जिन्हें निर्जन कारावास का दंड मिलता था उन्हें ही इन छोटे-छोटे गह्वरों में रहना होता था। इन निर्जन कारावासों की भी श्रेणी होती है। जिन्हें विशेष सजा मिलती है उनके आंगन का दरवाजा बंद रहता है; मनुष्य संसार से पूर्णतया वंचित हो जाते हैं, उनका जगत् से एकमात्र संपर्क रह जाता है संतरी की आंखों और दो समय खाना लानेवाले कैदी से। सी० आई० डी० की नजरों में हेमेंद्र दास मुझसे भी ज्यादा आतंककारी थे, इसीलिये उनके लिये ऐसी व्यवस्था की गयी। इस सजा के ऊपर भी सजा है—हाथ-पैर में हथकड़ी और बेड़ी पहन निर्जन कारावास में रहना। यह चरम दंड केवल जेल की शांति भंग करनेवालों या मारपीट करनेवालों के लिये नहीं, बार-बार काम में गफलत करने से भी यह दंड मिलता है। निर्जन कारावास के मुकदमे के आसामी को दंड के रूप में ऐसा कष्ट देना नियम के विरुद्ध है परंतु स्वदेशी या 'वंदेमातरम्' कैदी नियम से बाहर हैं, पुलिस की इच्छा से उनके लिये भी सुव्यवस्था होती है।

हमारा वासस्थान था तो ऐसा लेकिन साज-संरजाम में भी हमारे सहृदय कर्मचारियों ने आतिथ्य संस्कार में कोई त्रुटि नहीं की। एक थाली और एक कटोरा आंगन को सुशोभित करते थे। खूब अच्छी तरह मांजे जाने पर मेरा सर्वस्व थाली और कटोरा चांदी की तरह इस कदर चमकते कि प्राण जुड़ा जाते और उस निर्दोष किरणमय उज्ज्वलता में 'स्वर्गजगत्' में विशुद्ध ब्रिटिश राजतंत्र की उपमा पा राजभक्ति के निर्मल आनंद का अनुभव करता था। दोषों में एक दोष था कि थाली भी उसे समझ कर आनंद में इतनी उत्फुल्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो उठती थी कि अंगुली का जरा-सा जोर पड़ते ही वह घुमक्कड़ अरब दरवेशों की तरह चक्कर काटने लगती, ऐसे में एक हाथ से खाना और एक हाथ से थाली पकड़े रहने के सिवा कोई चारा नहीं रहता। नहीं तो चक्कर काटते-काटते जेल का अतुलनीय मुट्ठी भर अन्न लेकर वह भाग जाने का उपक्रम करती। थाली की अपेक्षा कटोरा था और भी अधिक प्रिय और उपकारी। जड़ पदार्थों में मानों यह था ब्रिटिश सिविलियन। सिविलियनों में जैसे सब कार्यों में स्वभावजात निपुणता और योग्यता होती है, जज, शासनकर्ता, पुलिस, शुल्क-विभाग के कर्ता, म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष, शिक्षक, धर्मोपदेशक, जो चाहो वही, कहने भर से ही, बन सकते हैं—जैसे उनके लिये, एक शरीर में, एक ही साथ अनुसंधाता, अभियोगकर्ता, पुलिस मजिस्ट्रेट और कभी-कभी वादी के परामर्शदाता का भी प्रीतिसम्मिलन सहज साध्य था, वैसा ही था मेरा प्यारा कटोरा भी। कटोरे की जात नहीं, विचार नहीं। कारागृह में उसी कटोरे से पानी ले शौच किया, उसी कटोरे से मुंह धोया, स्नान किया, कुछ देर बाद उसीमें खाना पड़ा, उसी कटोरे में दाल या तरकारी डाली गयी, उसी कटोरे से पानी पिया और कुल्ला किया। ऐसी सर्वकार्यक्षम मूल्यवान् वस्तु अंगरेजों की जेल में ही मिलनी संभव है। कटोरा मेरे लिये ये सब सांसारिक उपकार कर योग-साधना में भी सहायक बना। घृणा-परित्याग कराने का ऐसा सहायक और उपदेशक कहां पाऊंगा ? निर्जन कारावास की पहली अवधि के बाद जब हमें एक साथ रखा गया तब मेरे सिविलियन के अधिकारों का पृथकीकरण हुआ,—अधिकारियों ने शौच के लिये अन्य उपकरण जुटाया किंतु महीने-भर में घृणा पर काबू पाने का बिना मांगा पाठ पढ़ लिया था। शौच की सारी व्यवस्था ही मानों इस संयम की शिक्षा को ध्यान में रखकर की गयी थी। पहले कहा है, निर्जन कारावास विशेष दंड में गिना जाता है और उस दंड का मूल सिद्धांत है जितना संभव हो मनुष्य-संसर्ग और मुक्त आकाश-सेवन का वर्जन। बाहर शौच की व्यवस्था करने से तो यह सिद्धांत भंग होता अतः कोठरी में ही तारकोल पुती दो टोकरियां दी जाती थीं। सवेरे-शाम मेहतर साफ कर जाता, तीव्र आंदोलन और मर्मस्पर्शी भाषण देने पर और समय भी सफाई हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती, किंतु असमय पाखाना जाने से घंटों-घंटोंतक दुर्गन्ध भोगकर प्रायश्चित्त करना पड़ता। निर्जन कारावास की दूसरी अवधि में इसमें थोड़ा-बहुत सुधार हुआ किंतु सुधार होता है पुराने जमाने के मूलतत्त्वों को अक्षुण्ण रखते हुए शासन में सुधार। किं बहुना, इस छोटी-सी कोठरी में ऐसी व्यवस्था होने से हमेशा, विशेषकर खाने के समय और रात को, भारी असुविधा भोगनी पड़ती थी। जानता हूं, शयनागार के साथ पाखाना रखना प्रायः विलायती सभ्यता की विशेषता है किंतु एक छोटे-से कमरे में शयनागार, भोजनालय और पाखाना—इसे कहते हैं too much of a good thing (भलाई की भी सीमा पार कर जाना)। हम ठहरे कुअभ्यासग्रस्त भारतवासी, सभ्यता के इतने ऊंचे सोपान पर पहुंचना हमारे लिये कष्टकर है।

गृह-सामग्री में और भी चीजें थीं : एक नहाने की बाल्टी, पानी रखने को एक टीन की नलाकार बाल्टी और दो जेल के कंबल। स्नान की बाल्टी आंगन में रखी रहती, वहीं नहाता था। पहले हमारे भाग्य में पानी का कष्ट नहीं था पर बाद में यह भी भोगना पड़ा। पहले पास के गोहालघर (गोशाला) के कैदी नहाते समय मेरी इच्छानुसार बाल्टी में पानी भर देते थे, इसीलिये नहाने का समय ही था जेल की तपस्या के बीच प्रतिदिन गृहस्थ की विलासवृत्ति और सुखप्रियता को तृप्त करने का अवसर। दूसरे आसामियों के भाग्य में इतना भी नहीं जुटा था; एक बाल्टी पानी से ही उन्हें शौच, बर्तन-मंजाई, स्नान सब करना होता था। विचाराधीन कैदी थे इसीलिये इतना-सा विलास भी मिला हुआ था, कैदियों को तो दो-चार कटोरे पानी में ही स्नान करना पड़ता था। अंगरेज कहते हैं भगवत्-प्रेम व शरीर की स्वच्छंदता प्रायः समान और दुर्लभ सद्गुण हैं, जेलों में यह व्यवस्था इस प्रवाद की यथार्थता को सिद्ध करने के लिये है या अतिरिक्त स्नान के सुख से कैदियों के अनिच्छा-जनित तपस्या के रस भंग होने के भय से यह व्यवस्था प्रचलित की गयी है, यह निर्णय करना कठिन है। आसामी अधिकारियों की इस दया को काक-स्नान कह खिल्ली उड़ाते थे। मनुष्यमात्र ही है असंतोषप्रिय। नहाने की व्यवस्था से पीने के पानी की व्यवस्था और भी निराली थी। गर्मी का मौसम, मेरे छोटे-से कमरे में हवा का प्रवेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग निषिद्ध था किंतु मई महीने की उग्र और प्रखर धूप बेरोक-टोक घुस आती थी। कमरा जलती भट्टी-सा हो उठता था। इस भट्टी में तपते हुए अदम्य जल-तृष्णा को कम करने का उपाय था वही टीन की बाल्टी का अर्धउष्ण जल। बार-बार वही पीता था, प्यास तो नहीं बुझती थी वरन् पसीना छूटता और कुछ देर में फिर से प्यास लग आती थी। पर हां, किसी-किसी के आंगन में मिट्टी की सुराही रखी होती, वे अपने पूर्वजन्म की तपस्या का स्मरण कर अपनेको धन्य मानते। तब घोर पुरुषार्थवादी को भी भाग्य में विश्वास करने को बाध्य होना पड़ता था, किसीके भाग्य में ठंडा पानी बदा था तो किसीके भाग्य में प्यास, सब था भाग्य का फेर। अधिकारीगण, किंतु, पूर्ण पक्षपातरहित हो कलसी या बाल्टी वितरण करते थे। इस यदृच्छा-लाभ से मेरे संतुष्ट होने या न होने से भी मेरा जल-कष्ट जेल के सहृदय डाक्टर बाबू को असह्य हो उठा। वे कलसी जुटाने में लगे किंतु क्योंकि इस बंदोबस्त में उनका हाथ नहीं था इसलिये बहुत दिनतक इसमें सफल नहीं हुए, अंत में उनके ही कहने से मुख्य जमादार ने कहीं से कलसी का आविष्कार किया। उससे पहले ही तृष्णा के साथ अनेक दिन के घोर संग्राम से मैं पिपासा-मुक्त हो चला था। तिसपर इस तप्त कमरे में बिस्तर के नाम को थे दो जेल के बने मोटे कंबल। तकिया नदारद, एक कंबल को नीचे बिछा लेता और दूसरे की तह करके तकिया बना सोता। जब गर्मी असह्य हो उठती और बिस्तर पर न रहा जाता तब मिट्टी में लोट लगा, बदन ठंडा कर आराम पाता था। माता वसुंधरा की शीतल गोद के स्पर्श का क्या सुख है यह तभी जाना। फिर भी, जेल में उस गोद का स्पर्श बहुत कोमल नहीं होता, उससे निद्रा के आगमन में बाधा आती अतः कंबल की शरण लेनी पड़ती। जिस दिन वर्षा होती वह दिन बड़े आनंद का दिन होता। इसमें भी एक असुविधा यह थी कि झड़ी-झंझा होते ही धूल, पत्ते और तिनकों से भरे प्रभंजन के तांडव नृत्य के बाद मेरे पिंजरे के अंदर बाढ़-सी आ जाती। ऐसे में रात को भीगा कंबल ले कमरे के एक कोने में दुबकने के सिवा कोई चारा न रहता। प्रकृति की इस विशिष्ट लीला के समाप्त होने पर भी जलप्लावित धरती जबतक सूख नहीं जाती थी तबतक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

निद्रादेवी की आशा छोड़ विचारों का दामन पकड़ना पड़ता था। एकमात्र सूखी जगह थी शौच के आसपास किंतु वहां कंबल बिछाने की प्रवृत्ति न होती। इन सब असुविधाओं के होते हुए भी झड़ी-झंझा के दिन भीतर खूब हवा आती और कमरे की जलती भट्टी का ताप दूर हो जाता इसलिये झड़ी-झंझा का सादर स्वागत करता।

अलीपुर के गवर्नमेंट होटल का जो वर्णन मैंने किया है एवं आगे और भी करूंगा वह निजी कष्ट-भोग की विज्ञप्ति के लिये नहीं वरन् सुसभ्य ब्रिटिश राज्य में विचाराधीन कैदियों के लिये कितनी अद्भुत व्यवस्था थी, निर्दोषों को दीर्घकालव्यापी कितनी यंत्रणा भोगनी पड़ सकती है, यह बतलाने के लिये ही है यह वर्णन। कष्टों के जो कारण दिखलाये हैं, वे तो थे ही किंतु भगवान् की दया दृढ़ थी इसलिये थोड़े दिनोंतक ही कष्ट अनुभव किया, उसके बाद तो—किस उपाय से वह बाद में बताऊंगा—मन उस दुःख से अतीत हो कष्ट अनुभव करने में असमर्थ हो गया था। इसीलिये मन में जेल की स्मृति जगनेपर क्रोध या दुःख नहीं, हंसी ही आती है। पहले-पहल जब जेल की विचित्र पोशाक पहन अपने पिंजरे में घुसकर रहने का बंदोबस्त देखा था तब यही भाव मन में उदित हुआ था। मन-ही-मन हंस रहा था। अंगरेज जाति का इतिहास और आधुनिक आचरण का निरीक्षण कर बहुत पहले ही मैंने उनके विचित्र और रहस्यमय चरित्र को समझ लिया था, इसीलिये अपने प्रति उनका ऐसा व्यवहार देखकर भी जरा भी आश्चर्यान्वित या दुःखी नहीं हुआ। साधारण दृष्टि से हम लोगों के साथ उनका ऐसा व्यवहार अतिशय अनुदार व निंदनीय था। हम सब थे कुलीन घरानों के, बहुत-से थे जमींदारों के बेटे, कितने ही वंश, विद्या, गुण और चरित्र में थे इंग्लैंड के शीर्षस्थानीय व्यक्तियों के समकक्ष! हम जिस अपराध में पकड़े गये थे वह भी सामान्य खून, चोरी, डकैती नहीं था, था देश के लिये विदेशी सरकार के विरुद्ध युद्ध-चेष्टा या समरोद्योग का षड्यंत्र। तिसपर कइयों को दोषी ठहराने में प्रमाण का नितांत अभाव था; पुलिस का संदेह ही था उनके पकड़े जाने का एकमात्र कारण। ऐसे स्थान में सामान्य चोर-डकैतों की तरह रखना—चोर डकैत ही क्यों, पशुओं की तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिंजरे में रख, पशुओं का अखाद्य आहार खिलाना, जलकष्ट, क्षुत्पिपासा, धूप, वर्षा व शीत सहन कराना—इससे ब्रिटिश सरकार और ब्रिटिश जाति की गौरव-वृद्धि नहीं होती। यह है किंतु उनका जातीय चरित्रगत दोष। अंगरेजों में क्षत्रियोचित गुण होते हुए भी शत्रु या विरुद्धाचरणकारी के साथ व्यवहार करते समय वे हैं सोलह आने बनिये। मेरे मन में तब विरक्ति की भावना ने स्थान नहीं पाया बल्कि मुझमें और देश के साधारण अशिक्षित लोगों में कुछ भेद नहीं रखा गया यह देखकर कुछ आनंदित हुआ, और फिर इस व्यवस्था ने तो मातृभक्ति के प्रेमाभाव में आहुति का काम किया। मैंने इसे योग-शिक्षा और द्वंद्व-जय का अपूर्व उपकरण और अनुकूल अवस्था माना, तिसपर मैं था चरमपंथी दल का जिनके मत में प्रजातंत्र एवं धनी-दरिद्र का साम्य राष्ट्रीय भाव का एक प्रधान अंग है। याद हो आया—मत को कार्यान्वित करना अपना कर्तव्य समझ सूरत जाते समय सभी ने एक साथ तीसरे दर्जे में यात्रा की थी, कैंप में नेतागण अपना-अपना अलग प्रबंध न कर सबके साथ एक भाव से, एक ही कमरे में सोते। धनी, दरिद्र, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, बंगाली, मराठी, पंजाबी, गुजराती—सब दिव्य भ्रातृभाव से एक साथ रहते, सोते, खाते। जमीन पर सोना, दाल-भात, दही ही खाना, सब चीजों में था स्वदेशी का बोलबाला। कलकत्ता और बंबई के विदेश से लौटे हुए लोग और मद्रास के तिलकधारी ब्राह्मण सब एक साथ मिल-जुल गये थे। इस अलीपुर जेल में रहते समय अपने देश के कैदी, अपने देश के किसान, लुहार, कुम्हार, डोम-बाग्दियों के समान आहार, समान रहन-सहन, समान कष्ट, समान मानमर्यादा पाकर मैंने जाना कि सर्वशरीरवासी नारायण ने इस साम्यवाद, इस एकता, इस देशव्यापी भ्रातृभाव से सहमत हो मानों मेरे जीवन-व्रतपर अपनी मुहर लगा दी हो। जिस दिन जन्मभूमि-रूपिणी जगज्जननी के पवित्र मंडप में सारा देश भ्रातृभाव में एक प्राण हो जगत् के सामने उन्नतमस्तक हो खड़ा होगा, सहवासी आसामी और कैदियों के प्रेमपूर्ण आचरण एवं सरकार के इस साम्यभाव में, इस कारावास में उस शुभ दिन का हृदय में पूर्वाभास पा कितनी ही बार हर्षित व पुलकित हो उठता था। अभी उसी दिन पूना के "Indian Social

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reformer" ने मेरी एक सहज बोधगम्य उक्ति पर व्यंग कसते हुए कहा था, "जेल में तो भगवत्सान्निध्य की बड़ी बाढ़-सी आ गयी दीखती है।" हाय रे मान-सम्मान के अन्वेषी, अल्प विद्या से, अल्प सद्गुण से गर्वित मनुष्य के अहंकार और क्षुद्रता ! जेल में, कुटीर में, आश्रम में, दुःखी के हृदय में भगवान् प्रकट नहीं होंगे तो क्या धनी के विलास-भवन में, सुखान्वेषी स्वार्थांध संसारी की सुख-शय्यापर होंगे ? भगवान् विद्या, सम्मान, लोकमान्यता, लोकप्रशंसा, बाह्य स्वच्छंदता व सभ्यता नहीं देखते। वे दुःखी के सामने ही दयामयी मां का रूप धरते हैं। जो मानवमात्र में, जाति में, स्वदेश में, दुःखी-गरीब, पतित-पापी में नारायण को देख उनकी सेवा में जीवन समर्पित करते हैं उन्हींके हृदय में आ बसते हैं नारायण और उत्थानोद्यत पतित जाति में, देश-सेवक की निर्जन कारा में ही संभव है भगवत्-सान्निध्य की बाढ़।

कंबल, थाली-कटोरी का प्रबंध कर जेलर के चले जानेपर कंबलपर बैठ मैं जेल का दृश्य देखने लगा। लालबाजार की हवालात की अपेक्षा यह निर्जन कारावास अधिक अच्छा लगा। वहां उस विशाल कमरे की निर्जनता मानो अपनी विशाल काया को विस्तारित करने का अवकाश पा निर्जनता को और भी गहन कर दे रही थी। यहां छोटे-से कमरे की दीवारें मानों बंधु-रूप में पास आ, ब्रह्ममय हो आलिंगन में भर लेने को तैयार थीं। वहां दो तल्ले के कमरे की ऊंची-ऊंची खिड़कियों से बाहर का आकाश भी नहीं दीखता था, इस संसार में पेड़-पत्ते, मनुष्य, पशु-पक्षी, घर-द्वार भी कुछ है, बहुत बार उसकी कल्पना करना भी कठिन हो जाता था। यहां आंगन का दरवाजा खुला होनेपर सरियों के पास बैठने से बाहर जेल की खुली जगह और कैदियों का आना-जाना देखा जा सकता है। आंगन की दीवार से सटा वृक्ष था, उसकी नयनरंजक नीलिमा से प्राण जुड़ा जाते। छह डिक्री के छह कमरों के सामने जो संतरी घूमता रहता उसका चेहरा और पदचाप बहुत बार परिचित बंधु के चलने-फिरने की तरह प्रिय लगता। कोठरी के पार्श्ववर्ती गोहालघर के कैदी कोठरी के सामने से गौएं चराने ले जाया करते। गौ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपाल थे प्रतिदिन के प्रिय दृश्य। अलीपुर के निर्जन कारावास में अपूर्व प्रेम की शिक्षा पायी। यहां आने से पहले मनुष्यों के साथ मेरा व्यक्तिगत प्रेम अतिशय छोटे घेरे में घिरा था और पशु-पक्षियों पर रुद्ध प्रेम-स्रोत तो बहता ही नहीं था। याद आता है, रवि बाबू की एक कविता में भैंस के प्रति एक ग्राम्य बालक का गभीर प्रेम बहुत सुंदर ढंग से वर्णित हुआ है, पहली बार पढने पर वह जरा भी हृदयंगम नहीं हुई थी, भाव-वर्णन में अतिशयोक्ति और अस्वाभाविकता का दोष देखा था। अब पढ़नेपर उसे दूसरी ही दृष्टि से देखता। अलीपुर में रहकर समझ सका कि सब तरह के जीवों पर मनुष्य के प्राणों में कितना गभीर स्नेह स्थान पा सकता है, गौ, पक्षी, चींटी तक को देख कितने तीव्र आनंद के स्फुरण में मनुष्य का प्राण अस्थिर हो सकता है।

कारावास का पहला दिन शांति से कट गया। सभी कुछ था नया, इससे मन में स्फूर्ति जगी। लालबाजार की हवालात से तुलना करने पर इस अवस्था में भी प्रसन्नता हुई और भगवान् पर निर्भर था इसलिये यहां निर्जनता भी भारी नहीं पड़ी। जेल के खाने की अद्‌भुत सूरत देखकर भी इस भाव में कोई व्याघात नहीं पड़ा। मोटा भात, उसमें भी भूसी, कंकड़, कीड़ा, बाल आदि कितने तरह के मसालों से पूर्ण—स्वादहीन दाल में जल का अंश ही अधिक, तरकारी में निरा घास-पात का साग। मनुष्य का खाना इतना स्वादहीन और निस्सार हो सकता है यह पहले नहीं जानता था। साग की यह विषण्ण गाढ़ी कृष्ण मूर्ति देखकर ही डर गया, दो ही ग्रास खा उसे भक्तिपूर्ण नमस्कार कर एक ओर सरका दिया। सब कैदियों के भाग्य में एक ही तरकारी बदी थी और एक बार कोई तरकारी शुरू हो जाये तो अनंत कालतक वही चलती थी। उस समय साग का राज्य था। दिन बीते, पखवारे बीते, माह बीते किंतु दोनों समय वही साग, वही दाल, वही भात। चीजें तो क्या बदलनी थीं, रूप में भी कतई परिवर्तन नहीं होता था, उसका वही नित्य, सनातन, अनाद्यनंत, अपरिणामातीत अद्वितीय रूप! दो दिन में ही कैदी में इस नश्वर माया-जगत् के स्थायित्व पर विश्वास जनमने लगेगा। इसमें भी अन्य कैदियों की अपेक्षा मैं भाग्यशाली रहा, यह भी डाक्टर बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की दया से। उन्होंने हस्पताल से मेरे लिये दूध की व्यवस्था की थी, इससे कुछ दिन के लिये साग-दर्शन से मुक्ति मिली।

उस रात जल्दी ही सो गया; किंतु निश्चिंत निद्रा निर्जन कारावास का नियम नहीं, उससे कैदियों की सुखप्रियता जग सकती है। इसीलिये नियम है कि जितनी बार पहरा बदले उतनी बार कैदी को हांक मारकर उठाया जाता है और हुंकारा न भरनेतक छोड़ते नहीं। जो-जो छह डिक्री का पहरा देते थे उनमेंसे बहुत-से इस कर्तव्य-पालन से विमुख थे,—सिपाहियों में प्रायः ही कठोर कर्तव्य-ज्ञान की अपेक्षा दया और सहानुभूति अधिक थी, विशेषतः हिंदुस्तानियों के स्वभाव में। किंतु कुछ लोगों ने नहीं बख्शा। वे हमें इस तरह जगा यह कुशल संवाद पूछते : "बाबू, ठीक हैं तो ?" यह असमय का हंसी-मजाक सदा नहीं सुहाता पर समझ गया था कि जो ऐसा करते हैं वे सरलभाव से नियमवश ही हमें उठाते हैं। कई दिन विरक्त होते हुए भी इसे सह गया। अंततः निद्रा की रक्षा के लिये धमकी देनी पड़ी। दो-चार बार धमकाने के बाद देखा कि रात को कुशल-क्षेम पूछने की प्रथा अपने-आप ही उठ गयी।

अगले दिन सवेरे सवा चार बजे जेल की घंटी बजी। कैदियों को जगाने के लिये यह पहली घंटी थी। कुछ मिनट बाद दूसरी बजती, इसके बाद कैदी पंक्तिबद्ध हो बाहर आ हाथ-मुंह धो, 'लपसी' खा दिनभर की मशक्कत में लग जाते। इतनी घंटियों के बजते हुए सोना असंभव जान मैं भी उठ जाता। पांच बजे लौह-द्वार खोला जाता, मैं हाथ-मुंह धो फिर से कमरे में आ बैठा। कुछ देर बाद मेरे दरवाजे पर लपसी हाजिर हुई किंतु उस दिन उसे खाया नहीं, केवल चाक्षुष परिचय हुआ। इसके कुछ दिन बाद पहली बार इस परमान्न का भोग लगाया। लपसी अर्थात् मांडसहित उबला भात, यही थी कैदियों की छोटी हाजिरी। लपसी की त्रिमूर्ति या तीन अवस्थाएं हैं। पहले दिन लपसी का प्राज्ञभाव,. अमिश्रित मूलपदार्थ, शुद्ध शिव शुभ्र-मूर्ति। दूसरे दिन लपसी का हिरण्यगर्भ रूप, दाल के साथ सीजा हुआ खिचड़ी के नाम से अभिहित, पीतवर्ण, नाना धर्मसंकुल। तीसरे दिन थोड़े-से गुड़ में मिश्रित लपसी की विराट् मूर्ति, धूसर वर्ण, कुछ परिमाण में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य के व्यवहार-योग्य। प्राज्ञ और हिरण्यगर्भ का सेवन साधारण मर्त्य मनुष्य के बूते से बाहर मान मैंने उसे त्याग दिया था। कभी-कभार विराट् के दो ग्रास उदरस्थ कर ब्रिटिश राज्य के नाना सद्गुण और पाश्चात्य सभ्यता के उच्च दर्जे के humanitarianism (लोकहितवाद) के बारे में सोच-सोचकर आनंदमग्न होता रहता था। कहना चाहिये कि लपसी ही था बंगाली कैदियों का एकमात्र पुष्टिकर आहार, बाकी सब था सारशून्य। वह होने से भी क्या होगा ? उसका जैसा स्वाद था, वह केवल भूख से सताये जाने पर ही खाया जा सकता है, वह भी जोर-जबर्दस्ती, मन को बहुत समझा-बुझाकर।

उस दिन साढ़े ग्यारह बजे स्नान किया। घर से जो पहनकर आया था, पहले चार-पांच दिन वही पहने रहना पड़ा। नहाते समय गोहालघर के जो वृद्ध कैदी वार्डर मेरी देखरेख के लिये नियुक्त हुए थे उन्होंने कहीं से डेढ़ हाथ चौड़ा एंडी का कपड़ा जुटा दिया था, अपने एकमात्र कपड़े सूखने तक वही पहने बैठा रहता। मुझे कपड़े धोने और बर्तन मांजने नहीं पड़ते थे, गोहालघर का एक कैदी यह कर देता था। ग्यारह बजे खाना। कमरे की छितनी के सान्निध्य से बचने के लिये ग्रीष्म की धूप सहते हुए प्रायः ही आंगन में खाया करता। संतरी भी इसमें बाधा न देते। शाम का खाना होता पांच-साढ़े पांच बजे। उसके बाद लौह-द्वार खुलना निषिद्ध था। सात बजे शाम का घंटा बजता। मुख्य जमादार कैदी वार्डरों को इकट्ठा कर उच्च स्वर में नाम पढ़ते जाते थे, उसके बाद सब अपनी-अपनी जगह चले जाते। श्रांत कैदी निद्रा की शरण ले जेल के इस एकमात्र सुख का अनुभव करते। इस समय दुर्बलचेता अपने दुर्भाग्य या भावी जेल-दुःख की चिंता कर रोया करते। भगवद्-भक्त नीरव रात्रि में ईश्वर का सान्निध्य अनुभव कर प्रार्थना या ध्यान में आनंद लूटते। रात को इन अभागे, पतित, समाज-पीड़ित तीन सहस्र ईश्वरसृष्ट प्राणियों का यह अलीपुर जेल, प्रकांड यंत्रणा-गृह विशाल नीरवता में डूब जाता।

जो मेरे साथ एक ही अभियोग के अभियुक्त थे उनसे जेल में मिलना-जुलना नहीं के बराबर था। उन्हें कहीं और रखा गया था। छह डिक्री के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछली तरफ छोटी-छोटी कोठरियों की दो पंक्तियां थीं, इन दोनों पंक्तियों में कुल मिलाकर थीं ४४ कोठरियां, इसीलिये ये चवालीस डिक्री कहलाती थीं। इसी डिक्री की एक पंक्ति में अधिकतर आसामियों का वासस्थान निर्दिष्ट था। कोठरी में बंद रहते हुए भी वे निर्जन कारावास नहीं भोग रहे थे, क्योंकि एक-एक कमरे में तीन-तीन थे। जेल के दूसरे भाग में एक और डिक्री थी, उसमें कुछ एक बड़े कमरे थे; एक-एक कमरे में बारह आदमी तक रह सकते थे। जिसके भाग्य में यह डिक्री पड़ती वे अधिक सुख से रहते। इस डिक्री में बहुत-से एक ही कमरे में बंद थे, वे रात-दिन बातचीत करने का मौका और मनुष्य-संपर्क पा सुख से समय बिताते। तो भी, उनमें से एक इस सुख से वंचित थे। वह थे हेमचंद्र दास। न जाने क्यों अधिकारियों को इनसे विशेष भय या इनपर क्रोध था, इतने लोगों में से निर्जन कारावास की यंत्रणा भोगने के लिये अधिकारियों ने उन्हें ही चुना। हेमचंद्र की निजी धारणा थी कि पुलिस भरपूर चेष्टा करने पर भी उनसे दोष स्वीकार न करा सकी इसीलिये था उनपर यह क्रोध। उन्हें इस डिक्री के एक बहुत ही छोटे-से कमरे में बंद करके बाहर का दरवाजा तक बंद रखा जाता था। कह चुका हूं कि यही थी इस विशेष सजा की चरमावस्था। बीच-बीच में पुलिस नाना जाति, नाना वर्ण, नाना आकृतियों के साक्षी ला Identification (शिनाख्त) के प्रहसन का नाटक कराती। उस समय हम सबको आफिस के आगे एक लंबी कतार में खड़ा किया जाता। जेल के अधिकारी हमारे साथ जेल के दूसरे-दूसरे मुकदमे के आसामियों को मिला उन्हें दिखाते थे। किंतु यह था केवल नाम के लिये। इन आसामियों में शिक्षित और सज्जन तो एक भी नहीं था, जब उनके साथ एक ही पंक्ति में खड़े होते तो दोनों तरह के आसामियों में इतना भेद होता कि एक तरफ तो बम-केस के अभियुक्त लड़कों का तेजस्वी, तीक्ष्णबुद्धि प्रकाशक चेहरे का भाव और गठन और दूसरी तरफ साधारण कैदियों की मलिन पोशाक और निस्तेज मुख को देख जो यह न बता पाये कि कौन किस श्रेणी का है उन्हें मूर्ख तो क्या निकृष्ट मनुष्यबुद्धि से भी रहित कहना होगा। यह शिनाख्त की परेड आसामियों को अप्रिय नहीं लगती थी। इससे जेल के एकरस जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वैचित्र्य आता और आपस में दो-एक बात कहने का भी मौका मिल जाता। गिरफ्तारी के बाद पहली बार ऐसी एक परेड में अपने भाई बारींद्र को देख पाया किंतु तब उसके साथ कोई बातचीत नहीं हुई। प्रायः नरेंद्र-नाथ गोस्वामी ही मेरी बगल में खड़े होते थे इसलिये उस समय उनके साथ बातचीत जरा ज्यादा हुई। गोसाईं अतिशय सुंदर, लंबे, गोरे, बलिष्ठ, पुष्टकाय थे किंतु उनकी आंखों से कुवृत्ति झलकती थी, बातों में भी बुद्धिमत्ता का कोई लक्षण नहीं मिला। इस बारे में उनमें और अन्य युवकों में विशेष अंतर था। उनके चेहरे में प्रायः ही उच्च और पवित्र भाव अधिक और बातचीत में प्रखरबुद्धि, ज्ञानलिप्सा और महत् स्वार्थहीन आकांक्षा की अभिव्यक्ति पाता। गोसाईं की बात मूर्खतापूर्ण और लघुचेता मनुष्य की बात की तरह होते हुए भी तेज और साहस से पूर्ण थी। उन्हें उस समय पूरा विश्वास था कि वे बरी हो जायेंगे। वे कहा करते, "मेरे पिता मुकदमे में पारंगत हैं, पुलिस उन्हें कभी भी नहीं हरा सकेगी। मेरे इज़हार भी मेरे विरुद्ध नहीं जायेंगे, क्योंकि यह प्रमाणित हो जायेगा कि पुलिस ने मुझे शारीरिक यंत्रणा देकर मेरे इज़हार लिये हैं" मैंने पूछा, "तुम तो पुलिस के हाथों में थे। साक्षी कहां हैं ?" अम्लानवदन गोसाईं बोले, "मेरे पिता सैंकड़ों मुकदमे लड़े हैं, वे अच्छी तरह सब समझते हैं। साक्षी का अभाव नहीं होगा"। ऐसे लोग ही बनते हैं approver—मुखविर !

अबतक आसामियों की अनर्थक असुविधा और नाना कष्टों की बात कही है किंतु यह भी कहना चाहिये कि सभी कुछ था जेल की प्रणाली का दोष; जेल के ये सब कष्ट किसी की व्यक्तिगत निष्ठुरता या मनुष्योचित गुण के अभाव से नहीं मिले। अलीपुर जेल के तो सभी अधिकारी अतिशय भद्र, दयावान् और न्यायपरायण थे। यदि किसी जेल में कैदी की यंत्रणा कम हुई है, यूरोपीय जेल-प्रणाली की अमानुषिक बर्बरता दया और न्यायपरायणता से घटी है तो वह बुराई से भलाई हुई है अलीपुर जेल में और इमर्सन साहब के राजत्व में। इस भलाई के दो प्रधान कारण थे जेल के अंगरेज सुपरिटेंडेंट इमर्सन साहब और हस्पताल के असिस्टेंट बंगाली डाक्टर वैद्यनाथ चटर्जी के असाधारण गुण। इनमें से एक थे यूरोप के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुप्तप्राय क्रिश्चियन आदर्श के अवतार और दूसरे हिंदूधर्म के सारमर्म दया और परोपकार की जीवंत मूर्ति। इमर्सन साहब-जैसे अंगरेज इस देश में कहां आते हैं, विलायत में भी कम ही मिलते हैं। एक क्रिश्चियन सज्जन में जो गुण होने चाहियें वे सब उनमें एक साथ अवतीर्ण हुए थे। वे थे शांतिप्रिय, विचारशील, दया-दाक्षिण्य में अतुलनीय, न्यायवान् भद्र व्यवहार को छोड़ अधम के प्रति भी अभद्रता दिखलाने में स्वभाव से अक्षम, सरल, अकपट, संयमी। दोष यही था कि कर्मकुशलता और उद्यम की कमी थी, जेलर पर सारा कार्यभार छोड़ वे स्वयं निश्चेष्ट रहते। मेरा ख्याल है कि इससे कोई बड़ी भारी क्षति नहीं हुई। जेलर योगेंद्र बाबू दक्ष और योग्य पुरुष थे, बहुमूत्र से अतिशय पीड़ित होनेपर भी अपने-आप सब काम-काज देखते और साहब का स्वभाव पहचानते थे इसलिये जेल में न्याय-निष्ठा और क्रूरता के अभाव की रक्षा करते। किंतु वे इमर्सन साहब की तरह महात्मा नहीं थे, थे मात्र सामान्य बंगाली सरकारी नौकर, साहब को खुश करना जानते थे, दक्षता और कर्तव्यबुद्धि के साथ काम करते, स्वाभाविक भद्रता और शांतभाव से लोगों के साथ व्यवहार करते, इसके अतिरिक्त और कोई विशेष गुण उनमें नहीं देखा। नौकरी से प्रबल मोह था। विशेषकर तब मई का महीना था, पेंशन पाने का समय पास ही आ गया था, जनवरी में पेंशन ले दीर्घ परिश्रमोपार्जित विश्राम का सुख लूटने की आशा बंधी थी। अलीपुर बम-केस के आसामियों का आविर्भाव देख हमारे जेलर महाशय अत्यंत भीत और चिंतित हो उठे थे। ये सब उग्र-स्वभाव तेजस्वी बंगाली लड़के किस दिन क्या कांड कर बैठें इसी चिंता से वे उद्विग्न रहते। वे कहा करते, ताड़-गाछ पर केवल डेढ़ इंच चढ़ना बाकी है। किंतु उस डेढ़ इंच का केवल आधा ही वे चढ़ पाये थे। अगस्त के अंत में बोकानन साहब जेल का पर्यवेक्षण कर संतुष्ट हुए। जेलर महाशय आनंदित हो बोले, "मेरे कार्य-अवधि में साहब का यह अंतिम आगमन था, अब पेंशन का डर नहीं।" हाय रे मनुष्य की अंधता! कवि ने ठीक ही कहा है, विधाता ने दुःखी मनुष्य के दो परम उपकार किये हैं। पहला, भविष्य को निबिड़ अंधकार से ढक रखा है, दूसरा, उसका एकमात्र अवलंबन और सांत्वना-स्वरूप अंधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा उसे दी है। उनके कहने के चार-पांच दिन बाद ही नरेन गोसाईं कानाई के हाथों मारे गये, बोकानन का बार-बार जेल में आना शुरू हुआ। फलस्वरूप योगेंद्र बाबू की असमय ही नौकरी छूट गयी और शोक और रोग के मिलित आक्रमण से देह भी छूट गयी। ऐसे कर्मचारी पर संपूर्ण भार न छोड़ इमर्सन साहब स्वयं यदि सब कार्य देखते तो उनके राज में अलीपुर जेल के अधिक सुधार और उन्नति की संभावना थी। वे जितना देखते उसे सुसंपन्न भी करते, उनके चरित्रगत गुण से ही जेल नरक न बन मनुष्य को कठोर दंड देने का स्थान-भर बनकर रह गया था। उनकी बदली हो जाने पर भी उनकी साधुता का फल पूरी तरह मिट नहीं गया, अबतक भी परवर्ती कर्मचारी उनकी साधुता दस आना बचाये रखने को बाध्य हैं।

जैसे जेल के अन्यान्य विभागों में बंगाली योगेन बाबू कर्ता-धर्ता थे वैसे ही हस्पताल के सर्वेसर्वा थे बंगाली डाक्टर वैद्यनाथ बाबू। उनके उच्च अधिकारी डा॰ डैली, इमर्सन साहब की तरह दयावान् न होते हुए भी अत्यंत सज्जन और विचक्षण व्यक्ति थे। वे लड़कों का शांत आचरण, प्रफुल्लता और बाध्यता देख भूरि-भूरि प्रशंसा करते और अल्पवयस्कों के साथ हंसी-मजाक और दूसरे आसामियों के साथ राजनीति, धर्म और दर्शनविषयक चर्चा करते। डाक्टर साहब थे आयरिश वंशजात, उस उदार और भावप्रवण जाति के अनेक गुण उनमें साकार हुए थे। उनमें क्रूरता रत्ती-भर भी नहीं थी, कभी-कभी क्रोध के वशीभूत हो कोई कड़ी बात या कठोर आचरण कर बैठते लेकिन प्रायः ही उपकार करना उन्हें प्रिय था। वे जेल के कैदियों की चालाकी और कृत्रिम रोगों को देखने के अभ्यस्त थे; किंतु ऐसा भी होता कि असली रोगी की भी कृत्रिमता के संदेह में उपेक्षा कर देते थे, तो भी, सच्ची बीमारी का पता लगने पर बहुत ही यत्न से और दयापूर्वक रोगी की व्यवस्था करते। मुझे एक बार हल्का बुखार आया। उस समय थी वर्षाऋतु। अनेक वातायनयुक्त विशाल दालान में जलसिक्त मुक्त पवन अठखेलियां करता, फिर भी मैं हस्पताल जाना या दवा खाना नहीं चाहता था। रोग और चिकित्सा के संबंध में मेरे विचार बदल गये थे, औषधि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सेवन में अब ज्यादा आस्था नहीं रह गयी थी, मुझे विश्वास था कि रोग कठिन न हो तो प्रकृति की साधारण क्रिया से ही स्वास्थ्यलाभ होगा। बरसाती हवा के स्पर्श से जो अनिष्ट संभव है उसका योगबल से दमन कर योगशिक्षागत सारी क्रियाओं का याथार्थ्य और साफल्य अपनी तर्कबुद्धि के सामने प्रतिपादन करने की इच्छा थी। किंतु डाक्टर साहब मेरे लिये महाचिंतित थे, बड़े आग्रह के साथ उन्होंने मुझे हस्पताल जाने की आवश्यकता समझायी। हस्पताल जानेपर जितना हो सका उन्होंने घर की तरह रखने-खाने की व्यवस्था कर मुझे सौजन्य से रखा। वर्षा में जेल-वार्ड में रहने से मेरा स्वास्थ्य खराब न हो इस कारण वे मुझे ज्यादा दिन यहां सुख से रखना चाहते थे। किंतु मैं जबरदस्ती वार्ड में लौट आया, हस्पताल में और अधिक रहने को सहमत नहीं हुआ। सबपर उनका समान अनुग्रह नहीं था। खास कर जो पुष्टशरीर और बलवान् थे उन्हें बीमारी होते हुए भी हस्पताल में रखने से डरते थे। उनकी यह भ्रांत धारणा थी कि यदि जेल में कोई भी कांड घटता है तो वह इन सबल और चंचल लड़कों द्वारा होगा। अंततः ठीक इसका विपरीत फल हुआ, हस्पताल में जो कांड घटा वह घटा व्याधिग्रस्त, विशीर्ण, शुष्ककाय सत्येंद्रनाथ वसु और रोग-क्लिष्ट धीरप्रकृति, अल्प-भाषी कानाईलाल द्वारा। डाक्टर डैली में ये सब गुण होते हुए भी वैद्यनाथ बाबू ही थे उनके अधिकांश सत्यकार्यों के प्रवर्तक और प्रेरणादायक। सचमुच वैद्यनाथ बाबू के समान हृदयवान् मनुष्य मैंने न पहले कभी देखा और न बाद में ही दीखने की आशा है, उन्होंने मानो दया और उपकार करने के लिये ही जन्म लिया था। किसी भी दुःखगाथा से अवगत होना और उसे हल्का करने को तत्काल दौड़ना ही जैसे उनके चरित्र का स्वाभाविक कारण और अवश्यंभावी कार्य बन गया था। वे इस यंत्रणापूर्ण दुःखालय में मानो नरक के प्राणियों को स्वर्ग का सयत्न-संचित नंदनवारि वितरण करते थे। किसी भी अभाव, अन्याय या अनर्थक कष्टमोचन का श्रेष्ठ उपाय था उसे डाक्टर बाबू के कानोंतक पहुंचा देना। उसे दूर करना यदि उनके बस का होता तो वैसी व्यवस्था करने से नहीं चूकते थे। वैद्यनाथ बाबू हृदय में गभीर देशभक्ति संजोये थे लेकिन सरकारी नौकर होने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण प्राणों की उस भावना को चरितार्थ करने में अक्षम थे। उनका एकमात्र दोष था जरूरत से ज्यादा सहानुभूति। किंतु वह भाव जेल के अधिकारी के लिये दोष होते हुए भी उच्च नीति के अनुसार मनुष्यत्व का चरम विकास और भगवान् का प्रियतम गुण कहलाता है। उनके लिये साधारण कैदियों और "वंदे मातरम्" के कैदियों में कोई भेद नहीं था; पीड़ित देखते ही सभीको सयत्न हस्पताल में रखते और पूर्ण शारीरिक स्वास्थ्यलाभ हुए बिना छोड़ना नहीं चाहते थे। यह दोष ही था उनके बरखास्त किये जाने का असली कारण। गोसाईं की हत्या के बाद अधिकारियों ने उनके इस आचरण पर संदेह कर उन्हें अन्यायपूर्वक कर्मच्युत किया।

इन सब अधिकारियों की दया और मनुष्योचित स्वभाव का वर्णन करने का विशेष अभिप्राय है। जेल में हमारे लिये जो व्यवस्था की गयी थी, पहले उसकी आलोचना करने को बाध्य हुआ था और उसके बाद भी ब्रिटिश जेलप्रणाली की अमानुषिक निष्ठुरता सिद्ध करने की चेष्टा करूंगा। बाद में कोई भी पाठक इस निष्ठुरता को कर्मचारियों के चरित्र का कुफल न मान ले इसीलिये किया है मुख्य कर्मचारियों के गुणों का बखान। कारावास की प्रथम अवस्था के विवरण में उनके इन सब गुणों के और भी प्रमाण मिलेंगे।

निर्जन कारावास में पहले दिन की मानसिक अवस्था का वर्णन कर चुका हूं। इस निर्जन कारावास में समय बिताने के लिये पुस्तक या दूसरी कोई वस्तु के बिना कुछ दिन रहना पड़ा था। बाद में इमर्सन साहब मुझे घर से धोती, कुर्ता और पढ़ने को किताबें मंगवाने की अनुमति दे गये। मैंने कर्मचारियों से कलम, दवात और चिट्ठी के लिये जेल के छपे कागज मंगवा अपने पूजनीय मौसा, 'संजीवनी' के सुप्रसिद्ध संपादक को धोती, कुर्ता और पढ़ने की किताबों में गीता और उपनिषद् भेजने का अनुरोध किया। इन दो पुस्तकों को मुझतक पहुंचने में दो-चार दिन लगे। तबतक निर्जन कारावास का महत्त्व समझने का यथेष्ट अवसर मिला। यह भी जाना कि ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारावास में दृढ़ और सुप्रतिष्ठित बुद्धि भी नष्ट होती है और जल्द ही उन्मादावस्था को पहुंच जाती है और इसी अवस्था में भगवान् की असीम दया और उनके साथ युक्त होने का कितना दुर्लभ सुअवसर है यह भी हृदयंगम हुआ। कारावास से पहले मुझे एक घंटा सवेरे और एक घंटा शाम को ध्यान करने का अभ्यास था। इस निर्जन कारावास में और कोई काम न होने से ज्यादा देर ध्यानावस्थित रहने की चेष्टा की। किंतु मनुष्य के सहस्र दिशाओं की ओर भागनेवाले चंचल मन को ध्यानार्थ यथेष्ट संयत और एक-लक्ष्यमुखी रखना अनभ्यस्त मनुष्य के लिये सहज नहीं। किसी तरह डेढ़-दो घंटे एक-मन हो रह पाता, फिर मन विद्रोही हो उठता, देह भी अवसन्न हो पड़ जाती। पहले नाना विचारों में व्यस्त रहता था। बाद में मनुष्य की उस आलापरहित चिंतन की विषयशून्य असहनीय अकर्मण्यता से मन धीरे-धीरे चिंतनशक्ति-रहित होने लगा। ऐसी अवस्था होने लगी मानो सहस्र अस्पष्ट विचार मन के सब द्वारों के चारों ओर चक्कर काट रहे हैं किंतु प्रवेश-पथ निरुद्ध है; दो-एक प्रवेश करने में समर्थ होने पर भी उस निस्तब्ध मनोराज्य की नीरवता से भयभीत हो निःशब्द भाग खड़े होते। इस अनिश्चित अवश अवस्था से अतिशय मानसिक कष्ट पाने लगा। प्रकृति की शोभा से चित्तवृत्ति स्निग्ध होने और तप्त मन को सांत्वना मिलने की आशा से बाहर की ओर निहारा, किंतु उसी एकमात्र वृक्ष, नीलाकाश के परिमित टुकड़े और जेल के उसी नीरस दृश्य से मनुष्य का ऐसी अवस्थाप्राप्त मन भला कितनी देर सांत्वना पा सकता है? दीवारों की ओर ताका, जेल की कोठरी की उस निर्जीव सफेद दीवार के दर्शन से मन जैसे और भी अधिक निरुपाय हो केवल बद्धावस्था की यंत्रणा ही उपलब्ध कर मस्तिष्क के पिंजरे में छटपटाने लगा। फिर से ध्यान करने बैठा, किसी भी तरह ध्यान न कर सका वरन् उस तीव्र विफल चेष्टा से मन और भी श्रांत, अकर्मण्य और दग्ध होने लगा। चारों ओर नजर दौड़ायी, अंततः जमीन पर कुछ बड़ी-बड़ी काली चींटियों को विवर के पास घूमते-फिरते देखा, उनकी गतिविधि, चेष्टा और चरित्र का निरीक्षण करते-करते समय कट गया। उसके बाद देखता हूं कि छोटी-छोटी लाल चींटियां भी चल-फिर रही हैं। काली और लाल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा झगड़ा, काली चींटियां लाल को देख काट-काट कर उन्हें मार डालने लगीं। अत्याचार से पीड़ित लाल चींटियों पर बड़ी दया और सहानुभूति उपजी। मैं काली चींटियों को भगा उन्हें बचाने लगा। इससे एक काम जुटा, सोचने का विषय भी मिला, चींटियों की सहायता से ये कुछ दिन कट गये। फिर भी दीर्घ दिनार्द्ध बिताने का कोई उपाय नहीं जुटाता था। मन को समझाया, जबरदस्ती विचारों को खींच लाया किंतु दिन प्रतिदिन मन विद्रोही होने लगा, हाहाकार करने लगा। काल मानों उसपर असह्य भार बन पीड़ा पहुंचा रहा हो, उस चाप से चूर्ण हो हांफने तक की शक्ति वह नहीं पा रहा था, मानों स्वप्न में शत्रुद्वारा आक्रांत व्यक्ति गला घोंटने से मरा जा रहा हो एवं हाथ-पैर होते हुए भी हिलने-डुलने की शक्ति न हो। यह अवस्था देख मैं आश्चर्य-चकित रह गया! सच है कि मुझे अकर्मण्य और निश्चेष्ट रहना कभी नहीं रुचा, फिर भी कितनी ही बार एकाकी रह चिंतन-मनन में समय गुजारा है, अब मन में ऐसी क्या दुर्बलता आ गयी है कि थोड़े दिन के इस एकांत से आकुल हो उठा हूं? सोचने लगा कि शायद उस स्वेच्छाप्राप्त एकांत और इस परेच्छाप्राप्त एकांत में प्रभेद है। घर में रहते हुए एकाकी रहना एक बात है और परेच्छावश कारागृह में यह निर्जनवास बिल्कुल दूसरी बात। वहां, जब चाहूं मनुष्य का आश्रय ले सकता हूं, पुस्तकगत ज्ञान और भाषा-लालित्य में, बंधु-बांधवों के प्रिय संभाषण में, रास्ते के कोलाहल में, जगत् के विविध दृश्यों में मन की तृप्ति का साधन पा प्राणों को शीतल कर सकता हूं। किंतु यहां कठोर नियमों में आबद्ध हो परेच्छा से सब संसर्गों से रहित हो रहना होगा। कहते हैं, जो निर्जनता सह सकता है वह या तो देवता है या पशु, मनुष्य के लिये यह संयम है साध्यातीत। पहले इस बात में विश्वास नहीं कर पाता था, अब समझा कि सचमुच योगाभ्यस्त साधकों के लिये भी यह संयम सहजसाध्य नहीं। याद हो आया इतालवी राजहत्यारे 'ब्रेशी' का भयंकर अंत। उनके निष्ठुर न्यायाधीशों ने उन्हें प्राण दंड न दे सात साल के निर्जन कारावास की सजा दी थी। एक साल बीतते न बीतते ब्रेशी पागल हो गया। तो भी इतने दिन तो सहा! मेरे मन की दृढ़ता क्या इतनी कम है? उस समय नहीं समझ सका था कि भगवान् मेरे साथ खेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं, खेल-खेल में कुछ आवश्यक शिक्षाएं दे रहे हैं। मन की कैसी अवस्था में निर्जन कारावास के कैदी पागलपन की ओर दौड़ते हैं, उन्होंने यह दिखा, कारावास की ऐसी अमानुषिक निष्ठुरता समझा मुझे यूरोपीय जेल-प्रणाली का घोर विरोधी बना दिया, जिससे मैं यथाशक्ति देशवासियों और जगत् को इस बर्बरता से मोड़ दयानुमोदित जेल-प्रणाली का पक्षपाती बनाने की चेष्टा करूं, यह थी उनकी पहली शिक्षा। याद आता है, पन्द्रह साल पहले विलायत से स्वदेश लौटकर जब मैंने बंबई से प्रकाशित 'इंदु प्रकाश' पत्रिका में कांग्रेस की निवेदन-नीति के विरुद्ध तीव्र आलोचनात्मक प्रबंध लिखने शुरू किये थे तो स्वर्गीय महादेव गोविंद रानाडे ने युवकों के मनपर इन प्रबंधों का प्रभाव पड़ते देख उन्हें बंद करने के उद्देश्य से, जैसे ही मैं उनसे मिलने गया, मुझे आधे घंटेतक इस काम को छोड़ कांग्रेस का दूसरा कोई भी कार्यभार ग्रहण करने का उपदेश दिया। उनकी इच्छा मुझे जेल-प्रणाली-सुधार का कार्य देने की थी। रानाडे की इस अप्रत्याशित उक्ति से मैं आश्चर्यचकित और असंतुष्ट हुआ था और मैंने उस कार्यभार को अस्वीकार किया था। तब नहीं जानता था कि यह है सुदूर भविष्य का पूर्वाभास-मात्र और एक दिन स्वयं भगवान् मुझे जेल में एक साल रखकर इस प्रणाली की क्रूरता और व्यर्थता एवं सुधार की आवश्यकता दिखायेंगे। अब समझा कि आज की राजनीतिक अवस्था में इस जेल-प्रणाली के सुधार की संभावना नहीं, फिर भी, जेल में बैठे-बैठे, अपनी अंतरात्मा को साक्षी बना, उसका प्रचार करने और उसके संबंध में युक्ति-तर्क देने की प्रतिज्ञा की जिससे स्वाधीन भारत में विदेशी सभ्यता का यह नारकीय अंश चिपका न रहे। भगवान् की दूसरी अभिसंधि थी मेरे मन की इस दुर्बलता को मन के आगे रख हमेशा के लिये विनष्ट करना। जो योगावस्था के प्रार्थी हैं उनके लिये जनता और निर्जनता समान होनी उचित हैं। वास्तव में बहुत थोड़े ही दिनों में यह दुर्बलता झड़ गयी, अब लगता है कि बीस साल अकेले रहने पर भी मन चंचल नहीं होगा। मंगलमय अमंगल द्वारा भी परम मंगल साधते हैं। तीसरी अभिसंधि थी मुझे यह शिक्षा देना कि मेरे योगाभ्यास में स्वचेष्टा से कुछ नहीं होगा, श्रद्धा और संपूर्ण आत्मसमर्पण ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है सिद्धि पाने का पथ; भगवान् प्रसन्न हो स्वयं जो शक्ति, सिद्धि या आनंद देंगे उसे ही ग्रहण कर उनके कार्य में लगाना ही होगा मेरी योगस्पृहा का एकमात्र उद्देश्य। जिस दिन से अज्ञान का प्रगाढ़ अंधकार छंटने लगा, उसी दिन से मैं जगत् की सब घटनाओं का निरीक्षण करते-करते मंगलमय श्रीहरि के आश्चर्यमय अनंत मंगल स्वरूप की उपलब्धि कर रहा हूं। ऐसी कोई घटना नहीं—चाहे वह घटना महान् हो या छोटी-से-भी-छोटी—जिसके द्वारा कोई मंगल संपन्न नहीं होता। प्रायः वे एक कार्य द्वारा दो-चार उद्देश्य सिद्ध करते हैं। हम जगत् में बहुत बार अंधशक्ति की लीला देखते हैं, अपव्यय ही प्रकृति का नियम है—कहकर भगवान् की सर्वज्ञता को अस्वीकार कर ईश्वरीय बुद्धि को दोषी ठहराते हैं। यह अभियोग निर्मूल है। ईश्वरीय शक्ति कभी भी अंधभाव से कार्य नहीं करती, बूंद भर भी उनकी शक्ति का अपव्यय नहीं हो सकता वरन् वे ऐसे संयत तरीके से अल्प व्ययद्वारा प्रचुर फल उत्पादित करते हैं कि मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकता।

इस तरह मन की निश्चेष्टता से पीड़ित हो कुछ दिन कष्ट से समय काटा। एक दिन अपराह्न को कुछ सोच रहा था, विचार उमड़ने लगे, अचानक सारे विचार इतने असंयत और असंलग्न होने लगे कि मैं समझ गया कि विचारों पर बुद्धि की निग्रह-शक्ति लुप्त हो चली है। उसके बाद जब प्रकृतिस्थ हुआ तो देखा कि बुद्धि की निग्रह-शक्ति लुप्त होने पर भी स्वयं बुद्धि लुप्त या पल भर को भी भ्रष्ट नहीं हुई, वरन् शांत भाव से मन की इस अपूर्व क्रिया का जैसे निरीक्षण कर रही थी। किंतु तब मैं उन्मत्तता के भय से त्रस्त हो इस ओर ध्यान नहीं दे पाया। प्राणपन से भगवान् को पुकारा, अपने बुद्धिभ्रंश के निवारण के लिये कहा। उसी क्षण मेरे संपूर्ण अंतःकरण में हठात् ऐसी शीतलता व्यापने लगी, उत्तप्त मन ऐसा स्निग्ध, प्रसन्न और परम सुखी हो उठा कि जीवन में पहले कभी इतनी सुखमय अवस्था अनुभव नहीं कर सका था। जैसे शिशु मातृ-अंक में आश्वस्त और निर्भीक हो सोया रहता है मैं भी मानों विश्वजननी की गोद में उसी तरह सोया रहा। इसी दिन से मेरा कारावास का कष्ट खतम हो गया। इसके बाद कई बार बद्धावस्था की अशांति, निर्जन कारावास और कर्महीनता से मन की उद्विग्नता, शारीरिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लेश या व्याधि, योगांतर्गत कातर अवस्थाएं आयीं किंतु उस दिन भगवान् ने एक पल में अंतरात्मा में ऐसी शक्ति भर दी कि ये सब दुःख मन पर छाने और मन पर से हट जाने के बाद कोई दाग या चिह्न न छोड़ पाते, दुःख में ही बल और आनंद अनुभव कर बुद्धि मन के दुःखों का प्रत्याख्यान करने में समर्थ होती। पद्मपत्र पर जलबिन्दुवत् महसूस होता वह दुःख। उसके बाद जब पुस्तकें आयीं तो उनकी आवश्यकता बहुत कम रह गयी थी। पुस्तकें न आने पर भी अब मैं रह सकता था। यद्यपि इन प्रबंधों का उद्देश्य अपने आंतरिक जीवन का इतिहास लिखना नहीं फिर भी इस घटना का उल्लेख किये बिना न रह सका। बाद में, दीर्घकालीन निर्जन कारावास में क्योंकर आनंदपूर्वक रहना संभव हुआ वह इस घटना से समझा जा सकेगा। इसी हेतु भगवान् ने वैसी अवस्था रची। उन्होंने पागल न बना, निर्जन कारावास में पागल हो जाने की क्रमिक प्रक्रिया का मेरे मन में अभिनय करा बुद्धि को उस नाटक के अविचलित दर्शक के रूप में बिठाये रखा। उससे मुझे शक्ति मिली, मनुष्य की निष्ठुरता के कारण अत्याचार पीड़ित व्यक्तियों के प्रति दया और सहानुभूति बढ़ी और प्रार्थना की असाधारण शक्ति व सफलता हृदयंगम की।

मेरे निर्जन कारावास के समय डाक्टर डैली और सहकारी सुपरिंटेंडेंट साहब प्रायः हर रोज मेरे कमरे में आ दो-चार बातें कर जाते। पता नहीं क्यों, मैं शुरू से ही उनका विशेष अनुग्रह और सहानुभूति पा सका था। मैं उनके साथ कोई विशेष बात न करता, वे जो पूछते उसका उत्तर-भर दे देता। वे जो विषय उठाते वह या तो चुपचाप सुनता या केवल दो-एक सामान्य बात कह चुप हो जाता। तथापि वे मेरे पास आना न छोड़ते। एक दिन डैली साहब ने मुझसे कहा कि मैंने सहकारी सुपरिंटेंडेंट को कहकर बड़े साहब को मना लिया है कि तुम प्रतिदिन सवेरे-शाम डिक्री के सामने टहल सकोगे। तुम सारा दिन एक छोटी-सी कोठरी में बंद रहो यह मुझे अच्छा नहीं लगता इससे मन खराब होता है और शरीर भी। उस दिन से मैं सवेरे-शाम डिक्री के आगे खुली जगह में घूमने लगा। शाम को दस, पंद्रह, बीस मिनट घूमता लेकिन सवेरे एक घंटा, किसी-किसी दिन दो घंटेतक बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहता, समय की कोई पाबंदी नहीं थी। यह समय बहुत अच्छा लगता। एक तरफ जेल का कारखाना, दूसरी तरफ गोहालघर—मेरे स्वाधीन राज्य की दो सीमाएं। कारखाने से गोहालघर, गोहालघर से कारखानेतक घूमते-घूमते या तो उपनिषद् के गभीर, भावोद्दीपक, अक्षय शक्तिदायक मंत्रों की आवृत्ति करता या फिर कैदियों का कार्यकलाप और यातायात देख 'सर्वघट में नारायण हैं' इस मूल सत्य को उपलब्ध करने की चेष्टा करता। वृक्ष, गृह, प्राचीर, मनुष्य, पशु, पक्षी, धातु और मिट्टी में, सर्वभूतों में '**सर्वं खल्विदं ब्रह्म**' मंत्र का मन-ही-मन उच्चारण कर इस उपलब्धि को आरोपित करता। यह करते-करते ऐसा भाव हो जाता कि कारागार और कारागार न लगता। वह उच्च प्राचीर, वह लौह कपाट, वह सफेद दीवार, वह सूर्य-रश्मि-दीप्त नील-पत्र-शोभित वृक्ष, वह छोटा-मोटा सामान मानों अब अचेतन नहीं रहा, सर्वव्यापी, चैतन्यपूर्ण हो सजीव हो उठा, ऐसा लगता कि वे मुझसे स्नेह करते हैं, मुझे आलिंगन में भर लेना चाहते हैं। मनुष्य, गौ, चींटी और विहंग चल रहे हैं, उड़ रहे हैं, गा रहे हैं, बातें कर रहे हैं, पर है यह सब प्रकृति की क्रीड़ा; भीतर एक महान् निर्मल, निर्लिप्त आत्मा शांतिमय आनंद में निमग्न हो विराजमान है। कभी-कभी ऐसा अनुभव होता मानों भगवान् उस वृक्ष के नीचे खड़े आनंद की वंशी बजा रहे हैं, और उस माधुर्य से मेरा हृदय मोहे ले रहे हैं। सदा यह अहसास होने लगा कि कोई मुझे आलिंगनमें भर रहा है, कोई मुझे गोदमें लिये हुए है। इस भावस्फुटनसे मेरे सारे मन-प्राण को अधिकृत कर एक निर्मल महती शांति विराजने लगी, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। प्राणों का कठिन आवरण खुल गया और सभी जीवोंपर प्रेम का स्रोत उमड़ पड़ा। प्रेम के साथ दया, करुणा, अहिंसा इत्यादि सात्त्विक भाव मेरे रजःप्रधान स्वभाव को अभिभूत कर और अधिक पनपने लगे। और जैसे-जैसे वे बढ़ने लगे वैसे-वैसे आनंद भी बढ़ा एवं निर्मल शांतिभाव गभीर हुआ। मुकदमे की दुश्चिंता पहले ही दूर हो गयी थी, अब उससे उल्टा विचार मन में आया। भगवान् मंगलमय हैं, मेरे मंगल के लिये ही मुझे कारागृह में लाये हैं, कारामुक्ति और अभियोग खंडन अवश्य ही होगा यह दृढ़ विश्वास जम गया। इसके बाद बहुत दिनतक मुझे जेल में कोई भी कष्ट भोगना नहीं पड़ा।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

२९ मार्च—७५ वर्ष पहले इस रोज माताजी फ्रांस से भारत आयीं और श्रीअरविन्द से मिली थीं। माताजी ने इस मिलन के बारे में अपनी दैनन्दिनी में लिखा था, "इससे अधिक फर्क नहीं पड़ता कि हजारों लोग गहनतम अज्ञान में धंसे हैं, वे, जिन्हें मैंने कल देखा धरती पर हैं, उनकी उपस्थिति इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि एक दिन आयेगा जब अंधकार प्रकाश में रूपांतरित हो जायेगा, और तेरा राज्य पृथ्वी पर वस्तुतः प्रतिष्ठित हो जायेगा . . ." नलिनी दा ने अपने संस्मरणों में लिखा था, "पहली बार श्रीअरविंद ने माताजी के गुणों के बारे में बताते हुए कहा, मैंने इतना निरपेक्ष और अबाध समर्पण कहीं भी और कभी नहीं देखा। उन्होंने यह टिप्पणी और जोड़ दी कि शायद केवल स्त्रियां ही इतने समग्र रूप में और इतनी पूरी तरह और सुगमता से अपने-आपको देने में समर्थ हैं। इसका अर्थ हुआ भूतकाल के सभी गुणों और त्रुटियों को मिटाते हुए उसका पूरी तरह से विलोपन।" माताजी ने पहली अप्रैल को अपनी दैनन्दिनी में लिखा : "एक महान् आनंद, एक गभीर शांति मुझपर राज कर रही है और फिर भी मेरी सभी आंतरिक रचनाएं एक निष्फल स्वप्न की तरह विलीन हो गयी हैं और अब मैं स्वयं को बिना किसी चौखटे या प्रणाली के तेरी विशालता के सम्मुख पाती हूं . . ."

इस पुण्य दिवस की हीरक जयंती के उपलक्ष्य में आश्रमवासियों तथा दर्शनार्थियों ने श्रीअरविन्द के कमरे के दर्शन किये, शाम को क्रीड़ांगण में सामूहिक ध्यान हुआ।

इस अवसर पर पांडिचेरी के नागरिकों ने भी एक जुलूस निकाला और गांधी मैदान में सार्वजनिक सभा का आयोजन किया। श्री एम० पी० पंडित, प्रो० के० वैंकटरामन् तथा श्री एस० रामलिंगम् के भाषण हुए। शोभा-दी के दल ने संगीत का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

४ अप्रैल—१९१० में इस दिन श्रीअरविन्द पांडिचेरी आये थे। हर साल की तरह इस बार भी शाम को क्रीड़ांगण में ध्यान हुआ।

२४ अप्रैल—१९२० में इस दिन माताजी जापान से पांडिचेरी आयीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं। सवेरे लोगों ने श्रीअरविन्द के कमरे के दर्शन किये, सवेरे आश्रम में और शाम को मार्च-पास्ट के बाद क्रीड़ांगण में सामूहिक ध्यान हुआ। इस अवसर पर सावित्री का एक उद्धरण संदेश के तौर पर बांटा गया जिसका भाव है :

अंध नियति और विरोधी शक्तियों के ऊपर
एक निष्कंप अपरिवर्तनशील इच्छा-शक्ति विद्यमान है,
अपने कर्मों का परिणाम उसकी सर्वशक्तिमत्ता के हाथ में छोड़ दे।
सभी वस्तुएं भगवान् के रूपांतरकारी मुहूर्त में बदल जायेंगी।

केंद्रों के समाचार

५ मार्च को पुरुलिया में सर्वांगीण शिक्षा के विषय में गोष्ठी हुई। २६ मार्च को अंडूल (हाउ़रा) में साधना में काम की महत्ता विषय पर सेमिनार हुआ। बारानागौर में भी १२ मार्च को एक मीटिंग हुई।

श्रीअरविंद सोसायटी के क्षेत्रीय केंद्र ने विधान सरणी इत्यादि में २६ फरवरी को पांचवें स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया। इसमें कई लोगों के भाषण हुए और भक्ति गीतों का भी कार्यक्रम हुआ।

गुलबर्गा (कर्णाटक) में २९ मार्च जोर-शोर से मनाया गया।

घोषणाएं

श्रीअरविंद सोसायटी की वार्षिक सभा १२, १३ तथा १४ अगस्त ८९ को पांडिचेरी में होगी। रेलवे कंसेशन मिलने की संभावना है। अधिक जानकारी के लिये कृपया अपने शहर के केंद्र या शाखा से या सीधे पांडिचेरी के मुख्य दफ्तर से संपर्क करें।

"ह्वाट इज स्पिरिचुएलिटी"—यह चार पृष्ठों का फोल्डर है। १०० प्रतियों का दाम १० रु. है। जिन-जिन को रस हो वे इस दर के अनुसार अपना मनीआर्डर या क्रॉस चेक "श्रीअरविंद सोसायटी" के नाम भेज कर प्रतियां मंगवा सकते हैं।

श्रीअरविन्द सोसायटी के सदस्यों की एक असाधारण बैठक श्रीअरविन्द भवन, ८ शेक्सपीयर सरणी कलकत्ता में १-७-८९ को शाम के ५ बजे होगी जिसमें शोध निधि के अतिरिक्त पैसों की व्यवस्था के बारे में विचार होगा। उसके बारे में सूचना और व्याख्या अलग संलग्न है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Selfishness kills the soul; destroy it. But take care that your altruism does not kill the souls of others.

Sri Aurobindo

Assam Tea Warehousing Corporation

Registered and approved Warehouse
at Gauhati (Assam)

H.O.: 8, Camac Street, Room No. 7
Shantiniketan Building
CALCUTTA – 700 017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
a good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

सबसे पहली चीज होनी चाहिये 'शांति'। तुम जो कुछ करो उसे शांतिपूर्ण तरीके से करना चाहिये।

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर-२४७००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

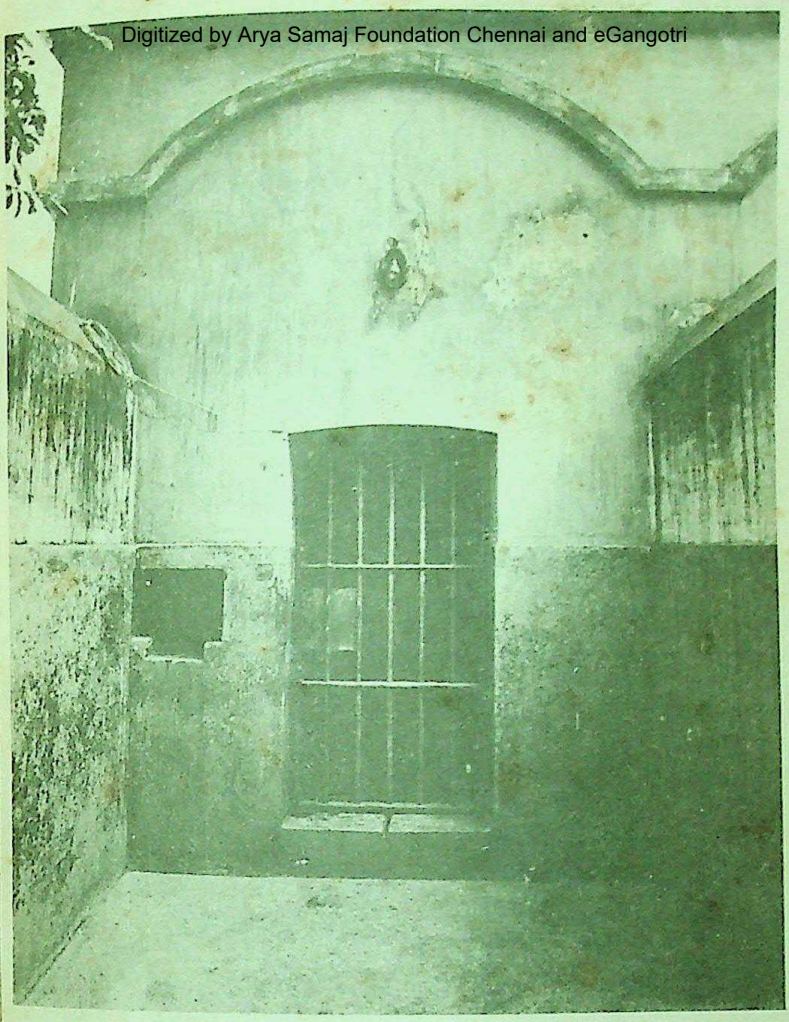

अग्निशिखा

जुलाई

आखिल भारतीय पत्रिका

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जुलाई १९८९ वर्ष १९, अंक १२, पूर्णांक २२८

विषय-सूची

सन्देश	माताजी	१
'संपादकीय' : सेवा	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		३
कारावास की कहानी		७
कारागृह और स्वाधीनता		२८
सोसायटी समाचार		३७

आवरण पृष्ठ १—अलीपुर जेलका वह कमरा जिसमें श्रीअरविंद ने तपस्या की थी

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के १० और पुरोधा के १४ शीघ्र भेजें अन्यथा अगला अंक वी. पी. पी. से जायगा। वी. पी. पी लौट आने से हमें बहुत हानि होती है। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो २२५ और २७५ एक साथ या किस्तों में देकर अग्निशिखा और पुरोधा के या ५०० देकर दोनों के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

अग्निशिखा वार्षिक १०.०० आजीवन २२५.००

श्रीअरविंद सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

अगर कोई सचाई से दूसरों की और संसार की सहायता करना चाहता है तो उसके लिये सबसे अच्छा तरीका यह है कि वह स्वयं वैसा बन जाये जैसा कि वह औरों को बनाना चाहता है—केवल एक उदाहरण बनने के लिये नहीं, बल्कि इसलिये कि इस तरह वह व्यक्ति विकिरण करती हुई शक्ति का केन्द्र बन जाता है और अपने अस्तित्व मात्र से बाकी समस्त संसार को अपने-आपको रूपान्तरित करने के लिये बाधित करता है।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

सेवा

कुछ दिन पहले एक सज्जन की चिट्ठी आयी। अब वे सेवा-निवृत्त हो गये हैं और हृद्-रोग से पीड़ित हैं। जब वे सरकारी नौकर थे तो अधिकतर लोगों की तरह वे न कामचोर थे न आलसी। उन्हें निवृत्ति से पहले ऐसा काम दिया गया था जो बहुत जल्दी ही पूरा करना था। कर्तव्यनिष्ठ मनुष्य की तरह उन्होंने अत्यन्त उत्साह से वह कार्य पूरा किया। उस समय न उन्होंने काम के घंटे देखे; न अपनी सुविधा या खाने-पीने की चिंता की। कार्य समाप्त करने के लिये उन्होंने बारह से सोलह घंटोंतक अविरत श्रम किया। निवृत्ति के साथ-साथ उन्हें दिल का दौरा पड़ा जो बहुत गंभीर तो न था किंतु चेतावनी अवश्य था।

इस समय वे सज्जन यह अफसोस कर रहे हैं कि उन्होंने अत्यधिक परिश्रम कर अपनी मुसीबत क्यों बुला ली।

इनके जैसे और भी लोग होंगे जो अपनी निष्ठा के लिये अब पश्चात्ताप करते हों। वास्तव में हमें अपना दृष्टिकोण बदलना होगा। हम कहीं भी काम करें, घर में, दफ़र में या समाज में, हमें कोशिश यही करनी चाहिये कि हर क्षण हम यह सब भगवान् को अर्पण करके, उनकी सेवा मानकर ही करें। इस मनोवृत्ति से हमें एक लाभ यह होता है कि कार्य करते हुए उसकी जिम्मेदारी हम अपनी नहीं समझते इसलिये तनाव-मुक्त रह सकते हैं और तब शरीर भी ज्यादा स्वस्थ रहता है। इस सिलसिले में मुझे श्री पुराणी जी की वाणी याद आती है। उन्होंने सत्तर वर्ष की आयु में भारत से आरंभ कर सिंगापुर होते हुए फ्रांसतक का दौरा किया क्योंकि उन्हें कई देशों से निमंत्रण मिले थे कि वे श्रीअरविंद और माताजी के बारे में भाषण दें। ग्यारह महीनों तक निरंतर यात्रा और भाषण के लिये नोट्स तैयार करने और लोगों से मिलने का ऐसा तांता रहा कि जब वे घर लौटे तो उन्हें दिल का दौरा पड़ गया। किसीने कुछ दिन बाद उन्हें समझाना चाहा कि इतना परिश्रम न करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो यह बीमारी न होती। वे हंसकर बोले, "मैंने अपने गुरु का संदेश फैलाया, वह मेरा मिशन था, अब अगर मृत्यु आये भी तो मुझे उसकी चिंता नहीं।"

हमारे निवृत्ति-प्राप्त सज्जन अगर यह सोचें कि भगवान् ने मुझे देश की सेवा करने का मौका दिया और मैंने उसे भरसक निभाया, अब अगर कुछ सावधानी बरतनी पड़ी तो वह भी स्वीकार है। देश की सेवा भगवान् की, मानव में स्थित भगवान् की सेवा है। ऐसा अवसर दिया गया यही मेरा सौभाग्य है।

—अनुबेन

दैनन्दिनी

जुलाई

१. हे प्रभो, असीम हर्ष मेरे हृदय को भर रहा है, अद्भुत तरंगों में प्रसन्नता के गीत मेरे मस्तिष्क से गुजरते हैं और तेरी निश्चित विजय के पूर्ण विश्वास में मुझे चरम शान्ति और अजेय शक्ति प्राप्त होती हैं।

२. हे प्रभो, वर दे कि मैं एक ऐसी आग बन जाऊं जो प्रकाश दे और ऊष्मा भी दे। मैं उस स्रोत की तरह बनूं जो प्यास बुझाए, उस वृक्ष की तरह होऊं जो शरण दे और सुरक्षित रखे।

३. ओह, सच्चे प्रकाश, चरम प्रेम, दिव्य स्वामी, तू जो हमारे प्रकाश का, जीवन का स्रोत है, हमारा मार्ग-दर्शक और संरक्षक है, मैं तुझे अंतर की कितनी गहराई से पुकारती हूं।

४. यह सीमाहीन प्रेम का सामंजस्य है, समस्त दुःख-दर्द और अंधकार का विजेता प्रेम !

५. हे मधुर सामंजस्य जो प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है, मेरे हृदय में निवास करता मधुर सामंजस्य, जीवन के सबसे बाह्य रूपों में भी अभिव्यक्त हो, प्रत्येक सम्वेदना में, प्रत्येक विचार में, प्रत्येक कार्य में अभिव्यक्त हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. तेरे सम्मुख नीरवता में बीते कुछ क्षण सदियों के उल्लास के समान होते हैं।

७. तेरे सामने मेरा हृदय शुद्ध स्फटिक सा रहे ताकि वह पूरी तरह तुझे प्रतिबिम्बित कर पाये।

८. अधिक नमनीय बनो, अधिक विश्वास रखो। करने योग्य काम यही है कि अपने-आपको किसी भी चीज से परेशान न होने दो।

९. उस शुद्ध भार-मुक्ति का, उस सुखद वायवीयता का कैसे वर्णन करूं जो तब आती हैं जब मनुष्य अपने बारे में परेशान होने से मुक्त हो जाता है, अपने जीवन और स्वास्थ्य और अपने संतोष, यहांतक कि अपनी प्रगति के बारे में भी परेशान होने से मुक्त हो जाता है।

१०. हे प्रभो, शाश्वत स्वामी, तू ही गुरु बनेगा, तू ही प्रेरणा देगा। तू मुझे यह सिखायेगा कि क्या करना चाहिये . . .
प्रेम और विश्वास के साथ मैं तेरे सामने नत-मस्तक हूं।

११. हम विशालतर क्षितिजों और तीव्रतर प्रकाश, अधिक पूर्ण अनुकंपा, अधिक निष्काम प्रेम की ओर हिम्मत से उड़ान भरें . . . तेरी ओर उड़ान भरें।

१२. हे प्रभु, अपना प्रकाश मुझे दे। वर दे कि मैं किसी भूल-भ्रांति में न जा गिरूं।

१३. हे प्रभो, प्रभो, वर दे कि तेरी इच्छा से भिन्न मेरी कोई इच्छा न हो और मेरे सारे कार्य तेरे दिव्य विधान की अभिव्यक्ति हों।

१४. तेरे बिना सब कुछ मिथ्यात्व और माया है और निराशा-जनक धुंधलापन है।
तुझमें विद्यमान हैं जीवन, प्रकाश और हर्ष।
तेरे अंदर है चरम शांति।

१५. तू सब कुछ है और तू ही सब कुछ कर सकता है।

१६. जब हम तुझसे बोलने का साहस करते हैं तो वह केवल बच्चों की तुतलाहट से बढ़कर कुछ नहीं होता।
सबसे बड़ा आदर नीरवता में होता है।

१७. हमारी भक्ति अधिक गहरी हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा समर्पण हमेशा अधिक पूर्ण बनता रहे, और तू, जो जीवन का सम्राट् है, उसका सच्चा सम्राट् बन जाये।

१८. तेरा जीवन पुनरुज्जीवित करनेवाले उस स्रोत की तरह सबमें बहता रहे ताकि सब तेरी ओर मुड़ सकें और उस चिंतन के द्वारा सभी विजयों के लिये शक्ति प्राप्त कर सकें।

१९. हमारे अज्ञान को दूर कर, हमारे मन को प्रकाशित कर, हमारे हृदय को रूपांतरित कर दे।

२०. हमें वह प्रेम प्रदान कर जो कभी सूख नहीं जाता, और जो प्रत्येक सत्ता में तेरे मधुर विधान को पुष्पित कर दे।

२१. तेरे अंदर चरम शक्ति है, पूर्ण निःस्वार्थता की, पूर्ण स्पष्ट दर्शन की, सर्वोच्च दयालुता की शक्ति है।

२२. ओ तू, जो हमारी सत्ता की एकमात्र वास्तविकता है, ओ प्रेम का उत्कृष्ट स्वामी, जीवन का उद्धारक, मुझे हर क्षण, हर सत्ता में केवल तेरी चेतना के सिवा और किसी चेतना का पता न रहे।

२३. सब रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों से परे तू ही है जो एक विशिष्ट प्रकाश, दिव्य और पवित्र प्रकाश से हम जैसे हैं और जो कार्य करते हैं, उन सबको आलोकित करता है और हमें स्पष्ट रूप से हम जो वास्तव में हैं और जो बन सकते हैं उसका भेद दिखाता है।

२४. हमारी चेतना को प्रबुद्ध बना, हमारे कदमों को पथप्रदर्शन दे और वर दे कि हम अपना पूर्ण प्रयास करें, तेरी सेवा में ही अपनी ऊर्जाओं का उपयोग करें।

२५. प्रत्येक सवेरे हमारे विचार उत्कंठा से तेरी ओर उठें, यह पूछते हुए कि हम तुझे सबसे अच्छी तरह कैसे अभिव्यक्त करें और कैसे तेरी सेवा करें।

२६. तेरे प्रकाश से हम देखेंगे, तेरे ज्ञान द्वारा हम जानेंगे, तेरी इच्छा से हम चरितार्थ करेंगे।

२७. हमें सब अज्ञान से मुक्त कर। हमें अपने-आपसे मुक्त कर ताकि हम तेरी भव्य अभिव्यक्ति के द्वार पूरी तरह खोल पायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८. सब परिस्थितियों में हम तेरी वाणी के अग्रदूत बन सकते हैं, तेरे कार्य के सेवक बन सकते हैं।

२९. जिस क्षण मनुष्य तेरे विधान के बारे में सचेतन हो जाता है उसी क्षण से सारे संदेह समाप्त हो जाते हैं, समस्त हिचकिचाहट बंद हो जाती है।

३०. हमें अपने दिव्य प्रेम की जीवंत मशालों में रूपांतरित कर दे।

३१. तू जो एकमात्र सद्वस्तु, हमारे प्रकाश का भी प्रकाश, जीवन का भी जीवन है, परम प्रेम, संसार का त्राता है, वर दे कि मैं अधिक-से-अधिक पूर्ण रूप से तेरी सतत उपस्थिति की अभिज्ञता के प्रति जाग्रत हो जाऊं।

———

जिस क्षण से तुम संतुष्ट होकर अभीप्सा करना बंद कर देते हो उसी क्षण से मरने लगते हो।

*

जबतक हम भूत की आदतों और मान्यताओं से नाता नहीं तोड़ लेते तबतक शीघ्रता से भविष्य की ओर बढ़ने की आशा कम ही है।

*

भागवत प्रेम की अभिव्यक्ति को जल्दी लाने का सबसे अच्छा तरीका है 'सत्य' की विजय के लिये सहयोग देना।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रान्तिकारी की कहानी

(गतांक से आगे)

इस अवस्था को घनीभूत होने में कुछ दिन लगे, इसी बीच मजिस्ट्रेट की अदालत में मुकदमा शुरू हुआ। निर्जन कारावास की नीरवता से हठात् बाह्य जगत् के कोलाहल में लाये जाने पर शुरू-शुरू में मन बड़ा विचलित हुआ, साधना का धैर्य टूट गया और पांच-पांच घंटेतक मुकदमे के नीरस और विरक्तिकर बयान सुनने को मन किसी भी तरह राजी नहीं हुआ। पहले अदालत में बैठ साधना करने की चेष्टा करता, लेकिन अनभ्यस्त मन प्रत्येक शब्द और दृश्य की ओर खिंच जाता, शोरगुल में वह चेष्टा व्यर्थ चली जाती, बाद में भावपरिवर्तन हुआ, समीपवर्ती शब्द और दृश्य मन से बाहर ठेल सारी चिंतन-शक्ति को अंतर्मुखी करने की शक्ति जनमी, किंतु यह मुकदमे की प्रथम अवस्था में नहीं हुआ, तब ध्यान-धारणा की प्रकृत क्षमता नहीं थी। इसीलिये यह वृथा चेष्टा त्याग बीच-बीच में सर्वभूतों में ईश्वर के दर्शन कर संतुष्ट रहता, बाकी समय विपत्ति के साथियों की बातों और उनके कार्य-कलाप पर ध्यान देता, दूसरा कुछ सोचता, या कभी नार्टन साहब की श्रवण-योग्य बात या गवाहों की गवाही भी सुनता। देखता कि निर्जन कारागृह में समय काटना जितना सहज और सुखकर हो उठा है, जनता के बीच और इस गुरुतर मुकदमे के जीवन-मरण के खेल के बीच समय काटना उतना सहज नहीं। अभियुक्त लड़कों का हंसी-मजाक और आमोद-प्रमोद सुनना और देखना बड़ा अच्छा लगता, नहीं तो अदालत का समय केवल विरक्तिकर ही महसूस होता। साढ़े चार बजे कैदियों की गाड़ी में बैठ सानंद जेल लौट आता।

पंद्रह-सोलह दिन की बंदी अवस्था के बाद स्वाधीन मनुष्य जीवन का संसर्ग और एक-दूसरे का मुख देख दूसरे कैदी अत्यंत आनंदित हुए। गाड़ी में चढ़ते ही उनकी हंसी और बातों का फव्वारा फूट पड़ता और जो दस मिनट उन्हें गाड़ी में मिलते थे उसमें पल-भर को भी वह स्रोत न थमता। पहले दिन हमें खूब सम्मान के साथ अदालत ले गये। हमारे साथ ही थी यूरोपीयन सार्जेंटों की छोटी पलटन और उनके साथ थीं गोलीभरी पिस्तौलें। गाड़ी में चढ़ते समय सशस्त्र पुलिस की एक टुकड़ी हमें घेरे रहती और गाड़ी के पीछे परेड करती, उतरते समय भी यही आयोजन था। इस साज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सज्जा को देख किसी-किसी अनभिज्ञ दर्शक ने निश्चय ही यह सोचा होगा कि ये हास्य-प्रिय अल्पवयस्क लड़के न जाने कितने दुःसाहसी विख्यात महायोद्धाओं का दल है। न जाने उनके प्राणों और शरीर में कितना साहस और बल है जो खाली हाथ सौ पुलिस और गोरों की दुर्भेद्य प्राचीर भेद, पलायन करने में सक्षम हैं। इसीलिये शायद उन्हें इतने सम्मान के साथ इस तरह ले गये। कुछ दिन यह ठाठ चला, फिर क्रमशः कम होने लगा, अंत में दो-चार सार्जेंट हमें ले जाते और ले आते। उतरते समय वे ज्यादा ख्याल नहीं करते थे कि हम कैसे जेल में घुसते हैं; हम मानों स्वाधीन भाव से घूम-फिरकर घर लौट रहे हों, उसी तरह जेल में घुसते। ऐसी असावधानी और शिथिलता देख पुलिस कमिश्नर साहब और कुछ सुपरिटेंडेंट क्रुद्ध हो बोले, "पहले दिन पचीस तीस सार्जेंटों की व्यवस्था की थी, आजकल देखता हूं चार-पांच भी नहीं आते।" वे सार्जेंटों की भर्त्सना करते और रक्षण-निरीक्षण की कठोर व्यवस्था करते; उसके बाद दो-एक दिन और दो सार्जेंट आते और फिर वही पहले जैसी शिथिलता आरंभ हो जाती! सार्जेंटों ने देखा कि बम-भक्त बड़े निरीह और शांत लोग हैं, पलायन में उनका कोई प्रयास नहीं, किसीपर आक्रमण करने या हत्या करने की भी मंशा नहीं, उन्होंने सोचा कि हम क्यों अमूल्य समय इस विरक्तिकर कार्य में नष्ट करें। पहले अदालत में घुसते और निकलते समय हमारी तलाशी लेते थे, उससे हम सार्जेंटों के कोमल करस्पर्श का सुख अनुभव करते, इसके अलावा इस तलाशी से किसीके लाभ या क्षति की संभावना नहीं थी। स्पष्ट था कि इस तलाशी की आवश्यकता में हमारे रक्षकों की गभीर अनास्था है। दो-चार दिन बाद यह भी बंद हो गयी। हम अदालत में किताब, रोटी-चीनी जो इच्छा हो निर्विघ्न ले जाते। पहले-पहल छिपाकर, बाद में खुले आम। हम बम या पिस्तौल चलायेंगे, उनका यह विश्वास शीघ्र ही उठ गया। किंतु मैंने देखा कि एक भय सार्जेंटों के मन से नहीं गया। कौन जाने किसके मन में कब मजिस्ट्रेट साहब के महिमान्वित मस्तक पर जूते फेंकने की बदनीयत पैदा हो जाये, ऐसा हुआ तो सर्वनाश। अतः जूते भीतर ले जाना विशेषतया निषिद्ध था, और उस विषय में सार्जेंट हमेशा सतर्क रहते। और किसी तरह की सावधानता के प्रति आग्रह नहीं देखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकदमे का स्वरूप कुछ विचित्र था। मजिस्ट्रेट, परामर्शदाता, साक्षी, साक्ष्य Exhibits (साक्ष्य-सामग्री), आसामी सभी विचित्र। दिन-पर-दिन उन्हीं गवाहों और Exhibits का अविराम प्रवाह, उसी परामर्शदाता का नाटकोचित अभिनय, उसी बालक-स्वभाव मजिस्ट्रेट की बालकोचित चपलता और लघुता इस अपूर्व दृश्य को देखते-देखते बहुत बार मन में यह कल्पना उठती कि हम ब्रिटिश विचारालय में न बैठ किसी नाटकगृह के रंगमंच पर या किसी कल्पनापूर्ण औपन्यासिक राज्य में बैठे हैं। अब उस राज्य के सब विचित्र जीवों का संक्षिप्त वर्णन करता हूं।

इस नाटक के प्रधान अभिनेता थे सरकार बहादुर के परामर्शदाता नॉर्टन साहब। प्रधान अभिनेता ही क्यों इस नाटक के रचयिता, सूत्रधार (Stage Manager) और साक्षी-स्मारक (prompter) भी थे,—ऐसी वैचित्र्यमयी प्रतिभा जगत् में विरल है। परामर्शदाता नॉर्टन थे मद्रासी साहब, इसीलिये शायद थे बंगाली बैरिस्टर मंडली की प्रचलित नीति और भद्रता से अनभ्यस्त एवं अनभिज्ञ। वे कभी राष्ट्रीय महासभा के नेता रहे थे, शायद इसीलिये विरोध और प्रतिवाद सह नहीं सकते थे और विरोधी को शासित करने के आदी थे। ऐसी प्रकृति को लोग कहते हैं हिंस्रस्वभाव। नॉर्टन साहब कभी मद्रास कॉरपोरेशन के सिंह रहे कि नहीं, नहीं कह सकता पर हां, अलीपुर कोर्ट के सिंह तो थे ही। उनकी कानूनी अभिज्ञता की पैठ पर मुग्ध होना कठिन है—वह थी मानों ग्रीष्मकाल की शीत। किंतु वक्तृता के अनर्गल प्रवाह में, कथन-शैली में, बात की चोट से राई को पहाड़ बनाने की अद्भुत क्षमता में, निराधार या कुछ आधार लिये हुए कथनों को कहने की दुःसाहसिकता में, साक्षी और जूनियर बैरिस्टर की भर्त्सना में और सफेद को काला करने की मनमोहिनी शक्ति में नॉर्टन साहब की अतुलनीय प्रतिभा देख मुग्ध होना ही पड़ता था। श्रेष्ठ परामर्शदाताओं की तीन श्रेणियां हैं—जो कानून के पांडित्य से और यथार्थ व्याख्या और सूक्ष्म विश्लेषण से जज के मन में प्रतीति जनमा सकते हैं; जो चतुराई के साथ साक्षी से सच्ची बात उगलवा और मुकदमे-संबंधी घटनाओं और विवेच्य विषय का दक्षता के साथ प्रदर्शन कर जज या जूरी का मन अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जो ऊंची आवाज़ से, धमकियों से, वक्तृता के प्रवाह से साक्षी को हतबुद्धि कर, मुकदमे के विषय को चमत्कारी ढंग से तोड़-मरोड़, गले के जोर से जज या जूरी की बुद्धि भरमा मुकदमे जीत सकते हैं। नॉर्टन साहब थे तीसरी श्रेणी में अग्रगण्य। यह कोई दोष की बात नहीं। वे ठहरे परामर्शदाता व्यवसायी आदमी, पैसा लेनेवाले, जो पैसा दे उसका अभीप्सित उद्देश्य सिद्ध करना है उनका कर्तव्य-कर्म। आजकल ब्रिटिश कानून-प्रणाली में सच्ची बात बाहर निकालना वादी या प्रतिवादी का असल उद्देश्य नहीं, किसी भी तरह मुकदमा जीतना ही है उद्देश्य। अतएव परामर्शदाता वैसी ही चेष्टा करेंगे, नहीं तो उन्हें धर्मच्युत होना होगा। भगवान् द्वारा अन्य गुण न दिये जाने पर जो गुण हैं उनके बल पर ही मुकदमा जीतना होगा, अतः नॉर्टन साहब स्वधर्म-पालन ही कर रहे थे। सरकार बहादुर उन्हें हर रोज़ हजार रुपये देती थी। यह अर्थव्यय वृथा जाने से सरकार बहादुर की क्षति होती, यह क्षति न हो इसके लिये नॉर्टन साहब ने प्राणपन से चेष्टा की थी। पर राजनीतिक मुकदमे में आसामी को विशेष उदारता के साथ सुविधा देना और संदेहजनक एवं अनिश्चित प्रमाण पर जोर न देना ब्रिटिश कानून-पद्धति का नियम है। नॉर्टन साहब यदि इस नियम को सदा याद रखते तो, मेरे ख्याल में, उनके केस की कोई हानि न होती। दूसरी तरफ कुछ-एक निर्दोष को निर्जन कारावास की यंत्रणा न भोगनी पड़ती और निरीह अशोक नंदी की जान भी बच जाती। परामर्शदाता की सिंह-प्रकृति ही थी शायद इस दोष का मूल। होलिंशेड (Holinshed), हॉल (Hall), और प्लूटार्क (Plutarch) जैसे शेक्सपीयर के लिये ऐतिहासिक नाटकों का उपादान संगृहीत कर रख गये थे, पुलिस ने भी वैसे ही इस मुकदमे के नाटक के उपादान का संग्रह किया था। हमारे नाटक के शेक्सपीयर थे नॉर्टन साहब, किंतु शेक्सपीयर और नॉर्टन में मैंने एक प्रभेद देखा। संगृहीत उपादान का कुछ अंश शेक्सपीयर कहीं-कहीं छोड़ भी देते थे, पर नॉर्टन साहब अच्छा, बुरा, सत्य-मिथ्या, संलग्न-असंलग्न, अणोरणीयान् महतो महीयान् जो पाते एक भी न छोड़ते, तिस पर निजी कल्पनासृष्ट प्रचुर Suggestion, Inference, Hypothesis (सुझाव, अनुमान, परिकल्पना) जुटा उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना सुंदर Plot (कथानक) रचा कि शेक्सपीयर, डेफो इत्यादि सर्वश्रेष्ठ कवि और उपन्यासकार इस महाप्रभु के आगे मात खा गये। आलोचक कह सकते हैं कि जैसे फॉलस्टाफ के होटल के बिल में एक आने की रोटी और असंख्य गैलन शराब का समावेश था उसी तरह नॉर्टन साहब के Plot में एक रत्ती प्रमाण के साथ दस मन अनुमान और suggestions (सुझाव) थे। किंतु आलोचक भी plot की परिपाटी और रचना-कौशल की प्रशंसा करने को बाध्य होगा। नॉर्टन साहब ने इस नाटक के नायक के रूप में मुझे ही पसंद किया, यह देख मैं समधिक प्रसन्न हुआ। जैसे मिल्टन के "Paradise Lost" का शैतान, वैसे ही मैं भी था नॉर्टन साहब के Plot का कल्पनाप्रभूत महाविद्रोह का केंद्रस्वरूप, असाधारण तीक्ष्णबुद्धि-संपन्न, क्षमतावान् और प्रतापशाली bold bad man (ढीठ बुरा आदमी)। मैं ही था राष्ट्रीय आंदोलन का आदि और अंत, स्रष्टा और त्राता, ब्रिटिश साम्राज्य का संहार-प्रयासी। उत्कृष्ट और तेजस्वी अंग्रेजी लेख देखते ही नॉर्टन साहब उछल पड़ते और उच्च स्वर में कहते—अरविंद घोष। आंदोलन के जितने भी वैध, अवैध, सुशृंखलित अंग या अप्रत्याशित फल—वे सभी अरविंद घोष की सृष्टि हैं, और क्योंकि वे अरविंद की सृष्टि हैं इसलिये वैध होने पर भी उसमें अवैध अभिसंधि गुप्त रूप से निहित है। शायद उनका यह विश्वास था कि अगर मैं पकड़ा न गया तो दो साल के अंदर-अंदर अंगरेजों के भारतीय साम्राज्य का ध्वंस हो जायेगा। किसी फटे कागज के टुकड़े पर मेरा नाम पाते ही नॉर्टन साहब खूब खुश होते और इस परम मूल्यवान् प्रमाण को मजिस्ट्रेट के श्रीचरणों में सादर समर्पित करते। अफसोस है, कि मैं अवतार बनकर नहीं जनमा, नहीं तो मेरे प्रति उस समय की उनकी इतनी भक्ति और मेरे अनवरत ध्यान से नॉर्टन साहब निश्चित ही उसी समय मुक्ति पा जाते जिससे हमारी कारावास की अवधि और गर्वनमेंट का अर्थव्यय दोनों की ही बचत होती। सेशंस अदालत द्वारा मुझे निर्दोष प्रमाणित किये जाने से नॉर्टन-रचित plot की सब श्री और गौरव नष्ट हो गया। बेरसिक बीचक्राफ्ट 'हैमलेट' नाटक से हैमलेट को अलग करके बीसवीं सदी के श्रेष्ठ काव्य को हतश्री कर गये। समालोचक को यदि काव्य-परिवर्तन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार दे दिया जाये तो भला क्यों न होगी ऐसी दुर्दशा ? नॉर्टन साहब को और एक दुःख था, कुछ गवाह भी ऐसे बेरसिक थे कि उन्होंने भी उनके रचित Plot के अनुसार गवाही देने से साफ इंकार कर दिया। नॉर्टन साहब गुस्से से लाल-पीले हो जाते, सिंह-गर्जना से उनके प्राण कंपा उन्हें धमकाते। जैसे कवि को स्वरचित शब्द के अन्यथा प्रकाशन पर और सूत्रधार को अपने दिये गये निर्देशों के विरुद्ध अभिनेता की आवृत्ति, स्वर या अंगभंगिमा पर न्यायसंगत और अदमनीय क्रोध आता है, वैसा ही क्रोध आता था नॉर्टन साहब को। बैरिस्टर भुवन चटर्जी के साथ हुए संघर्ष का कारण यह सात्त्विक क्रोध ही था। चटर्जी महाशय के जितना रसायनभिज्ञ पुरुष तो कोई नहीं देखा। उन्हें रत्ती भर भी समय-असमय का ज्ञान नहीं था। नॉर्टन साहब जब संलग्न-असंलग्न का विचार न कर केवल कवित्व की खातिर जिस-तिस प्रमाण को घुसेड़ते, तब चटर्जी महाशय खड़े हो असंलग्न या inadmissible (अमान्य) कह आपत्ति करते। वे समझ न सके कि ये साक्ष्य इसलिये नहीं पेश किये जा रहे कि ये संलग्न या कानून-सम्मत हैं वरन् इसलिये कि नॉर्टनकृत नाटक में शायद उपयोगी हों। इस असंगत व्यवहार से नॉर्टन ही क्यों, बर्ली साहबतक झुंझला उठते। एक बार बर्ली साहब ने चटर्जी महाशय को बड़े करुण स्वर में कहा था, "Mr. Chatterjee, we were getting on very nicely before you came," आपके आने से पहले हम निर्विघ्न मुकदमा चला रहे थे। सच ही तो है, नाटक की रचना के समय बात-बात पर आपत्ति उठाने से नाटक भी आगे नहीं बढ़ता और दर्शकों को भी मजा नहीं आता।

यदि नॉर्टन साहब थे नाटक के रचयिता, प्रधान अभिनेता और सूत्रधार तो मजिस्ट्रेट बर्ली को कहा जा सकता है नाटककार का पृष्ठपोषक या patron। बर्ली साहब शायद थे स्कॉच जाति के गौरव। उनका चेहरा स्काटलैंड का स्मारक चिह्न था। खूब गोरी, खूब लंबी, अति कृष, दीर्घ देहयष्टि पर छोटा-सा सिर देख ऐसा लगता था जैसे अग्रभेदी आक्टोरलोनी के monument (स्मारक) पर छोटे-से आक्टोरलोनी बैठे हों, या क्लियोपेट्रा के obelisk (स्तंभ) के शिखर पर एक पका नारियल रखा हो। उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल थे धूसर वर्ण (sandy haired) और स्काटलैंड की सारी ठंड और बर्फ उनके चेहरे के भाव पर जमी हुई थी। जो इतना दीर्घकाय हो उसकी बुद्धि भी तद्रूप होनी चाहिये, नहीं तो प्रकृति की मितव्ययता के संबंध में संदेह होता है। किंतु इस प्रसंग में, बर्ली की सृष्टि के समय, लगता है, प्रकृति देवी कुछ अनमनी एवं अन्यमनस्क हो गयी थीं। अंगरेज कवि मार्लो ने इस मितव्ययता का infinite riches in a little room (छोटे-से भंडार में असीम धन) कह वर्णन किया है किंतु बर्ली का दर्शन कवि के वर्णन से विपरीत भाव मन में जगाता है—infinite room in little riches (असीम भंडार में क्षुद्र धन)। सचमुच, इस दीर्घ देह में इतनी थोड़ी विद्या-बुद्धि देख दुःख होता था और इस तरह के अल्पसंख्यक शासनकर्ताओं द्वारा तीस कोटि भारतवासी शासित हो रहे हैं यह याद कर अंगरेजों की महिमा और ब्रिटिश शासन-प्रणाली पर प्रगाढ़ भक्ति उमड़ती थी। श्रीयुत व्योमकेश चक्रवर्ती द्वारा जिरह करते समय बर्ली साहब की विद्या की पोल खुली। इतने साल मजिस्ट्रेटगिरी करने के बाद भी यह निर्णय करने में उनका सिर घूम गया कि उन्होंने अपने करकमलों में यह मुकदमा कब ग्रहण किया या कैसे मुकदमा ग्रहण किया जाता है, इस समस्या को सुलझाने में असमर्थ हो चक्रवर्ती साहब पर इसका भार दे साहब स्वयं निष्कृति पाने के लिये सचेष्ट हुए। अभी भी यह प्रश्न मुकदमे की अतिजटिल समस्याओं में से एक गिना जाता है कि बर्ली ने कब मुकदमा अपने हाथ में लिया था। चटर्जी महाशय के प्रति किये गये जिस करुण निवेदन का उल्लेख मैंने किया है उससे भी साहब की चिंतनधारा का अनुमान लगाया जा सकता है। शुरू से ही वे नॉर्टन साहब के पांडित्य और वाग्विलास से मंत्रमुग्ध हो उनके वश में हो गये थे। ऐसे विनीत भाव से नॉर्टन द्वारा प्रदर्शित पथ का अनुसरण करते, नॉर्टन की हां में हां मिलाते, नॉर्टन के हंसने से हंसते, नॉर्टन के कुपित होने पर कुपित होते कि यह सरल शिशुवत् आचरण देख कभी-कभी मन में प्रबल स्नेह और वात्सल्य का आविर्भाव होता। बर्ली के स्वभाव में निरा लड़कपन था। उन्हें कभी भी मजिस्ट्रेट न मान सका, ऐसा लगता मानों स्कूल का छात्र हठात् स्कूल का शिक्षक बन शिक्षक के उच्च मंच पर चढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठा है। ऐसे ही वे कोर्ट का काम चलाते। कोई उनके साथ अप्रिय व्यवहार करता तो स्कूली शिक्षक की तरह शासन करते। हममें से यदि कुछ मुकदमे के प्रहसन से विरक्त हो आपस में बातें करने लगते तो बर्ली साहब स्कूल मास्टर की तरह बिगड़ने लगते, उनकी बात न सुनने पर सबको खड़े हो जाने की आज्ञा देते, उसका भी तुरन्त पालन न किया तो प्रहरी को कहते हमें खड़ा कर देने के लिये। हम स्कूलमास्टर के इस रंग-ढंग को देखने के इतने आदी हो गये थे कि जब बर्ली और चटर्जी महाशय का झगड़ा खड़ा हुआ तो हम प्रति क्षण इस आशा में थे कि अब बैरिस्टर साहब को खड़े रहने का दंड मिलेगा। बर्ली साहब ने लेकिन उल्टा रास्ता पकड़ा, चिल्लाते हुए sit down, Mr. chatterjee (बैठ जाइये, मि० चटर्जी) कह अलीपुर स्कूल के इस नवागत उद्दंड छात्र को बिठा दिया। जैसे कोई-कोई मास्टर छात्र के किसी प्रश्न से या पढ़ाते समय अतिरिक्त व्याख्यान चाहने से खीजकर उसे डांट देते हैं, बर्ली भी आसामी के वकील की आपत्ति पर खीज उसे डपट देते। कोई-कोई साक्षी नॉर्टन को परेशान करते। नॉर्टन सिद्ध करना चाहते थे कि अमुक लेख अमुक आसामी के हस्ताक्षर हैं, साक्षी यदि कहते कि नहीं, यह तो ठीक उस लेख की तरह नहीं, फिर भी हो सकता है, कहा नहीं जा सकता—बहुत-से साक्षी इसी तरह का उत्तर देते थे—तो नॉर्टन अधीर हो उठते। बक-झक कर, चिल्लाकर, डांट-डपट कर किसी भी उपाय से अभीप्सित उत्तर उगलवाने की चेष्टा करते। उनका अंतिम प्रश्न होता, "what is your belief ?" तुम क्या मानते हो, हां या ना ? साक्षी न हां कह पाते न ना। घुमा-फिरा बार-बार वही उत्तर देते। नॉर्टन को यह समझाने की चेष्टा करते कि उनका कोई भी belief (विश्वास) नहीं, वे संदेह में झूल रहे हैं। किंतु नॉर्टन वह उत्तर नहीं चाहते थे, बार-बार मेघगर्जना करते हुए उसी सांघातिक प्रश्न से साक्षी के सिर पर वज्राघात करते, "come, sir, what is your belief ?" (हां, तो फिर क्या राय है महाशय, आपकी ?) नॉर्टन के क्रुद्ध होते ही बर्ली भी ऊपर से गरजते, "टोमारा क्या विश्वास है ?" बेचारे साक्षी महाविपद् में पड़ जाते। उनका कोई विश्वास नहीं लेकिन एक तरफ से मजिस्ट्रेट, दूसरी तरफ से नॉर्टन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षुधित व्याघ्र की तरह उनकी बोटी-बोटी अलग कर अमूल्य अप्राप्य विश्वास बाहर निकलवाने को तत्पर हो दोनों तरफ से भीषण गर्जन कर रहे हैं। बहुधा विश्वास जाहिर न होता, चकरायी बुद्धि और पसीने से तर साक्षी उस यंत्रणा-स्थल से अपने प्राण बचा भाग खड़े होते। कोई-कोई प्राणों को ही विश्वास से प्रियतर मान नॉर्टन साहब के चरण-कमलों में झूठे विश्वास का उपहार चढ़ा बच निकलते, नॉर्टन भी अति संतुष्ट हो बाकी जिरह स्नेहसहित सम्पन्न करते। ऐसे परामर्शदाता के साथ आ मिले ऐसे मजिस्ट्रेट तभी तो मुकदमे ने और भी अधिक नाटकीय रूप धारण कर लिया था।

कुछ एक साक्षियों के विरुद्धाचरण करने पर भी अधिकांश नॉर्टन साहब के प्रश्नों का अनुकूल उत्तर देते। इनमें जाने-पहचाने कम ही थे। कोई-कोई किंतु परिचित भी था। देवदास करण महाशय ने हमारी विरक्ति दूर कर हमें खूब हंसाया था, चिरकाल हम उनके कृतज्ञता के ऋण में बंधे रहेंगे। इन साक्षी ने यह गवाही दी थी कि मेदिनीपुर के सम्मेलन के समय जब सुरेंद्र बाबू ने अपने छात्रों से गुरुभक्ति के बारे में पूछा था तब अरविंद बाबू बोल पड़े थे, "द्रोण ने क्या किया ?" यह सुनते ही नॉर्टन साहब के आग्रह और कौतुहल की सीमा न रही, उन्होंने निस्संदेह यह सोचा होगा कि द्रोण या तो कोई बम का भक्त है या राजनीतिक हत्यारा या मानिकतला बागान या छात्रमंडली से संयुक्त। नॉर्टन के ख्याल में इस वाक्य का अर्थ शायद यह था कि अरविंद घोष ने सुरेंद्र बाबू को गुरुभक्ति के बदले बम का पुरस्कार देने का परामर्श दिया था, तब तो मुकदमे में बड़ी सुविधा हो सकती है। अतएव उन्होंने साग्रह प्रश्न किया, "द्रोण ने क्या किया ?" शुरू में साक्षी किसी भी तरह प्रश्न का उद्देश्य समझ न सके। पांच मिनटतक इसे लेकर खींचतान चलती रही, अंत में करण महाशय ने दोनों हाथ ऊपर फैला नॉर्टन साहब को जतलाया, "द्रोण ने अनेक चमत्कार दिखलाये थे।" इससे नॉर्टन साहब संतुष्ट नहीं हुए। द्रोण के बम का अनुसंधान न मिलने तक संतुष्ट हों भी कैसे ? दुबारा पूछा, "अनेक चमत्कार क्या बला हैं ? क्या विशेष किया है उन्होंने ?" साक्षी ने इसके अनेकों उत्तर दिये, एक से भी द्रोणाचार्य के जीवन के इस गुप्त रहस्य का भेद नहीं खुला ! नॉर्टन साहब भड़क उठे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरजना शुरू किया। साक्षी भी चिल्लाने लगे। एक वकील ने हंसते हुए यह संदेह व्यक्त किया कि शायद साक्षी को पता नहीं कि द्रोण ने क्या किया। करण महाशय इसपर क्रोध और क्षोभ से आगबबूला हो उठे। चिल्लाये, "क्या ? मैं ? मैं नहीं जानता कि द्रोण ने क्या किया ? वाह, क्या मैंने वृथा ही सारा महाभारत पढ़ा ?" आधे घंटेतक द्रोणाचार्य की मृत-देह पर करण और नॉर्टन का महायुद्ध चला। हर पांच मिनट बाद अलीपुर विचारालय को कंपाते नॉर्टन अपना प्रश्न गुंजाने लगे, "Out with it, Mr. Editor! what did Drona do ?" (हां, बताइये-बताइये, संपादक महाशय, द्रोण ने क्या किया ?) उत्तर में संपादक महाशय ने एक लंबी रामकहानी आरंभ की, किंतु द्रोण ने क्या किया, इसका कोई विश्वसनीय संवाद नहीं मिला। सारी अदालत ठहाकों से गूंज उठी। अंत में टिफिन के समय करण महाशय जरा ठंडे दिमाग से सोच-समझ कर लौटे और समस्या की यह मीमांसा बतलायी कि बेचारे द्रोण ने कुछ नहीं किया, बेकार ही उनकी परलोकगत आत्मा को ले आधे घंटेतक खींच-तान हुई, अर्जुन ने ही गुरु द्रोण का वध किया था। अर्जुन के इस मिथ्या अपवाद से द्रोणाचार्य ने निस्तार पा कैलास पर सदाशिव को धन्यवाद दिया होगा कि करण महाशय की गवाही के कारण अलीपुर के बम-केस में उन्हें कठघरे में खड़ा नहीं होना पड़ा। संपादक महाशय की एक बात से सहज ही अरविंद घोष के साथ उनका संबंध प्रमाणित हो जाता। किंतु आशुतोष सदाशिव ने उनकी रक्षा की।

जो गवाही देने आये थे उन्हें तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है। पुलिस और गोयंदा, पुलिस के प्रेम में आबद्ध निम्नश्रेणी के लोग और सज्जन, और तीसरे अपने दोषवश पुलिस-प्रेम से वंचित, अनिच्छा से आये हुए गवाह। हर श्रेणी का गवाही देने का ढंग था अलग-अलग। पुलिस महोदय प्रफुल्ल भाव से, अम्लानवदन अपने पूर्वज्ञात वक्तव्यों को मनमाने ढंग से बोल जाते, जिसे पहचानना होता पहचान लेते—कोई संदेह नहीं, दुविधा नहीं, भूल-चूक नहीं। पुलिस के संगी-साथी अतिशय आग्रह के साथ गवाही देते, जिसे पहचानना होता उसे भी पहचान लेते और जिसे नहीं पहचानना होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे भी बहुत बार अतिशय उत्सुकतावश पहचान लेते। अनिच्छा से आये गवाह जो कुछ जानते होते वही कहते, लेकिन वह बहुत थोड़ा होता; नॉर्टन साहब उससे असंतुष्ट हो और यह सोचकर कि साक्षी के पेट में अपार मूल्यवान् और संदेहनाशक प्रमाण हैं, जिरह के बल पर उसका पेट चीर उन्हें बाहर निकालने की भरपूर चेष्टा करते। इससे साक्षी महा विपद् में पड़ जाते। एक ओर नॉर्टन साहब की गर्जना और बर्ली साहब की लाल-लाल आंखें, दूसरी ओर झूठी गवाही दे देशवासियों को कालेपानी भेजने का महापाप। गवाहों के सामने एक गुरुतर प्रश्न उठ खड़ा होता, नॉर्टन और बर्ली को खुश करें या भगवान् को। एक तरफ क्षणस्थायी विपत्ति—मनुष्यों का कोप, दूसरी ओर पाप का दंड—नरक और परजन्म में दुःख। लेकिन वे सोचते, नरक और परजन्म तो दूर की बातें हैं, मनुष्यकृत विपद् तो उन्हें अगले क्षण ही ग्रस सकती है। बहुतों के मन में यह डर था कि मिथ्या साक्ष्य देने के लिये राजी न होने पर भी मिथ्या साक्ष्य के अपराध में पकड़े जायेंगे, क्योंकि ऐसे स्थलों पर परिणाम के दृष्टांत विरल नहीं। अतएव इस श्रेणी के साक्षियों को जो समय साक्षी के कठघरे में अतिवाहित करना पड़ता वह उनके लिये विलक्षण भीति और यंत्रणा का समय होता। जिरह शेष होने पर उनके अर्द्ध-निर्गत प्राण फिर से देह में लौट उन्हें यंत्रणामुक्त करते। कुछ एक साहस के साथ गवाही देते, नॉर्टन की गर्जना की परवाह न करते, अंगरेज परामर्शदाता भी यह देख जातीय प्रथा का अनुसरण कर नरम पड़ जाते। इस तरह कितने ही साक्षी आये, कितनी तरह की गवाहियां दे गये, किंतु एक ने भी पुलिस के लिये उल्लेखनीय कोई सुविधा नहीं की। एक ने साफ कहा—मैं कुछ नहीं जानता, समझ नहीं आता क्यों पुलिस मुझे जबरदस्ती खींच लायी है ! इस तरह का मुकदमा चलाना शायद भारत में ही संभव है, दूसरे देशों में जज इससे झुंझला उठते और पुलिस का गंजन कर अच्छा सबक सिखाते। बिना अनुसंधान किये दोषी-निर्दोष का विचार न कर कठघरे में खड़ा करना, अंदाज से सौ-सौ साक्षी खड़े कर देश का पैसा बहाना और आसामियों को निरर्थक लंबे समयतक कारा-यंत्रणा में रखना इस देश की पुलिस को ही शोभा देता है। लेकिन बेचारी पुलिस क्या करे ? वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो नाम की गोयंदा थी, उसमें जब वह क्षमता ही नहीं थी तो ऐसे साक्षियों के लिये एक विशाल जाल फेंककर अंदाज से उत्तम, मध्यम और अधम साक्षी फंसा कठघरे में खड़ा करना ही था एकमात्र उपाय। क्या मालूम शायद वे कुछ जानते हों, कुछ प्रमाण दे भी दें ?

आसामियों को पहचानने की व्यवस्था भी बड़ी रहस्यमय थी। पहले साक्षी से पूछा जाता, तुम इनमें से किसीको पहचान सकोगे ? साक्षी यदि कहते, हां, पहचान सकता हूं तो नॉर्टन साहब हर्षोत्फुल्ल हो तुरत कठघरे में identification parade (पहचान-परेड) की व्यवस्था करा वहां उन्हें अपनी स्मरणशक्ति को चरितार्थ करने का आदेश देते। यदि वे कहते, पता नहीं, शायद पहचान भी लूं, तो जरा नाराजगी से कहते, अच्छा, जाओ, चेष्टा करो। यदि कोई कहता, नहीं, नहीं कर सकूंगा, मैंने उन्हें नहीं देखा या ध्यान नहीं दिया तो भी नॉर्टन साहब उन्हें न छोड़ते। शायद इतने चेहरे देख पूर्वजन्म की कोई स्मृति ही जागृत हो जाये इसलिये उसे परीक्षा करने को भेज देते। साक्षी में वैसी योगशक्ति नहीं थी। शायद पूर्वजन्मवाद में आस्था भी नहीं, वे आसामियों की दीर्घ दो पंक्तियों के बीच सार्जेंटों के नेतृत्व में शुरू से अंततक गंभीर भाव से कूच करते हुए, हमारे चेहरों को बिना देखे ही सिर हिलाकर कहते—नहीं, नहीं पहचानता। निराश हृदय नॉर्टन इस मत्स्यशून्य जीवंत जाल को समेट लेते। मनुष्य की स्मरणशक्ति कितनी प्रखर और अभ्रांत हो सकती है इसका अपूर्व प्रमाण मिला इस मुकदमे में। तीस-चालीस आदमी खड़े हैं, उनका नाम नहीं पता, किसी भी जन्म में एक बार भी उनके साथ बातचीत नहीं हुई, फिर भी दो मास पहले किसे देखा है, किसे नहीं देखा, अमुक को अमुक तीन जगह देखा, अमुक दो जगह नहीं; एक बार उसे दांत मांजते हुए देखा था इसलिये उसका चेहरा जन्म-जन्मांतर के लिये मेरे मन में अंकित रह गया है। इन्हें कब देखा, क्या कर रहे थे, कौन साथ थे, या एकाकी थे, कुछ भी याद नहीं, फिर भी उनका चेहरा मेरे मन में जन्म-जन्मांतर के लिये अंकित है; हरि को दस बार देखा है इसलिये उन्हें भूलने की कोई संभावना नहीं, श्याम को एक बार सिर्फ आधे मिनट के लिये देखा लेकिन उसे भी मरते दमतक नहीं भूल सकूंगा, भूल-चूक होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कोई संभावना नहीं,—ऐसी स्मरणशक्ति इस अपूर्ण मानव प्रकृति में, इस तमोभिभूत मर्त्य धाम में साधारणतः नहीं मिलती। एक नहीं, दो नहीं, प्रत्येक पुलिसपुंगव में ऐसी विचित्र, निर्भूल, अभ्रांत स्मरणशक्ति देखने को मिली। इससे सी॰ आई॰ डी॰ पर हमारी श्रद्धा-भक्ति दिन-दिन प्रगाढ़ होने लगी। अफसोस है, सैशन्स कोर्ट में वह भक्ति कम करनी पड़ी थी। मजिस्ट्रेट को कोर्ट में दो-एक बार संदेह न हुआ हो ऐसी बात नहीं। जब यह लिखित गवाही देखी कि शिशिर घोष अप्रैल में बंबई में थे और ठीक उसी समय कुछ एक पुलिसपुंगवों ने उन्हें स्कॉट्स लेन और हैरिसन रोड पर भी देखा तब थोड़ा-सा संदेह तो हुआ ही था। जब श्रीहट्टवासी वीरेंद्रचंद्र सेन स्थूल शरीर से बनियाचंग में पितृभवन में रहते हुए भी बागान में और स्कॉट्स लेन में—जिस स्कॉट्स लेन का पता वीरेंद्र नहीं जानते थे, इसका अकाट्य प्रमाण लिखित साक्ष्य में मिला था—उनका सूक्ष्म शरीर सी॰ आई॰ डी॰ की सूक्ष्म दृष्टि ने देखा था, तब और भी संदेह हुआ था। विशेष कर जिन्होंने स्कॉट्स लेन में कभी भी पदार्पण नहीं किया, उन्होंने जब सुना कि पुलिस ने उन्हें वहां कई बार देखा है, तब संदेह का उद्रेक होना कुछ अस्वाभाविक नहीं। मेदिनीपुर के एक साक्षी—मेदिनीपुर के आसामियों से पता लगा कि वे भी गोयंदा हैं—बोले कि उन्होंने श्रीहट्ट के हेमचंद्र सेन को तमलूक में वक्तृता देते देखा था। किंतु हेमचंद्र ने अपनी स्थूल आंखों से कभी तमलूक नहीं देखा, तो भी उनके छायामय शरीर ने श्रीहट्ट से सुदूर तमलूक जाकर तेजस्वी और राजद्रोहपूर्ण स्वदेशी व्याख्यान दे गोयंदा महाशय की चक्षुतृप्ति और कर्णतृप्ति की थी। किंतु चंदननगर के चारुचंद्र राय के छायामय शरीर ने मानिकतला में उपस्थित हो इससे भी ज्यादा रहस्यमय कांड मचाया था। पुलिस के दो कर्मचारियों ने शपथ खाकर कहा था कि उन्होंने अमुक दिन अमुक समय चारु बाबू को श्याम-बाजार में देखा था, वे श्याम-बाजार से एक षड्यंत्रकारी के साथ मानिकतला बागान तक पैदल गये थे, उन्होंने भी वहांतक उनका पीछा किया था और बहुत पास से देखा था, अतः भूल होने की गुंजायश नहीं। वकील की जिरह से दोनों साक्षी टस से मस न हुए। **व्यासस्य वचनं सत्यम्**, पुलिस की गवाही भी अन्यथा नहीं हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सकती। दिन और समय के संबंध में भी उनकी भूल होने की कोई बात नहीं, क्योंकि ठीक उसी दिन, उसी समय चारु बाबू कालिज से छुट्टी ले कलकत्ते में उपस्थित थे, चंदननगर के डुप्ले कालिज के अध्यक्ष की गवाही से यह प्रमाणित हुआ था। किंतु आश्चर्य ! ठीक उसी दिन, उसी समय चारु बाबू हावड़ा स्टेशन के प्लेटफार्म पर चंदननगर के मेयर तार्दिवाल, तार्दिवाल की पत्नी, चंदननगर के गवर्नर और अन्यान्य संभ्रांत यूरोपीय सज्जनों के साथ बातें करते-करते टहल रहे थे। ये सब इसी बात को याद कर चारु बाबू के पक्ष में गवाही देने के लिये राजी हुए थे। फ्रेंच गवर्नमेंट की चेष्टा से पुलिस द्वारा चारु बाबू को छोड़ दिये जाने पर विचारालय में इस रहस्य का उद्घाटन नहीं हुआ। किंतु चारु बाबू को मैं यह परामर्श देता हूं कि वे ये सब प्रमाण Psychical Research Society को भेज मनुष्यजाति के ज्ञान-संचय में सहायता करें। पुलिस की गवाहियां मिथ्या नहीं हो सकतीं,—विशेषकर सी॰ आई॰ डी॰ की—अतएव थियोसोफी के आश्रय के अलावा हमारे लिये और कोई चारा नहीं। सौ बात की एक बात, ब्रिटिश कानून प्रणाली में कितनी आसानी से निर्दोषों को जेल, कालापानी और फांसी तक हो सकती है इसका दृष्टांत इस मुकदमे में पग-पग पर पाया। कठघरे में खड़े न होने तक पाश्चात्य विचार-प्रणाली की मायावी असत्यता हृदयंगम नहीं की जा सकती। यूरोप की यह प्रणाली है जुए का एक खास खेल; मनुष्य की स्वाधीनता, मनुष्य का सुख-दुःख, उसकी और उसके परिवार एवं आत्मीय बंधु की जीवनव्यापी यंत्रणा, अपमान और जीवंत मृत्यु को ले जुए का खेल। इसमें कितने दोषी बच जाते हैं और कितने निर्दोष मर जाते हैं इसकी कोई गिनती नहीं। यूरोप में Socialism (समाजवाद) और Anarchism (अराजकतावाद) का कितना प्रचार और प्रभाव हुआ है वह इस जुए में एक बार फंसने पर, इस निष्ठुर निर्विचार समाजरक्षक पेषणयंत्र में एक बार पड़ने पर पहली दृष्टि में ही समझ में आ जाता है। ऐसी अवस्था में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि अनेक उदार-चेता दयालु जन कहने लग गये हैं कि इस समाज को तोड़ दो, चूर-मार कर दो; इतने पाप, इतने दुःख, इतने निर्दोषों के तप्त निःश्वास और हृदय के खून से यदि समाज की रक्षा करनी हो तो बेकार है वह रक्षा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजिस्ट्रेट की कोर्ट में एकमात्र विशेष उल्लेखनीय घटना थी नरेंद्रनाथ गोस्वामी की गवाही। उस घटना का वर्णन करने से पहले अपनी विपदा के संगी युवक आसामियों के बारे में कहता चलूं। कोर्ट में इनका आचरण देख अच्छी तरह समझ गया था कि बंगाल में नवयुग आ गया है, नयी संतति मां की गोद में वास करना आरंभ कर चुकी है। तत्कालीन बंगाली लड़के दो तरह के थे, या तो थे शांत, शिष्ट, निरीह, सच्चरित्र, भीरु, आत्मसम्मान और उच्चाकांक्षा से शून्य; या दुश्चरित्र, दुर्दांत, अस्थिर, ठग, संयमी और साधुता से शून्य! इन दो चरमावस्थाओं के बीच नानारूप जीव बंगजननी की क्रोड़ में जनमे थे, लेकिन आठ-दस असाधारण प्रतिभावान्, शक्तिमान्, भविष्य के पथ-प्रदर्शकों को छोड़ इन दो श्रेणियों के अलावा तेजस्वी आर्य संतान प्रायः देखने में नहीं आती थी। बंगाली में बुद्धि थी, मेधाशक्ति थी लेकिन शक्ति नहीं थी; मनुष्यत्व नहीं था। लेकिन इन लड़कों को देखते ही लगता था मानों अन्य युग के अन्य शिक्षाप्राप्त, उदारचेता, दुर्दांत तेजस्वी पुरुष फिर से भारतवर्ष में लौट आये हैं। वह निर्भीक सरल दृष्टि, वह तेजपूर्ण वाणी, वह चिंताशून्य आनंदमय हंसी, इस घोर विपद् के समय भी वह अक्षुण्ण तेजस्विता, मन की प्रसन्नता, विमर्शता, चिंता या संताप का अभाव, उस समय के तमःक्लिष्ट भारतवासी का नहीं, नूतन युग का, नूतन जाति का, नूतन कर्मस्रोत का लक्षण है। ये यदि हत्यारे हों तो कहना पड़ेगा कि हत्या की रक्तमयी छाया उनके स्वभाव पर नहीं पड़ी, क्रूरता, उन्मत्तता और पाशविक भाव उनमें कतई नहीं था। उन्होंने भविष्य की या मुकदमे के फल की जरा भी चिंता न कर कारावास के दिन बालकोचित आमोद में, हंसी में, खेल में, पढ़ने-सुनने में, समालोचना में बिताये। बहुत जल्दी ही उन्होंने जेल में कर्मचारी, सिपाही, कैदी, यूरोपीय सार्जेंट, जासूस, कोर्ट के कर्मचारी सभी के साथ मैत्री का नाता जोड़ लिया था एवं शत्रु-मित्र, बड़े-छोटे का विचार न कर सबके साथ बातचीत, हंसी-मजाक करने लग गये थे। कोर्ट का समय उन्हें बड़ा विरक्तिकर लगता, क्योंकि मुकदमे के प्रहसन में रस बहुत कम आता था। यह समय काटने के लिये उनके पास न पढ़ने को किताब थी न बात करने की अनुमति। जो योग करना शुरू कर चुके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे, उन्होंने तबतक गुल-गपाड़े में ध्यान करना नहीं सीखा था, उन्हें समय काटना पहाड़ हो जाता। शुरू में दो-चार जन पढ़ने के लिये किताब अंदर लाने लगे, उनकी देखा-देखी बाकी सबने भी उसी उपाय का सहारा लिया। उसके बाद एक अद्‌भुत दृश्य देखने को मिलता—मुकदमा चल रहा है, तीस-चालीस आसामियों के समस्त भविष्य को ले खींचा-तानी चल रही है, उसका फल हो सकता है फांसी के तख्ते पर मृत्यु या आजीवन कालापानी, किंतु उस ओर दृक्‌पात न कर उनमें से कोई बंकिम का उपन्यास, कोई विवेकानंद का राजयोग या Science of Religions , कोई गीता, कोई पुराण तो कोई यूरोपीय दर्शन एकाग्र मन से पढ़ रहा होता। अंगरेज साजेंट या देशी सिपाही कोई भी उनके इस आचरण में बाधा नहीं देता। वे सोचते थे कि यदि इससे ही इतने सारे पिंजराबद्ध व्याघ्र शांत रहें तो हमारा काम भी कम होता है और इससे किसी की क्षति भी नहीं होती। लेकिन एक दिन बर्ली साहब की दृष्टि खिंच गयी इस दृश्य की ओर, असह्य हो उठा मजिस्ट्रेट साहब को यह आचरण। दो दिन तो वे कुछ नहीं बोले लेकिन और ज्यादा न सह सके, पुस्तकें लाने की मनाही कर दी। असल में बर्ली इतना सुंदर विचार कर रहे थे कि उसे सुनकर कहां तो सबको आनंद लेना चाहिये था, उल्टे पढ़ रहे थे सब पुस्तकें। यह तो बर्ली के गौरव और ब्रिटिश जस्टिस की महिमा के प्रति घोर असम्मान प्रदर्शित करना है, इसमें संदेह नहीं।

हम जितने दिन अलग-अलग कोठरियों में बंद थे उतने दिन केवल गाड़ी में, मजिस्ट्रेट के आने से पहले एक घंटा या आधा घंटा और खाने के समय कुछ बातें करने का अवसर पाते। जिनका परस्पर-परिचय या आलाप था वे इस समय cell (सेल) की नीरवता और निर्जनता का प्रतिशोध लेते हंसी, आमोद और नाना विषयों की आलोचना में समय बिताते। लेकिन ऐसे अवसरों पर अपरिचितों के साथ बात करने की सुविधा नहीं होती इसलिये मैं अपने भाई बारींद्र और अविनाश को छोड़ और किसी से भी ज्यादा बात न करता, उनका हंसी-मजाक, उनकी बातें सुनता पर स्वयं उसमें भाग न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेता। किंतु एक आदमी बात-चीत में मेरे पास खिसक आता। वे थे भावी approver (मुखबिर) नरेंद्रनाथ गोस्वामी। दूसरे लड़कों की तरह उनका स्वभाव न शांत था न शिष्ट। वे थे साहसी और लघुचेता एवं चरित्र, वाणी और कर्म में असंयत। पकड़े जाने के समय नरेन गोसाईं ने अपना स्वाभाविक साहस और प्रगल्भता दिखायी थी, लेकिन लघुचेता होने के कारण कारावास का थोड़ा-सा भी दुःख और असुविधा सहन करना उनके लिये असाध्य हो उठा था। वे थे जमींदार के बेटे अतः सुख, विलास और दुर्नीति में पले, वे कारागृह के कठोर संयम और तपस्या से अत्यंत कातर हो गये थे, और यह भाव सबके सामने प्रकट करने में भी कुंठित नहीं हुए। जिस किसी भी उपाय से इस यंत्रणा से मुक्त होने की उत्कट लालसा उनके मन में दिन-दिन बढ़ने लगी। पहले उन्हें यह आशा थी कि अपनी स्वीकारोक्ति का प्रत्याहार कर वे यह प्रमाणित कर सकेंगे कि पुलिस ने शारीरिक यंत्रणा देकर दोष स्वीकार कराया था। उन्होंने हमें बताया कि उनके पिता इस तरह के झूठे गवाह जुटाने के लिये कृतसंकल्प थे। किंतु थोड़े दिनों में ही और एक भाव सामने आने लगा। उनके पिता और एक मुखतार उनके पास बार-बार जेल में आने-जाने लगे, अंत में जासूस शमसुल आलम भी उनके पास आ बहुत देरतक गुप-चुप बातें करने लगे। ऐसे समय हठात् गोसाईं के कौतुहल और प्रश्न करने की प्रवृत्ति देख बहुतों के मन में संदेह का उद्रेक हुआ। भारतवर्ष के बड़े-बड़े आदमियों के साथ उनका परिचय या घनिष्ठता थी कि नहीं, गुप्त समिति को किस-किस ने आर्थिक सहायता दे उसका पोषण किया, समिति के और कौन-कौन सदस्य बाहर या भारत के अन्यान्य प्रदेशों में थे, अब कौन समिति का कार्य चलायेंगे, शाखा-समिति कहां है इत्यादि अनेक छोटे-बड़े प्रश्न बारींद्र और उपेंद्र से पूछते। गोसाईं की यह ज्ञानतृष्णा की बात अचिरात् सबके कर्णगोचर हुई और शमसुल आलम के साथ उनकी घनिष्ठता की बात भी अब गोपनीय प्रेमालाप न रह open secret (खुला रहस्य) हो उठा। इसे लेकर खूब आलोचना होती और किसी-किसी ने यह भी लक्ष्य किया कि हमेशा पुलिस-दर्शन के बाद ही इस तरह के नये-नये प्रश्न गोसाईं के मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्कर काटते हैं। कहने की जरूरत नहीं कि उन्हें इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। जब पहले-पहल आसामियों में यह बात प्रचारित होने लगी तब गोसाईं ने स्वयं स्वीकार किया था कि पुलिस उनके पास आ "सरकारी गवाह" बन जाने के लिये उन्हें नाना उपायों से समझाने की चेष्टा कर रही है। कोर्ट में उन्होंने मुझे एक बार यह बात कही थी। मैंने उनसे पूछा था, "आपने क्या उत्तर दिया।" वे बोले, "मैं क्या मान लूंगा! मानने पर भी भला मैं क्या जानता हूं जो उनकी इच्छानुसार साक्ष्य दूंगा?" उसके कुछ दिन बाद उन्होंने फिर से जब इस बात का उल्लेख किया तो देखा कि यह बात बहुत आगे बढ़ चुकी है। जेल में identification parade (पहचान-परेड) के समय मेरी बगल में गोसाईं खड़े थे, तब वे मुझसे कहते: "पुलिस केवल मेरे पास ही आती है।" मैंने उपहास करते हुए कहा, "आप यह बात कह क्यों नहीं देते कि सर ऐंड्रू फ्रेजर गुप्त समिति के प्रधान पृष्ठपोषक थे, इससे उनका परिश्रम सार्थक होगा।" गोसाईं बोले, "ऐसी बात तो मैंने कह ही दी है। मैं उन्हें कह चुका हूं कि सुरेंद्रनाथ बनर्जी हैं हमारे head (प्रधान) और मैंने उन्हें भी एक बार बम दिखाया है।" स्तंभित हो मैंने उनसे पूछा, "यह बात कहने की जरूरत क्या थी?" गोसाईं बोले, "मैं . . . का श्राद्ध करके रहूंगा। उस तरह की और भी बहुत-सी खबरें मैंने दी हैं। मरें साले corroboration (प्रमाण) खोजते-खोजते। क्या पता, इस उपाय से, मुकदमा फिस ही हो जाये?" इसके उत्तर में मैंने केवल इतना कहा था, "ऐसी शरारत से बाज आइये। उनके साथ चालाकी करते-करते खुद ही ठगे जायेंगे।" पता नहीं गोसाईं की यह बात कहांतक सच थी। और सब आसामियों की यह राय थी कि हमारी आंखों में धूल झोंकने के लिये उन्होंने ऐसा कहा था। मेरा ख्याल था कि तबतक गोसाईं approver (मुखबिर) होने के लिये पूर्णतया कृतनिश्चय नहीं थे, यह ठीक है कि इस विषय में वे बहुत आगे बढ़ चुके थे, किंतु पुलिस को ठग उनका केस मिट्टी कर देने की आशा भी उन्हें थी। चालाकी और असदुपाय से कार्यसिद्धि ही दुष्प्रवृत्ति की स्वाभाविक प्रेरणा है। तभी से समझ गया था कि गोसाईं पुलिस के वश हो सच झूठ उन्हें जो भी चाहिये वह कह अपने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचाने की चेष्टा करेंगे। एक नीच स्वभाव का और भी निम्नतर दुष्कर्म की ओर अधःपतन हमारी आंखों के सामने नाटक की तरह अभिनीत होने लगा। मैंने लक्ष्य किया कि किस तरह गोसाईं का मन दिन-प्रतिदिन बदलता जा रहा है, उनके मुख, भावभंगिमा और बात-चीत में भी परिवर्तन हो रहा है। विश्वासघात कर अपने संगी-साथियों का सर्वनाश करने के लिये वे जो कुछ जुटा रहे थे उसके समर्थन के लिये क्रम से नाना अर्धनैतिक और राजनीतिक युक्तियां बाहर करने लगे। ऐसी interesting psychological study (मनोरंजक मानसिक अध्ययन) प्रायः सहज ही हाथ नहीं लगती।

शुरू में किसीने भी गोसाईं को यह पता न लगने दिया कि सभी उनकी अभिसंधि भांप गये हैं। वे भी इतने नासमझ निकले कि बहुत दिनतक कुछ भी न समझ सके, वे समझते थे कि मैं खूब छिपे-छिपे पुलिस की मदद कर रहा हूं। किंतु कुछ दिन बाद यह हुकुम हुआ कि हमें अब और निर्जन कारावास में न रख एक साथ रखा जायेगा तब, उस नूतन व्यवस्था से, रात-दिन पारस्परिक मेल-जोल और बात-चीत से कुछ भी ज्यादा दिन छिपा न रहा। उन्हीं दिनों दो-एक लड़कों के साथ गोसाईं का झगड़ा हुआ, उनकी बातों से और सबके अप्रीतिकर व्यवहार से गोसाईं समझ गये कि उनकी अभिसंधि किसीके लिये भी अज्ञात नहीं रही। जब गोसाईं गवाही देते तो कुछ एक अंगरेजी अखबारों में यह खबर छपती कि आसामी इस अप्रत्याशित घटना से चमत्कृत और उत्तेजित हुए। कहना न होगा, यह थी रिपोर्टरों की कोरी कल्पना। बहुत दिन पहले ही सब जान गये थे कि इस तरह की गवाही दी जायेगी। यहांतक कि किस दिन कौन-सी साक्षी दी जायेगी उसका भी पता था। ऐसे समय एक आसामी गोसाईं के पास जाकर बोले, "देखो भई, अब और नहीं सहा जाता, मैं भी approver (मुखबिर) बनूंगा, तुम शमसुल आलम को कहो कि मेरी रिहाई की भी व्यवस्था करें।" गोसाईं राजी हो गये। कुछ दिन बाद उनसे कहा : इस विषय में गवर्नमेंट की चिट्ठी आयी है कि इस आसामी के निवेदन के अनुकूल निर्णय (favourable consideration) की संभावना है। यह कह गोसाईं ने उन्हें उपेन आदि से कुछ इस तरह की आवश्यक बातें निकलवाने को कहा, जैसे—गुप्त समिति की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाखा कहां थी, कौन थे उसके नेता इत्यादि। नकली approver आमोद-प्रिय एवं रसिक आदमी थे, उन्होने उपेंद्रनाथ के साथ परामर्श कर गोसाईं को कुछ एक कल्पित नाम जता दिये कि मद्रास में विश्वंभर पिल्लै, सातारा में पुरुषोत्तम नाटेकर, बंबई में प्रोफेसर भट्ट और बड़ौदा में कृष्णाजीराव भाऊ थे इस गुप्त समिति की शाखा के नेता। गोसाईं ने आनंदित हो यह विश्वासयोग्य संवाद पुलिस को दे दिया। पुलिस ने भी मद्रास में कोना-कोना छान मारा, बहुत-से छोटे-बड़े पिल्लै मिले, लेकिन एक भी पिल्लै विश्वंभर या अर्द्ध विश्वंभर तक न मिला, सातारा में पुरुषोत्तम नाटेकर भी अपना अस्तित्व घने अंधकार में छिपाये रहे, बंबई में एक प्रोफेसर भट्ट मिल गये किंतु वे थे निरीह राजभक्त सज्जन, उनके पीछे कोई गुप्त समिति होने की संभावना नहीं थी। फिर भी, गोसाईं ने गवाही देते समय, उपेन से पहले कभी सुनी बात के आधार पर कल्पना-राज्य के निवासी विश्वंभर पिल्लै इत्यादि षड्यंत्र के महारथियों की नॉर्टन के श्रीचरणों में बलि चढ़ा अपने अद्‌भुत prosecution theory (अभियोग सिद्धांत) को पुष्ट किया। और कृष्णाजीराव भाऊ को लेकर पुलिस ने और एक रहस्य रचा। उन लोगों ने बागान से बड़ौदा के कृष्णाजीराव देशपांडे के नाम किसी "घोष" द्वारा प्रेषित टेलीग्राम की नकल प्रस्तुत की। उस नाम का कोई आदमी था कि नहीं बड़ौदावासियों को इसका कोई संधान नहीं मिला, लेकिन चूंकि सत्यवादी गोसाईं ने बड़ौदावासी कृष्णाजीराव भाऊ की बात कही है तो निश्चय ही कृष्णाजीराव भाऊ और कृष्णाजीराव देशपांडे हैं एक ही व्यक्ति। और कृष्णाजीराव देशपांडे हों या न हों, हमारे श्रद्धेय बंधु केशवराव देशपांडे का नाम चिट्ठी-पत्री में मिला था। इसलिये निश्चय ही कृष्णाजीराव भाऊ और कृष्णाजीराव देशपांडे एक ही व्यक्ति हैं। इससे यह प्रमाणित हो गया कि केशवराव देशपांडे हैं गुप्त षड्यंत्र के एक प्रधान पंडा। ऐसे सब असाधारण अनुमानों पर प्रतिष्ठित थी नॉर्टन साहब की वह विख्यात theory (परिकल्पना)।

गोसाईं की बात का विश्वास करने से यह भी विश्वास करना होगा कि उन्हीं के कहने से हमारा निर्जन कारावास खतम हुआ एवं हमें इकट्ठे रहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का हुकुम मिला। उन्होंने बताया कि पुलिस ने उन्हें सबके बीच में रख षड्यंत्र की गुप्त बातें निकलवाने के लिये यह व्यवस्था की है। गोसाईं नहीं जानते थे कि पहले ही सबने उनके नूतन व्यषसाय की गंध पा ली है, इसलिये कौन षड्यंत्र में लिप्त हैं, शाखा समिति कहां है, कौन पैसे देते या सहायता करते हैं, अब कौन गुप्त समिति का काम चलायेंगे आदि ऐसे अनेक प्रश्न पूछने लगे। इन सब प्रश्नों के उन्हें कैसे उत्तर मिले इसका दृष्टांत मैंने ऊपर दिया है। लेकिन गोसाईं की अधिकांश बातें ही झूठी थीं। डा० डैली ने हमें बताया था कि उन्होंने इमर्सन साहब से कह-सुनकर यह परिवर्तन कराया था। संभवतः डैली की बात ही सच है; हो सकता है कि इस नूतन व्यवस्था से अवगत होने के बाद पुलिस ने ऐसे लाभ की कल्पना की हो। जो भी हो, इस परिवर्तन से मुझे छोड़ अन्य सबको परम आनंद मिला, मैं उस समय लोगों से मिलने-जुलने को अनिच्छुक था, तब मेरी साधना खूब जोरों से चल रही थी। समता, निष्कामता और शांति का कुछ-कुछ आस्वाद पाया था; किंतु तबतक यह भाव दृढ़ नहीं हुआ था। लोगों के साथ मिलने से, दूसरों के चिंतनस्रोत का आघात मेरे अपक्व नवीन चिंतन पर पड़ते ही इस नये भाव का ह्रास हो सकता है, बह जा सकता है। और सचमुच यही हुआ। उस समय नहीं जानता था कि मेरी साधना की पूर्णता के लिये विपरीत भाव के उद्रेक का जागना आवश्यक है, इसीलिये अंतर्यामी ने हठात् मुझे मेरी प्रिय निर्जनता से वंचित कर उद्दाम रजोगुण के स्रोत में बहा दिया। दूसरे सभी आनंद में अधीर हो उठे। उस रात जिस कमरे में हेमचंद्र दास, शचींद्र सेन इत्यादि गायक थे वह कमरा सबसे बड़ा था, अधिकांश आसामी वहीं एकत्रित हुए थे और रात के दो-तीन बजेतक कोई भी सो न सका। सारी रात हंसी के ठहाके, गाने का अविराम स्रोत, इतने दिन की रुद्ध कथा-वार्ता वर्षा-ऋतु की वन्या की तरह बहती रहने से नीरव कारागार कोलाहल से ध्वनित हो उठा। हम सो गये लेकिन जितनी बार नींद टूटी उतनी ही बार सुनी समान वेग से चलती हुई वही हंसी, वही गाने, वही गप्पें। अंतिम प्रहर में वह स्रोत क्षीण हो गया, गायक भी सो गये। हमारा वार्ड नीरवता में डूब गया। . . .

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारागृह और स्वाधीनता

लगभग सारी मनुष्यजाति ही है बाह्य अवस्था की दास, स्थूल जगत् के अनुभूति में ही आबद्ध। सब मानसिक क्रियाएं इस बाह्य अनुभूति का ही आश्रय लेती हैं, बुद्धि भी स्थूल की संकीर्ण सीमा लांघने में अक्षम है; प्राण के सुख-दुःख हैं बाह्य घटना की प्रतिध्वनिमात्र। यह आधिपत्य शरीर के दासत्व से पैदा होता है। उपनिषद् में कहा गया है, "जगत्-स्रष्टा स्वयंभू ने शरीर के सब द्वारों को बहिर्मुखी करके गढ़ा है इसलिये सबकी दृष्टि बहिर्जगत् में आबद्ध है, अंतरात्मा को कोई भी नहीं देखता। वे धीर प्रकृति महात्मा विरल हैं जिन्होंने अमृत की लालसा से चक्षुओं को भीतर की ओर फिरा आत्मा के प्रत्यक्ष दर्शन किये हैं।" हम भी साधारणतः जिस बहिर्मुखी स्थूल दृष्टि से मनुष्यजाति का जीवन देखते हैं उस दृष्टि से शरीर ही है हमारा मुख्य संबल। यूरोप को हम जितना भी जड़वादी क्यों न कहें पर असल में मनुष्यमात्र ही है जड़वादी। शरीर है धर्म साधन का उपाय, हमारा बहु-अश्वयुक्त रथ, जिस देह-रथ में आरोहण कर हम संसार पथ पर दौड़ लगाते हैं। किंतु हम देह का अयथार्थ प्राधान्य स्वीकार कर देहात्मक बुद्धि को ऐसे प्रश्रय देते हैं कि बाह्य कर्म और बाह्य शुभाशुभ द्वारा संपूर्णतया बंधे रह जाते हैं। इस अज्ञान का फल है जीवनव्यापी दासत्व और पराधीनता। सुख-दुःख, शुभाशुभ, संपद्-विपद् हमारी मानसिक अवस्था को अपना अनुयायी बनाने के लिये सचेष्ट तो होते ही हैं, हम भी कामना का ध्यान करते-करते उस स्रोत में बह जाते हैं। सुख की लालसा से, दुःख के भय से पराश्रित हो जाते हैं, पर-दत्त सुख और दुःख को ग्रहण कर अशेष कष्ट और लांछना भोगते हैं क्योंकि, प्रकृति हो या मनुष्य, जो हमारे शरीर पर थोड़ा भी आधिपत्य जमा सकता है या अपनी शक्ति को अधिकार-क्षेत्र में ला सकता है हमें उसी के प्रभाव के अधीन रहना होता है। इसका चरम दृष्टांत है शत्रुग्रस्त या कारावद्ध की अवस्था। किंतु जो बंधु-बांधवों से वेष्टित हो, स्वाधीनता से मुक्त आकाश में विचरण करते हैं, काराबद्धों की तरह उनकी भी यही दुर्दशा है। शरीर ही है कारागृह और देहात्मक-बुद्धिरूप अज्ञानता है कारारूप शत्रु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कारावास है मनुष्यजाति की चिरंतन अवस्था। दूसरी ओर, साहित्य और इतिहास के प्रत्येक पन्ने पर देखने में आता है स्वाधीनता पाने के लिये मनुष्य जाति का अदमनीय उच्छ्वास और प्रयास। जैसे राजनीतिक या सामाजिक क्षेत्र में वैसे ही व्यक्तिगत जीवन में युग-युग में हुई है यही चेष्टा। आत्मसंयम, आत्मनिग्रह, सुख-दुःख वर्जन, Stoicism (स्टोइकवाद), Epicureanisms (सुखवाद), Asceticism (वैराग्य), वेदांत, बौद्धधर्म, अद्वैतवाद, मायावाद, राजयोग, हठयोग, गीता, ज्ञानमार्ग, भक्तिमार्ग, कर्ममार्ग आदि नाना पंथों का है एक ही गम्यस्थल। उद्देश्य—देह-विजय, स्थूल के आधिपत्य का वर्जन, आंतरिक जीवन की स्वाधीनता। पाश्चात्य विज्ञानविदों ने यह सिद्धांत बनाया है कि स्थूलजगत् के सिवा दूसरा कोई जगत् नहीं, स्थूल पर प्रतिष्ठित है सूक्ष्म, सूक्ष्म अनुभव है स्थूल अनुभव की प्रतिकृतिमात्र, व्यर्थ है मनुष्य का स्वाधीनता-प्रयास, धर्म-दर्शन और वेदांत हैं अलीक कल्पनाएं, संपूर्ण भूत प्रकृति-आबद्ध हमारा वह बंधन-मोचन या भूत प्रकृति की सीमा का उल्लंघन है मिथ्या चेष्टा। किंतु मानव-हृदय के ऐसे गूढ़तर स्तर में निहित है यह आकांक्षा कि हजार युक्तियां भी इसका उन्मूलन करने में असमर्थ हैं। मनुष्य विज्ञान के सिद्धांत से कभी संतुष्ट नहीं रह सकता। चिरकाल से मनुष्य अस्पष्टतः अनुभव करता आ रहा है कि स्थूलजय में समर्थ सूक्ष्म वस्तु उसके अभ्यंतर में दृढ़ता से वर्तमान है, सूक्ष्ममय अधिष्ठाता हैं नित्यमुक्त, आनंदमय पुरुष। वह नित्यमुक्ति और निर्मल आनंद पाना है धर्म का उद्देश्य। धर्म का यह जो उद्देश्य है, विज्ञान-कल्पित Evolution (विकास) का उद्देश्य भी वही है। विचारशक्ति और उसका अभाव पशु और मनुष्य का प्रकृत अंतर नहीं। पशु में विचार शक्ति है; लेकिन पशु देह में उसका उत्कर्ष नहीं होता। पशु और मनुष्य में असली भेद यह है कि शरीर का संपूर्ण दासत्व स्वीकार करना है पाशविक अवस्था और शरीरजय और आंतरिक स्वाधीनता की चेष्टा ही है मनुष्यत्व का विकास। यह स्वाधीनता ही है धर्म का प्रधान उद्देश्य, इसे ही कहते हैं मुक्ति। इस मुक्ति के लिये हम अंतः-करणस्थ मनोमय प्राण-शरीर-नेता को ज्ञान द्वारा पहचानने या कर्म और भक्तिद्वारा प्राण, मन, और शरीर को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्पित करने के लिये सचेष्ट होते हैं। गीता का यह प्रधान उपदेश, **योगस्थ कुरु कर्माणि**, (योग में स्थित होकर कर्म करो) ही यह स्वाधीनता है। आंतरिक सुख-दुःख जब बाह्य शुभाशुभ, संपद-विपद् का आश्रय न लेकर स्वयं-जात, स्वयं-प्रेरित और स्व-सीमाबद्ध होते हैं तब मनुष्य की साधारण अवस्था से विपरीत अवस्था होती है, उस समय बाह्य जीवन को आंतरिक जीवन का अनुयायी बनाया जा सकता है, कर्म-बंधन शिथिल हो सकता है। गीता के आदर्श पुरुष कर्मफल में आसक्ति त्याग पुरुषोत्तम में कर्मसंन्यास करते हैं। वे **दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः**, आंतरिक स्वातंत्र्य प्राप्त कर आत्मरत और आत्मसंतुष्ट हो रहते हैं। वे साधारण लोगों की तरह सुख की लालसा से, दुःख के भय से किसी पर आश्रित नहीं होते, परदत्त सुख दुःख ग्रहण नहीं करते, अतः कर्मों के भोग नहीं भोगते। वरन् महासंकट महाप्रतापान्वित देवासुर युद्ध में राग, भय, क्रोध से अतीत महारथी भगवत्प्रेरित जो कर्मयोगी राष्ट्रविप्लव, या प्रतिष्ठित राज्य, धर्मसमाज की रक्षा कर निष्काम भाव से भगवत्कर्म सुसंपन्न करते हैं, वे हैं गीता के आदर्श पुरुष।

आधुनिक युग में हम खड़े हैं नूतन और पुरातन के संधिस्थल पर। मनुष्य निरंतर अपने गंतव्य स्थान की ओर अग्रसर हो रहा है, कभी-कभी समतल भूमि को त्याग ऊपर आरोहण करना होता है और आरोहण के समय राज्य, सभा, धर्म और ज्ञान में विप्लव होता है। आजकल स्थूल से सूक्ष्म की ओर आरोहण करने का प्रयास चल रहा है। पाश्चात्य वैज्ञानिक पंडितों द्वारा स्थूल जगत् की सांगोपांग परीक्षा और नियम-निर्धारण से आरोहण मार्ग की चारों ओर की समतल भूमि परिष्कृत हो गयी है। सूक्ष्म जगत् के विशाल राज्य में पाश्चात्य ज्ञानियों का प्रथम पदक्षेप हो रहा है। बहुतों का मन उस राज्य को जीतने की आशा से प्रलुब्ध हो उठा है। इसके अलावा दूसरे लक्षण भी दिखायी दे रहे हैं—जैसे थोड़े दिनों में थियोसोफी का विस्तार, अमेरिका में वेदांत का आदर, पाश्चात्य दर्शनशास्त्र और चिंतनप्रणाली में परोक्ष रूप से भारतवर्ष का कुछ आधिपत्य आदि। किंतु सर्वश्रेष्ठ लक्षण है भारत का आकस्मिक और आशातीत उत्थान। भारतवर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत् के गुरु-पद पर अधिकार कर नये युग का परिवर्तन करने के लिये उठ रहे हैं। उनकी सहायता से वंचित रहने पर पाश्चात्य-गण उन्नति करने की चेष्टा में सिद्धकाम नहीं हो सकेंगे। जैसे आंतरिक जीवन के विकास के सर्व-प्रधान साधन-स्वरूप ब्रह्मज्ञान, तत्त्वज्ञान और योगाभ्यास में भारत को छोड़ दूसरे किसी देश का उत्कर्ष नहीं हुआ उसी तरह मनुष्यजाति के लिये आवश्यक चित्तशुद्धि, इंद्रियसंयम, ब्रह्मतेज, तपःक्षमता और निष्काम कर्मयोग-शिक्षा हैं भारत की ही संपत्ति। बाह्य सुख-दुःख की उपेक्षा कर आंतरिक स्वाधीनता अर्जित करना भारतवासी के लिये ही साध्य है, निष्काम कर्म में भारतवासी ही समर्थ हैं, अहंकार-वर्जन और कर्म में निर्लिप्तता उन्हींकी शिक्षा और सभ्यता का चरम उद्देश्य होने के कारण जातीय चरित्र में बीज रूप में निहित है।

इस बात की यथार्थता मैंने पहले अलीपुर जेल में अनुभव की। इस जेल में अधिकतर चोर, डकैत और हत्यारे रहते हैं। यद्यपि कैदियों के साथ हमारी बातचीत निषिद्ध थी तथापि व्यवहार में यह नियम पूरी तरह नहीं पाला जाता था, इसके अलावा रसोइये, पानीवाले और झाड़ू देनेवाले मेहतर आदि के साथ संपर्क हुए बिना काम नहीं चलता था, बहुत बार उनके साथ अबाध वाक्यालाप होता। जो मेरे साथ उसी अपराध में पकड़े गये थे वे भी "नृशंस हत्यारों का दल" आदि दुःश्राव्य विशेषणों से कलंकित और निंदित होते। यदि भारतवासी के चरित्र को कहीं घृणा की दृष्टि से देखना हो, यदि किसी अवस्था में उसके निकृष्ट, अधम और जघन्य भाव से परिचय पाना संभव हो तो अलीपुर जेल ही है वह स्थान और अलीपुर का कारावास ही है वह निकृष्ट, हीन अवस्था। इस स्थान में, ऐसी अवस्था में मैंने बारह महीने काटे। इन बारह महीनों के अनुभव का फल—भारतवासियों की श्रेष्ठता के संबंध में दृढ़ धारणा, मनुष्यचरित्र के प्रति द्विगुण भक्ति और स्वदेश एवं मनुष्यजाति की भावी उन्नति और कल्याण की दस गुनी आशा ले कर्म-क्षेत्र में लौटा हूं। यह मेरे स्वभावजात Optimism (आशावाद) या अतिरिक्त विश्वास का फल नहीं। श्रीयुत विपिन चंद्र पाल एक बार जेल में यह अनुभव कर आये थे, अलीपुर जेल के भूतपूर्व डॉक्टर डैली साहब भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका समर्थन करते थे। डैली साहब थे मानव-चरित्र से अभिज्ञ, सहृदय और विचक्षण व्यक्ति, मानव-चरित्र की सारी निकृष्ट और जघन्य वृत्तियां प्रतिदिन उनके सामने विद्यमान रहतीं, फिर भी वे मुझसे कहते, "भारत के सज्जन या नीच लोगों को, समाज के संभ्रांत व्यक्ति या जेल के जितने भी कैदियों को देखता-सुनता हूं उससे मेरी यह धारणा दृढ़ हुई है कि चरित्र और गुण में तुम लोग हम से बहुत ऊंचे हो। इस देश के कैदियों और यूरोप के कैदियों में आकाश-पाताल का अंतर है। इन युवकों को देखकर मेरी यह धारणा और भी दृढ़ हो गयी है। इनका आचरण, चरित्र और नाना सद्गुण देखते हुए कौन कल्पना कर सकता है कि ये anarchist (अराजकतावादी) या हत्यारे हैं। उनमें क्रूरता, उद्दामभाव, अधीरता या धृष्टता थोड़ी भी नहीं पाता, पाता हूं सब उल्टे गुण ही।" निस्संदेह चोर और डाकू जेल में साधु-संन्यासी नहीं बन जाते। अंगेरजों की जेल चरित्र सुधारने की जगह नहीं, साधारण कैदियों के लिये तो उल्टे चरित्रहानि और मनुष्यत्व के नाश का साधन है। जो चोर, डाकू और खूनी थे, वे चोर, डाकू और खूनी ही रहते हैं, जेल में चोरी करते हैं, कड़ी पाबंदियों के बावजूद नशा करते हैं, धोखा देते हैं। पर इससे क्या, भारतीय का मनुष्यत्व जाकर भी नहीं जाता। सामाजिक अवनति के कारण पतित, मनुष्यत्व-नाश के फलस्वरूप निषेषित और बाहर कालिमा, कदर्यभाव, कलंक और विकृति, फिर भी भीतर वही लुप्तप्राय मनुष्यत्व भारतवासी के मज्जागत सद्गुण में छिपा आत्मरक्षा करता है, बार-बार उसकी बातों में और आचरणों में प्रकट होता है। जो थोड़ा-सा ऊपरी कीचड़ देख घृणा से मुंह फेर लेते हैं, केवल वे ही कह सकते हैं कि हमने इनमें मनुष्यत्व लेशमात्र भी नहीं देखा। किंतु जो साधुता का अहंकार त्याग अपनी सहजसाध्य स्थिर दृष्टि से निरीक्षण करते हैं वे कभी उनकी हां में हां नहीं मिलायेंगे। श्रीयुत विपिन चंद्र पाल ने बक्सर जेल में चोर-डाकुओं के बीच में ही सर्वघट में नारायण के दर्शन कर छः मास के कारावास के बाद उत्तरपाड़ा की सभा में मुक्त कंठ से इस बात को स्वीकारा था। मैं भी अलीपुर जेल में ही हिंदू धर्म के इस मूलतत्त्व को हृदयंगम कर पाया, नरदेह में सर्वप्रथम चोर, डाकू और खूनी में नारायण को उपलब्ध किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस देश में सैंकड़ों निरपराध व्यक्ति दीर्घकाल तक जेल-रूपी नरकवास के भोग से पूर्वजन्मार्जित दुष्कर्म के फल को हल्का कर अपना स्वर्ग-पथ परिष्कृत कर रहे हैं। किंतु साधारण पाश्चात्यवासी जो धर्मभाव से पूत और देवभावापन्न नहीं हैं वे ऐसी परीक्षा में कहांतक उत्तीर्ण होते हैं इसका सहज अनुमान जो पश्चिम में रह चुके हैं या जिन्होंने पश्चिमी चरित्र-प्रकाशक साहित्य पढ़ा है, वे ही कर सकते हैं। ऐसे स्थलों में या तो उनका निराशा-पीड़ित, क्रोध और दुःख के अश्रुजल से प्लावित हृदय पार्थिव नरक के घोर अंधकार में एवं सहवासियों के संसर्ग में पड़ उनकी क्रूरता और नीचवृत्ति का आश्रय लेता है;—या दुर्बलता के निरतिशय निष्पेषण से बल-बुद्धिहीन हो केवल मनुष्य का नष्टावशेष बच रहता है।

अलीपुर के एक निरपराधी की बात सुनाता हूं। इस व्यक्ति को डकैती में शामिल होने के कारण दस साल के सश्रम कारावास का दंड मिला था। जाति का था ग्वाला, अशिक्षित, लिखने-पढ़ने के पास न फटकता, धर्म और संबंध के नाते उसमें थी भगवान् पर आस्था और आर्यशिक्षा-सुलभ धैर्य और अन्यान्य सद्गुण। इस वृद्ध का भाव देख मेरा विद्या और सहिष्णुता का अहंकार चूर्ण हो गया। वृद्ध के नयनों में सदा विराजता प्रशांत, सरल मैत्रीभाव और मुंह में सर्वदा अमायिक, प्रीतिपूर्ण आलाप। कभी-कभी अपने निरपराध होने पर भी कष्टभोग की बात कहते, स्त्री-पुत्र के बारे में बताते, कब भगवान् कारा से मुक्ति दिला स्त्री-पुत्र के मुख का दर्शन करायेंगे, यह भाव भी प्रकाशित करते, लेकिन कभी भी उन्हें निराश और अधीर नहीं देखा। भगवान् की कृपा के भरोसे धीर भाव से जेल का सब काम संपन्न करते हुए दिन काट रहे थे। वृद्ध की सारी चेष्टाएं और भावनाएं अपने लिये नहीं थीं, थीं दूसरों की सुख-सुविधाओं के लिये। उनकी हर बात से झलकती थी दया और दुःखियों के प्रति सहानुभूति। पर-सेवा था उनका स्वभाव-धर्म। नम्रता में ये सारे सद्गुण और भी फूट उठे थे। अपने से सहस्र गुना उच्च हृदय देख इस नम्रता के सामने मैं सर्वदा लज्जित हो जाता, वृद्ध से सेवा कराते संकोच होता था, लेकिन वे छोड़ते नहीं थे, वे सदा ही मेरे सुख-स्वस्ति के लिये चिंतित रहते। जैसा मेरे पर वैसा ही सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर—विशेषतया निरपराधों और दुःखीजनों के प्रति उनकी दयादृष्टि और विनीत सेवा-सम्मान और भी अधिक था। तिस पर भी चेहरे पर और आचरण में कैसा एक स्वाभाविक और प्रशांत गांभीर्य और महिमा थी! देश के प्रति भी इनका यथेष्ट अनुराग था। इस वृद्ध कैदी की दया-दाक्षिण्यपूर्ण श्वेतश्मश्रुमंडित सौम्यमूर्ति चिरकाल मेरे स्मृति-पट पर अंकित रहेगी। इस अवनति के समय भी भारत के किसानों में—जिन्हें हम अशिक्षित और छोटी जात कहते हैं,—ऐसी हिंदू-संतानें मिलती हैं, इसीलिये है भारत का भविष्य आशाजनक। शिक्षित युवक-मंडली और अशिक्षित कृषकवर्ग—इन दो वर्गों में ही निहित है भारत का भविष्य, इनके मिलन से ही गठित होगी भावी आर्यजाति।

ऊपर एक अशिक्षित खेतिहर की कहानी सुनायी, अब दो शिक्षित युवकों की कहानी सुनाता हूं। इन्हें सात साल का सश्रम कारावास का दंड मिला था। ये थे हैरिसन रोड के दो कविराज, नगेंद्रनाथ और धरणी। ये भी जिस शांत भाव से, संतुष्ट मन से इस आकस्मिक विपत्ति, इस अन्याय राजदंड को सह रहे थे, उसे देख आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता था। कभी भी उनके मुख से क्रोध-दुष्ट या असहिष्णुता-प्रकाशक एक भी बात नहीं सुनी। जिनके दोष से जेलरूपी नरक में यौवन काटना पड़ा था उनके प्रति जरा-सा भी क्रोध, तिरस्कार का भाव या विरक्तितक का कोई लक्षण कभी नहीं देखा। वे थे आधुनिक शिक्षा के गौरवस्थल, पाश्चात्य भाषा और पाश्चात्य विद्या से अनभिज्ञ। मातृभाषा ही थी इनका संबल, लेकिन अंगरेजी शिक्षा प्राप्त लोगों में उनके तुल्य कम ही लोग देखे। दोनों ने ही मनुष्य या विधाता के आगे शिकायत या नालिश न कर सहास्य-वदन नतमस्तक दंड ग्रहण कर लिया था। दोनों ही भाई थे साधक लेकिन विभिन्न प्रकृति के। नगेंद्र थे धीर प्रकृति, गंभीर और बुद्धिमान्, हरिकथा और धर्म-चर्चा में अत्यंत रुचि रखनेवाले। जब हमें निर्जन कारावास में रखा गया था तब जेल के अधिकारियों ने जेल की कड़ी मशक्कत के बाद हमें पुस्तकें पढ़ने की अनुमति दी थी। नगेंद्र की इच्छा थी भगवद्गीता पढ़ने की, मिली बाइबल। बाइबल पढ़कर उनके मन में कैसे-कैसे भाव उठते, कठघरे में बैठकर सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे बताते। नगेंद्र ने गीता नहीं पढ़ी, किन्तु आश्चर्य ! बाइबल की कथा न कह वे गीता के श्लोकों का अर्थ बोल रहे थे—कभी-कभी तो ऐसा लगता था कि कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण मुख से निःसृत भगवद्गुणात्मक सारी महती उक्तियां उसी वासुदेव के मुखकमल से इस अलीपुर के कठघरे में फिर से निःसृत हो रही हैं। गीता न पढ़ी होने पर बाइबल में गीता का समतावाद, कर्मफल त्याग, सर्वत्र ईश्वर-दर्शन इत्यादि भाव उपलब्ध करना सामान्य साधना का लक्षण नहीं। धरणी नगेंद्र के समान बुद्धिमान् नहीं थे, लेकिन थे विनीत, कोमल प्रकृति और स्वभाव से ही भक्त। वे सदा ही मातृध्यान में विभोर रहते, उनके चेहरे पर प्रसन्नता, सरल हंसी और कोमल भक्ति-भाव देख जेल के जेलत्व की उपलब्धि कठिन हो जाती थी। इन्हें देख कौन कह सकता है कि बंगाली हीन और अधम हैं ? यह शक्ति, यह मनुष्यतत्त्व, यह पवित्र अग्नि बस छिपी पड़ी है राख के ढेर में।

ये दोनों ही थे निरपराध। बिना दोष के कारावद्ध होने पर भी निज गुणों या शिक्षा के बल पर बाह्य सुख-दुःख का आधिपत्य अस्वीकार कर आंतरिक जीवन की स्वाधीनता की रक्षा करने में समर्थ थे। किंतु जो अपराधी हैं, उनमें भी जातीय चरित्र के सद्गुण विकसित होते। मैं बारह महीने अलीपुर में था, दो-एक को छोड़ जितने भी कैदी, चोर-डाकू और खूनियों के साथ हमारा संपर्क हुआ सबसे ही हम सद्व्यवहार और अनुकूलता पाते। बल्कि आधुनिक शिक्षा से दूषित हम लोगों में इन सब गुणों का अभाव देखा जाता है। आधुनिक शिक्षा के अनेक गुण हो सकते हैं किंतु सौजन्य और निःस्वार्थ परसेवा उन गुणों में नहीं आते। जो दया और सहानुभूति हैं आर्यशिक्षा के मूल्यवान् अंग उन्हें इन चोर-डाकुओं में भी देखता। मेहतर, भंगी और पानीवाले को बिना दोष के हमारे साथ-साथ निर्जन कारावास का दुःख-कष्ट थोड़ा-बहुत भोगना पड़ता, लेकिन उन्होंने इससे एक दिन भी हमारे ऊपर असंतुष्टि या क्रोध नहीं दिखाया। देशीय जेलर के सामने भले ही कभी-कभी अपना दुखड़ा रो लेते थे लेकिन हमारी कारामुक्ति की प्रार्थना प्रसन्न-वदन करते। एक मुसलमान कैदी अभियुक्तों से अपने बेटों जैसा स्नेह करते थे, विदा लेते समय वे अपने आंसू न रोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाये। देश के लिये यह लांछना और कष्ट भोगते देख वे और सब को संबोधित कर अफसोस करते, "देखो, ये हैं कुलीन, धनियों की संतान, गरीब-दुखियों की रक्षा करने जाने पर इनकी यह दुर्दशा।" जो पाश्चात्य सभ्यता के पिट्ठू हैं उनसे पूछता हूं, इंग्लैंड की जेल में निम्नश्रेणी के कैदियों, चोरों, डाकुओं और खूनियों में मिलेगा ऐसा आत्मसंयम, दया-दाक्षिण्य, कृतज्ञता और परार्थ भगवद्भक्ति ? असल में तो यूरोप है भोक्तृभूमि और भारत है दातृभूमि। गीता में दो श्रेणी के लोग वर्णित हैं—देव और असुर। भारतवासी हैं स्वभावतः देवप्रकृति और पाश्चात्यगण स्वभावतः असुरप्रकृति। किंतु इस घोर कलियुग में, तमोगुण के प्राधान्यवश आर्य शिक्षा के लोप से, देश की अवनति से हम निकृष्ट आसुरिक वृत्ति संचित कर रहे हैं और दूसरी ओर पाश्चात्य लोग राष्ट्रीय उन्नति और मनुष्यत्व के क्रमविकास के गुणद्वारा देवभाव अर्जित कर रहे हैं। इसके बावजूद उनके देवभाव में कुछ असुरत्व और हमारे आसुरिक भाव में भी देवभाव अस्पष्टतया प्रतीयमान है। उनमें जो श्रेष्ठ हैं वे भी पूरी तरह असुरत्व-रहित नहीं। निकृष्ट और निकृष्ट की जब हम तुलना करते हैं तो इसकी यथार्थता अति स्पष्ट रूप में समझ में आ जाती है।

इस विषय में बहुत कुछ लिखने को है, प्रबंध के बहुत लंबा हो जाने के भय से नहीं लिखा। तो भी जेल में जिनके आचरण में इस आंतरिक स्वाधीनता के दर्शन किये हैं, वे हैं इस देवभाव के चरम दृष्टांत। परवर्ती प्रबंध में इस विषय पर लिखने की इच्छा है।

*

केवल सत्य ही जगत् को भागवत प्रेम को ग्रहण करने और अभिव्यक्त करने की शक्ति प्रदान कर सकता है।

*

डरना बंद कर दो और कष्ट भी बंद हो जायेंगे। मेरा कोई बच्चा डर नहीं सकता।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

अंग्रेजी में सोसायटी की ओरसे 'सेल्फ पर्फेक्शन इन योग', 'फीअर—इट्स कॉज़ एंड क्योर,' 'व्हाट इज़ कानसेंनट्रेशन' तथा 'प्रेक्टिकल गाइडेंस' नामक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। प्रत्येक का दाम चार-चार रुपये है। श्रीअरविंद सोसायटी सर्कल का वार्षिक अंक भी छप गया है।

श्रीअरविंद साधनालय **अयोध्या** में श्रीअरविंद के पवित्र अवशेषों की स्थापना हो गयी है।

देहरादून में सोसायटी की शाखा ने 'दैनिक जीवन में योग' विषय पर एक सेमिनार किया। सर्वश्री माधव पंडित, प्रदीप नारंग और ओ॰ पी॰ वाही के भाषण हुए।

सितान (गुजरात) के श्रीअरविंद आराधना केंद्र ने ७ अप्रैल को अपना १७ वां वार्षिक दिवस मनाया।

२४ अप्रैल को **बंगलौर, अमरावती, चक्रधरपुर** आदि स्थानों में अलग-अलग तरह के कार्यक्रम हुए।

पांडिचेरी मुख्यालय के श्री देवव्रत मार्च और अप्रैल में खड़गपुर, कलकत्ता, कैनिंग, आसनसोल, रामपुरहाट, रघुनाथगंज, जलेश्वर आदि स्थानों पर गये। पटना शाखा अपने नये विद्यालय के लिये इमारत बनवा रही है। सदस्यों ने अनेक प्रकार के कार्य शुरू कर दिये हैं।

ओडिसा के खरीड चौक की यात्रा बहुत फलप्रद रही जहां कुछ समय पहले श्रीअरविंद के पवित्र अवशेष प्रतिष्ठित किये गये थे। यह स्थान सड़क से १२ किलोमीटर दूर है। ८ किलोमीटर तो रिक्शा ले जाती है, बाकी रास्ता पैदल तय करना पड़ता है। इस दूरस्थ गांव में कुछ युवक बड़े समर्पण भाव से माताजी और श्रीअरविंद की सेवा करने का प्रयास कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रणव कुमार भट्टाचार्य के आश्रम के व्यायामसंबंधी प्रकाशन

BOOKS:
1. Healthful Exercises for Women and Girls (New) Rs. 8/-
2. Basic Asanas (4th Edition) Rs. 6/-
3. Daily Dozen for Men (2nd Edition) Rs. 6/-

(Postage Extra)

CHARTS:
Basic Asanas (30″ × 20″, Art Paper) Rs. 8/-
Daily Dozen for Men (30″ × 20″, Art Paper) Rs. 8/-
Surya Namaskar (15″ × 10″, Board Paper) Rs. 2/-

(Postage Rs. 10/-)

प्रकाशक—नवज्योति कार्यालय, श्रीअरविंद आश्रम, पांडिचेरी—६०५००२

युवा होने का मतलब है भविष्य में रहना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

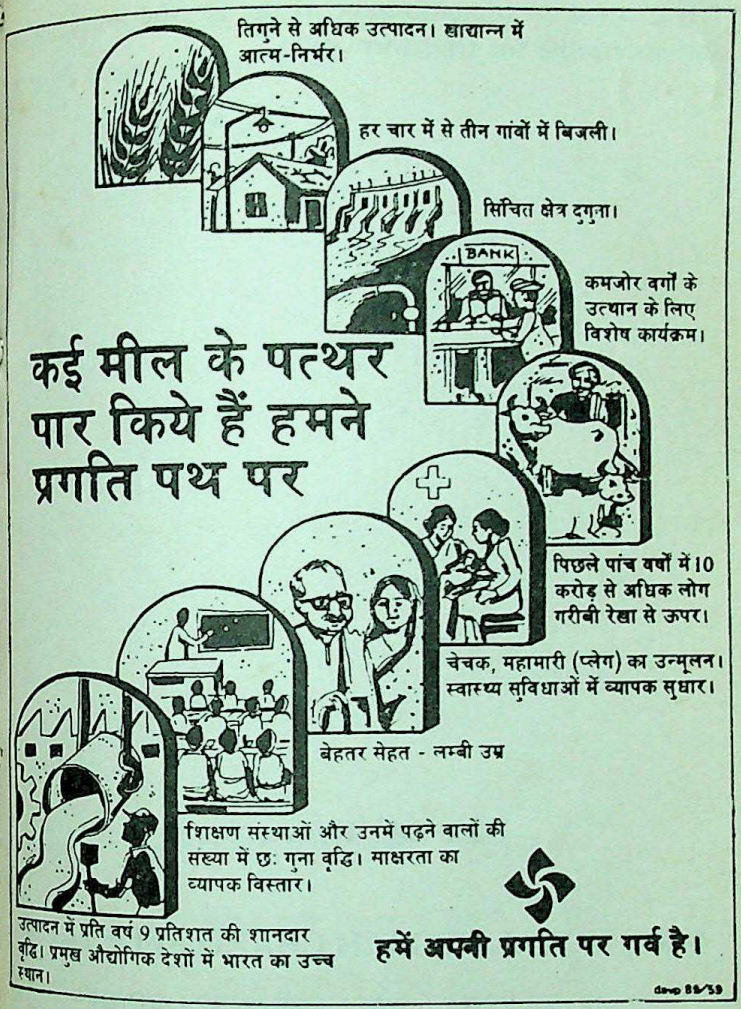

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"The constant remembrance of the Divine is indispensable for transformation."

— THE MOTHER

With Best Wishes from:

MRS. KOYAL DEORAH CHARITABLE TRUST

28, VARSHA, 69/B, NEPEANSEA ROAD

BOMBAY - 400 006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे पहली चीज होनी चाहिये 'शांति'। तुम जो कुछ करो उसे शांतिपूर्ण तरीके से करना चाहिये।

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर-२४७००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

1566

A happy beginning
& good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

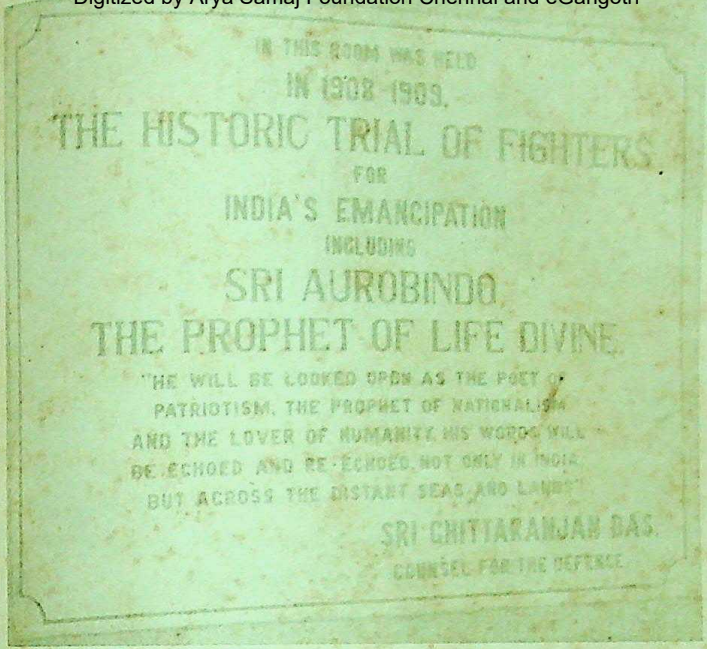

अलीपुर जेल के कमरे में श्रीअरविंद के निवास के स्मारक के रूप में
चित्तरंजन दास की भविष्यवाणी

अग्निशिखा

अगस्त १९८९ — अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

सन्देश	माताजी	१
'संपादकीय' : पुनर्निर्माण	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		३
पुत्र का प्रेम		७
आर्य आदर्श और गुणत्रय		८
नवजन्म		१८
अन्तिम वक्तव्य		२२
भागवत अर्पण वस्तु		३५
गीर्वाण-वाणी		३७
सोसायटी समाचार		३८

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के १० और पुरोधा के १४ शीघ्र भेजें अन्यथा अगला अंक वी. पी. पी. से जायगा। वी. पी. पी लौट आने से हमें बहुत हानि होती है। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो २२५ और २७५ एक साथ या किस्तों में देकर अग्निशिखा और पुरोधा के या ५०० देकर दोनों के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

अग्निशिखा वार्षिक १०.०० आजीवन २२५.००

श्रीअरविंद सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी–६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी–६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

भारत को भूतकाल के चिथड़े उतार देने चाहियें, ताकि उसका सौंदर्य निखर सके। इसे अपना शारीरिक रूप बदलना चाहिये ताकि उसकी अंतरात्मा नये रूप में प्रकट हो सके। हमें इस बात से डरना न चाहिये कि कोई परिवर्तन उसे घटिया यूरोप में बदल देगा। इस प्रकार की अधोगति के लिये उसका व्यक्तित्व बहुत अधिक महान् है, इस प्रकार के आत्म-समर्पण के लिये उसकी अंतरात्मा बहुत ज्यादा शांत, अभिमानी है। एक स्वाधीन और पूर्णता-प्राप्त राष्ट्रीय जीवन की औद्योगिक शक्तियां ज्यादा विशाल क्षेत्र और ज्यादा चौड़े मार्गों की मांग करती हैं। हमें इसके लिये न डरना चाहिये कि आर्थिक क्रांति हमें भी उसी रुग्ण और अव्यवस्थित सामाजिक अवस्था में पहुंचा देगी जैसी अवस्था आज के यूरोप की हुई है और जिसे देखकर मानव की उच्चतर भावनाओं को आघात पहुंचता है। भारत अपनी शिक्षा को, जो उसका जीवन और उसकी अमरता का रहस्य है, कभी इस हदतक नहीं भुला सकता कि वह उस संगठित स्वार्थ, क्रूरता और लोभ की प्रतिमूर्ति बन सके जिसे पश्चिम ने उद्योग का नाम देकर सम्मानित किया है। भारत अपनी ही परिस्थितियां उत्पन्न करेगा, व्यवस्था के उन रहस्यों को खोज निकालेगा जिन्हें पाने के लिये समाजवाद व्यर्थ परिश्रम कर रहा है। वह फिर से एक बार धरती के वासियों को बताएगा कि संसार और आत्मा का समन्वय कैसे किया जाये।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

पुनर्निर्माण

उस दिन एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी से बात करने का अवसर प्राप्त हुआ। अपने डांडी के सत्याग्रह का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा, "मैं जेल में भी पुलिस का विरोध करता था। उनकी आज्ञा बार-बार भंग करने के जुर्म में मेरे पांव में बेड़ियां डाल दी गयीं और कोल्हू में जोत दिया गया।" मैंने द्रवित होकर पूछा, "बड़ा कष्ट होता होगा।" वे हंसकर बोले, "तुमको विश्वास न होगा किंतु मैं एकदम मस्त रहता था। कभी सोचा तक नहीं कि दुःख-कष्ट झेल रहा हूं, एक तरह का जोश था जिसमें केवल आत्म-विस्मृति थी, न जेल के सड़े-गले खाने का होश था, न कोठरी की गंदगी सालती थी। अजीब स्थिति में था। उस अवस्था में केवल मस्ती थी।" ऐसे अनेक मस्त फकीरों की कुर्बानी से हमने आजादी हासिल की फिर क्या हुआ ? . . .

आज की बात सोचें तो आजादी के बाद सब कंबल ओढ़कर सो गये। किसीने यह नहीं सोचा कि आजादी के बाद निर्माण-कार्य भी करना है, बहुत-से नये प्रयोग करने होंगे। जन-मानस में उत्साह बिना नेता अकेला कुछ नहीं कर पाता और न मंत्री ही, जनता ने सोचा "चलो, आजाद हो गये, अब मौज करेंगे।" और इसका परिणाम हम देख सकते हैं।

राष्ट्र-निर्माण हमारा कर्तव्य है। उसे हमें तन, मन, धन देकर करना है, तभी भारत का पुनर्निर्माण होगा।

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

अगस्त

१. श्रीअरविंद हमेशा अपनी मातृभूमि से प्रगाढ़ प्रेम रखते थे, लेकिन वे चाहते थे कि वह महान्, उदात्त, पवित्र हो, संसार में अपने महान् लक्ष्य के अनुरूप हो। उन्हें यह स्वीकार न था कि वह गंदे, अधम, अपरिष्कृत, अंधे, स्वार्थपूर्ण और अज्ञानभरे पूर्वाग्रहों के स्तर पर उतरे।

२. हमारे योग का आधार है सच्चाई, ईमानदारी, अहंकार का निषेध, भागवत कार्य के लिये निःस्वार्थ आत्मदान, चरित्र की उदात्तता और ऋजुता।

३. मुझे चिंता है तो इस बात की कि भारतीय स्वाधीन होने के बाद कैसा व्यवहार करेंगे ? क्या वे इस अनुपम भेंट के योग्य सिद्ध होंगे ? कहीं वे निचली वृत्तियों के शिकार होकर इतने परिश्रम से प्राप्त किये गये फल को बिगाड़ न दें। दुःख की बात यह है कि भारत में इस ओर किसी का ध्यान नहीं जा रहा।

४. हे हमारी मां ! हे भारत की आत्म-शक्ति ! हे जननी ! तू ने कभी, अत्यंत अंधकारपूर्ण अवसाद के दिनों में भी, यहांतक कि जब तेरे बच्चों ने तेरी वाणी अनसुनी कर दी, अन्य प्रभुओं की सेवा की और तुझे अस्वीकार कर दिया, तब भी, तूने उनका साथ नहीं छोड़ा।

५. हे मां ! इस महान् घड़ी में जब कि वे जग पड़े हैं और तेरी स्वतंत्रता के इस उषःकाल में तेरे मुखमंडल पर ज्योति पड़ रही है, हम तुझे नमस्कार करते हैं।

६. हमें पथ दिखा जिसमें स्वतंत्रता का जो विशाल क्षितिज हमारे सामने उन्मुक्त हुआ है, वह तेरी सच्ची महानता का तथा विश्व के राष्ट्र-समाज के अंदर तेरे सच्चे जीवन का भी क्षितिज बने।

७. हमें वह पथ दिखा जिसमें हम सर्वदा महान् आदर्शों के पक्ष में खड़े हों और आध्यात्म मार्ग के नेता के रूप में तथा सभी जातियों के मित्र और सहायक के रूप में तेरा सच्चा स्वरूप मानव जाति को दिखा सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. भारत को भविष्य के लिये काम करना चाहिये और राह दिखानी चाहिये। इस तरह वह जगत् में अपना सच्चा स्थान फिर से पा लेगा।

९. एक लंबे अरसेतक विभाजन और विरोध के द्वारा शासन करने की प्रथा चली आ रही है। अब समय आ गया है जब एकता, पारस्परिक समझौते और सहयोग के द्वारा शासन किया जाये।

१०. सहयोगी चुनने के लिये मनुष्य का मूल्य अधिक है, इस बात का नहीं कि वह किस दल का है।

११. किसी राष्ट्र की महानता किसी दल की जीत पर नहीं, सभी दलों की एकता पर निर्भर है।

१२. सारे संसार के विकास में भारत मां की विशेष भूमिका है। अपने तुच्छ, अहंकारपूर्ण व्यक्ति से परे उठ जाओ और भारत माता की सुयोग्य संतान बनो, अपने कर्तव्यों को ईमानदारी और सरलता के साथ पूरा करो और भागवत कृपा पर अडिग विश्वास रखकर सर्वदा प्रसन्न और निश्चिंत बने रहो।

१३. सच्ची आध्यात्मिकता जीवन का त्याग करना नहीं, बल्कि दिव्य परिपूर्णता के साथ जीवन को पूर्ण बनाना है।
यह बात भारत को संसार के सम्मुख रखनी होगी।

१४. भारत के लिये सर्वप्रथम समस्या है अपनी अंतरात्मा को फिर से प्राप्त करना और उसे अभिव्यक्त करना।

१५. विश्व की भलाई के लिये भारत की रक्षा करनी होगी, क्योंकि एकमात्र भारत ही विश्व को शांति और नवीन व्यवस्था प्राप्त करा सकता है। एकमात्र भगवती शक्ति ही भारत की सहायता कर सकती है।

१६. यदि तुम देश के अंदर विश्वास और मेल उत्पन्न कर सको तो वह मनुष्य-निर्मित किसी भी शक्ति से अधिक शक्तिशाली होगा।

१७. देश में एक ऐसा दल अवश्य होना चाहिये जो आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा भारत और विश्व की रक्षा करने की प्रबल संकल्प-शक्ति का निर्माण करे।

१८. भागवत संकल्प और शक्ति को अभिव्यक्त करके एकमात्र भारत विश्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सामने अपना संदेश प्रसारित कर सकता है, पर यह कार्य पश्चिम के जड़वाद का अनुकरण करने से नहीं होगा। भागवत इच्छा का अनुसरण करने पर भारत आध्यात्मिक पर्वत के शिखर पर जगमगा उठेगा, सत्य का मार्ग दिखायेगा और विश्व ऐक्य का संगठन करेगा।

१९. हम भारत के लिये सच्ची स्वाधीनता चाहते हैं ताकि वह जगत् के आगे, मानव जाति को जो बनना चाहिये, उसका ठीक उदाहरण और प्रदर्शन बन सके।

२०. भारत के पास आत्मा का ज्ञान है, बल्कि था, लेकिन उसने जड़-भौतिक पदार्थ की उपेक्षा की और उस कारण कष्ट भोगा।
पश्चिम के पास जड़-भौतिक पदार्थ का ज्ञान है लेकिन उसने आत्मा को अस्वीकार किया और इस कारण बुरी तरह कष्ट पा रहा है।

२१. यह सोचना बंद करो कि तुम पश्चिम के और दूसरे पूरब के हैं। सभी मानव एक ही दिव्य स्रोत के हैं और धरा पर इस स्रोत की एकता को अभिव्यक्त करने आये हैं।

२२. विभाजन की शक्ति अस्थिर और अस्थायी है। एकता स्थायी शक्ति है और ज्योतिर्मय भविष्य के लिये काम करती है।

२३. किसी भी देश में बच्चों को जो सबसे अच्छी शिक्षा दी जा सके वह यह है कि उन्हें दिखाया जाये कि उनके देश का सच्चा स्वरूप और उसकी अपनी विशेषता क्या है। जगत् में उसके राष्ट्र को कौन-सा कर्तव्य पूरा करना है और पार्थिव सामंजस्य में उसका सच्चा स्थान क्या है।

२४. भारत की आत्मा ही देश को एक कर सकती है।
बाहरी रूप में भारत के प्रदेश स्वभाव, प्रवृत्ति, संस्कृति और भाषा की दृष्टि से एक-दूसरे से बहुत भिन्न हैं और कृत्रिम रूप से उन्हें एक करने का कोई भी प्रयास अनर्थकारी परिणाम ला सकता है।

२५. भारत की आत्मा एक है, आध्यात्मिक सत्य के प्रति, तीव्र सृजन की तात्विक एकता और जीवन के दिव्य स्रोत के प्रति उसकी अभीप्सा तीव्र है। इस अभीप्सा से एक होकर समस्त देश एक ऐसी एकता को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर से स्थापित कर सकता है जिसका अस्तित्व उच्चतर मन के लिये कभी लुप्त नहीं हुआ।

२६. हे भारत, आध्यात्मिक ज्ञान और प्रकाश के देश! जगत् में अपने सच्चे कर्तव्य के प्रति सचेतन होओ और एकता तथा सामंजस्य का मार्ग दिखलाओ!

२७. भारत आधुनिक मानवजाति की सभी कठिनाइयों की प्रतीकात्मक मूर्ति बन गया है।

भारत उसके पुनरुत्थान का देश होगा—उच्चतर और सत्यतर जीवन के पुनरुत्थान का। भारत जगत् में अपना असली स्थान तभी लेगा जब वह पूर्ण रूप से भागवत जीवन का दूत बन जायेगा।

२८. आओ, हम सब मिलकर भारत की महानता के लिये कार्य करें।

२९. आध्यात्मिक दृष्टि से भारत जगत् में सबसे आगे है। उसकी भूमिका है आध्यात्मिकता का उदाहरण स्थापित करना।

यह बात इतनी स्पष्ट है कि यहां का एक भोला और अज्ञानी किसान भी अपने हृदय में यूरोप के बुद्धिजीवियों की अपेक्षा भगवान् के अधिक निकट है।

३०. वर्तमान अंधकार के बावजूद भारत का भविष्य ज्योतिर्मय है।

३१. केवल भारत ने ही राष्ट्रीय अमरता देनेवाले पीयूष की खोज की है। अमरता का रहस्य भारत को हजारों वर्ष पहले मिला था। इस थाती को संजोये, संभाले वह बैठा था ताकि जब संसार इसके योग्य हो जाये तो उसे भी भाग दे सके। अब उसका समय आ गया है। बड़े-बड़े देश अधोगति और मृत्यु के कगार पर जा पहुंचे हैं। यूरोपवासियों ने भौतिक जीवन को उसकी चरम सीमातक पहुंचा दिया है, भौतिक जीवन के विज्ञान को पूर्ण बना दिया गया है। लेकिन वे लोग ऐसी बीमारियों में फंसे हैं जिन्हें उनका विज्ञान ठीक नहीं कर सकता। इंग्लैंड ने अपनी व्यावहारिक बुद्धि से, फ्रांस ने अपने निर्मल, तर्कसंगत मस्तिष्क से; जर्मनी ने अपनी मीमांसायुक्त चिंतनशील प्रतिभा से, रूस ने अपनी भावनामय शक्ति से, अमरीका ने अपनी व्यापार-शक्ति से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव विकास के लिये जितना हो सकता था किया, लेकिन अब वे सब अपनी सीमातक पहुंच रहे हैं। उनमें किसी चीज की कमी है जिसे यूरोप पूरा नहीं कर सकता। ठीक ऐसे समय एशिया जागा है क्योंकि संसार को उसकी जरूरत है। एशिया संसार के मन की शांति का अभिभावक है, यूरोप की पैदा की गयी बीमारियों का चिकित्सक है।

पुत्र का प्रेम

१८३१ में चित्तूर डिस्ट्रिक्ट जज के दरवाजे पर बारह वर्ष के एक बालक ने दस्तक दी। वह एक गरीब किसान का बेटा था। बाप लगान न देने के कारण जेल में डाल दिया गया था। किसान ने कुछ सरकारी जमीन ली थी परन्तु फसल बिगड़ गयी और उन दिनों के कानून के अनुसार उसे जेल की हवा खानी पड़ी। बाप अभी जेल में ही था कि उसका जन्म दिन आ गया। मां रो-रो कर हलाकान हो गयी। इसीलिये रंगनाथ ने जज के घर पर दस्तक दी थी!

जज ने सारी बात सुन कर कहा, "मैं तुम्हारे बाप को जमानत के बिना नहीं छोड़ सकता। इस बात की जमानत देनी होगी कि वह मुकदमे के लिये वापिस आ जायगा।" बेटे ने कहा, "हमारे पास पैसा तो नहीं है लेकिन मैं स्वयं जमानत बनने को तैयार हूं, जब तक बाप लौट न आये मैं जेल में रहूंगा।"

जज का हृदय भर आया। उन्होंने एक कागज पर हस्ताक्षर कर दिये जिस पर किसान को जेल से छोड़ने का हुकुम था। रंगनाथ हरिण की तरह दौड़ता हुआ जेल जा पहुंचा और वहां से अपने बाप को साथ लिये बड़ी रात बीते घर पहुंचा।

यही लड़का बाद में चल कर रंगनाथ शास्त्री कहलाया जो पन्द्रह भाषाओं में पढ़ और बोल सकता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य आदर्श और गुणत्रय

'कारागृह और स्वाधीनता' शीर्षक लेख में कई निरपराध कैदियों के मानसिक भाव का वर्णन कर मैंने यही प्रतिपादित करने की चेष्टा की है कि आर्य-शिक्षा के प्रभाव से जेल में भी भारतवासियों की आंतरिक स्वाधीनता-रूप बहुमूल्य पैतृक संपत्ति नष्ट नहीं होती—बल्कि घोर अपराधियों में भी हजारों वर्षों से संचित वह आर्य-चरित्रगत देव-भाव भग्नावशिष्ट रूप में वर्तमान रहता है। आर्य-शिक्षा का मूल मंत्र है सात्त्विक भाव। जो सात्त्विक है वह विशुद्ध है। साधारणतया मनुष्यमात्र ही है अशुद्ध। रजोगुण का प्राबल्य होने से, तमोगुण के घोर अंधकार के छा जाने से यह अशुद्धि परिपुष्ट और वर्धित होती है। मन का मालिन्य है दो प्रकार का—जड़ता या अप्रवृत्तिजनित मालिन्य; यह तमोगुण से उत्पन्न होता है। दूसरा, उत्तेजना या कुप्रवृत्तिजनित मालिन्य; यह रजोगुण से उत्पन्न होता है। तमोगुण के लक्षण हैं अज्ञान-मोह, बुद्धि की स्थूलता, चिंतन की असंलग्नता, आलस्य, अतिनिद्रा, कर्म में आलस्यजनित विरक्ति, निराशा, विषाद, भय, एक शब्द में निश्चेष्टता के पोषक सभी भाव। जड़ता और अप्रवृत्ति अज्ञान के फल हैं, उत्तेजना तथा कुप्रवृत्ति भ्रांत ज्ञान से उत्पन्न होते हैं। परंतु तमोमालिन्य को हटाना हो तो वह रजोगुण के उद्रेक द्वारा ही हो सकता है। रजोगुण ही प्रवृत्ति का कारण है और प्रवृत्ति ही है निवृत्ति की पहली सीढ़ी। जो जड़ है वह निवृत्ति नहीं क्योंकि जड़भाव ज्ञानशून्य है और ज्ञान ही है निवृत्ति का मार्ग। कामनाशून्य होकर जो कर्म में प्रवृत्त होता है वही निवृत्त है—कर्मत्याग का नाम निवृत्ति नहीं। इसीलिये भारत की घोर तामसिक अवस्था को देख स्वामी विवेकानंद कहा करते थे, "रजोगुण चाहिये, देश में कर्मवीर चाहिये। प्रवृति का प्रचंड स्रोत बह जाने दो। परवाह नहीं यदि उससे पाप भी आ घुसे, वह तामसिक निश्चेष्टता की अपेक्षा हजारगुना अच्छा होगा।"

वास्तव में हम घोर तम में निमग्न हैं, फिर भी सत्त्वगुण की दुहाई देते हुए महासात्त्विक का स्वांग भर हम अपनी बड़ाई करते-फिरते हैं। बहुतों का यह मत है कि सात्त्विक होने के कारण ही हम राजसिक जातियों द्वारा पराजित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए, सात्त्विक होने के कारण ही हम इस प्रकार अवनत और अधःपतित हैं। ऐसी युक्तियां दे ईसाई धर्म से हिंदूधर्म की श्रेष्ठता प्रमाणित करने की चेष्टा की जाती है। ईसाई-जाति प्रत्यक्ष फलवादी है, इस जाति के लोग धर्म का ऐहिक फल दिखा धर्म की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करने की चेष्टा करते हैं; इनका कहना है कि ईसाई-जाति ही जगत् में प्रबल है, अतएव ईसाई धर्म ही है श्रेष्ठ धर्म। और हममें से कितनों का कहना है कि यह भ्रम है; ऐहिक फल को देखकर धर्म की श्रेष्ठता का निर्णय नहीं किया जा सकता, पारलौकिक फल को देखना चाहिये; हिंदूजाति अधिक धार्मिक है इसीलिये वह असुरप्रकृति बलवान् पाश्चात्य जाति के अधीन हुई। परंतु इस युक्ति में आर्य-ज्ञान विरोधी घोर भ्रम निहित है। सत्त्वगुण कभी भी अवनति का कारण नहीं हो सकता; यहांतक कि सत्त्वप्रधान जाति दासत्व की शृंखला में बंधकर नहीं रह सकती। ब्रह्मतेज ही है सत्त्वगुण का मुख्य फल, क्षात्र तेज है ब्रह्मतेज की भित्ति। आघात पाने पर शांत ब्रह्मतेज से क्षात्रतेज का स्फुलिंग निर्गत होता है, चारों दिशाएं धधक उठती हैं। जहां क्षात्रतेज नहीं वहां ब्रह्मतेज टिक नहीं सकता। देश में यदि एक भी सच्चा ब्राह्मण हो तो वह सौ क्षत्रियों की सृष्टि कर सकता है। देश की अवनति का कारण सत्त्वगुण का आतिशय्य नहीं, बल्कि रजोगुण का अभाव है, तमोगुण का प्राधान्य है। रजोगुण के अभाव से हमारा अंतर्निहित सत्य म्लान हो तम में विलीन हो गया। आलस्य, मोह, अज्ञान, अप्रवृत्ति, निराशा, विषाद, निश्चेष्टता के साथ-साथ देश की दुर्दशा और अवनति भी बढ़ने लगी। यह मेघ पहले हल्का और विरल था, फिर कालक्रम में वह इतना अधिक घना हो उठा, अज्ञान और अंधकार में डूब हम इतने निश्चेष्ट और महत्त्वाकांक्षा-रहित हो गये कि भगवत्प्रेरित महापुरुषों के उदय होने पर भी वह अंधकार पूर्णतः तिरोहित नहीं हुआ। तब सूर्य भगवान् ने रजोगुणजनित प्रवृत्ति द्वारा देश की रक्षा करने का संकल्प किया।

जाग्रत् रजःशक्ति के प्रचंड रूप से कार्यशीला होने पर तम पलायनोद्यत हो जाता है परंतु दूसरी ओर से स्वेच्छाचार, कुप्रवृत्ति और उद्दाम उच्छृंखलता प्रभृति आसुरी भावों के घुस आने की आशंका बनी रहती है। रजः-शक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि अपनी-अपनी प्रेरणा से उन्मत्तता की विशाल प्रवृत्ति के उदर-पूरण को ही लक्ष्य बना कार्य करे तो इस आशंका के लिये यथेष्ट कारण है। उच्छृंखल भाव से स्वपथगामी होने पर रजोगुण अधिक कालतक नहीं टिक सकता, उसमें क्लांति आ जाती है, तमस् आ जाता है, प्रचंड तूफान के बाद आकाश निर्मल और परिष्कृत न होकर मेघाच्छन्न और वायुस्पंदनरहित हो जाता है। राष्ट्रविप्लव के बाद फ्रांस की यही दशा हुई। उस राष्ट्रविप्लव में रजोगुण का प्रचंड प्रादुर्भाव हुआ था, विप्लव के अंत में तामसिकता का अल्पाधिक पुनरुत्थान, पुनः राष्ट्रविप्लव, पुनः क्लांति, शक्तिहीनता, नैतिक अवनति—यही है गत सौ वर्षों के फ्रांस का इतिहास। जितनी बार साम्य-मैत्री-स्वाधीनतारूपी आदर्शजनित सात्त्विक प्रेरणा फ्रांस के प्राणों में जगी, उतनी ही बार क्रमशः रजोगुण प्रबल हो, सत्त्वसेवा-विमुख आसुरी भाव में परिणत हो स्वप्रवृत्ति की पूर्ति के लिये सचेष्ट हुआ। फलतः तमोगुण के पुनः आविर्भाव से फ्रांस अपनी पूर्वसंचित महाशक्ति को खो म्रियमाण विषम अवस्था में, हरिश्चंद्र की नाईं न स्वर्ग में न मर्त्य में, स्थित है। ऐसे परिणाम से बचने का एकमात्र उपाय है प्रबल रजःशक्ति को सत्त्व की सेवा में नियुक्त करना। यदि सात्त्विक भाव जाग्रत् होकर रजःशक्ति का परिचालन करे तो तमोगुण के पुनः प्रादुर्भाव होने का भय नहीं रह जाता और उद्दाम शक्ति भी शृंखलित और नियंत्रित हो उच्च आदर्श के वश हो देश और जगत् का हित साधन करती है। सत्त्व की वृद्धि का साधन है धर्मभाव—स्वार्थ को डुबा परार्थ समस्त शक्ति अर्पण कर देना—भगवान् को आत्म-समर्पण कर समस्त जीवन को एक महान् और पवित्र यज्ञ में परिणत कर देना। गीता में कहा है कि सत्त्व और रजः दोनों मिलकर ही तम का नाश करते हैं, अकेला सत्त्व कभी तम को पराजित नहीं कर सकता। इसीलिये भगवान् ने संप्रति धर्म का पुनरुत्थान कर, तथा हमारे अंतर्निहित सत्त्व को जगा, रजःशक्ति को सारे देश में फैला दिया है। राममोहन राय प्रभृति धर्मोपदेशक महात्माओं ने सत्त्व को पुनरुद्दीपित कर नवयुग प्रवर्तित किया। उन्नीसवीं शताब्दी में धर्मजगत् में जितनी जागृति हुई है उतनी राजनीति और समाज में नहीं हुई। क्योंकि क्षेत्र प्रस्तुत नहीं था, अतएव प्रचुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिमाण में बीज बोने पर भी अंकुर दिखायी नहीं दिया। इसमें भी भारतवर्ष पर भगवान् की दया और प्रसन्नता ही दिखायी देती है। क्योंकि राजसिक भाव से उत्पन्न जो जागरण होता है वह कभी स्थायी या पूर्ण कल्याणप्रद नहीं हो सकता। इससे पहले जाति के अंतर में थोड़ा-बहुत ब्रह्मतेज का उद्दीपन होना आवश्यक है। इसीलिये इतने दिनोंतक रजःशक्ति की धारा रुकी रही। १९०५ ई. में रजःशक्ति का जो विकास हुआ वह है सात्त्विक भाव से पूर्ण। अतः इसमें जो उद्दाम भाव दिखायी पड़ा है उससे भी आशंका का कोई विशेष कारण नहीं, क्योंकि यह रजःसत्त्व का खेल है; इस खेल में जो कुछ उद्दाम या उच्छृंखल भाव है, वह शीघ्र ही नियमित और शृंखलित हो जायेगा। किसी बाह्य शक्ति द्वारा नहीं, बल्कि भीतर जो ब्रह्मतेज, जो सात्त्विक भाव जागरित हुआ है उसीसे यह वशीभूत और नियमित होगा। धर्मभाव के प्रचार से हम उस ब्रह्मतेज और सात्त्विक भाव का पोषण-भर कर सकते हैं।

ऊपर कहा जा चुका है कि परार्थ में समस्त शक्ति लगा देना सत्त्वोद्रेक का एक उपाय है। हमारे राजनीतिक जागरण में इस भाव का यथेष्ट प्रमाण पाया जाता है। परंतु इस भाव की रक्षा करना कठिन है। यह व्यक्ति के लिये जितना कठिन है, राष्ट्र के लिये उससे भी अधिक कठिन है। परार्थ में स्वार्थ अलक्षित रूप से घुस आता है, और यदि हमारी बुद्धि शुद्ध न हो तो हम ऐसे भ्रम में पड़ सकते हैं कि परार्थ की दुहाई दे और स्वार्थ को आश्रय बना, हम परहित, देशहित और मनुष्यजाति के हित को डुबा दें और फिर भी अपने भ्रम को समझ न सकें। भगवत्सेवा सत्त्वोद्रेक का दूसरा उपाय है। परंतु इस मार्ग में भी परिणाम विपरीत हो सकता है। भगवत्सान्निध्यरूपी आनंद मिलने पर हममें सात्त्विक निश्चेष्टता जनम सकती है, उस आनंद का स्वाद लेते-लेते हम दुःख-कातर देश के प्रति तथा मानवजाति की सेवा के प्रति उदासीन हो सकते हैं। यही है सात्त्विक भाव का बंधन। जिस प्रकार राजसिक अहंकार होता है उसी प्रकार सात्त्विक अहंकार भी। जैसे पाप मनुष्य को बंधन में डालता है वैसे ही पुण्य भी। सभी वासनाओं से शून्य हो, अहंकार त्याग भगवान् को आत्म-समर्पण किये बिना पूर्ण स्वाधीनता नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलती। इन दोनों अनिष्टों को त्यागने के लिये सबसे पहले आवश्यकता है विशुद्ध बुद्धि की। देहात्मक बुद्धि का वर्जन कर मानसिक स्वाधीनता का अर्जन करना ही है बुद्धि-शोधन की पूर्ववर्ती अवस्था। मन के स्वाधीन होनेपर वह जीव के अधीन हो जाता है और फिर मन को जीत कर और बुद्धि के आश्रय में जा मनुष्य स्वार्थ के पंजे से बहुत-कुछ छुटकारा पा जाता है। इसपर भी स्वार्थ हमें संपूर्णतः नहीं छोड़ता। अंतिम स्वार्थ है मुमुक्षुत्व, परदुःख भूलकर अपने ही आनंद में विभोर रहने की इच्छा। इसे भी त्यागना होगा। समस्त भूतों में नारायण की उपलब्धि कर उन्हीं सर्वभूतस्थ नारायण की सेवा ही है इसकी दवा। यही है सत्त्वगुण की पराकाष्ठा। इससे भी उच्चतर अवस्था है और वह है सत्त्वगुण का भी अतिक्रमण कर गुणातीत हो पूर्णतः भगवान् का आश्रय ग्रहण करना। गुणातीत अवस्था गीता में ऐसे वर्णित है :

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टाऽनुपश्यति ।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ।।
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान् ।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तो मृतमश्नुते ।।
प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव ।
न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति ।।
उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते ।
गुणाः वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते ।।
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः ।।
मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ।।
मां च यो व्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ।
स गुणान्समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते ।।

"जब जीव साक्षी हो गुणत्रय को, अर्थात् भगवान् की त्रैगुण्यमयी शक्ति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही एकमात्र कर्ता के रूप में देखता है तथा इस गुणत्रय के भी परे शक्ति के प्रेरक ईश्वर को जान पाता है तब वह भागवत साधर्म्य लाभ करता है। तब देहस्थ जीव स्थूल और सूक्ष्म दोनों देहों से संभूत गुणत्रय का अतिक्रमण कर जन्म-मृत्यु-जरा-दुःख से विमुक्त हो अमरत्व का भोग करता है। सत्त्वजनित ज्ञान, रजोजनित प्रवृत्ति या तमोजनित निद्रा, निश्चेष्टता और भ्रमरूपी मोह के होने पर वह क्षुब्ध नहीं होता, गुणत्रय के आगमन और निर्गमन में समान भाव रखकर उदासीन की भांति वह स्थिर रहता है, गुणग्राम उसे विचलित नहीं कर पाता, इसे गुणों की स्वधर्मजात वृत्ति मान, वह दृढ़ रहता है। जिसके लिये सुख और दुःख समान हैं, प्रिय और अप्रिय समान हैं, निन्दा और स्तुति समान हैं, सोना और मिट्टी दोनों ही पत्थर के समान हैं, जो धीर-स्थिर, अपने ही अंदर अटल है, जिसके लिये मान और अपमान दोनों एक ही बात हैं, जिसे मित्रपक्ष और शत्रुपक्ष दोनों ही समान भाव से प्रिय हैं, जो स्वयं प्रेरित हो किसी कार्य का आरंभ नहीं करता, सारे कर्म भगवान् को अर्पण कर उन्हींकी प्रेरणा से करता है, उसे ही कहते हैं गुणातीत। जो निर्दोष भक्तियोग द्वारा मेरी सेवा करता है वही इन तीनों गुणों को अतिक्रमण कर ब्रह्मप्राप्ति के उपयुक्त होता है।''

यह गुणातीत अवस्था सबके लिये साध्य न होने पर भी इसकी पूर्ववर्ती अवस्था सत्त्वगुणप्रधान पुरुष के लिये असंभव नहीं। सात्त्विक अहंकार का त्याग कर जगत् के सभी कार्यों में भगवान् की त्रैगुण्यमयी शक्ति की लीला को देखना है इसका सबसे पहला उपक्रम। यह बात समझ सात्त्विक कर्ता कर्तृत्वाभिमान त्याग, भगवान् को संपूर्ण आत्मसमर्पित हो कर्म करता है।

गुणत्रय और गुणातीत्य के संबंध में मैंने जो कुछ कहा, वह है गीता की मूल बात। परंतु यह शिक्षा साधारणतया अंगीकृत नहीं हुई, अभीतक जिसे हम आर्य-शिक्षा के नाम से संबोधित करते आये हैं, वह प्रायः सात्त्विक गुण का अनुशीलन है। रजोगुण का आदर तो इस देश में क्षत्रियजाति के लोप होने के साथ-ही-साथ लुप्त हो गया। यद्यपि राष्ट्रीय जीवन में रजः शक्ति का भी अत्यंत प्रयोजन है। इसीलिये आजकल गीता की ओर लोगों का मन आकृष्ट हो रहा है। गीता की शिक्षा ने पुरातन आर्यशिक्षा को आधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाकर भी उसका अतिक्रमण किया। गीतोक्त धर्म रजोगुण से भय नहीं खाता, उसमें रजःशक्ति को सत्त्व की सेवा में नियुक्त करने का पथ निर्देशित है, प्रवृत्तिमार्ग में मुक्ति का उपाय प्रदर्शित है। इस धर्म का अनुशीलन करने के लिये राष्ट्र का मन किस प्रकार तैयार हो रहा है इस बात को पहले-पहल मैंने जेल में ही हृदयंगम किया। अभीतक स्रोत निर्मल नहीं हुआ है, अभी भी वह कलुषित और पंकिल है, किंतु इस स्रोत का अतिरिक्त वेग जब कुछ प्रशमित होगा तब उसके अंदर छिपी विशुद्ध शक्ति का निर्दोष कार्य होगा।

जो मेरे साथ बंदी थे और एक ही अभियोग में अभियुक्त थे, उनमें से बहुत-से निर्दोष समझ कर छोड़ दिये गये हैं, बाकी लोगों को यह कहकर सजा दी गयी है कि वे षड्यंत्र में लिप्त थे। मानव समाज में हत्या से बढ़कर और कोई अपराध नहीं हो सकता। राष्ट्रीय स्वार्थ से प्रेरित हो जो हत्या करता है, उसका व्यक्तिगत चरित्र चाहे कलुषित न भी हो, किंतु सामाजिक हिसाब से, अपराध का गुरुत्व कम नहीं हो जाता। यह भी स्वीकार करना होगा कि अंतरात्मा पर हत्या की छाया पड़ने से मन पर मानों रक्त का दाग बैठ जाता है, उसमें क्रूरता का संचार होता है। क्रूरता बर्बरोचित गुण है; मनुष्य उन्नति के क्रमविकास में जिन गुणों से धीरे-धीरे दूर हो रहा है, उनमें क्रूरता प्रधान है। इसका यदि पूर्ण रूप से त्याग कर दिया जाये तो मानवजाति की उन्नति के मार्ग में से एक विघ्नकारी कंटक समूल नष्ट हो जायेगा। अभियुक्तों का दोष मान लेने पर यही समझना होगा कि यह रजःशक्ति की क्षणिक उद्दाम उच्छृंखलता-भर है। उनमें एक ऐसी सात्त्विक शक्ति निहित है कि इस क्षणिक उच्छृंखलता द्वारा देश का स्थायी अमंगल होने की कोई भी आशंका नहीं।

अंतर की जिस स्वाधीनता की बात मैं ऊपर कह आया हूं वह स्वाधीनता मेरे साथियों का स्वभावसिद्ध गुण है। जिन दिनों हम सब एक संग एक बड़े-से दालान में रखे गये थे, उन दिनों मैंने उनके आचरण और मनोभाव को विशेष मनोयोगपूर्वक लक्ष्य किया। केवल दो व्यक्तियों को छोड़ अन्य किसीके भी मुंह या जबान पर भय की छाया तक देखने को नहीं मिली। प्रायः सभी तरुण और वयस्क थे, बहुत-से अल्पवयस्क बालक थे; जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराध में वे पकड़े गये थे वह प्रमाणित होने पर उसका दंड इतना भीषण है कि कल्पना मात्र से दृढ़मति पुरुष भी विचलित हो जाये। इसके अतिरिक्त, इस मुकदमें से रिहाई पाने की आशा भी ये नहीं रखते थे। विशेषतः, मजिस्ट्रेट की अदालत में गवाहों और लिखित गवाहियों का जैसा विस्तृत आयोजन होने लगा उसे देखकर कानून से अनभिज्ञ व्यक्ति के मन में भी सहज ही यह धारणा उपजने लगी कि निर्दोष के लिये भी इस फंदे से निकलने का उपाय नहीं। फिर भी उनके चेहरे पर भय या विषाद के बदले थी केवल प्रफुल्लता, सरल हास्य, अपनी विपत्ति को भूल मुंह में थी धर्म और देश की ही बात। हमारे वार्ड में, हरेक बंदी के पास दो-चार किताबें होने के कारण एक छोटी-सी लाइब्रेरी बन गयी थी। इस लाइब्रेरी की अधिकांश किताबें थीं धर्मसंबंधी—गीता, उपनिषद्, विवेकानंद-पुस्तकावली, रामकृष्ण-कथामृत और जीवनचरित्र, पुराण, स्तोत्रमाला, ब्रह्म-संगीत इत्यादि। अन्य पुस्तकों में थीं बंकिमग्रंथावली, स्वदेशी गानसंबंधी बहुत-सी छोटी-छोटी पुस्तिकाएं, यूरोपीय दर्शन, इतिहास और साहित्य की थोड़ी-बहुत पुस्तकें। प्रातःकाल कोई साधना करने बैठता, कोई पुस्तकें पढ़ता तो कोई धीरे-धीरे बातें करता। प्रातःकाल की इस शांतिमयी नीरवता में कभी-कभी हंसी की लहरें भी उठतीं। जब कभी कचहरी का दिन नहीं होता तब कुछ लोग सोते, कुछ खेलते—जब जो खेल सामने आ जाये, किसी खास खेल के लिये किसी में कोई आग्रह नहीं। किसी दिन एक वृत्त में बैठ कोई शांत खेल होता तो किसी दिन दौड़-धूप या कूद-फांद; कुछ दिन फुटबॉल ही चला, यह फुटबॉल निःसंदेह किसी अपूर्व उपकरण का बना होता था। कुछ दिन आंखमिचौनी चली। कभी-कभी अलग-अलग दल बना कर एक ओर जुजुत्सु की शिक्षा होती तो दूसरी ओर ऊंची कूद और लंबी कूद तथा एक ओर ड्राफ्ट या चौपड़। दो-चार गंभीर प्रौढ़ व्यक्तियों को छोड़ प्रायः सभी बालकों के अनुरोध से इन खेलों में शरीक होते। मैंने देखा कि इनमें जो बड़े-बूढ़े थे, उनका स्वभाव भी बालकों जैसा ही था। शाम को गाने की मजलिस जुटती। गानविद्या में निपुण उल्लास, शचींद्र और हेमदास के चारों ओर बैठ हम सभी गाना सुनते। स्वदेशी या धर्म के गानों के अतिरिक्त और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी तरह का गाना नहीं होता था। किसी-किसी दिन केवल आमोद करने की इच्छा से उल्लासकर हंसी के गाने, अभिनय, दूरागतशब्दानुकरण (Ventriloquism), नकल उतारने या गंजेड़ियों की गप द्वारा शाम का समय बिताता। . . . मुकदमें में कोई भी जी नहीं लगाता था, सभी धर्म या आनंद में दिन बिताते। यह निश्चिंत भाव कठिन कुक्रियाभ्यस्त हृदय के लिये असंभव है; इनके अंदर काठिन्य, क्रूरता, कुक्रियाशक्ति, कुटिलता लेशमात्र भी नहीं थी। क्या हंसी, क्या बात-चीत, क्या खेल-कूद, इनका सब कुछ था आनंदमय, पापहीन और प्रेममय।

इस मानसिक स्वाधीनता का फल शीघ्र ही विकसित होने लगा। इस प्रकार के क्षेत्र में ही धर्म-बीज बोने से सर्वांगसुंदर फल संभव है। ईसामसीह ने कुछ बालकों को दिखाते हुए अपने शिष्यों से कहा था, "जो इन बालकों की तरह हैं वे ही ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं।" ज्ञान और आनंद हैं सत्वगुण के लक्षण। जो दुःख को दुःख नहीं समझते, जो सभी अवस्थाओं में आनंदित और प्रफुल्लित रहते हैं, वे ही हैं योग के अधिकारी। जेल में राजसिक भाव को प्रश्रय नहीं मिलता, निर्जन कारागार में प्रवृत्ति का परिपोषक कुछ भी नहीं होता। ऐसी अवस्था में असुर-मन चिर-अभ्यस्त रजःशक्ति की खुराक के अभाव में आहत व्याघ्र की नाईं स्वयं अपना ही नाश करने लगता है। पाश्चात्य कविगण जिसे eating one's own heart (तीव्र संताप से जी को जलाना) कहते हैं, ठीक वही अवस्था होती है। भारतवासी का मन इस प्रकार की निर्जनता में, इस बाह्य कष्ट की अवस्था में भी चिरंतन आकर्षण से आकृष्ट हो भगवान् की ओर दौड़ पड़ता है। हमारी भी यही अवस्था हुई। न मालूम कहां से एक स्रोत आ सभी को बहा ले गया। जिसने कभी भगवान् का नाम नहीं लिया था वह भी साधना करना सीख गया। उस परम दयालु की दया का अनुभव कर आनंदमग्न हो उठा। अनेक दिनों के अभ्यास से योगियों की जो अवस्था होती है, वह इन बालकों की दो-चार महीने की साधना से ही हो गयी। रामकृष्ण परमहंस ने एक बार कहा था, "अभी तुम लोग क्या देखते हो—यह तो कुछ भी नहीं, देश में एक ऐसा स्रोत आ रहा है जिसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाव से अल्पवयस्क बालक भी तीन दिन साधना करके सिद्धि पायेंगे।" इन बालकों को देखकर उनकी भविष्यवाणी की सफलता में जरा भी संदेह नहीं रह जाता। ये मानों उसी प्रत्याशित धर्म-प्रवाह के मूर्तिमान पूर्व-परिचय हों। इस सात्त्विक भाव की तरंग कठघरे तक पहुंच, चार-पांच को छोड़ बाकी सबके हृदय को महानंद से परिप्लावित कर देती थी। जिसने एक बार भी इसका आस्वादन किया है वह इसे कभी भूल नहीं सकता न कभी किसी दूसरे आनंद को इस आनंद के समान ही स्वीकार कर सकता है। यही सात्त्विक भाव है देश की उन्नति की आशा। भ्रातृभाव, आत्मज्ञान और भगवत्प्रेम जिस तरह सहज ही भारतवासी के मन पर अधिकार कर कार्य में प्रकट होते हैं उसी सहज भाव से और किसी भी राष्ट्र में उनका प्रकट होना संभव नहीं। इसके लिये चाहिये तमोवर्जन, रजोदमन, सत्त्वप्रकाश। भगवान् की गूढ़ अभिसंधि से इसीकी तैयारी हो रही है भारतवर्ष में।

————

भागवत प्रेम की अभिव्यक्ति को जल्दी लाने का सबसे अच्छा तरीका है 'सत्य' की विजय के लिये सहयोग देना।

*

केवल सत्य ही जगत् को भागवत प्रेम को ग्रहण करने और अभिव्यक्त करने की शक्ति प्रदान कर सकता है।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवजन्म

गीता में अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा—"जो योग मार्ग में प्रवेश कर अंततक पहुंचते-न-पहुंचते पतित और योगभ्रष्ट हो जाते हैं, उनकी क्या गति होती है? वे क्या इहलौकिक और पारलौकिक दोनों फलों से वंचित हो वायुखंडित मेघ की तरह विनष्ट हो जाते हैं?" उत्तर में श्रीकृष्ण ने कहा—"इहलोक या परलोक में वैसे व्यक्तियों का विनाश असंभव है। कल्याणकृत व्यक्तियों की कभी दुर्गति नहीं होती। पुण्यलोकों में उनकी गति होती है, वहां बहुत दिनोंतक निवास कर शुद्ध श्रीमान् पुरुषों के घर में या योगयुक्त महापुरुषों के कुल में दुर्लभ जन्म पाते हैं, उस जन्म में पूर्वजन्मप्राप्त योगलिप्सा से चालित हो सिद्धि के लिये और अधिक प्रयास करते हैं, और अंत में अनेक जन्मों के अभ्यास से पापमुक्त हो परम गति प्राप्त करते हैं।" जो पूर्वजन्मवाद चिरकाल आर्य-धर्म के योगलब्ध ज्ञान का एक अंगविशेष रहा है उसकी प्रतिष्ठा पाश्चात्य विद्या के प्रभाव से शिक्षित संप्रदाय में नष्टप्राय हो गयी थी, श्रीरामकृष्ण-लीला के बाद से, वेदांत शिक्षा के प्रचार और गीता के अध्ययन से वही सत्य पुनः प्रतिष्ठित हो रहा है। जैसे स्थूल जगत् में heredity (वंशानुक्रम) प्रधान सत्य है, वैसे ही सूक्ष्म जगत् में पूर्वजन्मवाद प्रधान सत्य है। श्रीकृष्ण की उक्ति में ये दोनों ही सत्य निहित हैं। योगभ्रष्ट पुरुष अपने पूर्वजन्मार्जित ज्ञान के संस्कार के साथ जन्म लेते हैं, उसी संस्कार द्वारा, वायुचालित तरणी की तरह, योग पथ पर चालित होते हैं। परंतु कर्मफल की प्राप्ति के योग्य शरीर उत्पन्न करने के लिये उपयुक्त कुल में जनमना आवश्यक है। उत्कृष्ट heredity (वंशानुक्रम) सुयोग्य शरीर उत्पन्न करती है। शुद्ध श्रीमान् पुरुषों के घर में जन्म होने से शुद्ध सबल शरीर उत्पन्न करना संभव होता है, योगीकुल में जन्म लेने से उत्कृष्ट मन और प्राण गठित होते हैं तथा वैसी ही शिक्षा और मानसिक गति प्राप्त होती है।

कुछ वर्षों से भारतवर्ष में यह दिखायी दे रहा है मानों पुरानी तमोभिभूत जाति के अंदर एक नयी जाति सृष्ट हो रही है। भारत माता की पुरातन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतति धर्मग्लानि और अधर्म के अंदर जन्म ले और तदनुसार शिक्षा प्राप्त कर अल्पायु, क्षुद्राशय, स्वार्थपरायण और संकीर्ण-हृदय हो गयी थी। उनमें से बहुत-से तेजस्वी महात्माओं ने शरीर धारण कर इस विषम विपत्तिकाल में जाति की रक्षा की थी। किंतु अपनी शक्ति और प्रतिभा के उपयुक्त कर्म न कर वे केवल राष्ट्र के भावी माहात्म्य और विशाल कर्म का क्षेत्र निर्माण कर गये हैं। उन्हींके पुण्यबल से नव उषा की किरणमाला चारों ओर उद्‌भासित हो रही है। भारत-जननी की नूतन संतति माता-पिता के गुण प्राप्त न कर, साहसी, तेजस्वी, उच्चाशय, उदार, स्वार्थत्यागी, परार्थ और देशहित साधन में उत्साही और उच्चाकांक्षी हो रही है। इसीलिये आजकल युवकगण माता-पिता के वश में न हो अपने स्वतंत्र पथ के पथिक बन रहे हैं, वृद्ध और तरुण में मतभेद और कार्य में विरोध हो रहा है। वृद्ध लोग इन देवांशसंभूत तरुण सत्ययुग-प्रवर्तकों को स्वार्थ और संकीर्णता की सीमा में आबद्ध रखना चाहते हैं, अनजान में कलि की सहायता कर रहे हैं। युवकगण हैं महाशक्तिसृष्ट अग्निस्फुलिंग, पुरातन को तोड़फोड़ नवीन को गढ़ने में उद्यत, पितृभक्ति और आज्ञाकारिता की रक्षा करने में अक्षम। भगवान् ही कर सकते हैं इस अनर्थ का उपशमन। किंतु महाशक्ति की इच्छा विफल नहीं हो सकती, यह नवीन संतति जो कुछ करने के लिये आयी है, उसे पूरा किये बिना नहीं जायेगी। इस नवीन में भी पुरातन का प्रभाव है। अपकृष्ट heredity (वंशानुक्रम) के दोष से, आसुरिक शिक्षा के दोष से बहुतेरे कुलांगारों ने भी जन्म लिया है; जिन्हें नवयुग का प्रवर्तन करने का आदेश मिला है वे भी अंतर्निहित तेज और शक्ति विकसित नहीं कर पा रहे हैं। नवीन लोगों में सत्ययुग के प्राकट्य का एक अपूर्व लक्षण दिखायी दे रहा है, उनकी धर्म में गति है और बहुतों के हृदय में है योगलिप्सा और अर्ध-विकसित योगशक्ति।

अलीपुर-बम-केस के अभियुक्त अशोक नंदी पीछे बतलायी गयी श्रेणी के थे। जो उन्हें जानते थे उनमें से कोई भी यह विश्वास नहीं कर सकता था कि वे किसी भी षड्यंत्र में लिप्त थे। उन्हें छोटे-से अविश्वसनीय प्रमाण पर ही दंड दिया गया था। वे अन्य युवकों की तरह देशसेवा की प्रबल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकांक्षा से अभिभूत नहीं थे। बुद्धि में, चरित्र में, प्राण में वे पूर्णरूपेण योगी और भक्त थे, संसारी के गुण उनमें नहीं थे। उनके पितामह एक सिद्ध तांत्रिक योगी थे, उनके पिता भी थे योगप्राप्त शक्तिसंपन्न विशिष्ट पुरुष। गीता में जो योगीकुल में जन्म लेना मनुष्य के लिये अति दुर्लभ कहा गया है उसीका सौभाग्य उन्हें प्राप्त हुआ था। छोटी उम्र में उनकी अंतर्निहित योगशक्ति के लक्षण कभी-कभी प्रकट होते थे। पकड़े जाने से बहुत पहले वे जान गये थे कि यौवन-काल में उनकी मृत्यु निर्दिष्ट है, अतएव विद्योपार्जन और सांसारिक जीवन की आरंभिक तैयारियों में उनका मन नहीं लगा, फिर भी पिता के परामर्श से, असफलता के पूर्व ज्ञान की उपेक्षा कर, कर्तव्य कर्म का पालन करते थे और योगमार्ग का भी अनुसरण करते थे। ऐसे समय वे अकस्मात् पकड़ लिये गये। उस कर्मफलप्राप्त विपत्ति से विचलित न हो अशोक जेल में अपनी सारी शक्ति योगाभ्यास में प्रयुक्त करने लगे। इस मुकदमे के आसामियों में से बहुतों ने इस पथ का अवलंबन किया था, उनमें वे अग्रगण्य न होने पर भी अन्यतम थे। वे भक्ति और प्रेम में किसीसे भी कम नहीं थे, उनका उदार चरित्र, गंभीर भक्ति और प्रेमपूर्ण हृदय सबको मोह लेता था। गोसाईं की हत्या के समय वे अस्पताल में रुग्णावस्था में पड़े थे। पूर्ण स्वस्थ होने से पहले ही निर्जन कारावास में रखे जाने के कारण वह बार-बार ज्वर से पीड़ित होने लगे। उसी ज्वर की अवस्था में उन्हें खुले कमरे में शीत काल की रातें बितानी पड़तीं। इस तरह उन्हें क्षय रोग हो गया और उसी अवस्था में, जिस समय प्राण-रक्षा की कोई आशा नहीं थी, उन्हें विषम दंड देकर फिर से उसी मृत्यु-गृह में बंद कर दिया गया। बैरिस्टर चित्तरंजन दास की प्रार्थना पर उन्हें अस्पताल ले जाने की व्यवस्था की गयी, किंतु जमानत पर नहीं छोड़ा गया। अंत में छोटे लाट की सहृदयता के कारण उन्हें अपने घर में, अपने आत्मीय-स्वजनों की सेवा प्राप्त कर मरने की अनुमति प्राप्त हुई। अपील के द्वारा मुक्त होने से पहले ही भगवान् ने उन्हें इस देह-कारागार से मुक्त कर दिया। अंतिम समय में अशोक की योग-शक्ति में विलक्षण वृद्धि हो गयी थी, मृत्यु के दिन विष्णु-शक्ति से अभिभूत हो सबको भगवान् का

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्तिदायक नाम और उपदेश वितरण कर, नामोच्चारण करते-करते उन्होंने देह-त्याग किया। पूर्वजन्मार्जित दुःखफल का क्षय करने के लिये अशोक नंदी का जन्म हुआ था, इसीलिये यह अनर्थक कष्ट और अकाल मृत्यु घटी। सत्ययुग का प्रवर्तन करने के लिये जिस शक्ति की आवश्यकता है वह शक्ति उनके शरीर में अवतीर्ण नहीं हुई थी परंतु वे स्वाभाविक योगशक्ति के प्राकट्य का उज्ज्वल दृष्टांत दिखा गये हैं। कर्म की गति ऐसी ही होती है। पुण्यवान् लोग पापफल का क्षय करने के लिये थोड़े समयतक पृथ्वी पर विचरण करते हैं, फिर पापमुक्त होकर, दूषित देह का त्याग कर और दूसरा शरीर धारण कर अंतर्निहित शक्ति को प्रकट करने व जीवों का हितसाधन करने के लिये आते हैं।

———

सत्य एक कठिन और श्रमसाध्य विजय है। यह विजय प्राप्त कर सकने के लिये तुम्हें सच्चा योद्धा बनना चाहिये . . .।

*

*समझौते पर आओ। अच्छा काम करने का **यही एकमात्र** तरीका है।*

*

जीवन का एक उद्देश्य है। यह उद्देश्य है भगवान् को पाना और उनकी सेवा करना।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतिम वक्तव्य

'कारा काहिनी' का अंतिम हिस्सा मार्च १९१० में 'सुप्रभात' में छपा था, तबतक श्रीअरविंद ने कलकत्ता छोड़कर चंदननगर में शरण ले ली थी। ब्रिटिश सरकार के फिर से पीछे पड़ने पर पांडिचेरी आने से पहले वे चालीस दिनों तक गुप्त रूप से रहे, और 'कारा काहिनी' अधूरी रह गयी। लेकिन नलिनीकांत गुप्त के लेख,—जो श्रीअरविंद के साथ-साथ नजरबंद रहे—पुलिस तथा अदालत के बीच के संबंध हमें कैदियों के जीवन की विभिन्न अवस्थाओं के बारे में बतलाते हैं।

श्रीअरविंद का लेख उस स्थान पर आकर समाप्त हो जाता है जहां अभियुक्तों को एक बड़े हॉल में स्थानांतरित कर दिया गया था। उन्हें बंदी बने डेढ़ महीना बीत गया। जून के आखिरी दिन थे। तबतक श्रीअरविंद तथा हेमचंद्र दास—जिन्हें विशेष रूप से खतरनाक समझा जाता था—को एकदम से अलग रखा गया था जब कि बाकी कैदियों में से अधिकतर एक-एक कोठरी में तीन-तीन रखे गये थे; यद्यपि उन्हें एकदम से एकांतवास की कठिन परिस्थितियों से नहीं गुजरना पड़ा फिर भी स्थानाभाव तथा स्वच्छता इत्यादि की कुव्यवस्था उनके लिये दुःख-दर्द तथा अपमान की निरंतर उत्स थी। अतः इस परिवर्तन को सबने हंसी-खुशी के माहौल के साथ स्वीकारा। केवल श्रीअरविंद औरों के उत्साह में हिस्सा नहीं लेते थे, उन्होंने निर्जनता को सराहना शुरू कर दिया था और योगाभ्यास के लिये उसे अनिवार्य मानते थे।

यह नया स्थान एक बड़ा कमरा था जो एक बड़े बरामदे में खुलता था और उसके सामने था एक बड़ा मैदान जहां कैदी पानी की कमी के जंजाल में फंसे बिना अपने नित्य कर्मों से निवृत्त हो सकते थे। इससे भी अधिक अच्छा यह हुआ कि सब एक साथ जुट गये और अब वे बेरोक-टोक एक-दूसरे से मिलते, फुर्सत से बातचीत करते या मिलकर काम-काज करते थे। यह बड़ा कमरा आधी ऊंचाई की तीन विभाजक दीवारों से बंटा था और अपने-अपने सादृश्य के अनुसार तीन दल बन गये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलिनीकांत गुप्त लिखते हैं, "श्रीअरविंद इन 'कमरों' में से एक कमरे के एक कोने में ही रहा करते थे। पहली दफा उन्होंने अपने-आपको हमारे बीच पाया और जल्दी ही, उनके भाई बारीन की तरह वे सभी, जिन्होंने आध्यात्मिक जीवन के प्रति आकर्षण का अनुभव किया था, श्रीअरविंद के चारों ओर आ जुटे। बुद्धिजीवियों ने बीच के कमरे में अपना आसन जमाया जिसकी बागडोर संभाली उपेंद्र ने, रही बात तीसरे की तो वहां था नास्तिकों और तर्कबुद्धिवादियों का राज, हेमचंद्र दास थे इसके कर्ता-धर्ता।

". . . . हम मन बहलाने के लिये विभिन्न प्रकार के खेल खेला करते थे: प्रहसन, मूकाभिनय, पाठ, गीत। हमारी खुशी पर कोई पानी नहीं फेर सकता था। इस सबके बीच श्रीअरविंद अपने कोने में ध्यान और समाधि में निरत रहते लेकिन बीच-बीच में हमारे इन मनबहलाव के खेलों में हिस्सा लेने से भी नहीं हिचकिचाते . . ."

जल्दी ही कैदियों को किताबों की स्वीकृति मिल गयी और इस तरह उन्होंने एक छोटा-मोटा पुस्तकालय खड़ा कर लिया जिसमें उपनिषद्, पुराण, भगवद्-गीता, रामकृष्ण के वचन तथा विवेकानंद साहित्य के साथ-साथ बंकिमचंद्र चटर्जी के उपन्यास, शेक्सपीयर के नाटक, बेकन के लेख इत्यादि भी सम्मिलित थे। और किताबें न मिल पाने के कारण लोग इन्हीं चीजों को पढ़ते और दुबारा-तिबारा पढ़ते। इस बीच उनके अंदर एक तरह की विह्वलता पनपने लगी थी। क्या होगा? क्या उन्हें अपना सारा जीवन जेल में ही बिताना होगा? और अगर उनमें से कइयों को फांसी हो गयी तो?

ऐसे समय बारीन ने भागने की बात सोची। अपने कुछ साथियों को साथ ले उसने अपनी योजना बनानी शुरू की, और इसके लिये चंदननगर के क्रांतिकारियों के साथ संपर्क साधे। विचार यह था कि एक शाम को इसे क्रियान्वित किया जाये जब कुछ एक उदासीन से सिपाहियों की निगरानी में सभी को बाहर खुले मैदान में आने-जाने की छूट मिलती थी। उस समय अपने साथियों द्वारा बाहर से अंदर फेंकी गयी सीढ़ियों तथा रस्सियों के सहारे चढ़कर हाथ में रिवाल्वर लिये वे जेल की सरहद को पार करने की योजना बना रहे थे। और बाहर तैयार खड़ी घोड़ागाड़ियां उन्हें तीर की तेजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से गंगा के तट पर पहुंचा देतीं जहां से नाव लेकर वे सब सुंदर वन की दिशा में चल पड़ते। विचार यह था कि हिंस्र पशुओं से भरे हुए इस वन में पुलिस छान-बीन करने का जोखिम न उठायेगी !

लेकिन सब इस रोमानी योजना से सहमत न थे, श्रीअरविंद ने तो इस योजना में किसी भी तरह से शरीक होने से साफ इंकार कर दिया। उन्होंने कहा, "रही मेरी बात, मैं तो न्यायालय में उपस्थित होऊंगा।"

दूसरी तरफ, कानाईलाल दत्त और सत्येन बोस से प्रेरित हो, कैदियों का एक और दल एकदम से दूसरी ही तरह की योजना बनाने में जुटा था। वह थी गद्दार नरेंद्रनाथ गोस्वामी को खतम करने की योजना। शायद नरेंद्रनाथ यह भांप गया था कि उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा जा रहा है क्योंकि जहां कई एकदम गुप्त रूप से साजिश कर रहे थे वहां दूसरे अपने भावों को छिपा नहीं रहे थे, उन्होंने तो उसे धमकी तक दे दी थी। और फिर पुलिस को गोस्वामी की खास जरूरत थी और वह उसे उन सहकैदियों की दया पर नहीं छोड़ सकती थी जो उसे चुपचाप खत्म कर देने में समर्थ थे। और फिर सुरक्षा की दृष्टि से नरेंद्रनाथ को यूरोपियन कैदियों के लिये आरक्षित विभाग में स्थानांतरित कर दिया गया।

इस बीच, सत्येन बोस को,—जो प्रायः दमे से पीड़ित रहते थे—जेल के अस्पताल में भरती कर दिया गया। उधर कानाईलाल दत्त को अचानक कोई अजीब बीमारी लग गयी और वे भी अस्पताल में आ गये। अब सत्येन ने गोस्वामी के साथ संपर्क साधा। अपनी बीमारी के बारे में शिकायत करते हुए उसने गोस्वामी से कहा कि बीमारी के कारण जेल-जीवन उसके लिये असहनीय हो उठा है, अगर गोस्वामी उसे मुक्त करवाने का वचन दे सके तो वह उसे कई गुप्त जानकारियां दे देगा। गोस्वामी को मरीज से मिलने-जुलने की स्वीकृति मिल गयी और पहली दो मुलाकातों में ही मरीज ने उसे अपने विश्वास में ले लिया और इस तरह गोस्वामी ने कई बहुमूल्य जानकारियां मिलने की आशा से तीसरी बार मिलना स्वीकार कर लिया। इस भांति ३१ अगस्त को वह हमेशा की तरह अपने अंग्रेज अंगरक्षक के साथ अस्पताल में पहुंचा। सत्येन दूसरी मंजिल पर दूसरे मरीजों तथा अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगरक्षक को अलग ले गये। कानाईलाल ने भी वहांतक पहुंचने में देर नहीं लगायी। कुछ क्षणों की बातचीत के बाद अचानक दोनों कैदियों ने रिवाल्वर निकालकर गोस्वामी को मार डालने की चेष्टा की। गोस्वामी तथा उसके अंगरक्षक दोनों ही आहत हुए लेकिन फिर भी दोनों कुछ दूरतक भागने में सफल हुए, इधर सत्येन और कानाईलाल जेल की सीढ़ियों और गैलरियों से गोलियां बरसाते हुए किसी के बीच में पड़ने की कोशिश को विफल करते हुए उनके पीछे-पीछे भागे। अंत में एक गोली गोस्वामी की रीढ़ की हड्डी में जा लगी, वह नाली में लुढ़क गया, इतने में किसी अंगरेज कैदी ने आक्रामकों को अपने नियंत्रण में कर लिया।

"तब, नलिनी कांत गुप्त लिखते हैं, खतरे की घंटी भीषण आवाज में झनझना उठी जिसे विकट संकटकाल में ही बजाया जाता था। उसी समय पागलों की भांति भागता हुआ एक कैदी यह चिल्लाने लगा, "नरेन गोसाईं ठंडा हो गया . . ." तुरंत संगीन लिये पुलिस की एक टुकड़ी तेजी से उस आंगन में आ घुसी जहां हम रोज की अपनी सैर कर रहे थे। पुलिस ने हमें भेड़ के झुंड की तरह अपने आवास में धकेल दिया मानों हम बलि के पशु हों। बिना किसी सद्भाव के हमारी सबकी तलाशी ली गयी, फिर सबको एक पंक्ति में खड़ा करके आदेश दिया गया : "सबको हवालात में बंद कर दिया जाये !"

. . . "जेल के अधिकारीगण यह समझ गये थे कि ऊपर से दीखनेवाली मधुरता के नीचे हम सचमुच किस धातु के बने थे। यह हमारे "स्वर्णिम युग" का अंत था। जिन सुविधाओं और लाभों का हम मजा लूटते थे उन सबपर पूर्ण-विराम लग गया। उसके बाद तो बस कचहरी ही वह एकमात्र स्थान बच रहा जहां हम एक-दूसरे से मिल सकते थे।"

आखिर किस तरह से कैदी इन अस्त्र-शस्त्रों को जुटा पाये ? यह बात जेल के अधिकारियों और पुलिस की समझ में न आयी। क्या रिवाल्वर बिस्कुट के डिब्बों में आये, या फिर बड़े-बड़े कटहलों में जो कई-कई किलो के वजनदार फल होते हैं या फिर बड़ी मछलियों का पेट चीरकर रखे गये थे ? क्योंकि, उस समय जब हम सब साथ रहते थे कैदियों को अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाना खुद बनाने की और बाहर से राशन मंगवाने की छूट थी। जो पुलिस कानाईलाल से इस विषय में पूछ-ताछ कर रहा था उससे कानाई ने अपने अभ्यासगत विनोद के साथ कहा, "खुदीराम की आत्मा ने मुझे रिवाल्वर दिया।" मुजफ्फरपुर के हत्या-कांड के सिलसिले में खुदीराम को हाल में ही फांसी लगी थी।

सचमुच, कैदियों के हाथों में ये हथियार सबसे सरल तरीके से आये। चूंकि उनके आचरण ने पुलिसवालों पर विश्वास जमा दिया था अतः उन्हें मां-बाप और इष्ट-मित्रों से मिलने की अनुमति मिल गयी थी। बाहर के कमरे में कैदियों और मिलनेवालों के बीच सरियों का एक जंगला भर था जिसमें से आसानी से चीजों का आदान-प्रदान हो सकता था। विदा लेते वक्त दोनों पक्ष के लोग प्रेम के वशीभूत, सरियों के और भी पास आ जाते थे, इस तरह के भावोद्रेक के समय जब दोनों तरफ से हाथ मिलते, शाल की आड़ में या साड़ी के आंचल में छिपाकर रिवाल्वर एक हाथ से दूसरे में स्थानांतरित हुए। संतरियों की दृष्टि से बचने के लिये बंदियों ने एक और चाल चली। कैदी जहां सोते थे वहां की जमीन जरा उठी हुई थी, मिट्टी के फर्श पर एक चादर बिछा कर वे सो जाया करते थे, जिनके पास रिवाल्वर था उन्होंने अपनी इस "शय्या" को खोद कर उसे अंदर गाड़ दिया था।

कानाईलाल को निस्संदेह कुछ डर-सा लगा रहता था अतः वह सिर से पैरतक चादर तानकर दिन का अधिकांश समय वहीं लेटे-लेटे ही गुजारता और अगर उत्सुकतावश कोई उससे उसका कारण पूछता तो वह जवाब में कहता, "मैं आंतरिक जगतों में प्रवेश करने की कोशिश में लगा हूं।" अपने जजों के सामने उसने यह घोषणा की थी कि गोसाईं का काम तमाम उसने इसलिये किया क्योंकि वह देशद्रोही था। सत्येन बोस के साथ जब उसे भी मृत्युदंड देने की घोषणा कर दी गयी तो उसने अपील करने से साफ इंकार कर दिया "शाश्वत आत्मा को कौन मार सकता है?" दोनों ने वही काम किया जो उन्हें करना था, उन्होंने जिरह की तारीख से पहले गोस्वामी को रास्ते से हटा दिया ताकि उसके वे बयान जो कैदियों को बड़े जोखिम में डाल सकते थे, विशेषकर श्रीअरविंद को, वे सभी रद्द हो गये। क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माणिकतल्ला बगीचे से कुछ दस्तावेज मिले थे जिनमें कुछ में 'बड़ा कर्ता' और कइयों में 'छोटा कर्ता' लिखा था। गोस्वामी ने पुलिस को बताया था कि 'बड़ा कर्ता' से श्रीअरविंद की ओर संकेत है और 'छोटा कर्ता' से बारीन की ओर।

अभियोग लगानेवालों को अपने मुख्य मुखविर से हाथ धोना पड़ा, लेकिन फिर भी श्रीअरविंद के सिर पर कई बड़े-बड़े इलजाम लगे थे, उनकी बहन सरोजिनी ने उनके बचाव के लिये वकील जुटाने के लिये आवश्यक धन-राशि के लिये अपने देशवासियों से अपील की :

"मेरे देशवासी इस बात से अनभिज्ञ नहीं हैं कि मेरे भाई, अरविंद घोष के विरुद्ध एक गंभीर इलजाम लगाया गया है लेकिन मुझे पूरा विश्वास है और मेरे पास यह सोचने के कारण हैं कि मेरे देशवासियों में से अधिकतर का भी यही विश्वास है कि वे पूरी तरह निर्दोष हैं। मेरे ख्याल से अगर कोई योग्य वकील उनके बचाव के लिये आये तो उनके छूटने की पूरी संभावना है। लेकिन चूंकि अपने-आपको देशसेवा में उत्सर्ग कर देने के लिये उन्होंने गरीबी का प्रण ले रखा है अतः उनके पास किसी श्रेष्ठ वकील को नियुक्त करने के साधन नहीं हैं। अतः उनकी तरफ से मैं जनता की भावना और अपने देशवासियों की उदारता से अपील करने की कष्टकर अनिवार्यता महसूस कर रही हूं। मैं जानती हूं कि सभी उनके राजनैतिक मतों से सहमत नहीं हैं। लेकिन एक बात मैं भद्रता से कहना चाहूंगी कि बहुत कम भारतीय ऐसे होंगे जो उनकी महान् उपलब्धियों, उनके आत्मोत्सर्ग, देश के लिये उनकी एकनिष्ठ भक्ति और उनके चरित्र की उच्च आध्यात्मिकता की सराहना न करते हों, ये बातें मुझे—एक नारी को—इस बात का प्रोत्साहन देती हैं कि मैं भारत के हर पुत्र और पुत्री के सम्मुख खड़ी होकर एक भाई के बचाव के लिये—जो मेरा भाई होने के साथ-साथ उनका भी भाई है, सहायता की मांग करूं।

इसके कुछ समय के बाद ही महाशय चित्तरंजन दास जो नामी वकील और उत्साही देशभक्त होने के साथ-साथ श्रीअरविंद के पुराने मित्र भी थे—उनके बचाव के लिये आ गये। अब तो मुकदमे की सारी धारा ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदल गयी। सरकारी अभियोक्ता द्वारा जुटाये गये सभी प्रमाणों को ब्यौरे में देखा गया, दोषारोपण के सभी तर्कों का खंडन किया गया, नॉर्टन महोदय के सुंदर ढांचे ढह गये : चित्तरंजन दास के तीक्ष्ण संवादों से ब्रिटिश सरकार के अधिवक्ता पर चुप्पी छा गयी। जिस दिन चित्तरंजन दास को अपना अंतिम वक्तव्य सुनाना था उस दिन उनकी प्रेरक वाणी ने समस्त जनसमूह को झकझोर दिया। नलिनी कांत गुप्त ने अपने संस्मरणों में इस घटना का उल्लेख किया है :

"अचानक हाल में पूरी चुप्पी छा गयी; चित्तरंजन दास की आवाज संयत रूप से धीरे-धीरे उठती हुई अधिकाधिक गूंजने लगी। हम सब उठ गये और एक महान् शांति में, एकाग्रचित्त, अचंचल हम सबने चित्तरंजन के शब्द सुने। ऐसा लग रहा था मानों किसी भागवत शक्ति ने उनपर अधिकार कर लिया हो और वही उन शब्दों के पीछे गूंज रही थी :

"इस वाद-विवाद के नीरव हो जाने के बहुत बाद, इस संघर्ष और उथल-पुथल के शांत हो जाने के बहुत बाद, इनके मर-खप जाने के बहुत बाद भी इन्हें राष्ट्रीयता के गायक, मसीहा और मानवता के प्रेमी के रूप में याद किया जायेगा। इनके देहांत के बहुत बाद इनके शब्द केवल भारत में ही नहीं, देशों और समुद्रों के पार गुंजित और प्रतिगुंजित होते रहेंगे . . . मेरा दावा है कि इस स्थिति का मनुष्य केवल आपकी अदालत के सामने नहीं, विश्व इतिहास की अदालत के सामने खड़ा है।"

जज चार्ल्स पौर्टन बीचक्राफ्ट भी श्रीअरविंद को बहुत पहले से जानते थे। एक ही काल में दोनों ने केम्ब्रिज में अध्ययन किया था तथा इंडियन सिविल सर्विस की परीक्षा में भी दोनों साथ-साथ गये थे। श्रीअरविंद के भारत आने के तीन महीने पहले नवंबर १८९२ में बीचक्राफ्ट की बंगाल में नियुक्ति हुई जहां उन्होंने मजिस्ट्रेट की शिक्षा पायी, फिर उन्हें एक इलाके के प्रशासन का कार्य-भार सौंप दिया गया। न्याय की सहज भावना और उनकी निष्पक्षता ने उन्हें भारतीयों के बीच बहुत लोकप्रिय बना दिया था। १९०५ में जब लोग बंगाल-विभाजन के विरोध में भड़क उठे थे तब बीचक्राफ्ट को अलीपुर के इलाके की न्याय-व्यवस्था का कार्यभार सौंपा गया। १९०८ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने अदालत के ऐसे बहुचर्चित मुकदमे की अध्यक्षता की जैसा कभी कलकत्ते में नहीं हुआ : चालीस व्यक्तियों पर "राजा के विरुद्ध युद्ध करने का" इलजाम लगाया गया था। श्रीअरविंद के साथ आखिरी बार मुलाकात हुए बीस वर्ष बीत गये थे। अब दोनों का आमना-सामना हुआ था। एक अदालत की कुरसी पर आसीन थे तो दूसरे अभियोगियों की पंक्ति में, कटघरे में बंदी, जिनपर अभेद्य पहरा बिठाया गया था।

बीचक्राफ्ट को श्रीअरविंद के क्रांतिकारी होने का विश्वास ही नहीं हो पा रहा था, और तब तो और भी कम जब एक जज-निर्धारक ने कहा कि यह बात अकल्पनीय है कि इनके जैसे उच्च कुलीन तथा बौद्धिक क्षमतावान् व्यक्ति ने कभी ऐसे बचकाने षड्यंत्र की सफलता पर विश्वास किया हो या कभी इसमें किसी भी तरह का हिस्सा लिया हो। बीचक्राफ्ट ने श्रीअरविंद के वंदे मातरम् के तथा अन्य लेखों, उनके भाषणों, उनके पत्र-व्यवहार इत्यादि को पढ़ा, उनका विश्लेषण किया था। उनके साहित्यिक गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा की—लेकिन सबसे अधिक वे उन लेखों में प्रकाशित आदर्श की वता से प्रभावित हुए थे। उनका यह विश्वास हो चला था कि श्रीअरविंद के वे लेखांश जिनका उपयोग दोष को सिद्ध करने के लिये किया गया था, वे सचमुच उसी उच्च आदर्श से स्पंदित थे और उनका उद्देश्य भारत के पुनरुज्जीवन के सिवाय और कुछ न था।

अपने फैसले के मूल पाठ में, जिसमें तीन सौ से कम पृष्ठ नहीं हैं, बीचक्राफ्ट ने श्रीअरविंद को एक प्रतिभाशाली, "बहुत ही धार्मिक प्रवृत्तिवाले" ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है जिनके लिये भारत की स्वाधीनता का युद्ध प्रमुख रूप से आध्यात्मिक महत्त्व रखता था।

उन्होंने चित्तरंजन दास के तर्कों का ही सहारा लिया : श्रीअरविंद के राजनैतिक विचारों में उनके दार्शनिक विश्वास के संस्कार हैं, वेदांत जिस आदर्श को व्यक्ति के लिये प्रस्तुत करता है, श्रीअरविंद उसीको भारतवासियों के सामने रख रहे हैं : "जिस तरह प्रत्येक व्यक्ति को अपने अंतरस्थ दिव्यत्व को पाना है और इस तरह जो कुछ उसके अंदर उत्तम है उसे चरितार्थ करना है, उसी तरह किसी देश को अपनी आत्मा को खोजना होगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताकि वह अपने अंदर की उत्तम वस्तु को अभिव्यक्त कर सके। श्रीअरविंद कहते हैं कि इस तरह की मुक्ति कोई विदेशी शक्ति क्रियान्वित नहीं कर सकती; इस लक्ष्य को तो अपने मूलभूत स्वदेशी साधनों द्वारा स्वयं राष्ट्र को ही पाना होगा।'' इसी कारण वे लोगों से यही कहते रहते हैं कि वे किसी विदेशी सहायता पर निर्भर रहने की अपेक्षा अपनी मुक्ति को स्वयं प्राप्त करें।

इसके बाद बीचक्राफ्ट ने इलजाम के सभी कागजों का विश्लेषण श्रीअरविंद की इस विशाल दृष्टि के प्रकाश में किया; वे कहते हैं : अगर हम यह मानकर चलें कि लेखक षड्यंत्रकारी है तो हमें इसमें कई शंकास्पद अनुच्छेद मिल जायेंगे, लेकिन अगर हम किसी पूर्वाग्रही विचार के बिना इसे पढ़े तो हमें इसमें ऐसा कुछ भी नहीं मिलेगा जिससे शंका पैदा हो।

सबसे अधिक संकट में डालनेवाली चीज थी प्रसिद्ध ''मिष्टान्न पत्र'' जिसे बारीन ने श्रीअरविंद को लिखा था। ऐसा माना गया कि इस पत्र का षड्यंत्र के साथ गहरा संबंध है। अभियोगकर्ता को ''मिष्टान्न'' शब्द में ''बम'' शब्द की प्रिय ध्वनि सुनायी दे रही थी! बीचक्राफ्ट ने यह प्रमाणित करने में कसर नहीं छोड़ी कि यह पत्र मिथ्या है और अंततः उसे नहीं रखा गया।

नरेंद्रनाथ गोस्वामी के बयान भी संकटपूर्ण हो सकते थे लेकिन उनका अब कोर्ट में उपयोग ही नहीं किया जा सकता था। अतः सरकारी वकील को अभियोगी को अपने चंगुल में फंसाने के लिये उन दो तत्त्वों से वंचित रहना पड़ा जिनकी सबसे अधिक जांच-पड़ताल होनी थी।

दूसरी तरफ कई ठोस तथ्य श्रीअरविंद की निर्दोषता जतला रहे थे : यह तथ्य कि मानिकतल्ला के बगीचे में उनका आना-जाना नहीं था, यह तथ्य भी कि 'वंदे मातरम्' के अपने लेखों में वे हिंसा का अनुमोदन नहीं किया करते थे। ये चीजें और इसके साथ-साथ बचाव द्वारा प्रस्तुत दार्शनिक तर्क-वितर्कों द्वारा—मुख्य रूप से बीचक्राफ्ट द्वारा—श्रीअरविंद बरी हो गये। बीचक्राफ्ट ने अपनी रिपोर्ट इन शब्दों में समाप्त की :

भारत की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए किसी व्यक्ति के लिये यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खतरनाक हो सकता है कि वह चीजों की वर्तमान व्यवस्था से असंगत सिद्धांतों को प्रकाशित करे, कई परिस्थितियों में इसे राजद्रोह के आरोप में उचित ठहराया जा सकता है। इस तरह का आरोप अरविंद पर लगाया जा सकता है या नहीं इसको जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। मुद्दा तो यह है कि क्या उनके लेख और भाषण जो स्वयं अपने-आपमें देश के पुनरुज्जीवन के अतिरिक्त और किसी चीज का समर्थन नहीं करते और इस केस में उनके विरुद्ध उठाये गये तथ्य क्या इस बात को प्रमाणित करने के लिये पर्याप्त हैं कि वे षड्यंत्र के सदस्य थे? और सभी प्रमाणों को इकट्ठा कर लेने पर मेरा यह मत है कि मेरी तरफ से यह न्यायसंगत न होगा कि इतने बड़े आरोप के लिये उन्हें दोषी सिद्ध कर दूं क्योंकि प्रमाण अपर्याप्त हैं।''

६ मई १९०९ की सुबह जब फैसला सुनाया जानेवाला था, ५०० सिपाहियों की एक टुकड़ी जेल और अदालत के रास्तों पर कैदियों द्वारा पलायन के सभी प्रयासों को रोकने, प्रदर्शन इत्यादि से बचने और जज को पूरी सुरक्षा प्रदान करने के लिये गश्त लगा रही थी। असाधारण सुरक्षा का इंतजाम किया गया था। जब बीचक्राफ्ट ने सुनवाई-कक्ष में प्रवेश किया, जहां सभी अभियोगी इकट्ठे थे, तो सारे हॉल में एक सन्नाटा-सा छा गया। बिना किसी प्रस्तावना के बीचक्राफ्ट ने अपराधियों की सूची पढ़ दी। एक कैदी ने उस मुहूर्त का वर्णन करते हुए कहा, ''क्षण भर के लिये बीचक्राफ्ट उस धीरता से डिग गये जो न्यायाधीश के लिये उचित होती है, और हम लोगों ने लक्ष्य किया कि बारींद्र कुमार घोष और उल्लासकर दत्त के लिये मृत्यु-दंड की घोषणा करते समय उनके स्वर में हल्का-सा कंपन आ गया था, इन दोनों को ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने और अस्त्र-शस्त्र जुटाने इत्यादि के अपराध में दोषी करार दिया गया था। अपील के लिये उन्हें आठ दिनों की मोहलत दी गयी। अन्य कैदियों में से छह को कालेपानी की सजा हुई, छह को कुछ वर्षों का निर्वासन मिला। बाकी को, जिनके नाम पढ़कर सुनाये नहीं गये, जिनमें श्रीअरविंद भी थे, निर्दोष घोषित करके मुक्त कर दिया गया। इन लोगों को बंदी बने हुए एक साल गुजर गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त हो जाने के बाद श्रीअरविंद ने ''बंगाली'' पत्रिका के प्रकाशक को यह पत्र भेजा :

''कृपा करके मुझे अपनी पत्रिका के स्तंभ द्वारा उन सभी लोगों के प्रति कृतज्ञता का गभीर भाव प्रदर्शित करने की अनुमति दीजिये जिन्होंने मुकद्दमे के समय मेरी सहायता की। अपने उन असंख्य परिचित तथा अपरिचित शुभचिंतकों के नाम भला मैं कैसे जानूंगा जिन्होंने अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार मेरे बचाव के लिये रुपया जुटाने में योगदान दिया। न ही मैं उन सबको व्यक्तिगत रूप से अपना धन्यवाद भेज सकूंगा, मैं उनसे यह विनती करता हूं कि वे सब मेरी कृतज्ञता की इस सार्वजनिक अभिव्यक्ति को स्वीकार करें। मेरे जेल से छूटने के बाद मेरे पास कई तार और चिट्ठियां पहुंचीं लेकिन प्रत्येक को उत्तर दे पाने के लिये वे बहुत ही बड़ी संख्या में हैं। मैं अपने देशवासियों के लिये जो थोड़ा-सा काम कर पाया, उसके बदले में उन्होंने जितना प्रेम मुझपर उंडेला वह प्रचुर रूप से उस प्रत्यक्ष दुर्भाग्य या मुसीबत की क्षतिपूर्ति है जो मेरी सार्वजनिक गतिविधियों द्वारा मुझपर आ सकती थी। जेल से अपनी मुक्ति का श्रेय मैं किसी मानव हस्तक्षेप को नहीं देता बल्कि सबसे पहले मैं हम सबकी मां की सुरक्षा के प्रति आभारी हूं, हमारी सबकी मां जिन्होंने मेरा साथ कभी नहीं छोड़ा, बल्कि मुझे हमेशा अपनी बांहों में रखा और दुःख-दर्द और सभी दुर्भाग्यों से मेरी रक्षा की, और फिर मैं आभारी हूं उन हजारों लोगों की प्रार्थनाओं के प्रति जो मेरे बंदी बनने के साथ-साथ मेरे लिये मां की ओर उठीं। अगर मेरे देशप्रेम ने मुझे खतरे में डाला तो मेरे देशवासियों ने मुझे उस खतरे से सकुशल बाहर निकाला।''

श्रीअरविंद की जेल से मुक्ति से ब्रिटिश गवर्नमेंट को अपनी हार का सा अनुभव हुआ। उनके अनुसार बीचक्राफ्ट के फैसले पर कई एक स्थानों पर प्रश्न उठाये जा सकते थे : बीचक्राफ्ट यह ठीक तरह से नहीं समझ पाये कि ''श्रीअरविंद का धर्म था अंग्रेजों का भारत से निष्कासन'' वह चाहे किसी भी उपाय से क्यों न हो, भले आध्यात्मिक शक्ति द्वारा क्यों न हो। न ही उन्होंने श्रीअरविंद के लेखों और उनके भाषणों को गहराई से परखा, शोले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भड़कानेवाले वाक्यों के "निर्दोष अर्थ" लगाये, और यह न देखा कि उनके कुछ अप्रकाशित लेख, जिन्हें बीचक्राफ्ट ने सरल दार्शनिक चिंतन कह दिया था वे सचमुच "उपयोग करने के लिये प्रस्तुत शस्त्रास्त्र" थे। सबसे अधिक तो उन्होंने ऐसे तथ्यों को अस्वीकार करने की गलती की जो ब्रिटिश सरकार की नजरों में दोषी सिद्ध होने के यथासंभव परिणाम थे: "मिष्टान्न पत्र", दोषारोपण का मुख्य विषय जिसे बीचक्राफ्ट ने जाली कहकर परे हटा दिया और कोई महत्त्व न दिया, अपने भाई बारीन के साथ के संबंध, दल के कई सदस्यों के साथ उनका पत्र-व्यवहार, यह तथ्य कि वे उनके "अध्यक्ष" ही नहीं बल्कि एक तरह से गुरु समझे जाते थे—इन सब गंभीर धारणाओं को बीचक्राफ्ट ने इस बहाने एक ओर सरका दिया कि अरविंद कभी मानिकतल्ला के बगीचे में गये ही नहीं। बंगाल सरकार के सेक्रेटरी जनरल लिखते हैं कि अरविंद न केवल इस षड्यंत्र में पूरी तरह डूबे हुए थे बल्कि वे इस संस्था के मस्तिष्क थे, वे नैतिक तथा बौद्धिक ऊर्जा के उत्स थे। अगर हम इस बात को स्वीकार कर लें और अगर हमें उन्हें दोषी सिद्ध करने का अवसर प्राप्त हो जाये तो उन्हें दोषमुक्त कर देना राजनैतिक आत्मघात होगा।"

बीचक्राफ्ट के फैसले का विरोध करने का निश्चय करके सरकार ने इस मामले में बंबई के हाईकोर्ट से राय मांगी। इस मामले के कागज-पत्रों का मुआयना करने के बाद ऐसा लगा कि अगर इस मामले की अपील की गयी तो बहुत संभव है कि श्रीअरविंद को दोषी ठहराकर उनके विरुद्ध कोई फैसला हो जाये। लेकिन कइयों को इस बात का भय था कि ऐसा कदम उठाने पर सारी जनता में असंतोष की एक आग भड़क उठेगी, जिस जनता के लिये श्रीअरविंद एक तरह से "हीरो" थे। छह महीनों तक उन लोगों के बीच विचार-विमर्श तथा इस तथा उस पक्ष की बातचीत ही चलती रही और उसका परिणाम यह निकला कि फैसला सुनाने के बाद कानूनन छह महीने का विलंब हो जाने की वजह से उस मामले की अपील न की जा सकी।

लेकिन फिर भी अंग्रेजों की मंशा अपने "सबसे अधिक भयंकर विरोधी" को मुक्त छोड़ने की कतई न थी। श्रीअरविंद के क्रिया-कलापों को बंद करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य साधन भी थे : उदाहरण के लिये अगर वे उनके लेखों, भाषणों या उनकी गतिविधियों में किसी प्रकार का कोई छिद्र देख लें या छिपा अर्थ ढूंढ़ निकालें तो एक बार फिर से उनके विरुद्ध मुकदमा चला सकते थे लेकिन अपने समस्त प्रयासों के बावजूद पुलिस ऐसे प्रमाणों को नहीं जुटा पायी जो श्रीअरविंद को दोषी ठहराते। बिना किसी न्याय के व्यक्ति को कहीं दूर जेल भिजवा देना—यह ब्रिटिश शासन-प्रणाली का एक नियम था जिसके अधिकार अंग्रेजों को भारत में प्राप्त थे यानी वर्तमान सरकार के विरुद्ध आचरण करनेवाले या उसकी प्रवृत्ति रखनेवाले किसी भी व्यक्ति को अनंत काल के लिये काल कोठरी में ठूंस देना। कई बार बंगाल के शासकों ने श्रीअरविंद पर इस निरंकुश नियम का उपयोग करना चाहा ताकि श्रीअरविंद को, जो उनके लिये खतरे की घंटी थे, कार्यक्षेत्र से हटा सकें लेकिन वे आपस में एकमत न हो सके। इन्हीं दिनों वाइसराय के एक सचिव ने लिखा था कि अगर सभी विप्लवी सींखचों के अंदर बंद कर दिये जायें और अकेले श्रीअरविंद बाहर रहें तो वे फिर से एक नयी विप्लव-सेना तैयार कर लेंगे।

१९०८ की जुलाई में यह अफवाह फैली कि बहुत से राष्ट्रप्रेमियों को बंदी बनाया जायेगा, इस संदर्भ में श्रीअरविंद ने अपने देशवासियों के नाम "कर्मयोगी" में "एक खुला पत्र" छापा जिसमें उन्होंने राष्ट्र के आदर्श की चर्चा की, कानून की हद में रहते हुए राजनीति के अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से दर्शाया। इसके बाद कुछ समय के लिये वे धमकियां शांत हो गयीं लेकिन बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियां बंद नहीं हुईं। इन गतिविधियों पर पूर्ण विराम लगाने के लिये सरकार ने यह निर्णय ले लिया कि सभी अवांछनीय व्यक्तियों को जेल में भर दिया जायेगा। इस बार ५३ लोगों को जेल भेजने की बात थी जिनमें श्रीअरविंद भी थे। ऐसे समय श्रीअरविंद को अंदर से एक आदेश मिला जिसका उन्होंने तुरंत पालन किया और इससे पहले कि पुलिस उन्हें पकड़ पाती, १९०९ की फरवरी में वे चंदननगर के लिये रवाना हो गये जो फ्रेंच राज्य में था।

अब श्रीअरविंद को एक भिन्न प्रकार की क्रांति में जुटना था—यह थी आध्यात्मिक क्रांति—जिसमें न केवल भारत के लक्ष्य की बल्कि पृथ्वी के भविष्य की बाजी लगी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागवत अर्पण वस्तु

"तुम्हारे पास ऐसी कोई चीज न होनी चाहिये जिसे तुम अपना कह सको, जो कुछ तुम्हारे पास आये उसे भगवान् के यहां से आया हुआ अनुभव करो और उसे उसके मूल स्रोत की भेंट कर दो। इस अनुभूति को प्राप्त कर लेने पर अत्यंत सामान्य-से-सामान्य चीज जिसपर तुम ध्यान नहीं देते या जिसकी साधारणतः परवाह नहीं करते, वह भी अकिंचन या तुच्छ नहीं रह जाती, वह अर्थपूर्ण हो जाती है और तुम्हारी दृष्टि के सामने दूरतक देख सकने के लिये एक विशाल क्षितिज खोल देती है।"

क्या यह अवस्था "अभीप्सा करो और खींचो"—जितनी आरंभिक है ?

इतनी आरंभिक नहीं।

१४-१-१९३७

"परंतु यदि हम भगवान् के राज्य के लिये इच्छुक हों तो हम जो कुछ हैं, जो कुछ हमारे पास है और हम जो कुछ करते हैं, उस सबको हमें भगवान् के अर्पण कर देना चाहिये।"

यदि कोई इसे पूर्णतया कर ले तो क्या उसे और कुछ भी करना होता है ?

नहीं। परंतु इसे पूर्ण रूप से करना आसान नहीं।

१४-१-१९३७

हम यह कैसे पहचान सकते हैं कि कौन उस सबको, जो उसके पास है और जो वह है तथा जो वह करता है, भगवान् को दे देता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम नहीं पहचान सकते, जबतक तुममें अंतर्दृष्टि न हो।

१४-१-१९३७

"संसार में ऐसी कोई चीज है ही नहीं जिसका अंतिम सत्य और आश्रय भगवान् में न हो।"

इस बात को अनुभव के द्वारा पूर्ण रूप से जान लेना बहुत महान् उपलब्धि, शायद अंतिम उपलब्धि प्राप्त कर लेना है; क्या मेरा कहना ठीक है ?

हां।

१९-१-१९३७

" यह तो स्पष्ट ही है कि जो कुछ हुआ है वह होने को था; यदि उस प्रकार अभिप्रेत न होता तो वह होता ही नहीं।"

तो फिर, मनुष्य के जीवन में पश्चात्ताप का क्या स्थान है ? क्या साधक के जीवन में उसका कोई स्थान है ?

पश्चात्ताप का स्थान भविष्य के लिये उसके प्रभाव में है—यदि वह प्रकृति को उस प्रकार की वस्तुस्थिति से मुंह मोड़ने के लिये प्रेरित करे जिसने घटना को उत्पन्न किया था। परंतु साधक के लिये पश्चात्ताप नहीं, बल्कि क्रिया में गलती को स्वीकार करना और उसके फिर से न होने की जरूरत महसूस करना आवश्यक है।

१९-१-१९३७

(श्रीमातृवाणी, खंड ३ से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीर्वाणवाणी

स्वामी स्वयं पण्यगृहं विधाय,
स्थितस्ततो याचन-तत्परा जनाः ।
न तत्र कस्यापि निषेध-बाधा
नयस्व यद् वांछसि त्वं सदैव ।।१।।

साहिब (ईश्वर) स्वयं दुकान लगाये बैठे हैं। सभी उससे कुछ मांग रहे हैं। (रे मनुष्य !) वहां किसी की रोक-टोक नहीं है। तुझे जो भी चाहिये ले ले।

तिष्ठानि विश्वेऽस्मिन् कुत्र, यस्मा-
दघोर-शम्भुः सर्वत्र राजते ।
आन्दोलयिष्यामि तमेव क्रोडे
प्राणेन साकं मृदु लालयामि ।।२।।

अब मैं इस संसार में भला किस जगह रहूं क्योंकि यहां तो हर एक स्थान पर परमशिव अघोर शंभु रहते हैं। अतः मैं तो उसीको गोदी में लेकर झुलाऊंगी तथा हृदय से लगाकर डुलाऊंगी।

इतस्ततोऽसौ सर्वत्र दृश्यते
न लुप्यते दृष्टिपथे कदाचित् ।
गुप्तोऽपि ज्ञाता सर्वस्य मध्ये
स एव सर्वामरचक्रवर्ती ।।३।।

उधर भी वही और इधर भी वही (अर्थात् जिधर भी नजर जाती है, उधर वही दीखते हैं) वह कभी पीछे रहने (छिपने) वाले नहीं हैं। वह स्वयं गुप्त भी है और ज्ञानी भी। वह कभी मरा नहीं—अमर है।

(भुवनवाणी प्रेस लखनऊ से प्रकाशित 'लल्द्यद्' से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

सोसायटी ने पांडिचेरी में २३ मई से ३ जून १९८९ तक अध्यापकों, अभिभावकों और विद्यालयों के व्यवस्थापकों के एक शिक्षा-शिविर का आयोजन किया था जिसमें अनेक प्रदेशों के लोगों ने भाग लिया। इसमें माताजी और श्रीअरविंद के शिक्षा-संबंधी लेखों का अध्ययन होता था, शिक्षा के लिये उपयोगी विभागों का अवलोकन, श्रीअरविंद शिक्षा-केंद्र के अध्यापकों से बातचीत और प्रश्नोत्तर आदि गतिविधियों को महत्त्व दिया गया। श्रीअरविंद और माताजी के वातावरण में रहने का सौभाग्य इसके अतिरिक्त था।

गुजरात में सूरत के पास एक शिक्षण शिविर किया गया जिसमें श्रीअरविंद की योग-संबंधी शिक्षा दी गयी। इसमें गुजरात के अलग-अलग स्थानों के २४ लोगों ने भाग लिया।

श्रीअरविंद सोसायटी का वार्षिक अधिवेशन १२, १३, १४ अगस्त को पांडिचेरी में होगा। रेलवे की सुविधाएं प्राप्त होंगी। जानकारी के लिये मुख्यालय को लिखें।

गोरखपुर में श्री अंजनीकुमार सिंह के निवासस्थान पर सोसायटी का एक नया केंद्र खुला है।

सोसायटी के प्रधान सचिव श्री किशोरी लाल ढांढ़णिया सूचना देते हैं कि सोसायटी के काम से सहानुभूति रखनेवालों को यह जानकर खुशी होगी कि शांतिनिकेतन के प्राध्यापक श्री देवकीनंदन श्री वास्तव ने हिंदी भाषी प्रदेशों के सोसायटी कार्य में ताल-मेल बैठाने की जिम्मेदारी स्वीकार कर ली। उन्होंने श्रीअरविंद की शताब्दी के अवसर पर उत्तर प्रदेश में सोसायटी के संगठन का कार्य बड़े मनोयोग से किया था। अब वे सभी हिंदी भाषी प्रदेशों—उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हरियाणा आदि के काम को विकसित करने में सहायता देंगे। आशा है उन्हें आप सबका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Selfishness kills the soul; destroy it. But take care that your altruism does not kill the souls of others.

Sri Aurobindo

Assam Tea Warehousing Corporation

Registered and approved Warehouse at Gauhati (Assam)

H.O.: 8, Camac Street, Room No. 7
Shantiniketan Building
CALCUTTA – 700 017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

O Lord, awaken in me an ardent desire to know Thee. I aspire that my life may be consecrated to Thy service.

The Mother

Space donated by

Kooverji Devshi & Co., Pvt. Ltd.

FIREX LEADS TO SAFETY

SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
A good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"The constant remembrance of the Divine is indispensable for transformation."

— THE MOTHER

With Best Wishes from:

MRS. KOYAL DEORAH CHARITABLE TRUST

28, VARSHA, 69/B, NEPEANSEA ROAD

BOMBAY - 4000 006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा

अखिल भारतीय पत्रिका

सितम्बर १९८९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

आश्वासन	माताजी	१
'संपादकीय' : मातृभूमि की सेवा	अनुबेन	३
दैनन्दिनी		४
'देवी देवता' :		
क्या देवों का अस्तित्व है ?		८
देवों की और भगवान् की पूजा		१४
देवता और एकमेव भगवान्		१६
भगवान् क्या हैं ?		१९
भगवान् की ओर जाना और उन्हें प्राप्त करना		२१
भगवान् के लिये भगवान्		२८
देवी देवताओं के बारे में वार्तालाप		३३

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के १० और पुरोधा के १४ शीघ्र भेजें अन्यथा अगला अंक वी. पी. पी. से जायगा। वी. पी. पी लौट आने से हमें बहुत हानि होती है। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो २२५ और २७५ एक साथ या किस्तों में देकर अग्निशिखा और पुरोधा के या ५०० देकर दोनों के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

अग्निशिखा वार्षिक १०.०० आजीवन २२५.००

श्रीअरविंद सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी–६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी–६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

आश्वासन

१५ नवंबर, १९१४

एकमात्र महत्त्वपूर्ण चीज है वह लक्ष्य जहां हमें पहुंचना है। रास्ते का महत्त्व बहुत कम है और बहुधा यह ज्यादा अच्छा होता है कि हम पहले से उसे न जानें। लेकिन हमें जो बात जानने की जरूरत है वह यह है कि क्या पृथ्वी पर सचमुच दिव्य कर्म का समय आ गया है और क्या जिस कर्म की गहराइयों में कल्पना की गयी है वह चरितार्थ किया जा सकता है ?

हे प्रभो, इस बारे में तूने हमें आश्वासन दिया है, एक ऐसा आश्वासन जिसके साथ लगी है अत्यन्त सशक्त प्रतिश्रुति, इतनी सशक्त जितनी कि वैश्व चेतना या प्रकृति दे सकती है . . . । अतः हमें यह निश्चिति प्राप्त है कि जो होना चाहिये वह अवश्य होगा और यह कि हमारी वर्तमान व्यक्तिगत सत्ताएं वास्तव में इस महिमान्वित विजय में, इस नयी अभिव्यक्ति में सहयोग देने के लिये बुलायी गयी हैं। हमें इससे अधिक और क्या जानने की जरूरत है ? कुछ नहीं। इस तरह अधिक-से-अधिक विश्वास के साथ हम भीषण युद्ध को, विरोधी शक्तियों के हत्याकांड को देख सकते हैं। और ये शक्तियां बिना जाने अंततः तेरी योजना के कार्यान्वयन में सहायता करती हैं। चिंतित होना हमारे लिये गलत होगा क्योंकि यह हमारे भाग में नहीं आया है कि यह जानें कि यह तेरी योजना के लिये किस तरह उपयोगी है और तू किस साधन से समस्त प्रतिरोधों पर विजय पायेगा; क्योंकि तेरी विजय इतनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण होती है कि तेरे विरोध में खड़ा हर अवरोध, हर दुर्भावना, हर घृणा एक अधिक विशालतर और पूर्णतर विजय की प्रतिश्रुति होता है।

प्रतिरोधों के योगफल से हम माप सकते हैं कि तेरी शुद्ध शक्तियों में से, जो पृथ्वी पर प्रकट होने के लिये आ रही हैं, उसकी क्रिया के लिये तू कितना क्षेत्र देगा; जो विरोध करता है वह ठीक वह है जिस पर क्रिया करना इन शक्तियों का लक्ष्य है; सबसे अधिक अंधेरी घृणा को छूना और उसे प्रकाशमान शांति में रूपांतरित करना होगा।

अगर वह मनुष्य जिसे तूने अपने कर्म के केंद्र और अपने माध्यम के रूप में चुना है उसे कुछ ही बाधाओं, थोड़ी-सी गलतफहमियों और जरा-सी घृणा का सामना करना पड़ता है तो इसका मतलब है कि तूने उसे तीव्रताहीन सीमित लक्ष्य ही सौंपा है। वह पहले से ही तैयार सद्भावनावाले पुरुषों का संकीर्ण चक्र सौंपा है जहां वह कार्य करेगा, किसी अस्त-व्यस्त और क्षुब्ध पार्थिव द्रव्य की राशि पर नहीं।

हे दिव्य स्वामी, तूने मुझे जो ज्ञान प्रदान किया है उसमें हम सब साझा कर सकें ताकि हमारे हृदयों में दृढ़ धारणा की शांति का राज्य हो सके और हम तेरी परम निश्चिति की अचंचलता में, सिर ऊंचा उठाये हुए उस सबका सामना कर सकें जो असचेतन रूप से रूपांतर की ओर आकर्षित होकर अंध अज्ञान में अंधाधुंध यह मानकर डुबकी लगाता है कि वह रूपांतरकारी प्रेम को नष्ट कर सकेगा।

—माताजी

———

जिस क्षण से तुम संतुष्ट होकर अभीप्सा बंद कर देते हो उसी क्षण से मरने लगते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'संपादकीय'

मातृभूमि की सेवा

क्या हमें भारतीय होने पर गर्व है ? हमारे यहां के कितने अमीर अपनी गर्भवती पत्नी को विदेश भेजते हैं ताकि उनकी संतान अंग्रेजी या अमरीकी नागरिक मानी जाये। आगे चलकर इन बच्चों को जब परदेश जाना हो तो भारतीय नागरिक होने के नाते जो कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं उनसे मुक्ति मिल जाये। यह एक उदाहरण है अपनी मातृभूमि के लिये हमारे भक्तिभाव का।

अगर हम अपने युवा विद्यार्थियों की ओर नजर दौड़ायें तो और भी निराशा हाथ लगती है। हर होनहार विद्यार्थी अमरीकी या अंग्रेज नागरिक बनने का सपना संजोये हुए है। अगर उससे मातृभूमि की सेवा के विषय में कुछ कहो तो वह कितने ऐसे उदाहरण बतायेगा जब देशप्रेम से प्रेरित युवक अपने देश लौट आये पर न उन्हें उचित काम मिला न उचित स्थान। ऐसी बातें सुनकर कवि वर्ड्स वर्थ की एक कविता का स्मरण हो आता है। उस कविता में वे कहते हैं कि एक छोटी बालिका अपने छोटे भाई को गोद में उठाये पहाड़ी पर चढ़ रही थी। स्वभावतः उसकी सांस फूल रही थी, कवि ने गोद के बालक की ओर संकेत करके पूछा, "इसे उठाकर चलना कठिन है न ?" अबोध बालिका ने कहा, "नहीं तो। यह मेरा भाई है।" हमें भी कठिनाई के बावजूद अपनी मां की, मातृभूमि की सेवा करनी चाहिये, उसपर गर्व करना और उसकी सेवा में आनेवाली कठिनाइयों को फूल-सा हल्का समझना चाहिये। क्योंकि हम उससे प्रेम करते हैं, उसकी पूजा करते हैं।

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

सितंबर

१. चुपचाप होकर अपनी अभीप्सा में केंद्रित रहना बहुत अच्छा है।

२. हम जो कुछ देखते, सुनते या जो कुछ हम हैं या जिसका किसी तरह से अनुभव करते हैं हमें उसे घेरे हुए प्रभु की उपस्थिति का अनुभव करना चाहिये।

३. जो भी क्रिया मैं करता हूं या औरों को करते देखता हूं वह ऐसी नहीं है जिसे प्रभु घेरे हुए या सहारा दिये हुए नहीं हैं, अन्यथा वह हो ही न सकती। मैं जो कुछ देखता हूं, मैं भगवान् को देखता हूं, मैं जो कुछ सुनता हूं, भगवान् को सुनता हूं, मैं जो कुछ करता हूं उसमें भगवान् की शक्ति ही मेरी क्रियाओं पर शासन करती है।

४. तुम जो कुछ कहो, सोचो, करो, अनुभव करो या जिसके बारे में संवेदन प्राप्त करो, उसमें भगवान् के बारे में सचेतन होना कर्मयोग का आरंभ है।

५. भक्त केवल दो यथार्थताओं को देखता है : एक तो भगवान्, दूसरे वह स्वयं, और प्रेम तथा आराधना द्वारा भगवान् के साथ आनंदमय ऐक्य से शुद्ध और अमिश्र शाश्वत की उपस्थिति में प्रवेश करता है।

६. यदि राम और श्रीकृष्ण धरती पर रहते हुए, जगत् के कार्य करते हुए भी भगवान् थे तो कौन कह सकता है कि मुक्ति कर्मों के बीच नहीं पायी जा सकती या कर्म को यंत्र बनाकर नहीं पायी जा सकती।

७. तुम गंगा या नर्मदा के तट पर किसी शांत मंदिर या पवित्र आश्रम में भगवान् की आराधना करने के लिये बैठ सकते हो क्योंकि कर्मयोगी के लिये भक्ति भी जरूरी है और ऐसे स्थान जो महान् संतों और आवेगपूर्ण ईश्वर-प्रेमियों की भक्ति से ओत-प्रोत हैं वे अंतरात्मा के अंदर आराधना के भाव को सबसे अच्छी तरह पुष्ट और संतुष्ट करते हैं। लेकिन अगर तुम्हारा मार्ग कर्मयोग का है तो तुम्हें फिर लौटना, संसार की हलचल में रहना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. किसी हालत में डरपोक और कमजोर की तरह एकांत और निष्क्रियता की ओर न भागो—भगवान् को पाने की आशा में नहीं बल्कि इसलिये कि तुम सोचते हो कि तुम जीवन के उस दुःख-दर्द और दुर्भाग्य से बच सकते हो जिसका सामना करने के लिये तुम बहुत दुर्बल हो।

९. दुर्बल और भीरु लोग ईश्वर की ओर नहीं चढ़ सकते, केवल बलवान् और साहसी ही उठते हैं।

१०. अंतरात्मा का अपना वर्ण होता है जो शरीर के वर्ण की अपेक्षा कहीं अधिक सच्चा और गहरा होता है। मनुष्य को पूर्ण होने से पहले चार आत्मिक अवस्थाओं में से गुजरना पड़ता है: पहले शूद्र अवस्था में अपनी सत्ता के अंदर स्थित पशु को सौम्य बनाने के लिये सेवा और आज्ञापालन द्वारा, फिर वैश्य बनकर अपने अंदर के निम्नतर मनुष्य को, अपने से भिन्न दूसरों का भला करने में आनंद का अनुभव करके अपने अंदर नैतिकता के विधान को तुष्ट करके, फिर क्षत्रिय बनकर उन प्राथमिक गुणों में प्रशिक्षित होना जिनके बिना शाश्वत की खोज असंभव है—यानी साहस, बल, अपराजेय अध्यवसाय, और किसी महान् कार्य के लिये आत्मोत्सर्ग, और अंत में ब्राह्मण बनकर शरीर, मन और प्रकृति को शुद्ध करना ताकि वह अपने अंदर शाश्वत को उस तरह प्रतिबिंबित होते देखे जैसे वह अपने-आपको निर्मल दर्पण में देख सकता है।

११. एक बार भगवान् को देख लेने के बाद मनुष्य के जीवन का इसके सिवा कोई और उद्देश्य नहीं हो सकता कि वह भगवान्तक पहुंच सके और उनको पा सके।

१२. कभी-कभी अपने अज्ञान में लोगों ने अधम वस्तुओं के लिये कोशिश की है और असफल हुए हैं। अपनी दुर्बलता के कारण नहीं बल्कि इसलिये कि ये वस्तुएं उनकी प्रकृति में नहीं थीं, उनके अयोग्य थीं, उनकी महानता और उच्च नियति के आगे हेय थीं। दुःख और निराशा अपनी सच्ची आत्मा की ओर आंखें खोलने के लिये जरूरी चीजें थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३. उन बहुत-से लोगों के उच्च प्रमाणों या अधिकार-वचनों से न घबराओ जो कहते हैं कि ब्रह्म की खोज करनेवालों के लिये संसार का त्याग जरूरी है और मुक्ति कर्म से नहीं प्राप्त हो सकती।

१४. तुम अपने समस्त कर्म ईश को अर्पित कर दोगे, अपनी निचली मिथ्या सत्ता को नहीं जो तुम्हारे कर्मों के परिणाम में सुख-दुःख का अनुभव करती है।

१५. शाश्वत अनंत है और उसे तार्किक सूत्रों के तंग घरौंदे की सीमाओं में बंद नहीं किया जा सकता।

१६. निश्चय ही कामना और अज्ञान प्रकृति के क्षेत्र की सीमाएं हैं और एक बार हम उन्हें पीछे छोड़ दें तो हम उनके राज्य से बाहर निकल आते हैं।

१७. जिस क्षण तुम यह चरितार्थ कर लो कि अविद्या एक भ्रम है और शाश्वत के सिवा कुछ है ही नहीं और पहले भी शाश्वत के सिवा कुछ न था और आगे भी शाश्वत के सिवा कुछ न होगा, जिस क्षण तुम इस विचार को केवल बौद्धिक रूप से नहीं बल्कि तथ्य के अभ्यासगत अनुभव को पा लोगे उस क्षण से तुम यह जान जाओगे कि तुम बद्ध नहीं हो, कभी बद्ध नहीं थे और कभी बद्ध न होगे।

१८. चूंकि तुमने धीरज रखने का निश्चय कर लिया है इसलिये कठिनाइयां अवश्य पराजित होंगी।

१९. मैं तुम्हारे काम और आराम में, तुम्हारी नींद और जागरण में सदा तुम्हारे साथ हूं।

२०. मेरी प्यारी नन्हीं बालिका; मैं संघर्ष और विजय—सब समय तुम्हारे साथ रहूंगी।

२१. सुंदर चीजें गंदी चीजों से कहीं अधिक मजबूत हैं और वे निश्चय ही विजय पायेंगी।

२२. मैं आशा करती हूं यह नया महीना तुम्हारे लिये वह उपलब्धि लायेगा जिसके लिये तुम इच्छा करती हो—सुखद स्थिरता, अपरिवर्तनशील शांति, प्रकाशमय नीरवता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी यही इच्छा है और यही मेरा आशीर्वाद है।

२३. मैं तुम्हें एक मजबूत और सचेतन आदमी बनाना चाहती हूं, जो अपना स्वामी हो—यानी जो अपनी निम्न प्रकृति पर पूरा अधिकार रखता हो और अगर उसमें यह अभीप्सा हो तो सच्चा योगी बनने योग्य हो।

२४. सच्चा प्रेम वह है जो, और सब छोड़कर, अपने प्रेम-पात्र के लिये उसका उच्चतम शुभ चाहता है।

२५. नहीं, सब कुछ दुःखमय और अंधकारपूर्ण नहीं है : न तो पेड़-पौधे, न आकाश और न यह सागर। हर चीज दिव्य उपस्थिति से भरी हुई है और उसके बारे में तुम्हें बतलाने के लिये बहुत खुश होगी।

२६. पहले तुम्हें दिव्य चेतना का अनुभव करना होगा, उसके बाद ही तुम जान सकोगे कि सच्चा प्रेम क्या है ?

२७. शांति, शांति मेरे नन्हें बालक, आंतरिक नीरवता और बाह्य स्थिरता की मधुर शांति। वह सदा तेरे साथ रहे।

२८. केवल आध्यात्मिक शक्ति में ही यह बल है कि प्राण पर शांति आरोपित कर सके क्योंकि अगर उसपर उससे ज्यादा बड़ी शक्ति द्वारा शांति आरोपित न की जाये तो प्राण उसे कभी स्वीकार न करेगा। अतः तुम्हें अपने-आपको आध्यात्मिक शक्ति की ओर खोलना और उसे अपने अंदर काम करने देना चाहिये। तब तुम अधिकाधिक सतत शांति और आनंद में निवास करोगे।

२९. मैं तुम्हारे लिये चाहती हूं चेतना, ज्ञान, कलात्मक क्षमता, शांति और पूर्ण समता में आत्म-संयम और ऐसा सुख जो आध्यात्मिक उपलब्धि का परिणाम होता है।

३०. भीतरी और बाहरी अनुशासन के बिना तुम जीवन में कुछ भी नहीं पा सकते, न तो आध्यात्मिक तौर पर न जड़-भौतिक तौर पर। वे सब जो किसी सुंदर या उपयोगी चीज का सृजन करने में सफल हुए हैं, वे ऐसे लोग थे जो अपने-आपको अनुशासित करना जानते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवी देवता

क्या देवों का अस्तित्व है ?

क्या पौराणिक तथा यूनानी और मिस्री देवों का सचमुच अस्तित्व है ?

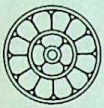

पुराणों के तथा यूनानी और मिस्री देवों के बीच बहुत प्रकार की समानता है। यह अध्ययन के लिये एक मजेदार विषय हो सकता है। आधुनिक पाश्चात्य जगत् के लिये ये सभी देवी-देवता—यूनानी देव और "पेगन" देव मानव कल्पना की उपज हैं और विश्व में किसी वास्तविकता के साथ मेल नहीं खाते। लेकिन यह बहुत बड़ी भूल है।

वैश्व जीवन की रचना को समझने के लिये, या केवल पार्थिव रचना को समझने के लिये हमें वस्तुतः यह जानना चाहिये कि ये सब वास्तविक और जीवित सत्ताएं हैं, हर एक अपने-अपने क्षेत्र में रहती हैं और उसकी स्वतंत्र वास्तविकता है। अगर मनुष्य का अस्तित्व न भी हो तो भी उनका अस्तित्व रहेगा। इनमें से अधिकतर देवों का अस्तित्व मनुष्य से भी पहले से है।

ये ऐसी सत्ताएं हैं जो विश्व की उत्तरोत्तर रचना की सत्ताएं हैं, जिन्होंने उसकी रचना का अत्यंत वायवीय या सूक्ष्म क्षेत्रों से लेकर जड़ भौतिक क्षेत्रोंतक संचालन किया है; यह दिव्य सृजन करनेवाली आत्मा का अवतरण है। वे उत्तरोत्तर अधिकाधिक, घन तो नहीं कह सकते क्योंकि वे घन नहीं हैं, हम जड़ भौतिक भी नहीं कह सकते क्योंकि उन लोकों में वैसा जड़ भौतिक भी नहीं जिसे हम जानते हैं,—अधिकाधिक ठोस वास्तविकताओं में से उतरे थे।

परंपरा और विभिन्न गुह्य संप्रदायों के अनुसार वास्तविकता के ये सभी क्षेत्र भिन्न-भिन्न नामोंवाले हैं। उनका अलग तरह से वर्गीकरण होता है लेकिन उनमें एक तात्त्विक सादृश्य रहता है और अगर तुम परंपरा में काफी पीछे जा सको तो तुम देखोगे कि देश और भाषा के अनुसार केवल नाम

(माताजी और श्रीअरविंद के शब्दों के साथ उनके प्रतीक दिये जा रहे हैं।—सं०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदलते हैं। अब भी पाश्चात्य और प्राच्य गुह्यवादियों की अनुभूतियों में काफी सादृश्य मिलता है। जो लोग इन अदृश्य जगतों की खोज में निकलते हैं और उन्होंने वहां जो कुछ देखा है उसका वर्णन करते हैं, चाहे वे इहलोक के हों या परलोक के, वे अलग-अलग शब्दों का उपयोग करते हैं पर अनुभूति बहुत ज्यादा एक-सी होती है और शक्तियों के साथ व्यवहार एक-सा होता है।

अतः पाश्चात्य देशों में बहुत कम संख्या ऐसे लोगों की है जो यह जानते हैं कि ये देवता काल्पनिक या केवल आत्मनिष्ठ, थोड़े बहुत अतिरंजित रूप में काल्पनिक नहीं हैं बल्कि एक वैश्व सत्य से मेल खाते हैं।

ये सभी क्षेत्र, ये सभी प्रांतर ऐसी सत्ताओं से भरे हैं जिनका अस्तित्व है, हर एक अपने क्षेत्र में है और अगर तुम किसी विशेष लोक में जाग्रत् और सचेतन हो, उदाहरण के लिये अगर तुम अधिक जड़ शरीर से बाहर आकर किसी उच्चतर लोक में जागो तो वहां की चीजों और लोगों के साथ तुम्हारा वैसा ही संबंध रहता है जैसे जड़ जगत् की चीजों और लोगों के साथ था यानी वहां एक पूरी तरह विषयगत संबंध रहता है जिसका उस विचार के साथ कोई संबंध नहीं जो तुमने इन चीजों के बारे में बना रखा था। स्वभावतः जैसे-जैसे तुम भौतिक जड़ जगत् के पास आते जाते हो, सादृश्य अधिकाधिक बढ़ता जाता है। एक ऐसा समय आता है जब एक क्षेत्र की दूसरे पर सीधी क्रिया होती है। बहरहाल, जिन्हें श्रीअरविंद अधिमानस जगत् कहते हैं उनमें तुम ठोस वास्तविकता पाओगे।

इन बातों को समझने के लिये तुम्हें थोड़ी बहुत अनुभूति अवश्य होनी चाहिये, अन्यथा जिन लोगों को विश्वास है कि ये सब केवल मानव कल्पना और मानसिक रूपायन हैं, जो मानते हैं कि इन देवों के ऐसे-ऐसे रूप हैं क्योंकि मनुष्यों ने यह कल्पना कर ली है कि वे ऐसे हैं और उनमें ये ये गुण-दोष हैं क्योंकि मनुष्यों ने ऐसा सोच रखा है—वे सब लोग जो कहते हैं कि भगवान् मनुष्य के आकार में बना है और केवल मनुष्य के विचार में ही उसका अस्तित्व है—ये लोग बिल्कुल नहीं समझेंगे। उन्हें यह सब एकदम से वाहियात और पागलपन लगेगा। चीज कितनी ठोस है इसे जानने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये तुम्हें उसमें थोड़ा-सा जीना, उसका कुछ स्पर्श पाना चाहिये।

हां, तो फिर से देवताओं की ओर लौटें और विषय समाप्त करते हुए कहें कि उन सभी सत्ताओं में जिन्हें पार्थिव जीवन का कभी अनुभव नहीं हुआ है, यानी देवताओं और राक्षसों में अदृश्य सत्ताओं और शक्तियों में वह चीज नहीं होती जो भगवान् ने मनुष्य में रखी है : चैत्य सत्ता। और यह चैत्य सत्ता मनुष्य को सच्चा प्रेम, उदारता, अनुकंपा, गहरी दयालुता देती है जो उसकी सभी बाह्य त्रुटियों की क्षतिपूर्ति कर देती है।

देवों में कोई दोष नहीं होता क्योंकि वे अपनी निजी प्रकृति में, सहज रूप से, बिना प्रतिबंधों के रहते हैं। यह उनके देवत्व का मार्ग है। लेकिन अगर तुम उच्चतर दृष्टिकोण पर खड़े हो, अगर तुम्हारे अंदर उच्चतर अंतर्दर्शन हो तो तुम देखते हो कि उनमें अमुक गुणों की कमी है जो ऐकांतिक रूप से मानवीय होते हैं। जब मनुष्य अहंकारमय न हो, जब वह अपनी स्वार्थपरता को पार कर ले तो वह अपने प्रेम और आत्मदान के बलपर देवों के समान, बल्कि उनसे भी बढ़कर शक्ति पा सकता है।

अगर वह आवश्यक शर्तें पूरी कर ले तो मनुष्य देवों की अपेक्षा परम देव के अधिक निकट हो सकता है। वह अपने-आपमें ऐसा नहीं है लेकिन उसमें ऐसा होने की शक्ति है, ऐसी सामर्थ्य है।

अगर मानव प्रेम मिश्रण के बिना व्यक्त हो सके तो वह सर्वशक्तिमान् हो सकता है। दुर्भाग्यवश मानव प्रेम में प्रिय के लिये प्रेम के बराबर ही अपने लिये प्रेम भी है, इसलिये वह तुम्हें अपने-आपको भूलने नहीं देता।

*

उदाहरण के लिये बेचारी महाकाली को ले लो। यहां बहुत सारी कालियां हैं जो एक-से-एक भयंकर हैं। कुछ तो बहुत ही डरावनी और संत्रस्त करनेवाली हैं। कभी-कभी वे एकदम घृणित सत्ताएं होती हैं जो पूरी तरह से मानव रूपायन होती हैं यानी उनका बाहरी रूप मानव मन की रूप देने की क्षमता द्वारा मानव कल्पना का दिया हुआ होता है। उसके अंदर महाकाली की शक्ति की एक अस्पष्ट-सी परछाई हो सकती है। लेकिन वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी बहुत अधिक क्षीण, विकृत, सिकुड़ी हुई और मानव चेतना की पहुंच के भीतर लायी गयी होती है कि महाकाली सचमुच वह होने से इंकार कर सकती है! मैंने महाकाली के नाम से कहे जा सकनेवाले सभी संभव भयंकर रूप देखे हैं! ओह मूर्तियां! उनके बारे में कुछ न कहना ही ज्यादा अच्छा है। अगर कलाकार अच्छे हों तो फिर भी थोड़ा बहुत सौंदर्य उनमें लगा रहे पर साधारणतः वे रंग थोपनेवाले होते हैं और उनमें कुछ नहीं रहता। रही बात मंदिरों में स्थापित की जानेवाली मूर्तियों या चित्रों की, उसके लिये धार्मिक अनुष्ठान किया जाता है और अगर पुजारी या उसका सहायक कोई गुह्य शक्तियोंवाला आदमी हो, चाहे वह सीमित ही हो, तो वह अपनी अभीप्सा द्वारा और अनुष्ठान द्वारा इन सत्ताओं में किसी अतिपार्थिव चेतना को ला सकता है। यह सिद्धांत है: तुमसे कहा जाता है, "यह लकड़ी का टुकड़ा या पत्थर नहीं है, यह चित्र नहीं है। इसके अंदर एक शक्ति है जिसे धार्मिक अनुष्ठान ने बुलाया है और तुम उससे प्रार्थना कर सकते हो।" यह सच है परंतु यह देखना होगा कि पुजारी की प्रकृति कैसी है, उसे कितना गुह्य ज्ञान है और कैसी शक्तियों के साथ उसका संबंध है। उसमें बहुत-सी चीजें हो सकती हैं।

*

देवताओं के बारे में, मनुष्य रूप गढ़ सकता है जिन्हें देवता स्वीकार लेंगे लेकिन ये रूप भी मानव मन में उन लोकों से प्रेरित होकर आते हैं जहां देवता निवास करते हैं। समस्त सृष्टि के दो पक्ष हैं साकार और निराकार। देवता भी निराकार हैं फिर भी उनके आकार हैं परंतु वे कोई भी रूप धारण कर सकते हैं, यहां महेश्वरी का और वहां पालास एथिनी का। स्वयं महेश्वरी की अपनी छोटी अभिव्यक्तियों में बहुत-से रूप हैं, दुर्गा, उमा, पार्वती, चंडी आदि। देवता मानव आकारतक ही सीमित नहीं हैं—मनुष्य ने भी उन्हें हमेशा केवल मानव रूप में ही नहीं देखा है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् का क्रियाशील पक्ष है देवता नहीं परब्रह्म। देवता क्रियाशील भगवान् के व्यक्तित्व और उनकी शक्तियां हैं। तुम ऐसे कहते हो मानों विकास ही एकमात्र सृजन है। सृष्टि या अभिव्यक्ति बहुत विशाल है और उसमें ऐसे बहुत-से लोक और जगत् हैं जो विकास के पहले से हैं, सभी चरित्र और लक्षणों में एक-दूसरे से भिन्न और भिन्न प्रकार की सत्ताएं हैं। विकास से पहले के होने का मतलब यह नहीं है कि वे सब एक समान हैं। असुरों का लोक विकास से पहले का है, इसी तरह मानसिक, प्राणिक और सूक्ष्म भौतिक देवों के जगत् भी पहले के हैं, लेकिन ये सब सत्ताएं एक-दूसरे से अलग-अलग हैं। महान् देव अधिमानस जगत् के हैं, अतिमानस में वे भगवान् के विभिन्न पक्षों के रूप में एकत्र हैं, अधिमानस में वे पृथक् व्यक्तित्व मालूम होते हैं। कोई भी देवता भौतिक जगत् में अपने निःसृत रूपों में उतर सकता है और किसी ऐसे मनुष्य के विकास के साथ नाता जोड़ सकता है जिसकी अभिव्यक्ति की रेखा के साथ उसका सादृश्य हो। लेकिन ये सब ऐसी चीजें हैं जिन्हें मन आसानी से नहीं समझ सकता क्योंकि मनुष्य के मन में व्यक्तित्व के बारे में बड़ा कठोर विचार है—कठिनाई तभी गायब होती है जब तुम ऊपर की अधिक नमनीय चेतना में जा पहुंचो जहां तुम उस अनुभूति के नजदीक जा पहुंचो जिसमें एक सर्व में है और सर्व एक में।

*

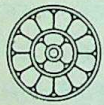

अपने अधिमानस से ऊपर के रूपों में, उच्चतर लोकों में मां के विभिन्न पहलुओं के बहुत सीधे-सादे रूप हैं जिनमें बहुत-से हाथ-पांव नहीं होते।

सभी व्योरे और जटिलताएं प्रायः अदृश्य गुणों के प्रकट करने के लिये मनुष्यों द्वारा जोड़े हुए रूप हैं।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे वरुण, मेरे अंदर विस्तार पाओ, हे इंद्र, मेरे अंदर शक्तिशाली बनो, हे सूर्य, बहुत आलोकमय और जाज्वल्यमान बनो। हे चंद्र, सौम्यता और मधुरिमा से भर उठो, भयंकर और भीषण बनो हे रुद्र, प्रचंड और द्रुत बनो हे मरुत्, बलवान् और साहसी बनो हे अर्यमा, विलासी और सुखद बनो हे भग, कोमल, दयालु, प्रेमी और भावप्रवण बनो हे मित्र, चमकदार और प्रकट करनेवाली बनो हे उषा, गंभीर और उर्वर बनो हे रात्रि, हे जीवन, भरपूर, प्रस्तुत और प्रफुल्ल बनो; हे मृत्यु, मेरे चरणों को भवन से भवन की ओर ले चलो। इन सबमें सामंजस्य लाओ हे ब्रह्मणस्पति और हे काली, मैं इन देवों के आधीन कभी न होऊं।

*

शिव तपस् के स्वामी हैं उनकी शक्ति तपःशक्ति है। देवता के रूप में कृष्ण आनंद, प्रेम और भक्ति के स्वामी हैं और अवतार के रूप में वे ज्ञान और कर्म के ऐक्य को अभिव्यक्त करते और इसके द्वारा पार्थिव विकास को आनंद, प्रेम और भक्ति द्वारा भगवान् के साथ ऐक्य की ओर ले जाते हैं।

देवी दिव्य शक्ति—भगवान् की चेतना और शक्ति, सभी लोकों की जननी और ऊर्जा हैं। सभी शक्तियां उनकी हैं। कभी-कभी दैवी शक्ति का अर्थ हो सकता है वैश्व लोक-शक्ति का सामर्थ्य परंतु यह तो शक्ति का एक पक्ष मात्र है।

*

ब्रह्मा, विष्णु, शिव एकमेव वैश्व देव की तीन शक्तियां और व्यक्तित्व हैं।

*

मैं अतींद्रिय मनोवैज्ञानिक शक्तियों की ओर इशारा करता हूं जो उनके साथ आती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्र—सामंजस्य, वरुण—बृहत्तर; अर्यमा—शक्ति, तपस्या; बृहस्पति—प्रज्ञा (शब्द और ज्ञान); विष्णु—वैश्व चेतना; वायु—प्राण।

*

गणेश वह शक्ति है जो ज्ञान शक्ति द्वारा मार्ग में आनेवाली बाधाओं को हटाती है। कार्तिकेय विरोधी शक्तियों पर विजय के प्रतीक हैं। हां, नाम मनुष्यों के दिये हुए हैं पर देवों का अस्तित्व है।

देवों की और भगवान् की पूजा

इसी कारण देवपूजा, मूर्तिपूजा, मानव चुंबक या आदर्श की पूजा का तिरस्कार नहीं करना चाहिये, ये ऐसे चरण हैं जिनके द्वारा मानवजाति उस आनंदमय भाव और अनंत के आनंद की ओर गति करती है जो उसे सीमित करते हुए भी हमारी अपूर्ण दृष्टि के लिये निरूपित करते हैं ताकि हम उन निचली सीढ़ियों का उपयोग कर सकें जिन्हें प्रकृति ने हमारे चरणों के लिये तैयार किया है और हमारी प्रगति के स्तरों के रूप में स्वीकार किया है। हमारे भावनामय पुरुष के विकास के लिये कुछ मूर्तिपूजाएं अनिवार्य होती हैं। और न ही ऐसा आदमी जो जानता है, किसी समय भी मूर्ति-भंजन करने के लिये जल्दबाजी कर सकता है जबतक कि वह उपासक के हृदय में उसके स्थान पर उस सत्य को प्रतिष्ठित न कर सके जिसे वह आकार देती है। और फिर उनके अंदर यह शक्ति होती है क्योंकि हमेशा उनके अंदर कोई ऐसी चीज रहती है जो उनके आकारों से बड़ी होती है और जब हम परम पूजातक पहुंच जाएं तो भी वह स्थायी होती है और उसका दीर्घीकरण या उसकी सार्वभौम समग्रता का एक भाग बन जाती है। हमारा ज्ञान तब भी हमारे अंदर अपूर्ण रहता है, प्रेम अधूरा रहता है चाहे हम उसे भी क्यों न जानते हों जो सभी रूपों और अभिव्यक्तियों का अतिक्रमण कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। तब भी हम भगवान् को प्राणी और विषय में, मनुष्य में, प्रकार में, पशु में, वनस्पति में, फूल में, हमारे हाथों की क्रिया में, प्रकृति-शक्ति में स्वीकार नहीं कर पाते जो अब हमारे लिये जड़ यंत्र की अंध क्रिया नहीं रहता बल्कि वैश्व शक्ति का चेहरा और उसकी शक्ति होता है, क्योंकि इन चीजों में भी शाश्वत की उपस्थिति होती है।

हमारे द्वारा परात्पर को, उच्चतम को, अनिर्वचनीय को अर्पित की गयी चरम अकथनीय आराधना भी पूर्ण पूजा नहीं होती यदि वह उसे हर उस जगह, जहां वह अभिव्यक्त होता है या जहां कहीं वह अपने देवत्व को छिपाता है—मनुष्य में, हर वस्तु और हर प्राणी में अर्पित न की जाये।

*

आध्यात्मिकता को हिंदू अनुशासन आत्मा की इस आवश्यकता की पूर्त्ति के लिये इष्ट देवता, अवतार और गुरु की धारणा से पूरा करता है। इष्ट देवता का मतलब कोई निम्नतर शक्ति न होकर परात्पर और वैश्व देव का ही एक नाम और रूप है। प्रायः सभी धर्मों में आधार-स्वरूप भगवान् का ऐसा कोई नाम या रूप रहता है या वे उसका उपयोग करते हैं। मानव आत्मा के लिये उसकी आवश्यकता स्पष्ट है। भगवान् सर्व और सर्व से अधिक हैं लेकिन जो सर्व से भी अधिक है मनुष्य उसकी धारणा कैसे करेगा? और शुरू में तो सर्व भी उसके लिये बहुत कठिन है, क्योंकि अपने-आपमें वह अपनी सक्रिय चेतना में सीमित और चयनात्मक रूपायन है और अपने-आपको केवल उसीके प्रति खोल सकता है जो उसकी सीमित प्रकृति के साथ सामंजस्य रखता हो। सर्व में ऐसी चीजें हैं जो मनुष्य की समझ के लिये बहुत कठिन हैं या जो उसके कोमल भावों और सिकुड़नेवाले संवेदनों के लिये बहुत ज्यादा भयंकर होती हैं या जो चीज उसकी अज्ञानमय या आंशिक धारणाओं से बहुत ज्यादा बाहर हो उसे वह भगवान् नहीं मान सकता, वह उसे भगवान् समझकर उसके निकट नहीं जा सकता। उसके लिये जरूरी है कि वह भगवान् की परिकल्पना अपने ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिरूप या किसी ऐसे रूप में करे जो उसके परे तो है पर है उसकी उच्चतम प्रवृत्तियों के अनुरूप और उसकी अनुभूतियों या बुद्धि द्वारा ग्राह्य अन्यथा उसके लिये भगवान् के संपर्क में आना या सायुज्य स्थापित करना कठिन होगा . . .।

पूर्ण योग का साधक अपनी प्रकृति के अनुसार इन सब सहायताओं का उपयोग करेगा लेकिन उसके लिये जरूरी है कि वह उनकी सीमाओं का त्याग करे, अपने अंदर से अहंकारमय मन की उस ऐकांतिक वृत्ति को निकाल फेंके जो कहती है, "मेरे भगवान्, मेरे अवतार, मेरे पैगंबर, मेरे गुरु।" और यह कहकर सांप्रदायिक या सनकी भाव से अन्य सभी उपलब्धियों के विरुद्ध खड़ा करती है। समस्त सांप्रदायिकता, कट्टरपन को त्यागना जरूरी है। क्योंकि वह भगवद् प्राप्ति की पूर्णता के साथ असंगत है।

इसके विपरीत पूर्ण योग का साधक तबतक संतुष्ट न होगा जबतक कि वह अपनी निजी धारणा में भगवान् के बाकी सभी नामों और रूपों को भी नहीं मिला लेता, अपने इष्ट देवता को सबमें नहीं देखता, सभी अवतारों को उसके ऐक्य में नहीं मिला लेता जो अवतार के रूप में उतरता है, सभी शिक्षाओं के सत्य को शाश्वत प्रज्ञा के सामंजस्य में एक नहीं कर देता।

देवता और एकमेव भगवान्

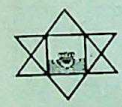

एक ही परम देव की पूजा सर्व के रूप में की जाती है क्योंकि विश्व में सब कुछ वही है या उनकी सत्ता में से या उनकी प्रकृति में से बना हुआ है। लेकिन इस कारण भारतीय धर्म सर्वेश्वरवादी नहीं है क्योंकि वह इस सार्वभौमिकता के परे विश्वातीत शाश्वत को स्वीकार करता है। भारतीय बहुदेवतावाद प्राचीन यूरोप का प्रचलित बहुदेवतावाद नहीं है क्योंकि यहां बहुत-से देवताओं का उपासक भी यह जानता है कि उसके सभी देवता एकमेव के नाम, रूप, व्यक्तित्व और शक्तियां हैं, उसके देव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकमेव पुरुष से आते हैं और उसकी देवियां दिव्य शक्ति की ऊर्जाएं हैं। भारतीय मतों के वे रूप जो आस्तिकवाद के प्रचलित रूप से बहुत मिलते-जुलते हैं, उससे कुछ अधिक हैं क्योंकि वे भगवान् के बहुतेरे पक्षों को अलग नहीं करते बल्कि अपने अंदर मिला लेते हैं . . .

प्रकृति की क्रिया के पीछे जो देवता काम करते हैं उन्हें एकमेव परम देव की शक्तियों, नामों और व्यक्तित्वों के रूप में देखना चाहिये। सभी घटनाओं के पीछे, वे चाहे हमें अच्छी या बुरी, स्वीकार करने योग्य या अस्वीकार करने लायक, मंगलप्रद या अमंगलकारी मालूम हों, एक अनंत चित्-शक्ति, क्रियात्मक ऊर्जा, इच्छा या विधान, प्रकृति, शक्ति या कर्म रहता है। अनंत सृजन करता है और वह ब्रह्मा है, वह पालन करता है और विष्णु है, वह नष्ट करता या अपने अंदर ले लेता है अतः रुद्र या शिव है। परम ऊर्जा जो धारण करके और रक्षा करके उपकार करती है वह या तो जगतों की जननी है या लक्ष्मी या दुर्गा का रूप धारण करती है, या संहारक के रूप में भी उपकार करनेवाली चंडी अथवा कृष्णवर्णी मां काली है। एक ही परम देव अपने-आपको अपने गुणों के रूपों के अनुसार विभिन्न नामों और देवों में अभिव्यक्त करते हैं, वैष्णवों के दिव्य प्रेम के भगवान्, शाक्तों के दिव्य शक्ति के भगवान् देखने में दो भिन्न-भिन्न देव मालूम होते हैं लेकिन सच तो यह है कि वे विभिन्न रूपों में एक ही अनंत देव हैं। हम ज्ञान या अज्ञान द्वारा परम प्रभु की ओर इनमें से किसी भी नाम-रूप के द्वारा जा सकते हैं क्योंकि उनके द्वारा या उनके परे हम अंततः परम अनुभूति की ओर जा सकते हैं।

*

हमारी सामर्थ्य के पीछे हमेशा दिव्य शक्ति पर श्रद्धा होनी चाहिये और जब वह अभिव्यक्त हो तो इसे बढ़ना और पूर्ण होना चाहिये। उसके लिये जो सचेतन शक्ति है और शाश्वत काल से सर्व-स्रष्ट्री वैश्व देवी है, जो पुरुष की सर्वशक्तिमत्ता से लैस है, कोई चीज असंभव नहीं है। समस्त ज्ञान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्त बल, समस्त विजय और शोभा यात्रा, समस्त कौशल और कार्य उसीके हाथों में हैं और आत्मा की सभी निधियों, पूर्णताओं और सिद्धियों से भरे हैं। वह परम ज्ञान की देवी, महेश्वरी है और हमारे लिये सभी प्रकारों और विस्तारों के सत्य को लाती है, उसके आध्यात्मिक संकल्प की ऋजुता, उसकी अतिमानसिक विशालता की अचंचलता और उत्साह, आलोक का उल्लास; वह है महाकाली परम शक्ति की देवी और उसके साथ होती है समस्त सामर्थ्य और आध्यात्मिक शक्ति, तपस्या का कठोरतम अनुशासन, युद्ध की ओर तेजी, विजय और अट्टहास्य जो पराजय, मृत्यु और अज्ञान की शक्तियों को तुच्छ समझता है; और वही है महालक्ष्मी, परम प्रेम और आनंद की देवी और उसके उपहार हैं पुरुष की कृपा, आनंद और संरक्षण का सम्मोहन और सौंदर्य और प्रत्येक दिव्य और मानव आशीर्वाद; वह है महा सरस्वती, *योगः कर्मसु कौशलम्* की देवी, और दिव्य ज्ञान की उपयोगिताएं और आत्मा का प्राण तथा उसके सामंजस्यों के सुख में आत्म-नियोजन। अपनी समस्त शक्तियों और रूपों में वह अपने साथ शाश्वत ईश्वरी के स्वामित्व का परम भाव लिये रहती है, साथ ही सब प्रकार की क्रियाओं के लिये, जिनकी मांग यंत्र से की जा सकती है, उसके लिये द्रुत और दिव्य क्षमता, एकत्व, सम्मिलित होनेवाली सहानुभूति, सबके साथ मुक्त तादात्म्य लिये रहती है।

*

एक बार जब किसीने श्रीअरविंद के योग को स्वीकार कर लिया तो क्या उसे अन्य सभी देवी-देवताओं के मत को त्याग देना चाहिये ?

जो सचमुच श्रीअरविंद द्वारा बनाये गये मार्ग का अनुसरण करता है, उसे जैसे ही इस मार्ग की अनुभूति होनी शुरू होती है वैसे ही वह अपनी चेतनाको किन्हीं देवी-देवताओंके या उन सबके मिले-जुले मततक सीमित करना असंभव पाता है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो अपने हृदय में सुनना जानता है उससे समस्त सृष्टि भगवान् के बारे में बातचीत करती है।

भगवान् क्या हैं ?

"भगवान् का समग्र भाव" से श्रीअरविंद का क्या मतलब है ?

हर एक अपनी व्यक्तिगत रुचि, अपनी समझने की संभावनाओं, अपनी मानसिक पसंदों यहांतक कि अपनी कामनाओं के अनुसार अपने लिये भगवान् के बारे में एक भाव बना लेता है। तुम अपने लिये भगवान् का एक ऐसा भाव बना लेते हो जैसा तुम चाहते हो, ऐसे भगवान् का जिनसे मिलने की तुम्हारी कामना है और इसलिये स्वभावतः तुम अपनी उपलब्धि को काफी कम कर लेते हो।

लेकिन अगर हम यह समझ जायें कि भगवान् वह सब हैं जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं और उससे अनंतगुना अधिक, तो हम समग्रता की ओर गति करना शुरू करते हैं। समग्रता मानव चेतना के लिये अत्यंत कठिन वस्तु है, वह तो सीमित करके ही सचेतन होना शुरू करती है, फिर भी, जरा से प्रयास से, उन लोगों के लिये जो मानसिक क्रियावली के साथ खेलना जानते हैं, यह संभव है कि वे अपने-आपको इतना विस्तृत कर सकें कि किसी समग्र चीज के निकट पहुंच सकें।

तुम भगवान् के बारे में एक विचार बना लेते हो, है न, जो तुम्हारे अपने स्वभाव और तुम्हारी कल्पना से मेल खाता है। फिर अगर तुम जरा अपने अंदर से बाहर आना चाहो, पूर्ण योग करना चाहो तो तुम्हें यह समझना पड़ेगा कि भगवान् केवल वही नहीं हैं जो तुम सोचते या अनुभव करते हो, बल्कि वह भी हैं जो अन्य लोग उनके बारे में सोचते और अनुभव करते हैं—और इससे भी कुछ अधिक, ऐसा कुछ जिसे न कोई सोच सकता है न अनुभव कर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर तुम इतना समझ लो तो तुमने समग्रता के मार्गपर पहला कदम रख लिया।

सहज भाव से और बिना जाने ही लोग इस मांग पर तुले रहते हैं कि भगवान् को उनकी कल्पना के अनुसार होना चाहिये। वे बिल्कुल सहज भाव से बिना सोचे-समझे कह देते हैं, "हां, यह भगवान् हैं", नहीं वह "भगवान् नहीं हैं!" लेकिन वे भगवान् के बारे में जानते ही क्या है? . . .।

और फिर एक ऐसा क्षण आता है जब तुम यह कहने में असमर्थ होगे, "यह दिव्य है, वह दिव्य नहीं हैं," क्योंकि यह ऐसा क्षण होता है जब तुम जगत् को इतने समग्र और व्यापक रूप में देखते हो कि, सच्ची बात यह है कि उसमें से समग्र में गड़बड़ किये बिना कुछ भी निकाल सकना संभव नहीं होता।

तुम दो एक कदम और आगे चलो तो तुम निश्चित रूप से जान पाते हो कि जो चीज तुम्हें भगवान् के प्रत्याख्यान के रूप में दहलानेवाली मालूम होती है वह केवल इसी कारण क्योंकि चीजें अपने स्थान पर नहीं हैं। हर चीज को अपने स्थान पर होना चाहिये, और इतना लोचदार और नमनीय होना चाहिये कि वह उत्तरोत्तर सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था में उन सभी नये तत्वों को अपने अंदर मिला ले जो हमेशा अभिव्यक्त विश्व में जोड़े जाते रहते हैं।

*

उन लोगों के लिये जो एक शब्द से डरते हैं: भगवान् से हमारा मतलब यह है: वह समस्त ज्ञान जो हमें प्राप्त करना है, वह समस्त शक्ति जो हमें पानी है, वह समस्त प्रेम जो हमें बनना है, वह समस्त पूर्णता जो हमें प्राप्त करनी है, वह समस्त सामंजस्यपूर्ण और क्रमिक संतुलन जिसे हमें प्रकाश और आनंद में अभिव्यक्त करना है, वे समस्त अज्ञात और नवीन भव्यताएं जिन्हें चरितार्थ करना है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे लिये भगवान् के तीन रूप होते हैं :

१—वैश्व आत्मा और पुरुष जो सभी चीजें और सत्ताओं के पीछे है, जिसमें से और जिसके अंदर विश्व में सब कुछ अभिव्यक्त होता है—यद्यपि अभी वह अज्ञान के अंदर अभिव्यक्ति है।

२—वह हमारे अंदर हमारी अपनी सत्ता की आत्मा और उसका स्वामी है जिसकी हमें सेवा करनी और जिसकी इच्छा को अपनी सभी गतिविधियों में अभिव्यक्त करना सीखना चाहिये ताकि हम अज्ञान में से प्रकाश में वर्धित हो सकें।

३—भगवान् परात्पर सत्ता और पुरुष, समस्त आनंद और प्रकाश और शक्ति हैं और हमें उस उच्चतम दिव्य सत्ता और उसके प्रकाश की ओर उठना चाहिये और उसकी यथार्थता को अपनी चेतना और प्राण में अधिकाधिक उतारना चाहिये।

*

यह कभी न भूलो कि तुम अकेले नहीं हो। तुम्हारी सहायता करते हुए और तुम्हें मार्ग दिखाते हुए भगवान् तुम्हारे साथ हैं। वे ऐसे साथी हैं जो कभी धोखा नहीं देते, ऐसे मित्र हैं जिनका प्रेम सांत्वना और बल देता है। श्रद्धा रखो और वे तुम्हारे लिये सब कुछ कर देंगे।

भगवान् की ओर जाना और उन्हें प्राप्त करना

भगवान् कठिन हो सकते हैं लेकिन अगर तुम उनके साथ लगे रहो तो कठिनाइयां पार की जा सकती हैं।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

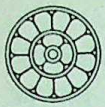

भगवान् अनंत और अनगिनत हैं और परिणामतः उनकी ओर जाने के रास्ते भी अनंत और अनगिनत हैं और हर व्यक्ति भगवान् की ओर किस मार्ग से जाता है यह इसपर निर्भर है कि वह भगवान् से क्या पाता और उनके बारे में क्या जानता है। भक्त मिलता है प्रेम और मधुरता से भरे भगवान् के साथ, ज्ञानी मनुष्य भगवान् को बुद्धि और ज्ञान से भरा पायेगा। जो भय से भरा हुआ है वह कठोर भगवान् से मिलता है और जो उनपर भरोसा करता है वह भगवान् को मित्र और रक्षक के रूप में पाता है—और इसी भांति संभावनाओं के अनंत प्रकार हैं।

*

तुम्हें आशा या श्रद्धा को कभी न खोना चाहिये। कोई चीज असाध्य नहीं है और भगवान् की शक्ति पर कोई सीमा नहीं लगायी जा सकती।

*

हम जिन भगवान् की बात करते हैं वे दूर नहीं हैं और न ही हमारी पहुंच के बाहर हैं। वे सारी सृष्टि के हृदय में हैं। वे चाहते हैं कि हम उनका पता लगाएं और व्यक्तिगत रूप से अपने-आपको रूपांतरित करके उनको जानने योग्य बनें, उनके साथ एक हों और अंत में हम सचेतन रूप से उन्हें अभिव्यक्त करें। हमें अपने-आपको इसीके लिये अर्पित करना चाहिये और वही हमारे अस्तित्व का कारण है। और इस उदात्त उपलब्धि का सबसे पहला चरण है अतिमानसिक चेतना की अभिव्यक्ति।

*

यह पूरी तरह से हर एक के अपने ऊपर निर्भर है। सामान्यतः आदमी भगवान् की कल्पना का आप ही दुश्मन होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिये कहा जाता है कि बहुधा सबसे बड़ा आस्तिक वह होता है जो भगवान् को अस्वीकार करता या भगवान् से घृणा करता है क्योंकि अगर वह अपने अंदर की गहराइयों में यह विश्वास न रखता कि भगवान् हैं तो वह उनसे इंकार या घृणा कैसे करता ?

भारत में ऐसी कथाएं हैं जिनमें तुम ऐसे लोगों को पाते हो जो भगवान् के साथ तादात्म्य चाहते हैं और इसके लिये उनके शत्रु होने का चुनाव करते हैं क्योंकि उनके अनुसार उपासकों की अपेक्षा शत्रु का मार्ग अधिक सीधा है। यह केवल इस बात का उदाहरण है कि जिसने भगवान् के अस्तित्व की समस्या का कभी ख्याल ही नहीं किया वह जरूर उस आदमी की अपेक्षा भगवान् से ज्यादा दूर है जो उनसे घृणा करता या उन्हें अस्वीकार करता है।

अगर कोई यह कहता या लिखता है, "मैं प्रमाणित करता हूं, मेरा समस्त अनुभव यह घोषणा करता है, वह यह सिद्ध करता है कि भगवान् का अस्तित्व नहीं है, कि वह मनुष्य की कल्पना की सृष्टि है", तो इसका मतलब कि उसने पहले ही इस समस्या पर बहुत बार विचार किया है और उसके अंदर कोई चीज इस समस्या में बहुत अधिक रस लेती है।

और यह भगवान् के शत्रु के बारे में तो और भी ज्यादा सच्ची है, उसके बारे में जो भगवान् से घृणा करता है। तुम किसी भ्रांति के शत्रु नहीं होते।

आखिर, शायद यह भी मिलन का एक ऐसा प्रकार है जिसका अपना रस होता है। तुम कभी विनोद में कह देते हो, "मेरा घनिष्ट या अंतरंग शत्रु"; हो सकता है कि यह बिल्कुल गलत न हो। शायद अज्ञान की अपेक्षा घृणा में अधिक अंतरंगता होती है। तुम जिस चीज की अवहेलना करते हो उसकी अपेक्षा उसके अधिक निकट होते हो जिससे तुम घृणा करते हो।

मैं यह सब इसलिये नहीं कह रही कि घृणा की सिफारिश करूं। परंतु यह एक तथ्य है कि मैंने एकदम मंद और जड़ वृत्ति की अपेक्षा क्रोध भरे चेहरे या मुद्रा में कहीं अधिक प्रेम देखा है। वह विकृत, बदरंग, कुरूप और ऐसी अनेक चीजें होता है जो तुम कहना चाहो लेकिन उसमें कोई चीज होती है, एक ज्वाला होती है जो प्रज्ज्वलित होती है।

स्पष्टतः पत्थर की प्रतीयमान जड़ता में, निश्चेतन और निश्चलता में भी तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दमकता हुआ प्रवाह, दिव्य उपस्थिति का प्रकाश देख सकते हो। तुम उसे हर जगह देख सकते हो, उससे हर जगह मिल सकते हो और इतने विविधतापूर्ण सामंजस्य तरीके से कि समस्त नकार गायब हो जाते हैं।

*

लेकिन फिर भगवान् हमसे इतने विजातीय क्यों हैं ?

विजातीय ? लेकिन वे विजातीय तो नहीं हैं, मेरे बालक। तुम कल्पना करते हो कि वे विजातीय हैं लेकिन वे ऐसे बिल्कुल नहीं हैं। वे तुम्हारी सत्ता के सारतत्त्व हैं, भगवान् के बिना तुम्हारा अस्तित्व ही न रहेगा, तुम एक निमिष के करोड़वें हिस्से के लिये भी न रह सकोगे।

बात इतनी है कि तुम सचेतन नहीं हो क्योंकि तुम एक तरह की भ्रांति और विकृति में रहते हो। तुम अपने बारे में सचेतन नहीं हो, तुम किसी ऐसी चीज के बारे में सचेतन होते हो, जिसे तुम अपना आपा समझते हो परंतु जो तुम्हारा आपा है नहीं।

तब फिर मैं क्या हूं ?

भगवान्।

लेकिन उसे अनुभव करने के लिये तुम्हें सत्य चेतना में प्रवेश करना चाहिये। यह एक क्रांति है लेकिन ऐसी क्रांति जो निमिष के चौथाई भाग में भी हो सकती है। इसमें वर्ष, शताब्दियां और अनेक जीवन भी लग सकते हैं।

जब तुम यह अनुभव करना शुरू करते हो कि अभी तुम क्या हो, कि जिसे तुम अपना "स्व" समझते हो वह सच नहीं है, कि तुम्हारी सत्ता का सत्य कोई ऐसी चीज है जिसे तुम नहीं जानते, तब यह प्रश्न उठता है, "तब आखिर यह "मैं" है क्या ? अगर जिसे मैं अपना अहं सोचता हूं वह केवल एक भ्रांतिमूलक रूपायन है तो फिर "मैं क्या है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह प्रश्न अधिकाधिक तीव्र, अधिकाधिक अंतरंग, अधिकाधिक कुशाग्र होता जाता है। धीरे-धीरे हर चीज तुम्हें अजीब लगने लगती है, जो सच्ची नहीं है। अपने बारे में जो यह भाव था कि मैं मैं हूं, एक अवास्तविक रूप धारण कर लेता है।

लेकिन फिर "मैं" क्या है ?

तब एक क्षण आता है जब यह प्रश्न ऐसी घनता के साथ, ऐसी तीव्रता के साथ उठता है कि अचानक उल्टाव आ जाता है। एक निमिष मात्र में सब कुछ बदल जाता है, तुम जानते हो, तुम हो, तुम जीते हो, जो इतना यथार्थ मालूम होता था तुम उसकी अयथार्थता को देखते हो।

हो सकता है कि तुम्हें इस क्षण के लिये दिनों, महीनों, वर्षों और शताब्दियोंतक प्रतीक्षा करनी पड़े। लेकिन अगर तुम अपनी अभीप्सा को तीव्र बनाओ तो दबाव इतना बढ़ जाता है, इस प्रश्न की तीव्रता इतनी प्रबल हो उठती है कि तुम्हारी चेतना में कुछ बदल जाता है . . .

और यह एक पूरी तरह साकार, एकदम ठोस अनुभूति होती है।

मुझसे कभी-कभी पूछा जाता है कि 'यह कैसे पता लगे कि हमारा चैत्य-सत्ता के साथ संपर्क है' या 'यह कैसे जाना जाये कि हमने भगवान् को पा लिया है।' लेकिन एक बार तुम्हें यह अनुभव हो जाये तो फिर मामले का अंत हो जाता है। फिर तुम कोई प्रश्न नहीं करते। मामला समाप्त। फिर तुम यह नहीं पूछते कि यह कैसे हुआ। बस हो गया।

बस हो गया।

*

क्या हम इस तरह भगवान् के पास पहुंच सकते हैं ?

देखो, भगवान् को जानने का बस एक ही मार्ग है, अपने-आपको भगवान् के साथ एक कर लेना। और कोई रास्ता नहीं है, यही एक रास्ता है . . .

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकृष्ण कहा करते थे कि इसमें तीन दिन, तीन घंटे या तीन मिनट लग सकते हैं। तीन दिन उन लोगों के लिये जो बहुत धीमे हैं, तीन घंटे उनके लिये जो जरा ज्यादा फुर्तीले हैं, तीन मिनट उनके लिये जो अभ्यस्त हों।

*

यह अनुभव करने का ठीक तरीका क्या है कि हम भगवान् के हैं और भगवान् हमारे अंदर क्रिया कर रहे हैं ?

तुम्हें अपने सिर से अनुभव न करना चाहिये। (क्योंकि तुम सोच तो सकते हो परंतु वह कोई अस्पष्ट-सी चीज होगी); तुम्हें अपने भाव-संवेदन से अनुभव करना चाहिये। स्वभावतः तुम आरंभ करते हो सिर से उसे चाहकर क्योंकि यही पहली चीज है जिसे हम समझते हैं, तब तुम्हारे अंदर यहां (हृदय की ओर इशारा करते हुए) अभीप्सा होती है जिसमें एक ज्वाला होती है जो तुम्हें उसे चरितार्थ करने के लिये आगे बढ़ाती है। लेकिन अगर तुम सचमुच उस चीज को चाहते हो तो तुम्हें उसे अनुभव करना चाहिये . . .।

उस अवस्थातक कैसे पहुंचा जाये ?

उसके लिये अभीप्सा करो, उसके लिये इच्छा करो। कम-से-कम स्वार्थी होने की कोशिश करो लेकिन इस अर्थ में नहीं कि और लोगों के प्रति अच्छे बनो और अपने-आपको भूल जाओ। नहीं; वह नहीं। तुम्हारे अंदर यह भाव कम-से-कम होना चाहिये कि तुम एक व्यक्ति हो, एक पृथक् सत्ता हो, कोई ऐसी चीज हो जो सबसे अलग अपने-आपमें अस्तित्व रखती हो।

और फिर सबसे बढ़कर, सबसे बढ़कर आंतरिक ज्वाला, यह अभीप्सा, प्रकाश की आवश्यकता ! यह एक प्रकार का, कैसे कहें, प्रकाशमय उत्साह तुम्हें पकड़ लेता है। यह पिघल जाने के लिये, अपने-आपको देने के लिये, केवल भगवान् में जीने की अप्रतिरोध्य आवश्यकता होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'भगवान् को चरितार्थ करने' का सचमुच मतलब क्या है ?

इसका मतलब है अपने अंदर या आध्यात्मिक शिखरों पर भागवत उपस्थिति के बारे में सचेतन होना। और एक बार तुम उनकी उपस्थिति के बारे में सचेतन हो जाओ तो तुम्हें उनके प्रति अपना पूर्ण समर्पण करना चाहिये ताकि फिर उनकी इच्छा के सिवा तुम्हारे अंदर कोई और इच्छा न रहे और अंत में तुम अपनी चेतना उनकी चेतना के साथ एक कर सको। यह है "भगवान् को चरितार्थ करना।"

*

हम भगवान् को अपने अंदर कैसे पा सकते हैं ?

अभी मैंने यही तो बतलाया है।

सबसे पहले, तुम्हें उनकी खोज के लिये इस तरह निकल पड़ना चाहिये मानों तुम्हारे जीवन में यही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज हो। तब सतत इच्छा, सतत अभीप्सा, सतत तल्लीनता हो, बस यही एकमात्र चीज हो जिसकी तुम्हें चाह हो। तब तुम उन्हें पा लोगे।

स्वभावतः, यदि तुम अपने जीवन में केवल पांच मिनट के लिये भगवान् के बारे में सोचो और पौन घंटे के लिये और चीज में लगे रहो तो सफलता की संभावना कम ही है। कम-से-कम कई जीवनों की जरूरत पड़ेगी। यह तुम्हारा मनोरंजन न होकर तुम्हारी सत्ता की एकमात्र तल्लीनता हो, तुम्हारे जीवन का एकमात्र कारण हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् के लिये भगवान्

इस योग का उद्देश्य हैं भागवत उपस्थिति और चेतना में प्रवेश करना और पूरी तरह उसके अधिकार में होना, भगवान् के साथ केवल भगवान् के लिये प्रेम करना, अपनी प्रकृति का भगवान् की प्रकृति के साथ स्वर मिलाना और अपनी इच्छा, अपने कार्यों और जीवन में भगवान् का यंत्र होना। इसका उद्देश्य महान् योगी या अतिमानव बनना नहीं है (यद्यपि यह हो सकता है) न ही अहंकार की शक्ति, घमंड या सुख के लिये भगवान् को हथियाना ही है। यह मोक्ष के लिये भी नहीं है यद्यपि मुक्ति तथा और सब चीजें भी इसके द्वारा आ सकती हैं परंतु वे हमारा उद्देश्य नहीं हो सकतीं, हमारा एकमात्र उद्देश्य है भगवान्।

*

यह तो स्पष्ट है कि भगवान् को **केवल** उन चीजों के लिये खोजना जो हम उनसे पा सकते हैं, उचित मनोभाव नहीं है। लेकिन अगर इन चीजों के लिये खोजने की एकदम मनाही होती तो दुनिया के अधिकतर लोग कभी उनकी ओर न मुड़ते। मेरा ख्याल है कि इसकी अनुभूति इसीलिये दी गयी है कि वे आरंभ तो करें—अगर उनमें श्रद्धा है तो वे जो मांगते हैं वह उनको मिल सकता है और वे सोच सकते हैं कि इस मार्ग पर चलते चलना अच्छा है और एक दिन अचानक वे इस विचार पर आ सकते हैं कि आखिर करने लायक यही एकमात्र चीज नहीं है, कि भगवान् के पास पहुंचने के लिये ज्यादा अच्छे मार्ग और ज्यादा अच्छे मनोभाव भी हैं। और अगर वे जो चाहते हैं वह उन्हें न मिले और फिर भी वे भगवान् की ओर बढ़ें और उनपर विश्वास रखें तो इससे पता चलता है कि वे तैयार हो रहे हैं। हम इसे उन लोगों के लिये एक शिशुशाला मान सकते हैं जो अभी तैयार नहीं हैं। लेकिन निश्चय ही यह आध्यात्मिक जीवन नहीं है, यह केवल एक तरह का प्रारंभिक धार्मिक उपगमन है। आध्यात्मिक जीवन का नियम है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांगना नहीं, देना। परंतु साधक यह मांग सकता है कि दिव्य शक्ति उसे स्वस्थ रखने में या फिर से स्वस्थ होने में उसकी सहायता करे, इसे वह अपनी साधना के अंश-स्वरूप करे ताकि उसका शरीर आध्यात्मिक जीवन के योग्य और उपयुक्त हो सके और भागवत कर्म के लिये योग्य यंत्र बन सके।

*

पहले हम इस एकदम अनुपयुक्त विचार को अलग कर दें कि अगर भगवान् के साथ ऐक्य शाश्वत उदासी, निरानंद या यातना ले आये तो हम क्या करेंगे। ऐसी चीज का अस्तित्व नहीं होता और उसे खींच लाने से समस्या मेघाच्छन्न हो जाती है। भगवान् आनंदमय हैं और हम उन्हें आनंद के लिये खोज सकते हैं जो कि वे प्रदान करते हैं। लेकिन उनके अंदर और भी बहुत-सी चीजें हैं और उन्हें उनमें किसीके लिये भी खोजा जा सकता है जैसे शांति के लिये, मुक्ति के लिये, ज्ञान के लिये, शक्ति के लिये, या ऐसी किसी भी चीज के लिये जिसके लिये तुम आकर्षण या आवेग का अनुभव करो। किसीके लिये यह कहना बिलकुल संभव है, "मैं भगवान् से शक्ति पा जाऊं और उनका काम करूं या उनकी इच्छा पूरी करूं तो मैं संतुष्ट हो जाऊंगा, चाहे शक्ति के उपयोग से कष्ट भी क्यों न आये।" यह भी संभव है कि आनंद को बहुत अधिक भारी या उल्लासपूर्ण मानकर त्याग दिया जाये और केवल शांति, मुक्ति या निर्वाण की मांग की जाये। तुम आत्म-परिपूर्ति की बात करते हो—तुम परम पुरुष को भगवान् न मानकर अपनी उच्चतम आत्मा मान सकते हो और उस उच्चतम आत्मा में अपनी परिपूर्ति की खोज कर सकते हो लेकिन यह जरूरी नहीं है कि तुम उसे आनंदमय आत्मा या उल्लासमय आत्मा के रूप में ही देखो। तुम उसे स्वाधीनता, बृहत्ता, ज्ञान, शांति, बल, स्थिरता, पूर्णता की आत्मा के रूप में भी देख सकते हो, शायद इतनी अधिक स्थिर जिसे उल्लास जैसे विक्षोभकारी चीज की एक छोटी-सी लहरी भी नहीं आंदोलित कर सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तथ्य नहीं है कि हम भगवान् की ओर केवल आनंद के लिये—और किसी चीज के लिये नहीं—अभिमुख हो सकते हैं या उनसे ऐक्य चाह सकते हैं।

इसमें एक ऐसी बात सम्मिलित हो जाती है जो तुम्हारे सारे तर्क को असंगत ठहरा देती है क्योंकि ये भागवत प्रकृति के पक्ष हैं, उसकी शक्तियां, उसकी सत्ता की अवस्थाएं हैं—लेकिन स्वयं भगवान् निरपेक्ष, स्वयंभू हैं, अपने पक्षों से सीमित नहीं हैं—अद्भुत और अवर्णनीय हैं, भगवान् का अस्तित्व उनके कारण नहीं है, उनका अस्तित्व भगवान् के कारण है। इसका निष्कर्ष यह निकलता है कि अगर भगवान् अपने पक्षों के द्वारा आकर्षित करते हैं तो अपनी निरपेक्ष आत्म-सत्ता द्वारा तो और भी अधिक आकर्षक हो सकते हैं क्योंकि वे किसी भी पक्ष की अपेक्षा अधिक मधुर, अधिक बलवान्, अधिक गभीर हैं। उनकी शांति, उनका उल्लास, प्रकाश, स्वाधीनता और सौन्दर्य अद्भुत और वर्णनातीत हैं क्योंकि वे स्वयं जादुई ढंग से, रहस्यात्मक ढंग से, परात्पर रूप में अद्भुत और वर्णनातीत हैं। अतः उनकी खोज किसी एक या दूसरे पक्ष के लिये नहीं उनके अद्भुत और वर्णनातीत स्व के लिये की जा सकती है। उसके लिये बस एक ही चीज की जरूरत है, पहले तो उस बिंदुतक पहुंचना जहां चैत्य सत्ता अपने अंदर भगवान् के इस आकर्षण का अनुभव करे और दूसरे यह कि उस बिंदु पर पहुंचना जहां मन, प्राण और बाकी सभी चीजें भी यह अनुभव करना शुरू करें कि यही तो वह चीज थी जिसे वे चाहती थीं और आनंद की या किसी और चीज की सतही खोज प्रकृति को परम चुंबक की ओर खींचने का एक बहाना मात्र थी।

तुम्हारी यह युक्ति कि चूंकि हम जानते हैं कि भगवान् के साथ ऐक्य आनंद लेकर आयेगा इसलिये निश्चित रूप से हम आनंद के लिये ही ऐक्य को खोजते हैं, यह सच नहीं है और इसमें कोई बल नहीं है। जो आदमी किसी रानी से प्रेम करता है वह जानता है कि अगर वह उसके प्रेम का प्रत्युत्तर दे तो उसे शक्ति, पद और धन-दौलत मिलेगी। फिर भी जरूरी नहीं है कि वह शक्ति, पद और धन-दौलत के लिये उसका प्रेम चाहता हो। हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है कि वह उससे उसीके लिये प्रेम करता हो और अगर वह रानी न हो तो भी उसी तरह प्रेम करे, हो सकता है कि उसे बदले में किसी चीज की आशा न हो फिर भी उससे प्रेम करे, उसकी आराधना करे, उसके लिये जिये, उसके लिये मरे, केवल इसलिये कि वह वह है। ऐसी घटनाएं हुई हैं और पुरुषों ने किसी मार्ग या परिणाम की आशा के बिना स्त्रियों से प्रेम किया है, उम्र ढल जाने और सुंदरता चली जाने पर भी निरंतर प्रेम किया है। देश-प्रेमी अपने देश के साथ केवल तभी प्रेम नहीं करते जब वह समृद्ध और महान् हो, जब उसके पास उन्हें देने के लिये बहुत कुछ हो, देश के लिये प्रेम तब बहुत ज्यादा तीव्र, आवेगपूर्ण और निरपेक्ष, अप्रतिबंध रहा है जब देश गरीब, पतित, दरिद्र था, जो हानि, व्रण, यातना, जेल, मृत्यु के सिवा अपनी सेवा के पुरस्कार-स्वरूप और कुछ न दे सकता था। यह जानते हुए कि वे उसे कभी स्वाधीन न देख पायेंगे, लोग देश के लिये जिये हैं, उन्होंने उसकी सेवा की है और वे उसके लिये मरे हैं—उसीके लिये उससे मिल सकनेवाली चीजों के लिये नहीं। लोगों ने सत्य से प्रेम किया है स्वयं उसके लिये, उसका जो अंश पा सकते हैं उसके लिये, उन्होंने गरीबी स्वीकार की है, उत्पीड़न और स्वयं मृत्यु को अपनाया है। वे उसे पाये बिना उसकी खोज में ही संतुष्ट रहे हैं और उन्होंने कभी अपनी खोज को छोड़ा नहीं है। इसका अर्थ क्या हुआ ? यह कि मनुष्य, देश, सत्य और दूसरी चीजों के साथ भी स्वयं उनके लिये प्रेम किया जा सकता है, और चीजों के लिये नहीं, किन्हीं परिस्थितियों, सहवर्ती गुणों या परिणाम-स्वरूप भोग या सुख के लिये नहीं बल्कि किसी निरपेक्ष वस्तु के लिये जो उनके अंदर या उनके आभास या परिस्थितियों के पीछे है। भगवान् किसी पुरुष या स्त्री, भूभाग या मत, अभिमत, शोध या सिद्धांत से बढ़कर हैं। वे सभी व्यक्तियों के परे के व्यक्ति, सभी अंतरात्माओं के आवास और देश हैं। ऐसे सत्य हैं, सभी सत्य जिनके अधूरे आकार हैं। तो क्या उनके साथ उन्हींके हेतु प्रेम नहीं किया जा सकता ? जैसे मनुष्यों ने अपने निचले स्वरूपों और प्रकृति में किया है ?

तुम्हारी तर्कणा जिस चीज की अवहेलना कर जाती है वह है एक ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरपेक्ष या मनुष्य के अंदर निरपेक्ष की ओर अभिमुख, उसकी शोध में और स्वयं भगवान् में कोई ऐसी चीज जिसे मानसिक तर्कणा या प्राणिक हेतु से समझाया नहीं जा सकता। एक हेतु या प्रयोजन परंतु अंतरात्मा का प्रयोजन, प्राणिक कामना का नहीं, एक कारण परंतु मन का नहीं आत्मा और आध्यात्म पुरुष का कारण, एक मांग भी परंतु ऐसी मांग जो प्राणिक लालसा नहीं अंतरात्मा की अंतस्थ अभीप्सा है। जब शुद्ध रूप से आत्मदान हो तो यही चीज ऊपर आती है। जब "मैं तुम्हें इस चीज के लिये खोजता हूं", "मैं तुम्हें उस चीज के लिये खोजता हूं" बदल कर रह जाता है केवल, "मैं तुम्हें तुम्हारे लिये खोजता हूं" जब 'क' कहता है "ज्ञान नहीं, यह नहीं, वह नहीं बस कृष्ण" तो उसका मतलब होता है भगवान् के अंदर वह अद्भुत, अनिर्वचनीय निरपेक्ष। उसका आकर्षण निश्चित रूप से आदेशात्मक होता है, हमारे अंदर की आत्मा भगवान् की ओर खिंचती है, उस महत्तर आत्मा की आदेशात्मक पुकार के कारण, अंतरात्मा अकथनीय रूप से आराध्य के विषय की ओर खिंचती है क्योंकि इसके सिवा कुछ हो ही नहीं सकता; क्योंकि वह वह है और वे वे। इस विषय में बस इतना ही।

मैंने यह सब केवल इतना समझाने के लिये लिखा है कि भगवान् के लिये भगवान् को खोजने का क्या अर्थ है, और किसी कारण से नहीं, और वह भी उतना जितना समझाया जा सकता है। इसे समझाया जा सके या नहीं परंतु यह है आध्यात्मिक अनुभूति के सबसे प्रधान तथ्यों में से एक। आत्मोत्सर्ग की इच्छा इस तथ्य को प्रकट करने का तरीका मात्र है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि मुझे तुम्हारे आनंद की मांग पर कोई आपत्ति है। मांगो, उसे निश्चय ही मांगो, जबतक कि उसे मांगना तुम्हारी सत्ता के किसी भाग की आवश्यकता है—क्योंकि ये ऐसी चीजें हैं जो तुम्हें भगवान् की ओर ले जाती हैं—जबतक कि वह पूर्णतः आंतरिक पुकार, जो सदा तुम्हारे अंदर रहती है, अपने-आपको सतह पर नहीं ले आती। लेकिन अगर वह सचमुच वही है जिसने शुरू से तुम्हें खींचा है और अब भी उसके पीछे है तो यह सुनिश्चित आध्यात्मिक आदेश, भगवान् के लिये अंतरात्मा की परम आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं यह नहीं कह रहा कि आनंद नहीं होना चाहिये। आत्मोत्सर्ग अपने-आपमें गभीर आनंद है और जिसे वह परिणामस्वरूप लाता है वह अकथनीय आनंद है। और उपायों की अपेक्षा यह उपाय उसे ज्यादा जल्दी लाता है। यहांतक कि तुम कह सकते हो, "निःस्वार्थ आत्मोत्सर्ग सबसे अच्छी नीति है।" लेकिन इसे नीति के रूप में नहीं किया जाता, आनंद परिणाम तो है पर इसे परिणाम के लिये नहीं किया जाता, स्वयं आत्मोत्सर्ग के लिये, स्वयं भगवान् के लिये किया जाता है। मन को यह एक सूक्ष्म-सा भेद लग सकता है परंतु है बहुत यथार्थ।

देवी-देवताओं के बारे में वार्तालाप

(१९२६ के २४ नवंबर से पहले श्रीअरविंद के शिष्य उनके पास बैठकर उनसे तरह-तरह के प्रश्न किया करते थे। इनमें से कुछ प्रश्नोत्तर स्व. अंबालाल पुराणी ने लिख लिये थे। ये पूरी तरह उनकी स्मृति पर आधारित हैं। श्रीअरविंद को इन्हें देखने का मौका नहीं मिला। यह वार्तालाप अंग्रेजी में 'ईवनिंग टॉक्स' नाम से प्रकाशित हुआ है।

ध्यान रहे कि 'सांध्य-वार्ताएं' किसी विषय विशेष को लेकर प्रश्नोत्तर नहीं है। इसलिये एक ही वार्ता में अनेक विषय भी आ जाते हैं।

अब लीजिये मुख्य रूप से देवी-देवताओं के बारे में वार्तालाप।—सं०)

४-४-१९२४

शिष्य—भागवत में मानसिक और अन्य सूक्ष्म लोकों में रहनेवाली सत्ताओं के वर्णन हैं। जब अतिमानस पूर्ण हो जायेगा तब उसका इनपर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

श्रीअरविंद—तुम्हारा क्या मतलब है ? तुम मनुष्यों की बात कर रहे हो या उन सत्ताओं की जो सशरीर नहीं हैं लेकिन मनोमय लोक में रह रही हैं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर तुम कहो कि अमुक लोक अतिमानस भावापन्न हो गया है तो उस लोक की सभी सत्ताओं को अतिमानसिक हो जाना चाहिये। तब तो रिक्शावाले का भी रूपांतर हो जायेगा। तुम यह आशा नहीं कर सकते कि वैश्व विधान इस तरह से बदलेगा। ये लोक और उनमें रहनेवाले तुम्हारे साथ संबंध में या तुम्हारे साथ संपर्क के अनुसार बदल सकते हैं लेकिन वे **तुम्हारी** साधना से नहीं बदल सकते।

शिष्य—मनोमय लोक के रहनेवाले हमारे साथ किस तरह संपर्क में आते हैं और वे किस तरह बदलते या साधना करते हैं ?

श्रीअरविंद—सत्ता के विभिन्न वर्गों में ये भेद तो रहेंगे ही, अन्यथा केवल एक अतिमानसिक लोक ही रहेगा। लीला के चलने के लिये ये भेद जरूरी हैं। और फिर उन सत्ताओं में हर एक की अपनी नियति है जिसे उसे पूरा करना है। उन्हें अपने ही तरीके से चलना होगा।

शिष्य—अतिमानस योग पार्थिव लोक और इस विश्व के विधानों पर क्या प्रभाव डालेगा ?

श्रीअरविंद—अगर अतिमानसिक सत्य इस धरती पर एक तथ्य बन जाये, तो निश्चय ही, तुम यह नहीं सोचते कि रिक्शावाला तुरंत बदल जायेगा। तब अन्य मनुष्यों के लिये सत्य को मूर्त रूप देना यानी अतिमानस को प्राप्त करना ज्यादा आसान हो जायेगा। वह जगत् में एक वातावरण पैदा कर देगा लेकिन वह सर्वसाधारण मनुष्यों में अचानक परिवर्तन न लायेगा। वह मनुष्यों की अधिक संख्या के लिये अंतर्भासात्मक स्तर को पाना ज्यादा आसान बना देगा। अभी ऐसे बहुत कम हैं।

जो मनुष्य अतिमानस सत्य को नीचे उतारकर लायेगा उसका प्रभाव उन लोगों पर अधिक होगा जो उसके संपर्क में आते हैं और यह उसके उच्चतर शक्तियों के प्रति खुलने के अनुपात में होगा।

शिष्य—क्या यह हो सकता है कि पृथ्वी लोक पर कोई असर न पड़े ?

श्रीअरविंद—जो शक्ति पहले नहीं थी वह अब **मौजूद है**, जो वातावरण पहले नहीं था वह भी मौजूद है इसलिये कुछ परिवर्तन अवश्यंभावी है लेकिन वह विश्व के नियमों में आमूल परिवर्तन न लायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मई १९२४

शिष्य—क्या अतिमानसिक लोक में असुर सिद्ध के जैसा कोई उदाहरण है?

श्रीअरविंद—नहीं।

शिष्य—आपने वर्गीकृत सत्ताओं में असुर की भी गिनती की है।

श्रीअरविंद—वहां मैं वैदिक अर्थ में असुर कह रहा था। मानसिक असुर अतिमानस और आद्या शक्ति की किसी चीज का गलत अनुवाद है। शुद्ध शक्ति को असुर कहते हैं। यह वैदिक असुर है पौराणिक असुर नहीं। वेदों में असुर नाम सभी देवों को दिया गया है। कई स्थानों पर इंद्र को भी असुर कहा गया है। बाद में सुर से असुर की व्युत्पत्ति हुई और असुर दानव बन गया। मूलतः असुर उच्चतम शक्ति के अर्थ में था। शायद दसवें मंडल में असुर शब्द पौराणिक अर्थ में आया है।

९-१२-१९२५

बात 'क' के बारे में चली जो 'ख' से आग्रह करता था कि वह उसे भगवान् मान ले।

एक शिष्य—तो तुम उस भगवान् से बचे कैसे?

दूसरा शिष्य—'क' मेरे पास अपने 'भागवत भाव' में आया करता था लेकिन मुझे तो वह असामान्य भाव मालूम होता था। तब वह बताया करता था कि वह भगवान् है। मैं चुप रहता था।

जब उसने मेरे ऊपर बहुत जोर डाला तो मैंने कहा, अच्छा आंगन में खड़े इस पेड़ को उखाड़ कर दिखाओ।

शिष्य—यह तो भगवान् के लिये बड़ी कड़ी परीक्षा हुई!

शिष्य—तुम चाहते थे कि भगवान् कीकर सिंह हो। बड़ा पहलवान होगा तुम्हारा भगवान्! (हंसी)

इसके बाद बंगाल के एक और आध्यात्मिक व्यक्ति के बारे में बात हुई। उस गुरु के एक शिष्य ने एक पंडित के साथ खूब बहस की कि वह उसे अवतार मान ले लेकिन पंडित राजी न हुआ। रात को पंडित जब एक लोहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पलंग पर सो रहा था उन शिष्यों ने उसके पलंग में बिजली के धक्के दिये ताकि उससे अवतार को मनवा लें !

श्रीअरविंद—लेकिन मेरा ख्याल था कि वह तो हमेशा अपने अवतार होने का निषेध किया करता था।

शिष्य—जी, मैं भी यही समझता था पर जब एक प्रसिद्ध नेता उसका शिष्य बन गया तो बात बदल गयी।

श्रीअरविंद—यह संभव है। सफलता ने उसका सिर फिरा दिया होगा। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि लोग अवतार के बाहरी चिह्नों की मांग क्यों करते हैं, उसका बाहरी जीवन से क्या संबंध ?

शिष्य—विचार यह है कि ईश्वर के अवतार में ऐश्वर्य होना चाहिये।

श्रीअरविंद—ऐश्वर्य—दिव्य सत्ता की शक्ति—तो ठीक है पर वह चेतना की चीज है। भीतरी आध्यात्मिक जीवन के बाहरी लक्षण क्या हो सकते हैं ?

शिष्य—लेकिन मेरा ख्याल है कि भीतरी आध्यात्मिक चेतना और ऐश्वर्य परस्पर विरोधी चीजें तो नहीं हैं।

श्रीअरविंद—हर्गिज नहीं। लेकिन ऐसे बहुत-से लोग हैं जिनमें शक्तियां हैं, वे चाहे जैसी शक्तियां क्यो न हों, पर आध्यात्मिक चेतना नहीं होती। जैसे डा॰ कूए में कुछ शक्ति है। यूरोप के कई गुह्यवादियों में है लेकिन वे किसी आध्यात्मिक शक्ति से बहुत दूर हैं। सामान्यतः ऐसी शक्तियोंवाला बहुत मामूली-सा होता है और अपनी प्राणिक गति-विधियों में नीचे की ओर प्रवृत्त होता है।

(कुछ रुककर) यह जरूरी नहीं है कि उच्चतर चेतना को जीवन में तथा क्रिया में लोगों में प्रकट होना चाहिये। यह केवल शक्ति का ही प्रश्न नहीं है। सवाल यह है कि कौन-सी शक्ति प्रकट हो रही है, व्यक्ति उसे कहां से ला रहा है। उदाहरण के लिये नेपोलियन में कुछ शक्ति थी पर इसका यह अर्थ नहीं है कि उसमें आध्यात्मिक चेतना थी। अतः कोई शक्ति या शक्तियां हो सकती हैं पर कोई आध्यात्मिक चेतना न हो। आदमी जब ऊपर उठता है तो पता चलता है कि साधारण आदमी बहुत नीचे रह गया है। लोग उसतक नहीं पहुंच सकते अतः उसकी शक्ति उनपर कार्य नहीं कर सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फिर तुम अवतार से उसी तरह के काम की आशा नहीं कर सकते जैसे मनुष्यों से। वह सीधा वैश्व शक्तियों पर काम कर सकता है और इस तरह सारी मानवजाति पर काम कर सकता है और देखने में ऐसा लगेगा कि वह कुछ नहीं कर रहा, किसीको पता भी न लगेगा कि उसने क्या किया।

सुनने में हास्यास्पद और दर्पपूर्ण लगेगा अगर मैं कहूं कि मैंने रूसी क्रांति के लिये तीन वर्षतक काम किया और उसके सफल होने में यह भी एक प्रभाव था। मैंने तुर्की के लिये भी काम किया था।

शिष्य—और भारत के लिये ?

श्रीअरविंद—इसमें समय लगता है। मैंने कुछ लोगों के द्वारा काम किया लेकिन जब लोग सफलता के नशे में चूर हो जाते हैं तो शक्ति काम करना बंद कर देती है।

१२-१-१९२६

बात अवतार के बारे में चली।

श्रीअरविंद—उच्चतर चेतना द्वारा कुछ समय के लिये आधिपत्य पूरी तरह संभव है। लेकिन अगर अवतार को इस तरह की घोषणाओं और आत्म-विज्ञापन द्वारा अपनी मान्यता पानी पड़े तो मुझे इसका कोई लाभ नहीं दिखलायी देता। रामकृष्ण ने यह कहा था और मेरा ख्याल है कि हर उस व्यक्ति ने जिसे महान् आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त थी कभी-न-कभी यह बात कही थी। इसमें कुछ भी असंभव नहीं है। चैतन्य पर भी इस तरह के सामयिक आधिपत्य हुआ करते थे और ऐसी स्थिति में वे प्रभु के रूप में बोलते थे।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"खेती है मेरा काम"

गंगाराम को अपने व्यवसाय पर गर्व है।

ऐसा व्यवसाय जिससे देश को भोजन मिलता है।

ऐसा व्यवसाय जिससे उसे अच्छी आमदनी होती है।

वे दिन लद गये जब खेती एक स्थिर और घाटे का व्यवसाय था।

स्वतत्र भारत में किसानों की आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिया गया ताकि उन्हें बढ़िया बीज, सिंचाई सुविधाएं, खाद, कीटनाशक दवाएं - ये सभी रियायती दरों पर मुहैया करायी जा सके।

ऐसी व्यवस्था की गई जिससे उन्हें समय पर ऋण और उनके उत्पादों का उचित मूल्य मिल सके। किसान इन सुविधाओं का पूरा लाभ उठाते हैं।

कड़ी मेहनत और प्रौद्योगिकी दोनों ही हरितक्रांति के अग्रदूत हैं। फलस्वरूप, आज भारत का खाद्यान्न उत्पादन 17 करोड़ टन तक पहुंच गया है - जो 1947 के कुल उत्पादन से 12 करोड़ टन अधिक है।

हमें प्रगति पर गर्व है

davp 89/275

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी शुरूआत नयी शक्ति

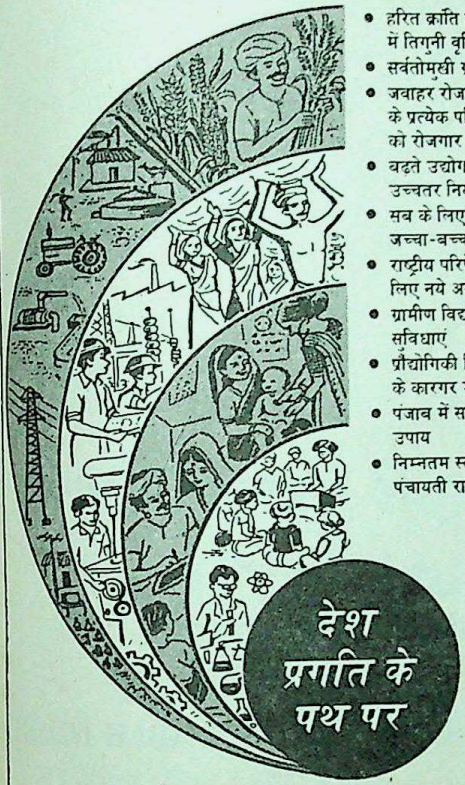

- हरित क्रांति को विस्तार मिलने से अन्न उत्पादन में तिगुनी वृद्धि
- सर्वतोमुखी ग्रामीण विकास
- जवाहर रोजगार योजना : गरीबी रेखा से नीचे के प्रत्येक परिवार के कम-से-कम एक सदस्य को रोजगार
- बढ़ते उद्योग : नौ प्रतिशत वार्षिक बढ़ोत्तरी, उच्चतर निर्यात
- सब के लिए बेहतर चिकित्सा सुविधाएं — जच्चा-बच्चा के स्वास्थ्य पर विशेष जोर
- राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के अंतर्गत महिलाओं के लिए नये अवसर
- ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए बेहतर शिक्षा सुविधाएं
- प्रौद्योगिकी मिशन के अतर्गत गरीबी दूर करने के कारगर उपाय
- पंजाब में सामान्य स्थिति लाने के लिए कई उपाय
- निम्नतम स्तर पर लोकतंत्र की बहाली — पंचायती राज में नयी शक्ति

davp 89/337

स्वाधीनता - स्थिरता - विकासशीलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"The constant remembrance of the Divine is indispensable for transformation."

— THE MOTHER

With Best Wishes from:

MRS. KOYAL DEORAH CHARITABLE TRUST

28, VARSHA, 69/B, NEPEANSEA ROAD

BOMBAY - 400 006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
a good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

सबसे पहली चीज होनी चाहिये 'शांति'। तुम जो कुछ करो उसे शांतिपूर्ण तरीके से करना चाहिये।

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर–२४७००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DUPLICATE

अग्निशिखा

अखिल भारतीय पत्रिका

अक्तूबर १९८९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

सन्देश		१
'संपादकीय' : हिन्दुस्तानी !	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		५
देवी-देवताओं के बारे में वार्तालाप		९
सोसायटी समाचार		३१

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के १० और पुरोधा के १४ शीघ्र भेजें अन्यथा अगला अंक वी. पी. पी. से जायगा। वी. पी. पी लौट आने से हमें बहुत हानि होती है। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो २२५ और २७५ एक साथ या किस्तों में देकर अग्निशिखा और पुरोधा के या ५०० देकर दोनों के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

अग्निशिखा वार्षिक १०.०० आजीवन २२५.००

श्रीअरविंद सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी–६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी–६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

मैंने जो तुम्हें कहा, वही सत्य है, वही एकमात्र उपाय है।

केवल भगवान् के लिये जीना, केवल भगवान् द्वारा जीना, केवल भगवान् की सेवा में जीना, केवल . . . भगवान् बनकर जीना।

बस, केवल एक ही वास्तविकता है, केवल एक ही जीवन है, केवल एक ही चेतना है—भगवान्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय

हिन्दुस्तानी !

क्या केवल भारत में जन्म लेने से ही हम भारतीय कहलायेंगे ? आजकल ऐसे भारतीय बहुत हैं जो जन्म और जन्म-स्थान से तो भारतीय कहलायेंगे किंतु इसके सिवा उनमें कम ही भारतीयता दिखायी देती है।

कई वर्ष पूर्व स्वर्गीय श्री राजकपूर ने अपनी एक फिल्म में एक गाना रखा था जिसका एक अंश यह था, "मेरा जूता है जापानी, यह पतलून इंग्लिस्तानी, सिर पर लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी।" तब यह बात थोड़ी-बहुत सच भी थी किंतु अब तो दिल भी इंग्लिस्तानी, अमरीकी और न जाने किन-किन देशों का बन गया है !

अंग्रेजी या विदेशी भाषा सीखना गौरव की बात है, अन्य भारतीय भाषाएं सीखने का कष्ट उठाने से फायदा क्या ? अपने साथियों के बीच विदेशी भाषा का रौब छांटना बड़ा अच्छा लगता है। वे भी उससे प्रभावित होते हैं।

किसी राष्ट्र के नागरिक होने का अर्थ होता है उसकी संस्कृति को आत्मसात् करना। हमारे यहां आम विद्यार्थी या नागरिक न वेद, उपनिषद् से परिचित है, न हमारी साहित्यिक संपदा से। अभी कुछ महीनों पहले महाभारत के कुछ प्रसंगों की चर्चा छिड़ गयी तो एक संभ्रांत, सुशिक्षित महिला ने सीता और द्रौपदी की कहानियों की खिचड़ी बना दी तो हम स्तब्ध रह गये।

भारत में कभी सुशिक्षित उसे कहते थे जो कला-रसिक हो, मतलब कला की बारीकियों को जानता हो, जो साहित्य को समझता हो, कवियों की रचना की आलोचना और प्रशंसा कर पाता हो। ऐसे काल में विद्यापति और जयदेव जैसे कवियों की रचना लोकमानस पर ऐसी छायी थीं कि गांव-गांव, नगर-नगर में लोग लोकगीतों की तरह उन्हें गाते थे। प्रायः हर एक की जिह्वा पर उनकी एकाध रचना बसी रहती थी।

हम आजकल न भारतीय हैं, न यूरोपीय; अब तो हम श्रीअरविंद की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा में केवल आर्थिक बर्बर, स्वार्थ-पटु बन गये हैं। भूतकाल में मनुष्य का मूल्यांकन उसके धन से भी होता था; पर साथ-साथ ज्ञान से समृद्ध व्यक्ति का मान होता था; चरित्रवान् व्यक्ति, ईमानदार का भी समाज में स्थान था। संस्कृत में कितने श्लोक हमें इसका प्रमाण देते हैं :—

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी-
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः ॥

लक्ष्मी उद्योगी पुरुष-सिंह के ही पास आती है,
"भाग्य में जो है वही मिलेगा" ऐसा कायर पुरुष कहते हैं।
अतः भाग्य को छोड़कर अपनी शक्ति से पौरुष करो,
यत्न करने पर भी यदि कार्य सिद्ध नहीं होता, तो तुम्हारा क्या दोष है ?

यह हुई हमारे पूर्वजों की आत्मविश्वासभरी वाणी और आज कितने देशवासी सिर पर हाथ धरे बैठे रहते हैं और कहते हैं, "जो भाग्य में लिखा है उससे बच नहीं सकते। प्रयत्न करने का कोई अर्थ नहीं।" उन दिनों के उच्च चरित्र का चित्र हमें यह श्लोक देता है :—

धृतिः क्षमा दया शौचं कारुण्यं वागनिष्ठुरा।
मित्राणां चानभिद्रोहः सप्तैताः समिधः श्रियः ॥

धृति, क्षमा, दया, पवित्रता, करुणा, अकठोर वाणी और मित्रों के साथ द्रोह न करना—ये सात श्री की समिधाएं हैं (अर्थात् इन सात गुणों से मनुष्य की शोभा अथवा समृद्धि बढ़ती है)।

दूसरा उदाहरण है जिसे आजकल मूढ़ता माना जायेगा :—

उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा।
संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य उदय के समय लाल होता है और अस्त के समय भी लाल होता है। इसी प्रकार महान् पुरुष संपत्ति में और विपत्ति में एक-रूप ही रहते हैं।

हमारे पड़ोस में करीब चालीस वर्ष पहले एक लखपति रहते थे। उनको देखकर कोई कह न पाता कि वे धनाढ्य हैं। उनका रहन-सहन एकदम सामान्य नागरिक-सा रहता था।

अब हमारे घर से कुछ दूर एक मध्यवर्गीय परिवार है जिसने काफी धन कमाया है। उनके घर में बदलाव आ गया है। उन्हें देखकर, उनका घर देखकर पता लग जाता है कि उनके ऊपर लक्ष्मी की कृपा है। प्रश्न उठता है क्या अतीत ही अच्छा था ? क्या पीछे लौट जायें ?

उत्तर हां या नहीं हो सकता है किंतु भारत के अतीत की अच्छाइयों को बनाये रखकर हम भारत को एक ऐसा राष्ट्र बना सकते हैं जिसकी ओर संसार निर्देशन के लिये देखेगा।

पश्चिम की तकनीक, उसके नागरिक जीवन, अनुशासन, उसकी प्रकृति के नियमों को जानने, जीतने की ललक; ऐसी कितनी ही अच्छाइयां हैं जिन्हें हम अपनी सांस्कृतिक इकाई को गंवाये बिना अपना सकते हैं। किंतु वह समय कब आयेगा ?

अनुवेन

—*—

अविश्वासी मन सर्वदा सन्देह करता है, क्योंकि वह समझ नहीं सकता, परन्तु भगवत्प्रेमी का विश्वास जानने के लिये आग्रह करता है यद्यपि समझ नहीं पाता। हमारे अंधकार के लिये ये दोनों ही आवश्यक हैं। परन्तु इस विषय में कोई सन्देह नहीं कि उन दोनों में से अधिक शक्तिशाली कौन है। जिसे मैं अभी नहीं समझ पाता उसे किसी और दिन आयत्त कर लूंगा, पर यदि मैं विश्वास और प्रेम को ही खो बैठूं तो एकदम उस लक्ष्य से भ्रष्ट हो जाऊंगा जिसे भगवान् ने मेरे सामने रखा है।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

अक्तूबर

१. मैं तुम्हारे हृदय में हूं ताकि तुम खुश रहो, तुम्हारे सिर में हूं ताकि तुम शांत रहो और तुम्हारे हाथ में हूं ताकि उसमें कौशल आये।

२. विश्वास रखो कि तुम मजबूत और अचंचल बनोगे, पूर्ण उपलब्धि और उसे प्राप्त करने के लिये भगवान् की सर्वशक्तिमत्ता पर श्रद्धा रखो। चेतना और शांति हमेशा तुम्हारे साथ हैं; साथ ही मेरा प्रेम भी।

३. जब किसी का ध्यान हमेशा अपनी ओर लगा रहता है तो वह कभी सुखी नहीं रहता। जब कोई हर गुजरते हुए आवेग को अपने ऊपर शासन करने देता है तो वह कभी शांत नहीं रहता।
कार्य और आत्म-संयम के द्वारा ही तुम सुख और शांति पा सकते हो।

४. तुम कहते हो कि तुम प्रायः उदास रहते हो। जब प्राणिक सत्ता की कामनाएं पूर्ण नहीं की जातीं तो वह उदास हो जाती है।
सामान्य जीवन में आदमी को अपनी कामनाएं पूरी करने के लिये संघर्ष करना पड़ता है, यहां तुम्हें ऐसा न करने के लिये संघर्ष करना पड़ता है। वास्तव में तुम जिस किसी पथ का अनुसरण करो, सफलता उन्हींको मिलती है जो बलवान्, साहसी और सहिष्णु हैं। और तुम जानते हो कि यहां हमारी शक्ति और हमारी सहायता तुम्हें हमेशा प्राप्त रहती हैं, तुम्हें केवल उनका उपयोग करना सीखना होगा।

५. जैसे मांसपेशियों को कसरत द्वारा प्रशिक्षित किया जा सकता है उसी तरह इच्छा शक्ति और ऊर्जा को भी प्रशिक्षित किया जा सकता है। तुम्हें धीरज धरने के लिये अपनी इच्छा-शक्ति को और अवसाद को त्यागने के लिये अपनी ऊर्जा को जगाना चाहिये। मैं हमेशा अपने समस्त प्रेम के साथ तुम्हारी सहायता करने के लिये तुम्हारे पास हूं।

६. सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज है शांत सहिष्णुता जो तुम्हारी प्रगति में किसी गड़बड़ या अवसादं को हस्तक्षेप नहीं करने देती। विजय का आश्वासन है अभीप्सा की सच्चाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. निष्क्रियता ठीक उसी तरह थकानेवाली होती है जैसे अत्यधिक सक्रियता। एकदम काम न करना उतना ही बुरा है जितना अत्यधिक काम करना।

८. अपने ऊपर व्यर्थ की कल्पनाओं का प्रभुत्व न होने दो। तुम्हारे हृदय की गहराइयों में शांति मौजूद है। वहां एकाग्र होओ और तुम उसे पा लोगे।

९. मेरा स्नेह हमेशा तुम्हारे साथ रहता है और वह तुम्हारे लिये विस्तृत और स्थायी शांति, गहरी आलोकमय नीरवता, निश्चल स्थायी एकाग्र शक्ति, निर्विकार आनंद चाहता है जो ज्योति के साथ सतत संपर्क से आता है।

१०. हर बार जब तुम्हें बेचैनी का अनुभव हो तो तुम्हें बाहर आवाज किये बिना, साथ ही मेरे बारे में सोचते हुए, अपने अंदर बोलते हुए यह दोहराना चाहिये :—"शांति, शांति, हे मेरे हृदय।" तुम इसे लगातार करो तो परिणाम से तुम्हें खुशी होगी।

११. प्रश्न—कौन है जो मुझे तुमसे दूर रखता है ?
उत्तर—स्वयं तुम।
यह कहना बिलकुल गलत है कि मैं तुमसे दूर रहना चाहती हूं। लेकिन मेरे नजदीक आने के लिये तुम्हें चढ़कर मेरे नजदीक आना होगा। यह आशा न करो कि मैं तुम्हारे पास उतर कर इतनी नीचे आऊंगी।

१२. प्रश्न—माताजी, मैं इस शरीर को छोड़कर जाना चाहता हूं। यह शरीर ही मुझे आपसे अलग करता है।
उत्तर—यह विचार भूल-भरा है कि अगर यह शरीर बदल जाये तो अगला शरीर जरूर ज्यादा अच्छा होगा। केवल तभी जब तुम भौतिक शरीर द्वारा दिये गये प्रगति के अवसर का पूरा-पूरा और अधिकतम लाभ उठा लो तभी तुम उच्चतर शरीर में जन्म लेने की आशा कर सकते हो। इसके विपरीत सभी अपसरण सत्ता की क्षति लाते हैं। केवल वर्तमान जीवन में साहस के साथ सभी कठिनाइयों का सामना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने, उन्हें पराजित करने का प्रण ही तुम्हारे अभीष्ट ऐक्य को पाने का निश्चित साधन है।

१३. यह सब बेवकूफी है। हमें अगले जन्म के बारे में नहीं, इसी जन्म के बारे में व्यस्त रहना चाहिये जो **हमारे अंतिम श्वासतक** हमें सभी संभावनाएं प्रदान करता है। जो कुछ इस जन्म में किया जा सकता है उसे अगले जन्म के लिये स्थगित कर देना ऐसा ही है जैसा जो आज किया जा सकता है उसे कल पर टालना। यह सुस्ती है। संपूर्ण सिद्धि की संभावना केवल मृत्यु के साथ ही समाप्त होती है। जबतक तुम जिन्दा हो तबतक कुछ भी असंभव नहीं है।

१४. जो चीज जीवन में प्राप्त या हस्तगत नहीं की जा सकती निश्चय ही उसे मृत्यु के बाद नहीं पाया जा सकता। यह भौतिक जीवन ही प्रगति और उपलब्धि का सच्चा क्षेत्र है।

१५. निश्चय ही कला, कला के लिये, सौंदर्य की प्राप्ति और संपूर्ण रेखा के लिये है, साथ ही आत्मा के लिये है, अंतरात्मा के लिये भी है और वह समस्त है जिसे आत्मा, अंतरात्मा अभिव्यक्त करने के लिये अपने हाथ में लेती हैं।

१६. पशु वह प्रयोगशाला थी जिसमें से प्रकृति ने मनुष्य को धीरे-धीरे निकाला। मनुष्य स्वयं वह सोचती हुई, जीवित प्रयोगशाला होगा जिसमें और जिसके सचेतन सहयोग से प्रकृति धीरे-धीरे अतिमानव को बाहर लाने की इच्छा करती है—भगवान् को या यूं न कहें कि भगवान को अभिव्यक्त करने की इच्छा करती है।

१७. एक बालक की भांति, जो न चिंता करता है, न तर्क, हम अपने-आपको भगवान् के अर्पण करते हैं ताकि उनकी इच्छा पूर्ण हो।

१८. अधिक गहरा भ्रातृत्व, प्रेम का अभीतक अनखोजा विधान ही पूर्ण सामाजिक क्रम-विकास की निश्चित नींव हो सकता है और कोई नहीं।

१९. निरंतर हमारी प्रार्थना यही है कि हम भगवान् की इच्छा को समझें और उसके अनुसार जियें।

२०. हर दुर्भावना भरा शब्द, हर निंदा चेतना को गिराती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१. भागवत करुणा को अपने द्वारा हमेशा और हर परिस्थिति में अभिव्यक्त होने दो।

२२. केवल प्रेम ही वैर और हिंसा को जीत सकता है।

२३. समस्त हिंसा-भाव से मुक्त हो जाओ फिर तुम्हें भय न लगेगा।

२४. कुरूप विचार कुरूप भावना को लाते हैं—कुरूप भावनाएं तुम्हें भगवान् से दूर ले जाती हैं और शैतान के हाथों में निःसहाय फेंक देती हैं जो तुम्हें निगलना चाहता है और वही सब अंतहीन दुःख-कष्ट का स्रोत है।

२५. जब नींद से बाहर आओ तो कुछ क्षण स्थिर, शांत बने रहो और आते हुए दिवस को भगवान् को यह प्रार्थना करते हुए अर्पित करो कि उन्हें सब समय और सब परिस्थितियों में याद कर पाओ।

२६. सोने से पहले तुम्हें कुछ मिनट एकाग्र होना चाहिये और गुजरे हुए दिवस में झांकना चाहिये, याद करना चाहिये कि कब और कहां तुम भगवान् को भूल गये थे और प्रार्थना करनी चाहिये कि ऐसा भुलावा फिर न हो।

२७. शक्ति अगर आध्यात्मिक है तो वह आध्यात्मिक सिद्धि के लिये है, उससे महान् शक्ति है सचाई और सबसे महान् शक्ति है भागवत कृपा की।

२८. मैंने कई बार कहा है कि अगर कोई मनुष्य सच्चा है तो जबरदस्त कठिनाइयों और लंबी अवधि के बावजूद वह सफल होगा।

२९. विधाता केवल वही नहीं है जो तुम्हें डूबती नौका से बचा लेता है जब कि अन्य सब डूब जाते हैं, विधाता वह भी है जो तुम्हारे हाथों से अन्तिम तख्ता भी छीन लेता है और तुम्हें एकाकी सागर में डुबा देता है।

३०. अपने-आपको अधिकाधिक समर्पित करो—अपनी समस्त चेतना को, जो कुछ उसमें घटित होता है उस सबको और अपने सभी कर्म तथा क्रियाओं को।

३१. यदि तुम्हारे अंदर दोष और दुर्बलताएं हैं तो उन्हें परिवर्तित करने या नष्ट कर देने के लिये भगवान् के सम्मुख रखो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देवी देवताओं के बारे में वार्तालाप

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(गतांक से आगे)

१-६-१९२६

शिष्य—अखबारवाले मनमानी छापते रहते हैं। क्या वे किसीके घर में हुई बातचीत को छाप सकते हैं ?

श्रीअरविंद—अगर तुम आधुनिक अखबारों से शिष्टाचार की आशा करो तो इस गणतंत्र युग में तुम्हें निराश होना पड़ेगा ! यह आधुनिक गणतंत्र के आशीर्वादों में से एक है ! अगर तुम अमरीका में होते और किसी अखबार को मुलाकात न भी देते तो भी वे कुछ आविष्कार कर लेते ! समाचार पत्र एक सार्वजनिक संस्था है। पहले वह कुछ प्रतिष्ठित होता था लेकिन आज के अखबार तो मानव जीवन की व्यर्थता के अच्छे मापक हैं।

शिष्य—एक अमरीकन अखबार में बड़ौदा की राजकुमारी का इंग्लैंड के युवराज के साथ ब्याह रचा गया था, फोटो वगैरह भी छपे थे !

श्रीअरविंद—वे सामान्य मानस के सच्चे आईने हैं।

शिष्य—वे मानवजाति का चलचित्र हैं।

अन्य शिष्य—लेकिन पहले ऐसा न था।

श्रीअरविंद—पहले सामान्य मन न था और जो था वह व्यवस्थित न था। सभी आधुनिक चीजों का यही हाल है, समाचार पत्र, नाटक, रेडियो। वे सभी चीजों को भीड़ के स्तरतक खींच लाते हैं।

शिष्य—लेकिन जापान और यूरोप में रेडियो और टेलीफोन बहुत सफल रहे हैं। हम चार छह घंटेतक अच्छे-से-अच्छा संगीत सुन सकते हैं।

श्रीअरविंद—लेकिन अमरीका में सिनेमा अपराधों की सहायता करता है। हां, वे उसका शिक्षा के लिये उपयोग करना चाहते हैं। वे अच्छा संगीत प्रसारित कर सकते हैं परंतु क्या लोग उसे समझते और सराहते हैं ?

शिष्य—रेडियो ग्रामोफोन से तो अच्छा है।

श्रीअरविंद—ग्रामोफोन तो संगीत के हत्यारे थे लेकिन दुर्भाग्यवश जिन सब चीजों के लिये सार्वजनिक समर्थन की जरूरत होती है उन सबका यही हाल है, उदाहरण के लिये नाटक, सिनेमा आदि, वे तभी सफल हो सकते हैं अगर जन-साधारण की रुचि के अनुसार हों। भौतिक स्तर पर प्राण का प्रभाव प्राणिक कामनाओं को बढ़ाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—तो अच्छे लोग कहां चले जाते हैं ?

श्रीअरविंद—अगर वे अपनी सुनवाई चाहें तो उन्हें समझौता करना पड़ता है लेकिन समझौते में अच्छे-से-अच्छा बुरे के साथ घुल-मिल जाता है, यहां मैं नैतिक दृष्टि से बुरे की बात नहीं कर रहा, मेरा मतलब है कलाहीन। यह वही पुराना प्रश्न है कि जन-साधारण को किसी उच्चतर चीज की ओर ऊपर खींचा जाये। लेकिन जैसा कि हमेशा होता है, जन-साधारण ऊपर उठने की जगह हर चीज को अपने स्तरतक खींच लाता है।

उदाहरण के लिये कविता को ले लो। आज जितनी कविता लिखी जाती है उतनी पहले कभी नहीं लिखी गयी। एक प्रकार की चमकवाली कृतियां ज्यादा प्रचलित हैं। शायद पाठकों की संख्या भी अधिक है। लेकिन अगर तुम कविता को सब मिलाकर देखो तो तुम्हें लगेगा कि वह नीचे गिर रही है। हर चीज जो जन-साधारण यानी भीड़ पर आश्रित है, उसे समर्थन पाने के लिये नीचे उतरना ही पड़ता है।

शिष्य—क्या चीजें बिगड़ रही हैं या पहले से अच्छी हो रही हैं ?

श्रीअरविंद—मुझे लगता कि विशेष रूप से युद्ध के बाद यूरोप की अवस्था लगभग वैसी ही है जैसी रोम के साम्राज्य के विघटन के बाद हुई थी। सारे संसार को फिर बर्बरता में धंसा देने की वही प्रवृत्ति है।

शिष्य—तो क्या कोई संभावना नहीं है ?

श्रीअरविंद—संभावना हमेशा रहती है। रोम के साम्राज्य के साथ भी संभावना थी लेकिन वह चरितार्थ न हो पायी।

शिष्य—क्या यह कहा जा सकता है कि अब अधिक संभावना है ?

श्रीअरविंद—संघर्ष और भी घोर हो गया है।

(यहां विषय बदल गया)

शिष्य—मनुष्य भौतिक लोक के प्राणी हैं लेकिन उनमें प्राणिक, मानसिक और चैत्य भाग भी होते हैं। क्या प्राणमय लोक में भी मानसिक और चैत्य भाग होते हैं ?

श्रीअरविंद—प्राणिक और भौतिक लोक अलग-अलग हैं। भौतिक लोक में सत्ता के विभिन्न वर्गों द्वारा विकास होता है, हमारा स्तर विकासात्मक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणिक स्तर पर कोई विकास नहीं होता। यह प्ररूपी जीवों का लोक है। वहां चेतना एक स्तर से दूसरे स्तरतक विकसित नहीं होती।

पशु की चेतना प्राण के द्वारा काराग्रस्त होती है और जब वह तैयार हो जाये तो चेतना मानसिक में बदल जाती है और पशु पुनर्जन्म में मनुष्य बन जाता है। हमारी कुछ बिल्लियां मानव जन्म के लिये तैयार हैं। मनुष्य में वह संक्रमण हो चुका है वह सीमा को पार कर चुका है।

लेकिन साधारण आदमी के बारे में मुश्किल से ही कहा जा सकता है कि उसमें अंतरात्मा या चैत्य पुरुष है। अंतरात्मा होती तो है पर बहुत ज्यादा दबी हुई और बहुत पीछे।

शिष्य—क्या असुरों में भी मनुष्य की तरह विकास की संभावना है ?

श्रीअरविंद—नहीं।

शिष्य—क्या असुरों में विकास नहीं होता ?

श्रीअरविंद—चेतना के विकास के अर्थों में नहीं।

शिष्य—लेकिन आपने कहा है कि असुर भी रूपांतरित और परिवर्तित हो सकता है ?

श्रीअरविंद—हां, वे अपनी क्रियाविधि को बदलकर किसी उच्चतर चीज की ओर खुल सकते हैं।

शिष्य—क्या उनके परिवर्तन से आपका यही मतलब था ? क्या वे विकास में सहायता कर सकते हैं ?

श्रीअरविंद—हां, वे अपनी प्राणिक प्रकृति से ऊंची किसी चीज को व्यक्त कर सकते और भगवान् के यंत्र बन सकते हैं लेकिन सामान्यतः वे नहीं बदलते।

शिष्य—अगर असुर बदलें नहीं तो उनका क्या होता है ?

श्रीअरविंद—अगर असुर न बदलें तो उनका विनाश हो सकता है, लेकिन अगर तुम पूछो कि कल्प के अंत में उनका क्या होगा तो जवाब देना कठिन है। अगर वे बदलें तो किसी उच्चतर चीज की ओर खुल सकते और उसे अभिव्यक्त कर सकते हैं।

शिष्य—कहा जाता है कि कुछ असुरों ने साधना की थी। यह किस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार की साधना थी ? आपने कहा है कि वे बहुत बुद्धिमान होते हैं।

श्रीअरविंद—मैंने यह कभी नहीं कहा कि उनमें सच्चे विचार और महान् आदर्श होते हैं या वे महान् मानसिक सत्ताएं हैं। मैंने कहा यह था कि वे अपना प्रयोजन सिद्ध करने में बहुत चालाक होते हैं, वे परिणाम लाना जानते हैं।

शिष्य—विकास में उनका क्या स्थान है ? क्या यह उनके बिना भी चल सकता है ?

श्रीअरविंद—पुराना विचार है कि देव और असुर मानव विकास पर अधिकार करने के लिये संघर्ष में लगे रहते हैं और असुर जगत् की महान् जटिलता के लिये उत्तरदायी हैं। लेकिन मेरे ख्याल से वे अनिवार्य नहीं हैं। असुर अपने-आपको विद्रोह, दुःख, संघर्ष और कठिनाइयों द्वारा चरितार्थ करते हैं। लेकिन जगत् किसी और तरह से भी विकसित हो सकता था, फूल की तरह भीतर से बाहर को खिल सकता था लेकिन आसुरी तरीके की शक्तियां जगत् में घुस पड़ीं और उन्होंने शक्तियों की वैश्व लीला को विकृत कर डाला। यह सत्य प्रायः सभी धर्म मानते हैं, सर्प, अशुभ, लोभ देनेवाली प्रकृति—हौवा का पुरुष या आदम को धोखा देना, पुरुष की रजामंदी और आदम का पतन यह सब वही है।

भारत में इसी सत्य को और तरह से कहा जाता है। देवों और असुरों में मानव विकास गति पर अधिकार पाने के लिये देवों और असुरों का संघर्ष यही है।

शिष्य—तब फिर पौराणिक भाव के अनुसार भगवान् की वैरभाव के साथ पूजा का क्या मतलब है ?

श्रीअरविंद—रावण और हिरण्यकशिपु पुरुष थे जो असुर बन गये और उन्होंने भगवान् के विरोध का मार्ग चुना, सचमुच यह पतन है और बतलाता है कि मनुष्य का विकास यह नहीं है कि वह असुर बन जाये। मतलब यह कि मानव विकास का मार्ग यह **नहीं** है कि वह पशु से प्राणिक सत्ता और फिर असुर बन जाये। आसुरी जीवन मनुष्य के लिये पतन ही है। अगर तुम आसुरी प्रकृति में बदल जाओ तो विकास का अवसर खो बैठते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—हम अपने-आपको आसुरी प्रभाव और आक्रमण से कैसे बचा सकते हैं ?

श्रीअरविंद—शुद्धि और निष्कपटता तथा सचाई के द्वारा तुम असुरों से सुरक्षित रह सकते हो। वे तुमपर आघात कर सकते हैं, तुम्हें धोखा दे सकते हैं, तुम्हारे मन पर कोहरा ला सकते हैं, देरी करवा सकते हैं और तुमसे भूलें करवा सकते हैं लेकिन अगर तुम्हारे पास श्वेत प्रकाश है—शुद्धि और सचाई का प्रकाश—तो वे तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचा सकते, कोई निश्चित पतन न होगा, तुम चलते चलोगे।

१५-६-१९२६

शिष्य—अगर असुर प्राणिक स्तर पर भगवान् के अंधकारमय पक्ष के प्रतिनिधि हैं तो क्या यह अंधकारमय पक्ष हर स्तर पर होता है ? अगर ऐसा है तो क्या मानसिक स्तर पर ऐसी सत्ताएं हैं जो इस अंधकारमय पक्ष के अनुरूप हों ?

श्रीअरविंद—वास्तव में असुर मानसिक स्तर पर ही भगवान् का अंधेरा पक्ष है। मन ही तो असुर का अपना क्षेत्र है। उसकी विशिष्टता है अहंकारमय बल जो उच्चतर विधान को अस्वीकार करता है। असुर में आत्म-संयम होता है, तपस्या और बुद्धि होती है, परंतु सब कुछ अपने अहंकार के लिये।

प्राणिक स्तर पर इस प्रकार की शक्तियों को हम राक्षस कहते हैं, वे उग्र आवेगों और भावावेशोंवाले प्राणी हैं। प्राणलोक पर अन्य सत्ताएं भी हैं जिन्हें हम प्रमत्त या पिशाच कहते हैं और ये साधारणतः न्यूनाधिक रूप से भौतिक-प्राणिक लोकपर प्रकट होते हैं।

शिष्य—उच्चतर लोकों में इनसे मेल खानेवाली सत्ताएं कौन-सी हैं ?

श्रीअरविंद—उच्चतर लोक में असुर नहीं होते क्योंकि वहां तो सत्य का बोलबाला होता है। वहां जो असुर हैं वे वैदिक असुर, यानी दिव्य शक्तिवाली सत्ताएं हैं। मानसिक असुर उस शक्ति का विकार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असुर के काम में मन के सभी लक्षण होते हैं, वह ऐसा मन है जो उच्चतर विधान के आगे झुकने से इंकार करता है। वह विद्रोही मन है। वह अहं और अज्ञान के आधार पर काम करता है।

शिष्य—और भौतिक जगत् में कौन-सी शक्तियां हैं जो भगवान् के अंधकारमय पक्ष से मेल खाती हैं ?

श्रीअरविंद—इन सत्ताओं को तात्त्विक सत्ताएं या अंधकारमय तात्त्विक सत्ताएं कह सकते हैं। वे सत्ताओं की जगह शक्तियां अधिक हैं। थीयोसोफिस्ट इन्हें एलीमेंटल्स कहते हैं। वे असुरों या राक्षसों की तरह व्यक्तिगत सत्ताएं नहीं हैं—वे अज्ञानमय शक्तियां हैं जो सूक्ष्म भौतिक लोक में काम करती हैं।

शिष्य—इनके लिये संस्कृत शब्द क्या है ?

श्रीअरविंद—जिन्हें भूत कहा जाता है वे शायद इनके सबसे अधिक नजदीक हैं।

शिष्य—तात्त्विक या एलिमेंटल शब्द से तो लगता है कि ये तत्त्वों द्वारा काम करती होंगी।

श्रीअरविंद—दो प्रकार की तात्त्विक शक्तियां हैं, एक शरारती, दूसरी निर्दोष। जिन्हें यूरोपीय 'नोम' कहते हैं वे इसी श्रेणी में आती हैं।

शिष्य—आपने कहा था कि रोगों की कुछ शक्तियां व्यक्तिरूप लेती हैं और कुछ नहीं।

श्रीअरविंद—मैंने ऐसा नहीं कहा। शायद मैंने कहा होगा कि बीमारियों के पीछे सचेतन सत्ताएं होती हैं। बीमारियां तो शक्तियों की गतिविधियां हैं।

शिष्य—आपने कहा था कि कुछ बीमारियां मनुष्य की जीवन-शक्ति पर पुष्ट होती हैं।

श्रीअरविंद—बीमारियां मनुष्य की जीवन-शक्तियों पर पुष्ट नहीं होतीं। हो सकता है कि कोई प्राणिक शक्ति मनुष्य की जीवन-शक्ति को चूस रही हो और उसका परिणाम हो बीमारी।

शिष्य—राक्षस, प्रमत्त, पिशाच आदि शक्तियों में आपस में क्या संबंध है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—राक्षस अपना मतलब सिद्ध करने के लिये उनका उपयोग करते हैं।

शिष्य—क्या बीमारियां प्रकृति के नियमों को भंग करने से नहीं आतीं ?

श्रीअरविंद—प्रकृति के नियमों से तुम्हारा क्या मतलब है ? ये नियम क्या हैं ?

शिष्य—जब आदमी कामनावश काम करता है तो ऐसी चीजें कर बैठता है जो शरीर के लिये जरूरी नहीं हैं जैसे अतिभोजन, कामकेलि आदि।

श्रीअरविंद—ऐसे कोई वैश्व नियम नहीं हैं। जिन लोगों ने लम्बी उम्र पायी है उनसे पूछो तो एक कहेगा कि वह इस कारण स्वस्थ रहा कि उसने, जिन्हें तुम प्रकृति के नियम कहते हो, उनका पालन किया था, कि वह न तो तमाखू का उपयोग करता है न शराब का। दूसरा कहेगा कि उसने लम्बी उम्र पायी है क्योंकि वह हमेशा एक जाम चढ़ाया करता है ! और इसी तरह और भी, कोई वैश्व नियम नहीं है।

शिष्य—लेकिन यह तो एक तथ्य है कि स्वास्थ्य के नियमों का पालन करने से मृत्यु-संख्या कम हो जाती है।

श्रीअरविंद—तुम अधिक-से-अधिक यह कह सकते हो कि जिन्हें तुम स्वास्थ्य के नियम कहते हो उनका पालन करने से यह संभव, अधिक संभव हो जाता है कि बीमारी कम हो। हम स्वास्थ्य के ये नियम इसलिये बनाते हैं क्योंकि मनुष्य अपनी भौतिक सत्ता की आवश्यकता से अपरिचित हैं। अगर शरीर में प्राणिक कामनाओं और मानसिक विचारों की बाधाएं न आयें तो वह अपनी आवश्यकता के अनुसार चुनाव कर सकता है।

शिष्य—यह एक प्रकार की सहजवृत्ति है।

अन्य शिष्य—पशुओं में यह मनुष्यों की अपेक्षा अधिक होती है।

श्रीअरविंद—तुम इसे सहजवृत्ति कह सकते हो लेकिन अगर तुम सचेतन हो तो यह सहजवृत्ति से कुछ अधिक होती है। यह भौतिक सत्ता में सच्ची चेतना होती है। यह पशुओं में मनुष्यों की अपेक्षा अधिक हो सकती है लेकिन वह पूर्ण नहीं होती। पशु को भोजन पर निर्भर रहना पड़ता है जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमेशा सुरक्षित नहीं होता इसलिये जब उसे भूख लगती है तो वह हमेशा ठीक चुनाव नहीं करता यद्यपि उसका चुनाव मनुष्य के चुनाव से ज्यादा ठीक होता है।

तुम जिन्हें नियम कहते हो वे केवल आदतें होती हैं। मैं ऐसे लोगों को जानता हूं जो स्वास्थ्य के सभी तथाकथित नियमों का पालन करते थे फिर भी रोगों से मुक्त न रह पाते थे। वे हमेशा कामना के बिना केवल शरीर की आवश्यकता के कारण ही खाते थे फिर भी हमेशा बीमार रहते थे।

शिष्य—एक संन्यासी जो केवल दूध और केले खाता था हमेशा बीमार रहता था।

अन्य शिष्य—संन्यासी और योगी भोजन को इतना महत्त्व क्यों देते हैं?

श्रीअरविंद—स्वास्थ्य के नियमों का पालन करने के लिये नहीं। उनका उद्देश्य होता है शरीर की आवश्यकताओं को और राजसिक वृत्तियों को कम करना। इसलिये वे भौतिक शरीर की जरूरतों को कम करना चाहते हैं। वे सात्त्विक भोजन करने की कोशिश करते हैं।

शिष्य—बहुत-सी चीजें स्वास्थ्यप्रद मानी जाती हैं पर संन्यासी उन्हें असात्त्विक कहकर रद्द कर देते हैं।

श्रीअरविंद—वे शाकाहारी होते हैं परंतु सभी शाक सात्त्विक नहीं होते।

शिष्य—फ्रांस में मैंने हिन्दुओं द्वारा सबसे अधिक निषिद्ध भोजन किया है और मुझे लगा कि भारत के शाकाहार से वह ज्यादा राजसिक न था।

श्रीअरविंद—मेरा भी यही अनुभव है। मेरा ख्याल है कि यह न्यूनाधिक रूप में मनोवैज्ञानिक तत्त्व है।

शिष्य—गीता ने तामसिक, राजसिक और सात्त्विक भोजनों की एक तालिका दी है।

श्रीअरविंद—लेकिन गीता की तालिका भोजन की विशेषताओं के बारे में है, भोजन खाने के बारे में नहीं।

लेकिन वास्तव में रोगों के बारे में एक प्राणिक संतुलन है जिसका हर एक को अपने लिये पता लगाना होता है, वह हर एक के लिये एक-सा नहीं है। और समुचित प्राणिक संतुलन पा लेने के बाद भी, बशर्ते कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनुवंशिकता में कोई गड़बड़ न हो, हम यही कह सकते हैं कि रोग से बचने की बहुत बड़ी संभावना है। लेकिन इससे भी मनुष्य को पूर्ण रोगमुक्ति नहीं मिल पाती। जो लोग किसी तरह इस संतुलन को पा भी लेते हैं, जब उनपर किसी रोग का आक्रमण होता है, चाहे वह आनुवंशिकता के कारण ही क्यों न हो, वे अचानक और आसानी से रोग के शिकार हो जाते हैं।

शिष्य—क्या भौतिक विज्ञान के बनाये हुए खनिज और विश्लेषित भोजन पर रह सकना संभव है ?

अन्य शिष्य—नहीं यह संभव न होगा। भौतिक विज्ञान हमेशा आगे बढ़ता जाता है और उसे पता लगता है कि उसे और आगे बढ़ना है। जब उन्होंने प्रोटीन का पता लगाया तो उन्होंने सोचा कि सभी प्रोटीनें एक समान होती हैं बाद में पता चला कि हर एक का भोजन-मूल्य अलग है। हमेशा ऐसा ही होता रहेगा।

अन्य शिष्य—और जब जिलेटिन का आविष्कार हुआ तो लोगों ने सोचा कि अब तो सस्ते पौष्टिक भोजन की समस्या हल हो गयी क्योंकि जिलेटिन में नाइट्रोजन होती है। यह अस्पताल के रोगियों को दी गयी लेकिन उनमें से कुछ तो मर गये। तब पता लगा कि इसमें विटामिन तो है ही नहीं।

अब एक नया विचार यह आया है कि आदमी सूर्यालोक पर जी सकता है।

अन्य शिष्य—और जब लू लग जाये तो उसका अर्थ होगा बदहज्मी ! (हंसी)

अन्य शिष्य—चूंकि विज्ञान अभीतक कृत्रिम भोजन तैयार करने में सफल नहीं हुआ है इसका यह अर्थ नहीं है कि आगे भी सफलता नहीं मिलेगी।

अन्य शिष्य—क्या भोजन के बिना जिंदा रहना संभव है ?

श्रीअरविंद—हां, यह संभव है, जब मैंने चेट्टियार गृह में रहते हुए तेईस दिन का उपवास किया था तो मैंने समस्या का हल, लगभग, पा ही लिया था। मैं हमेशा की तरह आठ घंटे रोज चलता था। मैं मानसिक कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियमित रूप से करता था, साधना भी चलती रही और मैंने देखा कि तेईस दिन के बाद भी दुर्बलता बिलकुल न थी लेकिन शरीर में मांस घटने लगा और मुझे कोई ऐसी तरकीब न मिली जिससे शरीर में उसकी कमी को पूरा किया जा सके।

और उपवास तोड़ते समय भी मैंने सामान्य नियमों का पालन नहीं किया और थोड़ा-थोड़ा करके खाना शुरू नहीं किया। मैंने फिर से वही मात्रा खानी शुरू की जो उपवास से पहले खाता था।

मुझे महात्मा का उपवास का तरीका बिलकुल ठीक नहीं लगता जिसमें लोगों को पहले से सूचना दी जाती है और सब तरह के लोगों को अपने सुझाव देने का अवसर दिया जाता है। एक बार मैंने जेल में भी उपवास करने की कोशिश की थी लेकिन वह केवल दस दिन के लिये था जिसमें मैं तीन दिन में एक बार सोता था। मेरा भार तो दस पौंड कम हो गया लेकिन मैं उपवास से पहले की अपेक्षा अंत में ज्यादा बल का अनुभव करता था। उपवास के बाद मैं इतना भार उठा सकता था जो पहले संभव न था। निद्रा पर विजय पाने के लिये मैंने न सोने का अभ्यास शुरू नहीं किया था। उन दिनों साधना का दबाव था और मैं सोने की अपेक्षा साधना करना ज्यादा पसंद करता था।

शिष्य—क्या आपका ख्याल है कि भोजन के बिना काम चला सकना संभव है ?

श्रीअरविंद—मुझे लगता है कि पूरी तरह संभव है, मुझे इसकी चाबी नहीं मिली। चूंकि मुझे सफलता नहीं मिली, इसलिये ऐसा कोई कारण नहीं है कि किसी और को भी न मिले।

शरीर को प्राणिक ऊर्जा बड़ी हदतक पहुंचायी जा सकती है। ऐसा लगता है कि प्राणिक भौतिक भाग को प्राणिक ऊर्जा भोजन से ही मिलती है। इसकी भी कोई चाबी होनी चाहिये। मैंने लगभग नौ बटे दस समस्या तो हल कर ली थी।

शिष्य—क्या मनुष्य के लिये यह संभव है कि वह प्राणिक ऊर्जा पशुओं से प्राप्त कर सके ? मेरे बाबा कहा करते थे कि वे जिस घोड़े पर रोज बैठा करते थे उससे उन्हें प्राण-शक्ति मिलती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—हां, यह संभव है। तुम मनुष्य पर सवारी किये बिना भी उससे प्राण-शक्ति ले सकते हो। लेकिन ज्यादा आसान तरीका है वैश्व प्राणमय लोक से ऊर्जा खींचना। वह सारे समय तुम्हारे चारों ओर रहती है। उसे पाने के दो तरीके हैं, एक तो यह कि तुम अपना जोर लगा कर वैश्व ऊर्जा अपने अंदर खींचो और दूसरा यह कि तुम निष्क्रिय रहो और उसे अपने अंदर प्रवाहित होने दो। पहले मैं खींचा करता था पर अब मैं उसकी ओर खुला रहता और उसे अपने अंदर प्रवाहित होने देता हूं।

शिष्य—क्या विश्व-ऊर्जा की अपेक्षा मनुष्य से शक्ति खींचना ज्यादा आसान है ?

श्रीअरविंद—इतना आसान नहीं जितना तुम सोचते हो। किसी मनुष्य से शक्ति खींचने या किसी और को शक्ति देने के लिये कुछ शर्तें हैं। लेकिन वैश्व में से लेना कहीं ज्यादा आसान है। तथ्य तो यह है कि मनुष्य में प्राण-शक्ति सीमित होती है जब कि वैश्व में अक्षय भंडार है। अगर तुम वैश्व में से खींचे बिना अपनी शक्ति किसी और को देते हो तो तुम थक जाते हो।

शिष्य—तिब्बती बाबा की उम्र के बारे में बहुत-सी कहानियां चलती हैं।

श्रीअरविंद—वे कितने वर्ष के हैं ?

शिष्य—कुछ पता नहीं। विभूति भूषण ने उनसे पूछा था तो उन्होंने कहा था कि वे पलासी के युद्ध के समय जवान थे। कहते हैं उन्होंने अपना बंगाली चोला छोड़कर तिब्बती शरीर अपना लिया।

श्रीअरविंद—परंतु यह भौतिक अमरता नहीं है।

शिष्य—वे बहुत बूढ़े मालूम होते हैं, उनकी त्वचा काली और झुर्रीदार है। जब मैं उनसे मिलने गया तो वे लेटे हुए थे और ऐसा लगता था कि वे उठ भी न सकेंगे लेकिन वे स्वस्थ आदमी की तरह उचक कर उठ बैठे।

श्रीअरविंद—इसका मतलब यह है कि वे अपना शरीर अपनी प्राणिक शक्ति के सहारे बनाये रहते हैं, यह हमेशा संभव है।

शिष्य—लेकिन कहते हैं कि उन्होंने दीर्घायु कुछ ऐसी दवाइयों की सहायता से पायी है जिससे तिब्बती लोग परिचित हैं।

श्रीअरविंद—यह भी संभव है। मेरा ख्याल है कि हिमालय में ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दवाइयां हैं जो दीर्घायु देती हैं और जिनसे वहां रहनेवाले और साधु परिचित हैं।

लेकिन् प्राणिक ऊर्जा देने से भी शरीर पूरी तरह रोग के लिये असंक्राम्य नहीं हो सकता। अगर तुम सावधान न रहो या अगर कोई ऐसी दुर्घटना हो जाये जिसका तुम्हें पूर्वाभास न हो तो तुम रुग्ण हो सकते हो।

२६-६-१९२६

शिष्य—कल आपने छोटे और बड़े देवताओं की बात की थी।

श्रीअरविंद—मैं एक भेद करना चाहता था अन्यथा मैं किसी और शब्द का उपयोग करता।

शिष्य—इन दोनों में फर्क क्या है ?

श्रीअरविंद—मेरा मतलब उन छोटे देवों से था जो प्रकृति में सामंजस्य के तत्त्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनमें तुम प्रकाश की ओर सीधी नहीं, मुक्त गति पाते हो। वे प्रकाश से प्रकाश की ओर जाते हैं। यह असुर की गति की न्याईं है। असुर की गति विकृत और उग्र, हिंसापूर्ण है, वह भगवान् के राज्य को उग्रता के साथ हथिया लेना चाहता है।

बड़े देवताओं से मेरा मतलब है ऐसे देवता जो वैश्व अभिव्यक्ति का नियंत्रण करते हैं। वस्तुतः वे वेद की भाषा में 'एक की शक्तियां' हैं। वे अलग हैं।

शिष्य—उदाहरण के लिये इन्द्र।

श्रीअरविंद—जब मैं उनकी बात कर रहा था तो मैं किसी नाम के बारे में नहीं सोच रहा था। इनका पौराणिक देवों के साथ कोई संबंध नहीं है।

शिष्य—क्या हम वैदिक देवों को ले सकते हैं ?

श्रीअरविंद—मैं वैदिक देवों के बारे में नहीं सोच रहा था। छोटे देव और असुर परम प्रभु की शक्तियां नहीं हैं। वे अंतरात्मा की शक्तियां और वैश्व प्राण के प्रकृति-स्तर पर रूपायन हैं।

शिष्य—क्या वह स्वर्ग जिसमें, माना यह जाता है, मनुष्य की आत्मा मृत्यु के बाद आराम से भोग करती है, निम्नतर देवों के स्तर से भिन्न है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—धर्मों का स्वर्ग बिलकुल अलग चीज है। वह प्राणमय लोक का स्वर्ग है।

लेकिन इस धार्मिक स्वर्ग के अलावा, प्राणमय लोक अपने ही सम्मोहन और भव्यता से भरा है। मैं उस विकृत विरोधी लोक की बात नहीं कर रहा जो सामान्यतः हमारे पार्थिव लोक के संपर्क में आता है। इसके अतिरिक्त ऐसी सत्ताएं हैं जिनमें अपनी भव्यता, महानता और ज्ञान होता है। अधिकतर काव्य और कला उसी लोक से आते हैं।

शिष्य—जैसा कि आपने कहा अगर वे विरोधी सत्ताएं नहीं हैं तो वे यहां पर महान् वस्तुओं को अभिव्यक्त कर सकती हैं।

श्रीअरविंद—लेकिन सामान्यतः वे दर्प से भरी और बहुत ज्यादा आत्मकेन्द्रित होती हैं।

शिष्य—लेकिन उनमें से कुछ मनुष्यों द्वारा अभिव्यक्त होती हैं।

श्रीअरविंद—हां, उनमें से कुछ, लेकिन अधिकतर जब तुम साधना करने में लगे हो तो तुम्हें विरोधियों से ही पाला पड़ता है।

शिष्य—हमारे और उनके विकास के विधान में क्या फर्क है?

श्रीअरविंद—उनमें मानव जगत् की तरह कोई विकास का विधान नहीं है। उदाहरण के लिये वे मनुष्य की तरह भौतिक चेतना से सीमित नहीं हैं। उनमें मनुष्य की अपेक्षा अधिक वैश्व गति है। उनका विकास बस दो ही तरीकों से हो सकता है। मेरा ख्याल है कि वे भी अपने-आपको ज्यादा ऊंची सत्ताओं में बदलना चाहते हैं। वे अपने ही बल पर एक प्रकार की तपस्या से यह कर सकते हैं और उच्चतर स्थिति में पहुंच सकते हैं या फिर सेवा द्वारा, यानी वे अपनी शक्ति को सत्य की सेवा में लगाकर इस तरह बदल सकते हैं।

शिष्य—वे मनुष्य को क्यों पकड़ना चाहते हैं?

श्रीअरविंद—पहले-पहल तो वे मनुष्य पर प्रभाव डालते और उसपर अधिकार जमाते हैं ताकि अपनी शक्ति प्रकट कर सकें। और भौतिक लोक पर अधिकार पा सकें। दूसरे वे मनुष्यों के रोग दूर करके और भगवान् का रूप धरके पूजा करवाना चाहते हैं, तीसरे वे केवल अधिकार नहीं जमाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्कि भौतिक जगत् का भोग करने के लिये मनुष्यों पर हावी हो जाते हैं।

शिष्य—ये शक्तियां विशेष रूप से ऐसे स्थानों की ओर क्यों आकर्षित होती हैं जहां लोग आध्यात्मिक प्रयास कर रहे हों।

श्रीअरविंद—पहले तो यह कि जब तुम अपने-आपको ऊपर के किसी सत्य की ओर खोलते हो तो इसी प्रयास द्वारा सामान्य आदमी की अपेक्षा ज्यादा प्रबल रीति से उन लोकों की ओर भी खोल देते हो जो पीछे हैं। इससे इन शक्तियों को अवसर मिल जाता है, दूसरे, वे इस तरह के किसी भी प्रयास को असफल कर देना चाहती हैं, तीसरे उनमें कुछ ऐसी शक्तियां होती हैं जिनमें तुम इन दोनों वृत्तियों का सम्मिश्रण पाते हो, उनमें से कोई चीज आध्यात्मिक वातावरण को पसंद करती और उसमें प्रवेश करती है जब कि कोई और चीज उसका विरोध करती है।

शिष्य—आदमी अपने-आपको इन शक्तियों के प्रति कैसे खोलता है?

श्रीअरविंद—अलग-अलग तरीके हैं। उदाहरण के लिये, महत्त्वाकांक्षा या काम वासना, लोभ, दर्प, घमंड और इसी तरह की बहुत-सी चीजें हैं जिनमें से होकर ये शक्तियां मनुष्य पर प्रभाव डाल सकती हैं।

तेओं का कहना था कि प्राणिक जगत् पृथ्वी पर उतर आया है और सत्य तथा इन शक्तियों में युद्ध अवश्यम्भावी है। या तो सत्य जीतेगा या वे। युद्ध के बाद—यह अन्तिम युद्ध होगा—उनमें से एक निवृत्त हो जायेगा। अभी मनुष्य अंतरात्मा की शक्ति नहीं, युद्ध का क्षेत्र है। ऐसे उदाहरण हैं जहां मनुष्य इन शक्तियों का अवतार होता है।

१३-७-१९२६

शिष्य—जब 'क' गड़बड़ा गया था तो आपने कहा था कि एक बड़ी और शक्तिशाली प्राणिक सत्ता अभिव्यक्ति के लिये आयी थी। वह 'क' के प्राणिक स्तर को संगठित करने के लिये जरूरी थी। प्राणिक स्तर के संगठित करने से आपका क्या मतलब है?

श्रीअरविंद—उस स्तर पर कार्यान्वयन के लिये सामंजस्य लाने के लिये। प्राणिक सत्ता प्रभावकारी उपलब्धि के लिये है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—अगर वह उसके प्राणिक जीवन को संगठित कर पाती तो उसका क्या स्वरूप होता ?

श्रीअरविंद—वह उपलब्धि की बड़ी शक्ति ले आती है, एक ऐसी शक्ति जो आंतरिक परिवर्तन ला सकती है और फिर तुम्हारे इर्द-गिर्द परिवर्तन और फिर घटनाओं को बदलने की शक्ति। अगर ये सत्ताएं अपने-आपको चरितार्थ कर सकतीं तो साधना की सभी कठिनाइयां गायब हो जातीं।

शिष्य—क्या अतिमानस की अभिव्यक्ति के लिये हर लोक में ऐसी शक्तियों का उतरना जरूरी है ?

श्रीअरविंद—नहीं, जरूरी नहीं है।

शिष्य—क्या ये सत्ताएं अतिमानस को पहचानती हैं ?

श्रीअरविंद—इन सत्ताओं को अतिमानस का ज्ञान नहीं होता। लेकिन चूंकि उनमें मुक्त बुद्धि होती है अतः उन्हें अतिमानस के प्रभाव में लाया जा सकता है और अगर वे अपने-आपको अतिमानस के अर्पित कर सकें तो वे साधन-रूप में सहायक हो सकती हैं।

शिष्य—क्या यह सच है कि यह शक्ति 'क' के अंदर बहुत बलपूर्वक आ रही थी और अपने लोक के नियमों को आरोपित करने के लिये बड़ा जोर लगा रही थी और 'क' अपने भौतिक लोक के नियमों की परवाह किये बिना उन्हें व्यक्त होने दे रहा था ?

श्रीअरविंद—हां, जैसा कि मैंने कहा, इन सत्ताओं में मुक्त बुद्धि होती है और वे भौतिक जगत् के नियमों से बंधी नहीं होतीं। उनमें दुनियादारी की समझ नहीं होती। उनके आगे एक लक्ष्य होता है और उसे पूरा करने के लिये एक बड़ी शक्ति। वे बस अपने चरितार्थ होने के लिये नीचे जोर डालती हैं। इस तरह की शक्तियां क्रांतियों और बड़े आन्दोलनों के पीछे होती हैं। वे इस बात की परवाह नहीं करतीं कि उनकी प्रक्रिया में कितना टूटता-फूटता है। हम इतिहास में देखते हैं कि कुछ प्रतिभाशील लोग इस तरह की शक्तियों को अपने अंदर रख पाये थे। कभी-कभी जब सब कुछ टूट-फूट जाता है और नष्ट हो जाता है तो मन आता और अपना दबाव डालता और चीजों को इकट्ठा करके किसी तरह का सामंजस्य लाने की कोशिश करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः जो व्यक्ति इन शक्तियों को ग्रहण करना चाहता है उसका भौतिक मन मजबूत होना चाहिये जो भौतिक जगत् की संभाव्यताओं से परिचित हो और अतिमानस का प्रकाश भी पाये। अगर स्वयं अतिमानस आ जाये तब तो बात ही अलग है क्योंकि वह तो सब कुछ जानता है और अगर तुम उस शक्ति को अतिमानस प्रकाश के नीचे रख सको तो तुम उसका साधन-रूप में उपयोग कर सकते हो।

शिष्य—वह शक्ति अब कहां चली गयी ?

श्रीअरविंद—मुझे नहीं मालूम, जब वह पांडिचेरी से गया तब तो शक्ति थी लेकिन वह अपना पता मुझे नहीं दे गयी ! तुम प्राणमय लोक के डाकघर को लिख सकते हो ! (हंसी)

शिष्य—जी, कोई दूसरा उसे उतार लाने का प्रयास कर सकता है और इस प्रयास में टूट सकता है ?

अन्य शिष्य—क्या हम इन शक्तियों को देख और जान सकते हैं ?

श्रीअरविंद—हां, संभव तो है। अगर तुम्हारे अंदर कोई चीज इन लोकों के संपर्क में आ सके तो तुम उन्हें देख और जान सकते हो। मैं आशा करता हूं कि तुम यह नहीं मानते कि तुम्हारा भौतिक शरीर ही तुम्हारी एकमात्र सत्ता है। इन शक्तियों का अपना लोक होता है और वे सदा तुम्हारी धरती के साथ व्यस्त नहीं रहतीं। तुम्हें धरती का महत्त्व बहुत बढ़ा-चढ़ाकर न देखना चाहिये।

हमारे लिये भी मनुष्य का बाहरी भौतिक जीवन ही बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है। इसका यह मतलब नहीं कि पृथ्वी-लोक महत्त्वपूर्ण नहीं है। तुम उसमें जो रख सको उसके अनुसार वह महत्त्वपूर्ण है अन्यथा मनुष्य का भौतिक जीवन चींटी के भौतिक जीवन से किस तरह ज्यादा महत्त्वपूर्ण है ? किसी उच्चतर आध्यात्मिक शक्ति को उतारने के लिये तुम्हें उसके लिये बैठना होगा, उसे नीचे से बुलाना होगा और शक्ति को अपने अंदर धारण करना होगा। तुम्हें उसे यह काम करने देना होगा कि वह तुम्हारी सत्ता को संगठित करे और उसे रूपांतरित कर दे। तब तुम क्रिया के बारे में सोच सकते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिये मैं कहता हूं कि मुझसे यह आशा करना मूर्खतापूर्ण है कि मैं बंगाल विधान सभा में जाकर वहां काम करूंगा। लेकिन शायद तुम्हारा भौतिक मन सचेतन है कि बंगाल विधान सभा में जाना और सब कामों की अपेक्षा ज्यादा महत्त्वपूर्ण है ! लेकिन हो सकता है कि तुम्हारी अंतरतम सत्ता के पास उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण काम हो।

शिष्य—आपने कहा कि भौतिक लोक में मनुष्य का जीवन इतना अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है। लेकिन मनुष्य के अंदर इतनी सारी अच्छी चीजें हैं। हम इनकी तुलना चींटी से कैसे कर सकते हैं ?

श्रीअरविंद—भौतिक मनुष्य चींटी की अपेक्षा किस तरह अधिक श्रेष्ठ है ?

शिष्य—उसमें साहित्य है, कला है।

श्रीअरविंद—मानव जाति कला के लिये संगठित नहीं है !

शिष्य—और फिर कला भी तो भौतिक स्तर से नहीं आती !

अन्य शिष्य—आपने ऐसी प्राणिक सत्ताओं के बारे में कहा था जो अपने निजी लोक में रहती हैं। क्या वे अपने लोक में भी आपस में लड़ती-झगड़ती हैं ?

श्रीअरविंद—हां, बाइबल में फरिश्तों और शैतानों के संघर्ष की बात कही गयी है उसका यही मतलब है। मैंने 'क' के संबंध में जिस प्राणिक सत्ता की बात की थी वह विरोधी प्राणलोक की न थी। वह प्राणमय लोक के उच्चतर स्तर की थी।

शिष्य—अतिमानस का क्या अर्थ है ? क्या यह पराशक्ति है ?

श्रीअरविंद—पराशक्ति अतिमानस नहीं है। अतिमानस शक्ति के ऊपर उसके अन्य क्षेत्र भी हैं जैसे आनंदमय चेतना। तुम कह सकते हो कि अतिमानस भगवान् की संगठनकारी शक्ति है जो समस्त अभिव्यक्ति के पीछे है। अतिमानस समस्त वैश्व गतिविधि को समर्थन देता है।

शिष्य—क्या हम कह सकते हैं कि अतिमानसिक शक्ति भी हमारी अपनी होती है। जैसे हम 'मेरा मन' कहते हैं उसी तरह 'मेरा अतिमानस' भी कह सकते हैं क्या ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—'तुम्हारा' मन क्या है ? यह किसी विशेष प्रयोजन के लिये वैश्व मन का एक संगठन मात्र है। जबतक तुम अज्ञान में हो तुम 'मैं' 'मैं' और 'मेरा' 'मेरा' करते रहते हो और तुम्हें इससे अधिक और किसी चीज में रस नहीं आता। लेकिन अतिमानस में पहुंचने पर तुम्हें पता लगता है कि यह सब मिथ्या है। तब तुम अपनी आत्मा को पहचानते हो, जीव अपने-आपको जानता है और प्रकृति के ढांचे को भी देखता है। तुम ऊपर की उच्चतर शक्ति को भी देख पाते हो अतः वही भूल नहीं दोहराते जो मन करता है। जब योगी 'मेरी शक्ति' या 'मेरा काम' कहता है तो यह केवल बोलने की सुविधा के लिये। वह सारे समय उस दिव्य शक्ति के बारे में सचेतन रहता है जो उसके द्वारा काम करती है "मेरे द्वारा काम करनेवाली दिव्य शक्ति" कहना आडम्बरपूर्ण मालूम होता है।

शिष्य—'मैं' और 'मेरा' कहे बिना तो बोलना ही असंभव है।

अन्य शिष्य—क्या हम यह नहीं कह सकते हैं कि अतिमानस अब भी हर जगह काम कर रहा है क्योंकि वह सबके पीछे है ?

श्रीअरविंद—इस समय विश्व में अतिमानसिक शक्ति कार्य नहीं कर रही। वह इस वैश्व गति को समर्थन देती है। लेकिन वह प्रत्यक्ष रूप से कार्य नहीं कर रही। अगर अतिमानसिक शक्ति न होती तो तुम जड़ भौतिक शक्तियों के साथ उस तरह ठीक-ठीक काम न कर पाते जैसे अभी कर रहे हो। तुम यह इस कारण कर पाते हो कि अतिमानस जड़ में भी है।

शिष्य—क्या अतिमानस यंत्र या साधन है ?

श्रीअरविंद—वह एक चेतना है और अगर तुम उस चेतना को मन, प्राण, शरीर में ला सको तो तुम यंत्रों को पूर्ण बना सकते हो।

शिष्य—क्या समस्त परा प्रकृति को अभिव्यक्त करना मनुष्य के लिये संभव नहीं है ? जीवन में आनंद-स्तर क्या है ?

श्रीअरविंद—शायद यह भविष्य में संभव हो जब अतिमानस जीवन में स्थायी उपलब्धि बन जाये लेकिन मनुष्य का वर्तमान संगठन तो उसे सह सकने में एकदम असमर्थ है। वह मनुष्य के लिये अत्यधिक अनंत है। मैं मानसिक अनंत की बात नहीं कह रहा। मैं अपने निजी उच्चतम स्तर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चिदानंद की बात कह रहा हूं। तुम कल्पना कर सकते हो कि मनुष्य की क्या हालत होगी यदि अनंत सच्चिदानंद पूरा-का-पूरा उसके ऊपर उतर आये जब कि तुम जानते हो कि मन के अंदर उसकी एक बूंद भी आ जाये तो आदमी रोना, गाना, नाचना, उड़ना शुरू कर देता है ! जब आनंद का एक कण मन में आ जाता है तो तुम्हें परमहंस, जड़, बाल, उन्मत्त और पिशाच-गति प्राप्त होती है।

शिष्य—शायद एक खण्ड के आने से ही मनुष्य इस तरह अस्त-व्यस्त हो जाता है। उसकी प्रकृति की सभी अशुद्धियां आनंद के साथ ऊपर उठ आती हैं।

श्रीअरविंद—हां, अगर उच्चतम अतिमानस उतर आये तो वह तो सब कुछ जानता होगा। उसे आवश्यक वर्गों, अवस्थाओं, चरणों का, काल का, सभी का पता होगा।

१७-८-१९२६

शिष्य—गीता जिस अक्षर चेतना के बारे में कहती है वह क्या है ?

श्रीअरविंद—वह निर्विकार निर्वैयक्तिक ब्रह्म चेतना है—वह निश्चलता, समता और वैश्व निष्क्रियता का आधार है। वह परात्पर, पुरुषोत्तम का एक रूप है।

शिष्य—साधना में इस चेतना को पाने से क्या लाभ होता है ?

श्रीअरविंद—एक निर्वैयक्तिक मनोवृत्ति, निश्चलता तथा समता—यह तुम्हें प्रकृति से और समस्त बंधनों से मुक्ति दिला सकता है।

शिष्य—परम पुरुष निर्वैयक्तिक परिस्थिति या वृत्ति क्यों अपनाते हैं ?

श्रीअरविंद—क्योंकि यह सृष्टि के लिये जरूरी है। वैश्व प्रकृति के लिये सहारे के रूप में, सभी वैश्व शक्तियों के खेल को बनाये रखने के लिये यह जरूरी है, वे अक्षर के रूप में सभी को समान रूप से समर्थन देते हैं।

शिष्य—आपने देव-लोक की बात की थी। हम उस लोकतक कैसे पहुंच सकते हैं ?

श्रीअरविंद—उसकी चाबी किसी कौशल में है, तुम्हें वहांतक चढ़ना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—वहांतक पहुंचने की क्या शर्तें हैं ?

श्रीअरविंद—शर्तें ? कोई शर्तें नहीं हैं। मुझे नहीं लगता कि अगर मैं तुम्हें कुछ शर्तें बताऊं भी तो तुम्हें कोई मदद मिलेगी। लो, पहली शर्त यह है कि तुम **सच्चे** देवोंतक अपने अहंकार को लेकर नहीं पहुंच सकते।

शिष्य—और प्राणिक देव ?

श्रीअरविंद—देवता हर लोक में हैं। 'देव' बहुत विस्तृत परिभाषा है और उसका कोई बंधा हुआ अर्थ नहीं है। वह जरा असंयत-सा शब्द है।

प्राणिक देव तुम्हें बल दे सकते हैं, तुम्हारी आर्थिक तथा अन्य कठिनाइयां दूर कर सकते हैं, हां, किसी शर्त पर।

शिष्य—शर्त कैसी ?

श्रीअरविंद—उदाहरण के लिये वे तुम्हें शक्ति दे सकते हैं पर तुम्हें उनकी पूजा करनी और शर्तें पूरी करनी होंगी।

शिष्य—असुर भी तो शक्ति देता है।

श्रीअरविंद—असुर तुम्हें कुछ नहीं देता। वह अपने प्रयोजन के लिये तुम्हारा उपयोग करता है और जब तुम्हारा काम नहीं रहता तो तुम्हें उठा फेंकता है।

लेकिन प्राणिक देवता कभी-कभी आध्यात्मिक जीवन के सहायक होते हैं। तुम्हें उनके परे जा सकना चाहिये। लेकिन अगर तुम उनके पार जाना चाहो तो वे तुम्हारा विरोध करते हैं, तुम्हारे रास्ते में रोड़े अटकाते और तुम्हें अपने ही वश में रखने की कोशिश करते हैं। जब कहा जाता है कि इन्द्र ऋषियों के पास अप्सराएं भेजते थे तो इसका यही मतलब है।

शिष्य—मेरा ख्याल था कि यह एक कहानी है।

श्रीअरविंद—यह तुम्हारे अंदर यूरोपीय मानस है जो तुमसे ऐसी बात कहलवाता है। रूप कहानी का है परंतु उसके पीछे सत्य है। उदाहरण के लिये विश्वामित्र और इन्द्र की कहानी में आध्यात्मिक सत्य है। अगर तुम उनकी कठोर परीक्षा में से सफल होकर निकलो तो देवता तुम्हें अपना अतिक्रम करने की स्वीकृति देते हैं।

शिष्य—असुर भी तो दिव्य कुल के हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—हां, और वे अपने ही तरीके से दिव्य प्रयोजन के लिये काम करते हैं।

शिष्य—क्या हम कह सकते हैं कि सच्चे देवता भगवान् की शक्तियां हैं?

श्रीअरविंद—वे भगवान् के व्यक्तित्व हैं।

शिष्य—वे किस लोक के हैं?

श्रीअरविंद—वे अतिमानसिक और उससे ऊपर के लोकों के हैं।

शिष्य—अतिमानस से भी ऊपर के?

श्रीअरविंद—हां, क्यों? क्या तुम समझते हो कि अतिमानस ही सबसे ऊंचा है?

शिष्य—कहते हैं कि परम सच्चिदानंद चेतना सबसे ऊंची है।

श्रीअरविंद—सबसे ऊंचा तो वह है जिसे हम पुरुषोत्तम कहते हैं लेकिन मनुष्य केवल आनंदतक ही जा सकता है।

शिष्य—वैष्णवों के कृष्ण किस लोक के हैं?

श्रीअरविंद—कृष्ण से तुम्हारा क्या मतलब है?

शिष्य—वैष्णवों के अनुसार कृष्ण आनन्दमय लोक के हैं। और उनके अनुसार यह अक्षर से परे, बहुत दूर है।

शिष्य—क्या यह सच है कि अगर हम देवोंतक पहुंचना चाहें तो हमें चैत्य द्वारा जाना होगा?

श्रीअरविंद—यह लो! तुम्हें एक और चाबी मिल गयी।

शिष्य—मैं और भी जानना चाहता हूं ताकि एक और चाबी मिल जाये। मैं जाकर गलत दरवाजों पर खटखटाना नहीं चाहता।

श्रीअरविंद—अगर तुम चाहो तो एक और भी तरीका है। अपने सबसे ऊंचे जीव को पहचानो जो तुम्हारा अहं भी नहीं है और आत्मा भी नहीं। तब तुम देव लोक में जा पहुंचोगे।

शिष्य—कुछ की मान्यता है कि हमारा 'स्व' जीव है और अगर हम उस स्तरतक पहुंच जायें तो देवों की सहायता पाते हैं।

शिष्य—क्या मनुष्य का उच्चतम 'स्व' देवता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्रीअरविंद—मनुष्य देव नहीं है लेकिन देवलोकतक जा सकता है और वहां उसका जीव होता है जो भगवान् का एक अंश है। अगर तुम कामना के साथ उनके द्वार खटखटाओ तो वे तुम्हें प्राणिक देवों का रास्ता दिखा देते हैं।

शिष्य—कहा जाता है कि कृष्ण का नीला प्रकाश होता है जिसके पीछे से बिजली चमकती है।

श्रीअरविंद—नीला रंग विशेष रूप से आध्यात्मिक लोक का और कृष्ण का है। कृष्ण अपने दिव्य व्यक्तित्व की पूर्णता में आनंदमय लोक के हैं और वहीं पर पूर्णता मिलती है।

शिष्य—हिन्दू जिन देवों की पूजा करते हैं वे किस लोक के हैं?

अन्य शिष्य—क्या वे प्राणमय लोक के हैं?

श्रीअरविंद—नहीं, उन्हें प्राणिक रूप से पूजा जाता है पर उनकी कल्पना उससे कहीं अधिक, साधारणतः उच्चतर मनोमय लोक की है।

जब यूरोपीय मन जड़वाद को छोड़ता है तो प्राणिक देवों को ही सच्चे देव मान लेता है।

शिष्य—क्या जड़-भौतिक के नियम बदलते हैं?

श्रीअरविंद—भौतिक कोषाणु बदलते हैं और एक चीज जो पहले पीड़ा देती थी, तीव्र आनंद देने लगती है।

शिष्य—यह जड़-भौतिक में अभिव्यक्त जीवन के अंदर हो सकता है लेकिन विशुद्ध जड़ में, यानी भौतिकी और रसायन में?

श्रीअरविंद—क्यों नहीं? हम मानव चेतना के भौतिक भाग के बारे में बात कर रहे हैं। नियम या विधान क्या है? इसका मतलब है अमुक परिस्थितियों में वैश्व शक्तियों में एक तरह का संतुलन। अगर तुम परिस्थितियां बदल दो तो तुम्हें परिणाम भी अलग-अलग मिलेंगे, तुम जिसे नियम कहते हो उसे किसी चमत्कार के द्वारा नहीं बदला जाता।

शिष्य—रेडियम का विघटन किसी भी जाने हुए तरीके से प्रभावित नहीं होता।

श्रीअरविंद—इसका मतलब यह है कि तुम अभीतक विद्युदणु के पीछे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं पहुंचे हो । विद्युदणु ही तो अंतिम चीज नहीं है।

शिष्य—कहते हैं विद्युदणु में जीवन तो होता है पर उम्र नहीं होती। नये और पुराने विद्युदणुओं को अलग नहीं किया जा सकता।

श्रीअरविंद—क्या तुम मानते हो कि घड़ी में जीवन होता है ?

शिष्य—बच्चे मानते हैं !

श्रीअरविंद—और मैं बच्चों के साथ सहमत हूं। घड़ियां अलग-अलग व्यक्तियों के साथ अलग-अलग तरह से व्यवहार करती हैं। और यह भी निश्चित है कि मनुष्य के विचार और इच्छा-शक्ति को उत्तर देती हैं।

शिष्य—तो घड़ियों में जीवन होता है !

श्रीअरविंद—तुम्हें एक के बाद एक आश्चर्य की बातें मिलती जा रही हैं।

शिष्य—फूलों में आत्मा होती है, घड़ियों में जीवन होता है ! यह तो चकरानेवाली बातें हैं। मैंने सुना है कि मोटरों में भी जीवन होता है।

श्रीअरविंद—हां, इंजनों और औजारों में भी।

शिष्य—'धातुओं' में थकान क्या उसके जीवन का लक्षण है ?

श्रीअरविंद—थकान जीवन का लक्षण है। धातुओं में भी चेतना होती है और मन भी। जीवन हर जगह है।

२२-८-१९२६

श्रीअरविंद—(एक शिष्य की ओर मुड़कर) कल तुम देवों के रूप के बारे में पूछ रहे थे कि क्या उनके अपने लोक में निश्चित रूप हैं। मैं उसके बारे में सोच रहा था और मुझे लगता है कि उनके निश्चित रूप हैं।

शिष्य—कहते हैं कि हर देव का अपना नित्य रूप होता है।

श्रीअरविंद—मुझे भी लगता है, लेकिन तुम उसे तबतक नहीं देख सकते जबतक तुम मानव चेतना से एकदम बाहर न हो जाओ। उनके ऐसे रूप हैं जिनसे वे अपने-आपको अन्य देवों से अलग कर सकते हैं और वे सचमुच जो हैं उसे प्रकट कर सकते हैं। ऐसा लगता है कि इस मामले में तीन बातें आती हैं। पहले यह कि हम जिस रूप को देखते हैं वह नित्य रूप का प्रतिबिंब हो, हो सकता है कि यह पूरा-पूरा न हो और सब लोकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये एक समान न हो। वह जिस लोक में प्रतिबिंबित होता है उसके अनुसार अलग-अलग हो सकता है, दूसरे, भक्त का मन उसमें कुछ भाग ले सकता है, तीसरे, दोनों का मिश्रण हो।

शिष्य—क्या देवों के रूप का मानव रूप से कोई साम्य होता है?

श्रीअरविंद—जरूरी नहीं है। लेकिन जो लोग सच्चिदानंद चेतना में रुके बिना देवों की ओर निर्वैयक्तिक वृत्ति से जाते हैं, वे मानसिक स्तर को पार करके ऐसे स्तर में जाते हैं जहां वे देवों को मनुष्य जैसे रूप में देखते हैं। शायद इसी कारण वेद में देवों को पुरुष कहा गया है।

२४-८-१९२६

शिष्य—आपने कहा कि सच्चे देवों का जगत् अतिमानसिक है।

श्रीअरविंद—हां, कहीं-कहीं।

शिष्य—वह अतिमानस **में** है या उसके भी परे जाता है?

श्रीअरविंद—वह अतिमानस से शुरू होता है और आगे जाता है। हमें उसके बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं, वहांतक पहुंचना ही काफी कष्टकर है।

शिष्य—उन्हें किसने बनाया?

श्रीअरविंद—ऐसे बेवकूफी-भरे प्रश्न करने का क्या अर्थ है? वे इतिहास के आरंभ से हैं।

शिष्य—देव और मनुष्य के व्यक्तित्व में क्या फर्क है?

श्रीअरविंद—वही जो तुम्हारे और छिपकली के व्यक्तित्व में है।

शिष्य—व्यक्तित्व का अर्थ है सत्ता और स्वभाव या प्रकृति?

श्रीअरविंद—उसका अर्थ है विभिन्न सत्ताएं और विभिन्न प्रकृतियां। विभिन्न व्यक्तित्व मिलकर एक व्यक्तित्व बना सकते हैं।

शिष्य—क्या भारत का सामुदायिक व्यक्तित्व हमेशा से है?

श्रीअरविंद—हां, जहांतक इतिहास को पता है। मुझे पता नहीं कि सुमेरियन काल में क्या रहा होगा।

शिष्य—इस सामुदायिक या यूं कहे अधि-व्यक्तित्व का स्वभाव कैसा होता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—तुम्हें भारतीय लोगों की विशिष्टताओं को देखना चाहिये तब तुम समझोगे कि अधि-व्यक्तित्व इससे मेल खानेवाली कोई चीज होगी। जब तुम मन के उस पार हो तो तुम उसे परे से देख सकते हो और यह देखते हो कि मन यहां, नीचे, किस तरह काम करता है। लेकिन जबतक हम यहां मन में हैं, हमें अपनी वर्तमान प्रकृति के नियमों के अनुसार चलना होगा।

शिष्य—मैं पूछना यह चाहता था कि अब भारत में जिस राष्ट्र का उदय होगा क्या उसके वही लक्षण होंगे जो यूरोप के राष्ट्रों के हैं या उससे कुछ भिन्न ?

श्रीअरविंद—स्पष्ट है कि वही नहीं हो सकता, वह उनसे कुछ अधिक होगा।

शिष्य—मेरी 'क' के साथ बहस हो रही थी जिसमें उसने कहा कि हमारे अंदर यूरोप की तरह कोई राष्ट्रीय चेतना नहीं है और मैं कह रहा था कि हमारे अंदर कुछ अधिक है।

श्रीअरविंद—शायद यूरोप में ऐसा सुस्पष्ट सामुदायिक व्यक्तित्व नहीं है जैसा भारत में है। यूरोप में कई सुस्पष्ट राष्ट्रीय व्यक्तित्व हैं जैसे इंग्लैंड का एक निश्चित राष्ट्रीय व्यक्तित्व है, इसी तरह फ्रांस में भी है। वे किसी तरह का सामुदायिक व्यक्तित्व बनाने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन वे उसे अभीतक कोई रूप नहीं दे पाये हैं।

यहां, भारत में बात बिल्कुल अलग है। यहां एक सुस्पष्ट और सुनिश्चित सामूहिक व्यक्तित्व पहले से है और भारतीय राष्ट्र के विभिन्न व्यक्तित्व और प्रारूप उसके रूपायन कहे जा सकते हैं, मानों वही इन सबमें अपने-आपको व्यक्त कर रहा है।

शिष्य—भारत के विभिन्न भागों में जो भेद हैं, क्या वे उसी एक सामुदायिक व्यक्तित्व के विभिन्न रूप हैं ?

श्रीअरविंद—ये ऐसे हैं जैसे इंग्लैंड में अंग्रेज, स्कॉटिश और वेल्श या जर्मनी में प्रशियन और बवेरियन। अगर यह स्पष्ट सामुदायिक व्यक्तित्व न होता तो भारत में राजनीतिक राष्ट्र बनाना संभव न होता।

एशिया का मामला ले लो। यहां एक सामुदायिक एशियाई व्यक्तित्व बनाने की कोशिश की जा रही है। लेकिन अभी कोई उसे एक राजनीतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इकाई में लाने की कोशिश करे तो संकटपूर्ण, भयंकर असफलता होगी।

शिष्य—क्या यह सच नहीं है कि राष्ट्रीय चेतना सर्व-सामान्य, सार्वजनिक संकट के उत्तर में विकसित होती है। इसलिये विचार है कि जब एशिया को यूरोप से लड़ना होगा तो वह एक हो सकेगा और मानवजाति में तब एकता आयेगी जब हमें किसी और ग्रह से लड़ना पड़ेगा। (हंसी)

श्रीअरविंद—यह ऐक्य पैदा करने का प्राणिक तरीका है। यूरोप में यद्यपि सामुदायिक व्यक्तित्व तो नहीं है पर एशिया और अफ्रीकावालों के विरुद्ध सर्व सामान्य मानसिकता, सर्व सामान्य संस्कृति और सर्वसामान्य वृत्ति तो है ही।

शिष्य—अफलातून (प्लेटो) का कहना है कि हर रूप का अपना एक 'भाव' होता है यानी हर रूप के पीछे उसके प्ररूप का एक निश्चित भाव होता है और व्यक्ति बदलता रहता है पर भाव बना रहता है।

श्रीअरविंद—लेकिन भाव कहां है ?

शिष्य—अफलातून में। (हंसी)

शिष्य—मुझे नहीं लगता कि अफलातून का अपने 'भाव' शब्द से अर्थ मानसिक अमूर्तीकरण से था। इसका अर्थ 'सृजनात्मक कल्पना' हो सकता है।

श्रीअरविंद—इन विषयों में अफलातून के विचार बहुत ज्यादा गणितीय थे। अगर उसका मतलब सृजनात्मक कल्पना था तो उसमें कई चीजें हैं। पहली चीज यह कि यह कोई मानसिक भाव नहीं बल्कि वह है जिसे मैं सद्वस्तु कहता हूं। यानी ऐसा भाव जिसमें वास्तविकता और शक्ति हो। हर रूप के साथ एक आदर्श प्ररूप होता है। भाव में पहले ही उसका अस्तित्व होता है—भौतिक रूप में आने से पहले सद्वस्तु में उसका प्ररूप होता है। हर चीज का पहला अस्तित्व चेतना में होता है फिर भौतिक में।

शिष्य—क्या यह महत्-ब्रह्म हो सकता है जिसकी बात गीता ने की है?

श्रीअरविंद—मुझे मालूम नहीं कि अफलातून को अतिमानस का हल्का-सा आभास था या नहीं लेकिन उसका मन बहुत ज्यादा गणितीय था और उसने उसे बहुत कठोर, तर्कसंगत मानसिक रूपों में ढाला था। यह था यूनानी मानस।

शिष्य—बौद्धों का विचार है कि रूप देव और अरूप देव दो तरह के देवता होते हैं। इसका क्या अर्थ हो सकता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—मैं बौद्धों की पौराणिक गाथाएं नहीं जानता, लेकिन अरूप लोक से तुम्हारा मतलब क्या है ?

शिष्य—चेतना का एक ऐसा लोक जहां देवों का कोई रूप नहीं होता शायद, या फिर ऐसा रूप होता है जो मानव रूप से इतना भिन्न है कि हमारे लिये उसकी गिनती रूप में नहीं होती।

श्रीअरविंद—देवों का कोई रूप नहीं होता इससे तुम्हारा क्या मतलब है ?

शिष्य—देवों के स्तर पर रूप नहीं हैं शायद।

श्रीअरविंद—तुम्हारा मतलब क्या है ? सभी रूपों का मूल वहीं है। चाहे तुम उसे अरूप लोक कह लो फिर भी उसका कोई रूप होगा। वहां के देव आपस में एक-दूसरे से भिन्न होते ही होंगे यानी उनका रूप होता होगा। अगर तुम कहो कि उनका मानव रूप नहीं होता तो बात समझ में आती है। जरूरी नहीं है कि सभी रूप मानव रूप हों।

शिष्य—कहते हैं कि सभी अमूर्त प्रत्यय या कल्पनाएं अरूप लोक की हैं, जैसे सौंदर्य का भाव।

श्रीअरविंद—सौंदर्य अमूर्त कल्पना नहीं है। यह मन से ऊपर के लोक में परम प्रभु की शक्ति है। मन के स्तर पर कल्पनाएं हुआ करती हैं। यह मन का तरीका है जिससे वह अपने से ऊपर की वास्तविकताओं को मूर्तित करता है। मन से ऊपर के लोक में कल्पनाएं नहीं होतीं, वहां वास्तविकताएं और शक्तियां होती हैं। उदाहरण के लिये तुम मन में अतिमानस के बारे में एक काल्पनिक अमूर्त धारणा बना लेते हो परंतु जब तुम अतिमानसतक पहुंचते हो तो तुम्हें पता लगता है कि वह अमूर्त या काल्पनिक हर्गिज नहीं है, वह जड़-भौतिक से भी अधिक तीव्र रूप से ठोस है, दुर्दमनीय रूप से ठोस, इसीलिये मैं उसे 'रीअल आइडिया' या सद्वस्तु या सत्य संकल्प कहता हूं, अमूर्त भाव नहीं। उस अर्थ में भगवान् से बढ़कर ठोस कुछ भी नहीं है। अगर हम शुद्ध मानसिक स्तर पर भी हों तो भी देखेंगे कि मन बहुत ठोस और सत्य है लेकिन चूंकि हम भौतिक लोक में हैं इसीलिये हम हमेशा मन को अधिक अमूर्त मानते हैं। अतिमानस के आगे जड़ पदार्थ तो छाया मात्र रह जाता है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—यह ठोसपन कैसा होता है ?

श्रीअरविंद—ठोसपन का भाव, राशि। शायद वेद का यही अर्थ था जब उसने अग्नि के बारे में कहा, 'प्रकाश में विस्तृत, शरीर में ठोस'। तुम कह सकते हो कि अतिमानस हीरे से अधिक कठोर और वायु से भी अधिक द्रव है।

(देवों के अवतरण के बारे में कई दिनों की बातचीत का सारांश)

एक वर्णनातीत परम पुरुष है जो सत्, चित्, आनंद में व्यक्त होता है। इसमें सत् सत्ताओं का वैश्व व्यक्तित्व है जिसके बाद आता है अपनी चार महा शक्तियों के साथ अतिमानस। अतिमानस में ऐक्य शासक तत्त्व होता है।

उसके बाद आता है देवलोक, अतिमानस के नीचे और अभिव्यक्तियों के पीछे। हिंदू संस्कृति के देव—शिव, विष्णु आदि मनोमय लोक के नाम और बिंब हैं परंतु वे उन्हीं देवों की ओर संकेत करते हैं जो विश्व की अभिव्यक्ति का नियंत्रण करनेवाले दिव्य तत्त्वों के प्रतिनिधि हैं।

नीचे अभिव्यक्त विश्व है जिसका लक्ष्य है आनंद में लौटना।

देवगत—देव और दानव—इस जगत् या सृष्टि को लक्ष्य की ओर ले जाने के लिये मनुष्य में अभिव्यक्त होते हैं। देव परिवर्तन लाने के लिये या एक नये तत्त्व को चरितार्थ करने के लिये अभिव्यक्त होते हैं।

अवतार इस तरह का, देवों का कार्य करने के लिये नहीं आते, वे धर्म-संस्थापन के लिये आते हैं और उनके साथ, इसी काम के लिये कुछ अन्य सत्ताएं भी आती हैं।

असुर घमंड की ओर संकेत करता है और किसी भी हालत में विनाश लाता है। अतिमानसिक सत्ता शोर मचाने के लिये नहीं परिवर्तन लाने के लिये नीचे आती है।

मैं अतिमानस को नीचे लाने की कोशिश कर रहा हूं। उसके लिये घटनाएं घटेंगी, परिस्थितियां तैयार की जायेंगी। तब प्राण या भौतिक में अंधकार न रहेगा। उच्चतम स्थिति से अतिमानस के अवतरण का निश्चय हो चुका है, तुम उसके मार्ग में बाधा नहीं दे सकते। हम जहां काम कर रहे हैं उसके दृष्टिकोण से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठिनाइयों को जानना और उनका लेखा-जोखा करना और उनके साथ उचित व्यवहार कर सकना लाभदायक है। बीच का रास्ता यह है कि तुम जानो कि वह आ रहा है और तुम न्यूनाधिक रूप से उसका मार्ग ठीक कर सकते हो।

अतिमानस धरती पर आ रहा है और अपने साथ सच्ची व्यवस्था नहीं, अभी तो अस्थायी व्यवस्था ला रहा है। जहां कहीं मार्ग खुला हो, वह उस ओर दौड़ पड़ता है। मार्ग बंद हो जाता है और विरोधी शक्तियां उठ खड़ी होती हैं। वह उन विरोधी शक्तियों का भी, उनके बावजूद अपने काम के लिये उपयोग कर सकता है। गलत तरीकों के कारण वातावरण में गड़बड़ी होती है।

मानव जाति पर अतिमानस का कुछ प्रभाव होगा लेकिन सृष्टि में मानवजाति ही एकमात्र महत्त्वपूर्ण चीज नहीं है। अतिमानस अभीतक अभिव्यक्ति का अंश नहीं बना है। मनुष्य पर उसका क्या प्रभाव होगा यह इसपर निर्भर है कि उसके यहां प्रतिष्ठित होने पर किस चीज को रखा और किसे फेंका जाता है। शक्तियों की गतिविधि के ऊपर वह अभिप्रेत हो चुका है लेकिन वह सुस्पष्ट नहीं है। शक्तियों की गतिविधि ने अभी अतिमानस को स्वीकार करने का फैसला नहीं किया है।

६-११-१९२६

शिष्य—कहते हैं कि रामकृष्ण कहा करते थे कि विवेकानंद शिव के अंश थे। क्या यह सच है ?

श्रीअरविंद—इसमें कुछ सच है अवश्य। इन सभी देवताओं में से हर एक के कुछ गण—आंशिक शक्ति—होते हैं, हर एक गण देवता की किसी शक्ति का प्रतिनिधि होता है। उदाहरण के लिये 'क' जो यहां पांडिचेरी में साधना करने में सफल नहीं हो सका वह उच्चतर शक्ति के चार अंगरक्षकों में से एक का मूर्त रूप हो सकता था।

हो सकता है कि अभिव्यक्ति में बहुत जटिलता हो। तुम अपनी सत्ता के भिन्न-भिन्न अंगों में भिन्न-भिन्न देवों को अभिव्यक्त कर सकते हो। इन आंतरिक सत्यों को बिना कुछ बढ़ाये-चढ़ाये सीधे-सादे ढंग से लिया जाये। बाहरी मानव सत्ता में गड़बड़ नहीं करनी चाहिये। वह आधुनिक संस्थाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तरह चीजों का सिनेमा बना देना पसंद करती है। यह उसे बिगाड़ने का सबसे अच्छा तरीका है। एक और चीज है जिससे बचना चाहिये, वह है शोर मचाना। नाम और ख्याति के लिये प्राणिक कामना, हर चीज को सिनेमा बना देने की वृत्ति, इन्हें एकदम धो डालना चाहिये। अगर दिव्य अभिव्यक्ति होनी हो तो अहंकार न होना चाहिये। जो कुछ शोर हो वह आनुषंगिक होना चाहिये। मैंने देव लोक के बारे में इसलिये बात की है क्योंकि इसके बारे में तुम्हें न बताना खतरनाक हो सकता है। मैंने यह इसलिये बताया ताकि जब वह उतरे तो मन समझ सके। मैं उसे भौतिक में उतार लाने की कोशिश कर रहा हूं। और इसमें बहुत देर न लगेगी और तब घटनाएं घटनी शुरू होंगी। पहले इसकी बात करना खतरनाक होता और अब न करना खतरनाक हो सकता है।

शिष्य—क्या हम उसे किसी तरह से रोक सकते हैं ?

श्रीअरविंद—उच्चतम दृष्टिकोण से सब कुछ ठीक हो चुका है और हमारी हां, ना से कोई फर्क नहीं पड़ता। दूसरे दृष्टिकोण से तुम्हें अपने अंदर सब बाधाओं को देखना और उनकी ठीक व्यवस्था करनी चाहिये। एक बीच का रास्ता भी है। उसे तुम यूं ले सकते हो, उच्चतर शक्ति नीचे आ रही है और तुम्हें उसे ग्रहण करना है जैसा कि मैंने कहा, तुम चाहो तो उसके अवतरण को सरल या कठिन बना सकते हो।

शिष्य—वह कैसे ?

श्रीअरविंद—अभीप्सा द्वारा, अंदर की ओर खुलकर जो उसे तुम्हारे अंदर आने दे। साथ ही अपनी प्रकृति की बाधाओं के बारे में अभिज्ञ होकर और शक्ति से यह प्रार्थना करके कि वह उन्हें हटा दे। तुम्हें इन चीजों की ओर पूरी तरह जाग्रत् रहना चाहिये।

९-११-१९२६

शिष्य—क्या आप वचन देते हैं कि देवों का लोक नीचे उतरेगा ?

श्रीअरविंद—मैं किसी चीज का वचन नहीं देता, मैं तो बस इतना ही कहता हूं कि अगर अतिमानस नीचे उतर आये . . .

शिष्य—क्या हम उसमें बाधा दे सकते हैं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—नहीं, लेकिन तुम उसकी सहायता कर सकते हो।

शिष्य—क्या जगत् में उसका शोर न मचेगा ?

श्रीअरविंद—तुम्हें शोर की आशा न करनी चाहिये। यह **नीरव** कार्य है। इसके प्रचार से विरोधी शक्तियां आकर्षित होंगी। तुम बाहरी काम तभी ले सकते हो जब वह तुम्हारे अंदर हो। जब तुम साधना मन में कर रहे हो तो आर्य[1] के जैसे मानसिक क्रिया-कलाप चल सकते हैं लेकिन जब यह प्राण में उतर आया तो मैंने वह सब बंद कर दिया।

सोसायटी समाचार

"जीवन को सुंदर कैसे बनाया जाये" श्रीअरविंद सोसायटी की नारी-संसद के वार्षिक सेमिनार के लिये, जो २१ से २३ नवम्बर १९८९ तक होगा, यह विषय चुना गया है। यह स्त्रियों और पुरुषों को चुनौती देनेवाला प्रश्न है। जिन्ह इस विषय में रस हो वे नारी संसद के कोऑर्डिनेटर से पत्र-व्यवहार करें। जिन्हें रहने के स्थान की भी व्यवस्था चाहिये वे अपने पत्र के साथ पेशगी ५० रु० का ड्राफ्ट भी भेज सकते हैं।

सोसायटी के तीन नये केन्द्र खुले हैं : १. श्रीअरविंद सोसायटी केन्द्र, द्वारा, श्री गोविन्द भाई बरिया, अलीदर—३६२७२०, गुजरात। २. श्रीअरविंद सोसायटी केन्द्र द्वारा, श्री श्याम सुन्दर शर्मा, गौतम विला, राजपुरा—१४०४०१ और, ३. श्रीअरविंद पाठमंदिर द्वारा, श्री महादेव अलीपात्र, भद्रपुर—६३२२०३, प० बंगाल।

काकिनाडा में श्रीअरविंद सोसायटी की ओर से ६ से १० जुलाई तक "यूथ वर्कशॉप" का दूसरा अधिवेशन हुआ। शारीरिक-शिक्षण, ध्यान, उच्चतर जीवन, भजन आदि सिखाने की व्यवस्था की गयी थी।

भावनगर, गुजरात में श्रीअरविंद होम और थियोसोफिकल लॉज ने मिलकर डा० अश्विन कापड़िया के छह दिन के सावित्री-सत्र की व्यवस्था की।

[1] एक अंग्रेजी मासिक पत्रिका जिसमें श्रीअरविंद के प्रायः सभी बड़े ग्रंथ पहले रूप में छपे थे। वे स्वयं उसके संपादक थे।—सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल प्रदेश की सोसायटी ने आशुतोष मुखर्जी रोड पर एक नये केन्द्र का उद्घाटन किया है। इसमें सर्व श्री बासक, विश्वनाथ राय, जी० आर० मित्र आदि ने भाग लिया।

आंध्र प्रदेश सोसायटी कॉनफरेंस और शिविर का अधिवेशन २ से ५ दिसम्बर तक नरसमपेट (वरंगल) में होगा।

सोसायटी की हनमकुण्डा शाखा २५ दिसम्बर को अपने यहां श्रीअरविंद के अवशेष प्रतिष्ठित करने का कार्यक्रम बना रही है। सब भक्त जनों से सहयोग के लिये प्रार्थना है।

इस अंक के साथ एक परिशिष्ट सोसायटी के सदस्यों के पास भेजा जा रहा है जिसमें २१ अक्तूबर १९८९ को कलकत्ते में होनेवाले वार्षिक अधिवेशन की सूचना भी है।

१ नवम्बर से १० नवम्बर १९८९ तक पांडिचेरी के सोसायटी-कार्यालय में सिंगापुर विश्वविद्यालय के प्रो० नाडकरणी "सावित्री" शिविर का आयोजन कर रहे हैं। इसमें भाग लेने का कोई शुल्क नहीं परंतु रहने-खाने आदि का खर्च स्वयं आपको करना होगा। जो इसमें भाग लेना चाहते हों वे अपने प्रार्थना-पत्र के साथ पेशगी ५० रुपये का डिमांड ड्राफ्ट कृपया "एकोमोडेशन सेक्शन, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२" के नाम भेजें।

कुछ अधिकारी व्यक्तियों के रहने-खाने की व्यवस्था निःशुल्क हो सकेगी।

*

कागज तथा छपाई के सभी खर्च बढ़ जाने की वजह से हम पत्रिका का चंदा बढ़ाने के लिये बाधित हो रहे हैं।

पहली अक्तूबर १९८९ से सोसायटी की सदस्यता और पत्रिका का चंदा मिलाकर इस तरह होगा :

एक वर्ष के लिये ३८ रुपये, ५ वर्षों के लिये १८० रुपये, दस वर्षों के लिये ३५० रुपये।

विदेशों के लिये समुद्री जहाज से १०, हवाई जहाज से २० डॉलर वार्षिक।

और कुछ जानकारी चाहिये तो सेक्रेटरी, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी को लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
A good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"The constant remembrance of the Divine is indispensable for transformation."

— THE MOTHER

With Best Wishes from:

MRS. KOYAL DEORAH CHARITABLE TRUST

28, VARSHA, 69/B, NEPEANSEA ROAD

BOMBAY - 4000 006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14/12/07

अग्निशिखा

अखिल भारतीय पत्रिका

नवम्बर १९८९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

सन्देश : दुःख और उसका इलाज		१
'संपादकीय' : अन्धकार के बावजूद	अनुबेन	३
दैनन्दिनी		६
आध्यात्मिकता क्या है ?		१०
भगवान्		१२
साधना का पहला सच्चा उद्देश्य		१४
आंशिक अभिव्यक्ति से पूर्ण वास्तविकता की ओर		१६
"योग अपने लिये नहीं भगवान् के लिये"		१८
लक्ष्य को कभी न भूलो		२०
कैसे शुरू करें ?		२१
कर्म — भगवान् की सेवा		२३
सूर्यालोकमय पथ		२६
चमत्कार के बारे में वार्तालाप		३१
सोसायटी समाचार		३७

आवरण पृ० १ — पुष्प का माताजी का बतलाया हुआ अर्थ :

साहस

(निर्भीक, वह सभी खतरों का सामना करता है।)

अग्निशिखा वार्षिक १०.०० आजीवन २२५.००

श्रीअरविंद सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी–६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी–६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

दुःख और उसका इलाज

जब हम दुःखी होते हैं तो पहली प्रतिक्रिया होती है बाहरी परिस्थितियों को दोष देना, फिर चाहे वे मनुष्य हों या घटनाएं। उन लोगों में यह बात विशेष रूप से पायी जाती है जो आंतरिक जीवन का निर्माण कर रहे हों। वे हर कठिनाई में विरोधी शक्तियों का, अपनी प्रगति के शत्रुओं का हाथ देखते हैं या फिर वे स्वयं अपनी प्रकृति के तत्त्वों से चिढ़ जाते हैं जैसे सेक्स, अहंकार, प्राणिक कामनाएं आदि। इनमेंसे हर आरोप में कुछ सत्य हो सकता है लेकिन इनमें केंद्रीय-तत्त्व होता है मनुष्य का स्वयं अपने साथ व्यस्त रहना। लोग अपने-आपको बहुत अधिक महत्त्व देते हैं, वे अपने जीवन के व्योरों में ही तल्लीन रहते हैं जिनमें भौतिक सुख-सुविधाएं, प्राणिक रंगीलेपन, मानसिक रचनाएं और अपनी आध्यात्मिक प्रगति की चिंता ही होती है। एक समय आता है जब प्रगति की चिंता स्वयं प्रगति की राह में आड़े आती है।

माताजी कहती हैं कि अपने-आपसे दूर रहो, हम अपने छोटे-से छिद्र में अपने-आपको बंद कर लेते हैं और हर चीज को वहां के विकृत कोण से देखते हैं, अपनी आंतरिक सत्ता के महान् आदेशों का गला घोंट देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम हर चीज का मूल्यांकन अपने छोटे-से व्यक्तित्व की दृष्टि से करते हैं और अजीब-सी प्रतिक्रियाएं करते हैं क्योंकि हमारी प्रतिक्रियाएं हमारी मनोवृत्तियों पर निर्भर होती हैं और वे मनोवृत्तियां निर्भर होती हैं अपने-आपसे संतोष या असंतोष पर। साधारण जीवन में भी यही बात होती है, जहां आध्यात्मिकता छू भी नहीं जाती। मनोवैज्ञानिक चिकित्सा में यह एक बहुत बड़ा रोग माना जाता है जहां अपने-आपको रोगी माननेवाले पूरी तरह अपने ही साथ व्यस्त रहते हैं। वे हर चीज को एक गलत दृष्टि से देखते और भयावह मूर्तियां खड़ी कर लेते हैं जहां उनका अस्तित्व भी नहीं होता। अपने साथ बहुत अधिक व्यस्त रहना एक बीमारी है।

बार-बार यह सलाह देना कि अपनी इच्छा-शक्ति के बल पर इस अंदर झांकने को बंद कर दो, इससे कोई लाभ नहीं होता। इसके सिवा कोई उपाय नहीं है क्या? है और जरूर है, अपनी आंखों को किसी महान् आदर्श, किसी निर्वैयक्तिक गतिविधि के साथ लगा दो। स्वयं अपनी चिंता न करो, अपने-आपको पूरी तरह सेवा में युक्त कर दो। अपनी सुख-सुविधा की, अपने पद या औरों की राय की परवाह न करो। अपने-आपको अपने समर्पण के ध्येय को सौंप दो। तुम देखोगे कि सभी पपड़ियां झड़ रही हैं, बादल छंट रहे हैं और तुम्हारे अंदर बिना कारण के आनंद छलक रहा है। अपने-आपको पूरी तरह भुला दो, अपने ध्यान को पूरी तरह अपने काम और उसकी आवश्यकताओं पर केंद्रित रखो। अगर तुम अपनी इच्छा-शक्ति को भगवान् को अर्पित कर दो और उनके एक उपकरण बनकर कार्य कर सको, अपने-आपको उच्चतर इच्छा के लायक बना सको तो और भी अच्छा। बहरहाल तुम्हें एक ऐसा व्यक्ति बने रहना एकदम बंद कर देना चाहिये जो अपने ही मन, प्राण, शरीर यहांतक कि आत्मा में ही लगा रहे। तब तुम ज्यादा अच्छी चेतना में उभर सकोगे और जीवन सुखद और आलोकमय बन जायेगा।

तुम्हें टेर लगायी जा रही है कि अपनी ही कारा में से बाहर निकलो और खुले में, शुद्ध, स्वतंत्र हवा में सांस लो।

(माताजी की एक वार्ता के आधार पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'संपादकीय' :

अंधकार के बावजूद

अग्निशिखा के एक सहृदय पाठक का सुंदर अक्षरों में और सुंदर कागज पर पत्र आया है जिसपर न उनका नाम है न ठौर-ठिकाना। उनका कहना है कि वे अग्निशिखा के प्रेमी हैं और हमारे संपादकीय उन्हें बहुत पसंद आते हैं। उनका कहना है कि हम आश्रमवासी दुनिया के बारे में कुछ भी नहीं जानते, आराम से अच्छे मकानों में रहते, अच्छा खाना खाते और अच्छे कपड़े पहनते हैं, हमारा न आयकर वालों से पाला पड़ता है न विभिन्न घूसखोर अफसरों से जो हर जगह, कोने-कोने में, छिपे रूप से नहीं प्रकट रूप में विराजमान हैं, जिनकी कृपा-कटाक्ष पाये बिना न तो विद्यालय में प्रवेश मिलता है न कहीं कोई नौकरी मिलती है।

उनकी बात एक दृष्टि से ठीक भी है, जब सारी रात काली चादर ओढ़े पड़ी हो तो क्या अधिकार है जुगनू को इधर-उधर से आकर अपने दीपक चमकाने का। अगर उसके पास तमहर के आने का संदेश है, अगर वह उषा की भेरी बजानेवाले ताम्रचूड़ की ओर हमारा ध्यान खींचना चाहता है तो अपनी ढफली बजाये जाये लेकिन यह आशा न रखे कि अंधों के संसार में कोई ज्योति के संदेश की कद्र करेगा। जो हमारे आगे है, जिसे सब देख सकते हैं, उसे छोड़कर किसी परोक्ष भविष्य की ओर ध्यान लगाना हमें तो बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण या व्यावहारिक नहीं मालूम होता। ठीक है जिसकी जैसी भावना हो, भविष्य उसे उसी रूप में दिखायी देता है—जाकी रही भावना जैसी, हरि मूरत देखी तिन तैसी। जो भूत और वर्तमान पर, उनके प्रत्यक्ष रूपों पर विश्वास रखते हैं, हम उनके मार्ग में बाधा दिये बिना अपनी रट लगाये जायेंगे *'रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्'*, और साथ ही अग्निदेव का आह्वान करेंगे *'उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि।'*

शायद यह हमारी ढिठाई हो या आंखों के आगे खड़े कज्जलगिरि को देखने से इंकार हो पर लीजिये कल ७ अगस्त १९८९ की एक घटना सुन लीजिये : हमारे एक व्यापारी मित्र ने अपने एक नौकर को दो हजार रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देकर बैंक भेजा। पांच मिनट के अंदर नौकर वापस आया, सुबुकता हुआ बोला, "शायद मैं आपसे रुपया लेना भूल गया।" सेठ की भौंहें तन गयीं। उन्होंने कहा, "मैंने अभी तो अपने हाथ से तुझे दो हजार रुपये दिये थे। तूने उन्हें थैली में डालकर साइकिल में लटका दिया था। अभी वापिस जा शायद कहीं गिर पड़े हों।" नौकर पुराना और विश्वासपात्र था, किसीने उसपर संदेह नहीं किया। सेठ ने एक गुमाश्ते को उसके साथ किया, तुम दोनों जाकर ढूंढो, रुपये मिल ही जायेंगे। दस मिनट के अंदर नौकर का फोन आया, साहब पंद्रह सौ रुपये तो मिल गये, अभी पांच सौ की तलाश जारी है। थोड़ी देर में गुमाश्ते ने आकर सारी कहानी सुनाते हुए कहा कि मैं नौकर के बताये रास्ते पर हाथ-पैर पटकता गया। सामने से एक लड़का आया, उसने पूछा, "बात क्या है ?" मैंने उसे सारी कहानी सुना दी। वह हमारी दुकान को जानता है, उसने कहा कि अभी कुछ देर पहले मैंने एक रिक्शावाले को सौ-सौ रुपये के नोट गिनते देखा था। उसने मुझे देखते ही नोट छिपा लिये और मुझे भगा दिया। वह रिक्शावाला तीन बच्चों को लेकर इधर आता होगा। लड़के का वाक्य पूरा होने से पहले ही रिक्शा आती दिखायी दी और लड़का उसकी तरफ इशारा करके चला गया। गुमाश्ता जरा रौबीला आदमी है, उसने रिक्शा रोककर बच्चों से जाने के लिये कहा और बरस पड़ा रिक्शावाले पर। जबरदस्ती रिक्शा की गद्दी उठा दी और उसके नीचे से एक बरसाती में छिपे हुए पंद्रह सौ रुपये निकल आये। अब रिक्शावाले की रही-सही सिट्टी-पिट्टी भी गुम हो गयी और उसने कबूल किया कि उसने पांच सौ रुपये किसी ड्राइवर को दिये हैं। गुमाश्ता रिक्शावाले को लेकर दुकानतक पहुंचा तो देखा कि ड्राइवर खड़ा चार सौ रुपये सेठ जी को दे रहा था और कह रहा था, "मुझे पता चला कि ये रुपये आपके हैं। आपका पैसा मारना पाप होगा इसलिये मैं यहां ले आया हूं, लेकिन इस बीच सौ रुपये मैंने खर्च भी कर डाले, लेकिन मैं किसी-न-किसी तरह यह रकम आपको ला दूंगा।" दो हजार में से उन्नीस सौ तो वापिस आ गये और बाकी सौ का भी आश्वासन मिल गया। और वह दूसरे दिन सवेरे ही आ गये।

सेठजी ने उस लड़के को शाबाशी दी जिसकी वजह से उन्हें ये रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वापिस मिले और इनाम के रूप में उसे दस रुपये देने चाहे। लड़का बहुत गरीब था। दस रुपये उसके लिये अच्छी रकम थी पर उसने लेने से इंकार कर दिया और बहुत आग्रह करने पर सीटी बजाता हुआ दुकान से निकल गया।

भारत में ऐसे अनपढ़ और असंस्कृत कहानेवाले लोग भी हैं जो ईमानदारी पर धन-संपदा को न्यौछावर कर सकते हैं। क्या पढ़े-लिखे सुसंस्कृत कहानेवाले लोगों से ऐसी आशा करना दुराशामात्र है ?

अंग्रेजों के इतिहास को ही ले लीजिये, जब वे अपने छोटे-से टापू में से निकले थे तब उनकी क्या अवस्था थी ? परंतु अपने देश को, अपने राज्य को विकसित करने के लिये उन्होंने क्या नहीं किया, भारत में, अफ्रीका में, अमरीका में जाकर उन्होंने क्या-क्या कष्ट नहीं सहे। उन सबके परिणामस्वरूप ऐसी स्थिति आ गयी कि यह कहा जाने लगा कि अंग्रेज साम्राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं हुआ करता।

पर साथ ही उन्होंने औरों पर अत्याचार भी किये जो उनके यश को मलिन करने लगे और उनके पतन को निमंत्रण देने लगे और प्रसिद्ध समाजशास्त्री पार्किंसन के मतानुसार उनके राज का, उनके वैभव का अस्त उस दिन शुरू हुआ जब उन्होंने नयी दिल्ली की नींव रखी, जब वे कष्टमय, तपस्यामय जीवन को छोड़कर मौज-शौक, आमोद-प्रमोद और सुख-सुविधाओं को प्रमुखता देने लगे।

क्या भारतवासियों के लिये यह असंभव हो गया है कि वे पढ़-लिखकर, सब तरह की क्षमताओं को कमा कर भारत माता की सेवा के लिये कष्ट-सहन स्वीकार करें। आखिर घूस-खोर अफसर, आयकर में गड़बड़ करनेवाले, या तस्करी करनेवाले भी तो इसी देश की संतान हैं। अब हम इनकी कुशिक्षा और कुसंस्कारों के लिये किसी भी देशी सरकार को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते। देश में अगर अनाचार और भ्रष्टाचार फैला है, यदि सरकार इन चीजों की ओर से आंखें मूंदे है या इन्हें प्रोत्साहन देती है तो इसका जिम्मेदार कौन है ? क्या इसका बस यही इलाज है कि हम देश छोड़ कर विदेशों में जा बैठें और अपनी संतान को एकदम विदेशी बना दें, जो अपने-आपको भारतीय कहते हुए लजाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारी अव्यवस्था, भ्रष्टाचार और अनाचार के बावजूद हमें विश्वास है कि भारत माता जीवित-जाग्रत् है और उठने के लिये अंगड़ाइयां ले रही है। अभी कुछ दिन पहले हिंदुस्तान आये हुए एक रूसी दल की बात याद आती है, उनके नेता ने जाते समय कहा था कि हम नास्तिक के रूप में हिंदुस्तान आये थे और अब आस्तिक बनकर जा रहे हैं। जब उनसे इसका स्पष्टीकरण मांगा गया तो उन्होंने कहा कि इतनी ज्यादा अस्त-व्यस्तता और गड़बड़ के बावजूद हिंदुस्तान प्रगति करता जा रहा है, यह अपने-आपमें इस बात का प्रमाण है कि 'कोई भगवान्' हिंदुस्तान को आगे बढ़ा रहा है, उसके अस्तित्व को मानना पड़ेगा।

दैनन्दिनी

नवंबर

१. जो सच्चे हैं, मैं उनकी सहायता कर सकती हूं और उन्हें आसानी से भगवान् के प्रति मोड़ सकती हूं। लेकिन जहां कपट हो वहां मैं बहुत कम ही कर सकती हूं।

२. कोई भी आंतरिक द्वंद्व सचाई के अभाव का चिह्न है।

३. पूरी तरह सच्चे बनो, कभी दूसरों को छलने की कोशिश मत करो। और कोशिश करो कि अपने-आपको कभी धोखा न दो।

४. महत्त्वपूर्ण बात है **अधिक-से-अधिक** सच्चा होना, हमेशा अधिक सच्चा होना जिससे तुम अपने-आपको अपनी अभीप्सा की पूर्णता में कभी धोखा न दो।
यह सच्चाई निश्चित रूप से 'भागवत कृपा' लाती है।

५. शब्दों के परे, विचारों के ऊपर, तीव्र अभीप्सा की ज्वाला को हमेशा निष्कंप और उज्ज्वल होकर जलते रहना चाहिये।
मेरा प्रेम और आशीर्वाद तुम्हारे साथ हैं।

६. हृदय की नीरवता में अभीप्सा की निष्कंप ज्वाला जलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. अविचल श्रद्धा का होना अच्छा है—यह तुम्हारे पथ को ज्यादा आसान और छोटा बना देती है।

८. हम भगवान् के वीर सैनिक बनने की अभीप्सा करते हैं जिससे उनकी महिमा धरती पर प्रकट हो सके।

९. वीरता किसी से डरती नहीं और विरोधी के सामने डटे रहना जानती है।

१०. अपने दोषों को पहचानना श्रेष्ठतम साहस है।

११. स्थिर आशा मार्ग में बहुत सहायता देती है।

१२. हमेशा, सभी परिस्थितियों में, मुस्कराना सीखो, अपने दुःखों और सुखों पर, अपनी पीड़ाओं और अपनी आशाओं पर मुस्कराना सीखो क्योंकि मुस्कान में आत्म-संयम की परम शक्ति है।

१३. वस्तुतः सुखी है वह आदमी जो भगवान् से प्रेम करता है क्योंकि भगवान् हमेशा उसके साथ रहते हैं।

१४. यह कभी न भूलो कि नाटकीय होने की अपेक्षा, चुपचाप प्रसन्न रहकर तुम बहुत ज्यादा सहायक होते हो।

१५. हर्ष तब आता है जब तुम उचित वृत्ति अपनाओ।
हर्ष भागवत आदेश के आगे झुकने से आता है।

१६. अगर हम अपने सुख को अक्षुण्ण और शुद्ध रखना चाहें तो हमें उसकी ओर प्रतिकूल विचारों को आकर्षित न करने पर पूरा ध्यान देना चाहिये।

१७. जैसे-जैसे हम प्रगति करते और अपने-आपको अहंकार से शुद्ध कर लेते हैं वैसे-वैसे भगवान् के साथ हमारी मैत्री अधिकाधिक स्पष्ट और सचेतन होती जाती है।

१८. भगवान् के लिये अनुरक्ति अपने-आपको भगवान् के चारों ओर लपेट देती है और उनसे पूरा सहारा पाती है ताकि उसे पूरा विश्वास हो कि वह 'उन्हें' कभी न छोड़ेगी।

१९. अभीप्सा **हमेशा** अच्छी है, अगर कोई मांग उसमें मिला दी जाये तो विश्वास रखो कि वह कभी स्वीकृत न होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०. अपनी पवित्र और ऋजु अभीप्सा को उस चरम चेतना की ओर छलांग लगाने दो जो समस्त हर्ष और परम आनंद है।

२१. तुम जितना पाते हो उससे संतुष्ट रहने की कोशिश करो—क्योंकि यह **ग्रहणशीलता** का मामला है—मेरी मानो—लोग जितना ग्रहण कर सकते हैं मैं उससे **कहीं अधिक देती** हूं—और दो-तीन मिनटों में वे इतना पा सकते हैं कि वह महीने भर तक चले। लेकिन मन अपनी अज्ञानपूर्ण मांगों के द्वारा दखल देता है और सारी चीज बिगड़ जाती है।

२२. सावधान रहो कि जब तुम लोगों से बातें करो तो हमेशा जीवंत 'उपस्थिति' और दिव्य सुरक्षा अपने चारों तरफ रखो और कम-से-कम बोलो।

२३. निश्चय ही दूसरों की भूलों के बारे में बोलना बहुत बुरा है; हर एक के अपने दोष होते हैं और उन्हींके बारे में सोचते रहना, निश्चय ही उन्हें ठीक करने में सहायता नहीं पहुंचाता।

२४. सत्य की उपेक्षा करने से ज्यादा अच्छा है उसे प्रकट करना; लेकिन उसे प्रकट करने से कहीं ज्यादा अच्छा है उसे जीना।

२५. अगर तुम जीवन में एक भूल करो तो तुम्हें सारे जीवन कष्ट उठाना पड़ेगा। इसका यह अर्थ नहीं है कि हर एक को इस तरह कष्ट झेलना पड़ता है। ऐसे लोग हैं जो भूलें करते जाते हैं फिर भी उन्हें कष्ट नहीं होता। लेकिन जो आध्यात्मिक जीवन के लिये पैदा हुए हैं उन्हें बहुत सावधान रहना चाहिये।

२६. ये हमारी कमजोरियां ही हैं जो हमें सदा दुःखी बनाती हैं और हम मार्ग पर एक कदम आगे बढ़कर आसानी से इनसे छूट सकते हैं।

२७. जब कोई भूल हो तो उसका हमेशा प्रगति करने के लिये उपयोग करना चाहिये, एक बार आवश्यक परिवर्तन चरितार्थ हो जाये तो भूल और उसका कारण गायब हो जाते हैं और वह अपने-आपको कभी नहीं दोहरा सकती।

२८. अपने-आपको माफ कर देने से कोई फायदा नहीं। तुम्हारे अंदर यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकल्प होना चाहिये कि एक बार जो भूल तुम कर चुके हो उसमें वापिस न गिरोगे।

२९. अपने-आपको संतप्त मत करो, चिंता मत करो, सबसे बढ़कर समस्त भय को निकाल बाहर करने का प्रयास करो; भय एक खतरनाक चीज है जो किसी ऐसी चीज को महत्त्व दे सकती है जिसका कोई महत्त्व न हो।

३०. यह भय स्नायुओं की और प्राण की दुर्बलता के कारण आता है। योग-पथ का अनुसरण करने के लिये किये गये किसी भी प्रयास से पहले इस भय से पिंड छुड़ाना चाहिये।

योग और भय साथ-साथ नहीं चल सकते।

———

जब तुम अपने-आपको किसी निःस्वार्थ लक्ष्य को चरितार्थ करने के लिये अर्पित करते हो तो यह आशा कभी न करो कि सामान्य लोग तुम्हारी प्रशंसा या तुम्हारा समर्थन करेंगे। इसके विपरीत वे हमेशा तुम्हारे विरुद्ध लड़ेंगे, तुमसे घृणा करेंगे और तुम्हें बुरा-भला कहेंगे।

*

अगर हर एक स्वयं अपने ऊपर प्रभुत्व पाने और अपने आवेगों को नियंत्रण में रखने का निश्चय कर ले तो स्थिति अधिक स्पष्ट हो जायेगी।

जब लोग अपनी चेतना को विक्षुब्ध रहने देते हैं तो उनका जीवन भी विक्षुब्ध बन जाता है।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आध्यात्मिकता क्या है ?

[भगवान् के बारे में थोड़ी-सी जानकारी पाने के बाद अब आध्यात्मिकता और साधना के बारे में माताजी और श्रीअरविंद के कुछ शब्द देखें। सं०]

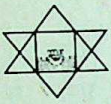

आध्यात्मिकता का अर्थ है : मन और प्राण से बड़ी किसी चीज की मान्यता। हमारी सामान्य मानसिक और प्राणिक प्रकृति के परे शुद्ध, महान् और दिव्य चेतना के लिये अभीप्सा। मनुष्य की अंतरात्मा में अपने निचले भागों की लघुता और दासता में से अपने अंदर प्रच्छन्न महत्तर वस्तु की ओर उठना और उमड़ना।

*

वह आध्यात्मिकता ही होती है जब तुम अहंकार के सिवा एक और चेतना के बारे में अभिज्ञ होते हो और उसमें निवास करना या अधिकाधिक उसके प्रभाव में रहना शुरू करते हो। उसी चेतना को जो बृहत्, अनंत, स्वयंभू, अहंकार से विमुक्त है आत्मा, आध्यात्म पुरुष, ब्रह्म या भगवान् कहते हैं।

*

हम आध्यात्मिकता की व्याख्या यूं करते हैं कि वह उच्चतम आत्मा, भगवान्, सर्वालिंगनकारी ऐक्य को जानना और उसमें निवास करने का प्रयास है और जीवन को उसके सभी अंगों में अधिकाधिक संभव दिव्य मूल्योंतक ऊंचा उठाना है।

*

आध्यात्मिकता कोई उच्च बौद्धिकता या आदर्शवाद नहीं है, मन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैतिक मोड़ या मानसिक शुद्धि और तपस्या नहीं है और न ही धार्मिकता या तीव्र और उच्च भावनामय उत्साह है और न ही इन सब उत्कृष्ट चीजों का संमिश्रण है . . .

मन और प्राण के लिये इन चीजों का बहुत महत्त्व है। वे स्वयं आध्यात्मिक विकास के लिये भी मूल्यवान् हैं जो प्रारंभिक, संयम लानेवाली, कुछ करनेवाली या प्रकृति को समुचित रूप देनेवाली गतिविधियां हैं। लेकिन फिर भी वे हैं मानसिक विकास की चीजें—आध्यात्मिक उपलब्धि, अनुभूति का प्रारंभ, परिवर्तन अभीतक नहीं आया है।

सारतः आध्यात्मिकता हमारी सत्ता की आंतरिक वास्तविकता में आत्मा, आध्यात्म सत्य और अंतरात्मा का जागरण है जो हमारे मन, प्राण और शरीर से भिन्न है। यह एक आंतरिक अभीप्सा है जानने के लिये, अनुभव करने के लिये, वही हो जाने के लिये, विश्व के परे और समस्त विश्व में छायी हुई सद्वस्तु के साथ संपर्क साधने के लिये, उसके साथ एक होने के लिये, एक नयी सम्भूति, एक नयी सत्ता, एक नयी आत्मा, नयी प्रकृति में जागरण के लिये।

*

आध्यात्मिकता का अर्थ है मनुष्य का नया और बृहत्तर आंतरिक जीवन जो उसके सत्य, अंतरतम, उच्चतम और बृहत्तम आध्यात्म पुरुष और आत्मा की चेतना में प्रतिष्ठित है, जिसके द्वारा वह समस्त जीवन को विश्व के अंदर और स्वयं अपने जीवन के अंदर पाता है जो संभवतः रूपांतर का क्षेत्र है; जिसमें उसका दिव्य सार-तत्त्व पाया जायेगा, उसकी संभाव्यताएं पूरी तरह विकसित होंगी, अभी के अपूर्ण रूप दिव्य पूर्णता के बिंब के रूप में बदल जायेंगे और अपनी सत्ता की महान् संभावनाओं को केवल देखने ही नहीं, जीने का प्रयास होगा।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्य पूर्णता हमेशा हमारे ऊपर होती है लेकिन आध्यात्मिकता का अर्थ है कि मनुष्य अपनी चेतना में दिव्य बने और कार्य करे तथा अपने बाहरी और भीतरी जीवन में दिव्य जीवन जिये। इस शब्द को इससे कम दिये गये सभी अर्थ अपर्याप्त घपलेबाजी और दिखावा हैं।

भगवान्

अगर हम पूर्ण योग के लिये प्रयास करें तो ज्यादा अच्छा होगा कि हम ऐसे भगवान् के बारे में विचार से शुरू करें जो अपने-आप पूर्ण हो। एक ऐसे हृदय में अभीप्सा हो जो बिना किन्हीं संकीर्ण सीमाओं के उपलब्धि के लिये पर्याप्त रूप से विस्तृत हो। केवल यही नहीं कि हम संप्रदायवादी धार्मिक दृष्टिकोण से बचें बल्कि हमें उन एकांगी दार्शनिक धारणाओं से भी बचना चाहिये जो अनिर्वचनीय को प्रतिबंधक मानसिक नियमों में बांध देना चाहती हैं। क्रियात्मक धारणा या प्रेरक बोध, जिससे हमारा योग शुरू हो सकता है, वह स्वभावतः, वह विचार, सचेतन, सर्वालिंगनकारी परंतु सबको पार कर जानेवाला शाश्वत भाव होगा। हमारी दृष्टि मुक्त, सर्वशक्तिमान्, पूर्ण और आनंदमय एकमेव और एकत्व की ओर उठी होनी चाहिये जिसमें सभी सत्ताएं विचरण करती हैं और जीती हैं, जिसके द्वारा सब मिल सकते और एक हो सकते हैं। यह शाश्वत एक ही साथ अपने आत्म-प्रकाश में और अंतरात्मा के स्पर्श में वैयक्तिक और निर्वैयक्तिक होगा। वे वैयक्तिक हैं क्योंकि वे सचेतन भगवान् हैं, अनंत पुरुष हैं जो विश्व के अनगिनत दिव्य और अदिव्य व्यक्तित्वों पर अपनी टूटी परछाईं डालते हैं। वे निर्वैयक्तिक हैं क्योंकि वे हमें एक अनंत अस्तित्व, चेतना और आनंद के रूप में दिखायी देते हैं और वे ही सभी सत्ताओं और ऊर्जाओं के उत्स, आधार और घटक हैं, हमारी सत्ता, मन, प्राण और शरीर के उपादान, हमारी आत्मा और हमारा जड़-तत्त्व हैं। उनपर केंद्रित विचार को केवल बौद्धिक रूप में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह नहीं समझना चाहिये कि उनका अस्तित्व है, न उनकी अमूर्त रूप में कल्पना ही करनी चाहिये। न उन्हें एक तर्कसंगत आवश्यकता मानना चाहिये। उसे एक द्रष्टा विचार होना चाहिये जो उनसे यहां सबके अंदर निवास करनेवाले के रूप में मिल सके, अपने अंदर अनुभव कर सके, उनकी शक्तियों की गतियों को देख और पकड़ सके। वे एकमेव सत्ता हैं, वे वह आदिमूल और वैश्व आनंद हैं जो सभी चीजों को संघटित करता और उनका अतिक्रमण करता है। वे एक अनंत चेतना हैं जो सभी चेतनाओं को संगठित करती और उनकी सभी गतिविधियों को अनुप्राणित करती है। वे वह असीम सत्ता हैं जो समस्त कार्यों और अनुभवों को पोषित करती है, उनका संकल्प वस्तुओं के अभीतक अनुपलब्ध परंतु अनिवार्य लक्ष्य और संपूर्णता की ओर विकास को दिशा देता है। उनके प्रति हृदय अपना उत्सर्ग कर सकता है, उनकी ओर परम प्रिय के रूप में अभिमुख हो सकता है, उनके अंदर प्रेम की वैश्व मधुरता और आनंद के जीवित-जाग्रत् समुद्र की तरह ठाठें मार सकता और हिलोरें ले सकता है। उन्हींका वह प्रच्छन्न आनंद है जो आत्मा को उसकी सभी अनुभूतियों में सहारा देता है और पथ-भ्रष्ट अहंकार को भी उसकी अग्नि-परीक्षाओं और संघर्षों में तबतक सहारा देता है जबतक कि समस्त दुःख-दर्द समाप्त न हो जायें। उनका प्रेम और आनंद अनंत दिव्य प्रेमी का है जो सभी चीजों को उनके अपने मार्ग से इस सुखद ऐक्य की ओर खींच रहा है। इच्छाशक्ति उनपर स्थिर रूप से ऐसी अदृश्य शक्ति के रूप में दृढ़ हो सकती है जो उसे मार्ग दिखाती और परिपूर्ण करती है और उसके बल का स्रोत है। निर्वैयक्तिकता में यह प्रेरित करनेवाली शक्ति ऐसी स्वतःप्रकाश सामर्थ्य है जिसके अंदर सभी परिणाम समाये हुए हैं और यह शक्ति तबतक शांति के साथ काम करती रहती है जबतक कि वह व्यक्तित्व में सर्वज्ञ और सर्व-शक्तिमान् योग के स्वामी को उपलब्ध न कर ले जिसे कोई भी चीज अपने लक्ष्य की ओर ले जाने से नहीं रोक सकती। जिज्ञासु को अपनी जिज्ञासा और अपना प्रयास इसी श्रद्धा के साथ शुरू करना चाहिये क्योंकि यहां पर उसके सभी प्रयासों में, और उनमें भी सबसे बढ़कर अदृश्य की ओर प्रयास में, मनोमय मनुष्य को विवश होकर श्रद्धा द्वारा ही आगे बढ़ना होता है। जब उपलब्धि आती है तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्य रूप से परिपूर्ण और चरितार्थ होकर श्रद्धा ज्ञान की शाश्वत ज्वाला में रूपांतरित हो जायेगी।

साधना का पहला सच्चा उद्देश्य

वस्तुतः आध्यात्मिक सत्य और आध्यात्मिक जीवन को खोजने का पहला कारण है भगवान् को पाना। यह एकमात्र अनिवार्य चीज है और इसके बिना बाकी सब कुछ व्यर्थ है। एक बार भगवान् मिल जायें तो उन्हें अभिव्यक्त करना चाहिये—यानी सबसे पहले अपनी सीमित चेतना को दिव्य चेतना में रूपांतरित करना, अनंत शांति, ज्योति, प्रेम, बल, आनंद में निवास करना, अपनी सारभूत प्रकृति में तत् बन जाना और परिणाम-स्वरूप अपनी सक्रिय प्रकृति में उनका पात्र, वाहिका और यंत्र बन जाना चाहिये। एकत्व के तत्त्व को भौतिक स्तर पर क्रिया में उतारना या मानवजाति के लिये कार्य करना उस सत्य का गलत अनुवाद है—ये चीजें आध्यात्मिक जिज्ञासा का प्रथम सच्चा उद्देश्य नहीं हो सकतीं। हमें पहले आध्यात्म-पुरुष को, भगवान् को पाना होगा तभी हम जान सकते हैं कि वह कौन-सा काम है जिसकी मांग आध्यात्म-पुरुष या भगवान् हमसे करते हैं। तबतक हमारा जीवन और कर्म भगवान् को पाने के साधन या सहायक ही हो सकते हैं, उनका और कोई प्रयोजन न होना चाहिये। जैसे-जैसे हम आंतरिक चेतना में विकास पाते हैं या जैसे-जैसे भगवान् का आध्यात्मिक सत्य हमारे अंदर विकसित होता है, वैसे-वैसे वस्तुतः हमारे जीवन और कर्म को उससे प्रवाहित होना चाहिये, उसके साथ एक होना चाहिये। लेकिन अपनी सीमित मानसिक धारणाओं द्वारा पहले से ही यह ठीक कर लेना कि उन्हें क्या होना चाहिये, भीतर के आध्यात्मिक सत्य के विकास में बाधा देना है। जैसे-जैसे उसका विकास होगा हम दिव्य प्रकाश और सत्य, दिव्य शक्ति और बल, दिव्य शुद्धि और शांति को अपने अंदर काम करते हुए, हमारी अपनी क्रियाओं और चेतना के साथ व्यवहार करते हुए, हमें फिर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्य मूर्ति के रूप में गढ़ते हुए, धातुमल को हटाकर उसकी जगह आत्मा के शुद्ध स्वर्ण को रखते हुए अनुभव करते हैं। केवल तभी, जब भागवत उपस्थिति हमारे अंदर सदा उपस्थित रहे और चेतना रूपांतरित हो जाये, तभी हमें यह कहने का अधिकार हो सकता है कि हम वास्तव में भगवान् को जड़-भौतिक लोक में अभिव्यक्त करने के लिये तैयार हैं। किसी मानसिक आदर्श या सिद्धांत को ऊंचा उठाकर उसे आंतरिक क्रिया पर आरोपित करने में अपने-आपको मानसिक उपलब्धितक सीमित करने का या अधूरे रूपायन द्वारा भगवान् के साथ पूर्ण सायुज्य और ऐक्य तथा अपने जीवन में उनकी इच्छा के मुक्त और अंतस्थ प्रवाह के पूर्ण विकास में अड़चन डालने का, यहांतक कि मिथ्या बना डालने का खतरा रहता है। स्थिति-निर्धारण की यह ऐसी भूल है जिसकी ओर आज का मन विशेष रूप से प्रवृत्त है। इन छोटी-मोटी चीजों को लाने की अपेक्षा, जो हमें एकमात्र आवश्यक वस्तु की ओर से भटका सकती हैं, कहीं ज्यादा अच्छा है कि हम भगवान् की उपलब्धि से प्राप्त होनेवाली शांति या प्रकाश या आनंद की ओर चलें। भौतिक जीवन और आंतरिक जीवन के दिव्यीकरण को हम भागवत योजना के भाग के रूप में देखते हैं लेकिन यह मानसिक तत्त्व द्वारा क्रियान्वित होकर नहीं बल्कि भीतरी उपलब्धि के उमड़ने से, किसी ऐसी वस्तु से ही परिपूर्ण हो सकता है जो अंदर से बाहर की ओर विकसित होती है।

*

भगवान् की उपलब्धि एकमात्र आवश्यक वस्तु है, बाकी सब तभीतक वांछनीय है जहांतक वह उसकी ओर ले जाये या उसमें सहायता करे या जब उपलब्धि हो जाये तो वह उसे अभिव्यक्त या विस्तृत करे। भागवत कार्य के लिये समस्त जीवन की अभिव्यक्ति या व्यवस्था के लिये पहला काम है व्यक्तिगत या सामूहिक साधना जो भगवत्-प्राप्त मनुष्यों के सामान्य जीवन और उपलब्धि के लिये जरूरी है। दूसरा, मेरे योग का समस्त अर्थ और प्रयोजन है संसार को उसकी ओर बढ़ने और उसके प्रकाश में जीने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता देना। लेकिन उपलब्धि पहली आवश्यकता है और सब कुछ उसीके चारों ओर घूमता है क्योंकि इससे पृथक् होकर बाकी सब का कोई अर्थ न होगा।

आंशिक अभिव्यक्ति से पूर्ण वास्तविकता की ओर

भगवान् सर्व हैं और वह भी जो सर्व का अतिक्रमण करता और उसके परात्पर है। ऐसी किसी चीज का अस्तित्व नहीं है जो भगवान् न हो लेकिन हर चीज जिसका अस्तित्व है भगवान् नहीं है, यह प्रतीकात्मक रूप में हो सकता है, अपनी ही चेतना के एक बिंब के रूप में। मानव जाति भी भगवान् का प्रतीक या प्रतिच्छाया है। हम उन्हींकी मूर्ति के रूप में बने हैं, आकारगत मूर्ति के रूप में नहीं बल्कि उनकी सत्ता और व्यक्तित्व के बिंब के रूप में, भागवत तत्त्व के सार और गुण, दिव्य सत्ता और दिव्य ज्ञान के रूप में।

हर चीज में, चाहे वह दृश्य रूप में अस्तित्व रखती हो या हम प्रतीकात्मक रूप में कह लें, दो भाग होते हैं, अपने-आपमें वस्तु और प्रतीक, आत्मा और प्रकृति, ''रेस'' (जो चीज है) और ''फैक्टम'' (जो चीज बनायी गयी है), परिवर्तनशील सत्ता और अपरिवर्तनशील सत्, वह जो अधिप्राकृतिक है और वह जो प्राकृत है।

हर चीज में, जिसका अस्तित्व है, कोई-न-कोई चीज ऐसी होती है जो अपना अतिक्रमण करना चाहती है; जड़तत्त्व प्राण बनने की ओर गति करता है, प्राण मन बनने की ओर और मन आदर्श सत्य की ओर गति करता है और आदर्श सत्य दिव्य और अनंत आत्मा बनने की ओर उठता है। कारण यह है कि हर प्रतीक भगवान् की आंशिक अभिव्यक्ति होने के नाते अपनी संपूर्ण वास्तविकता होने की ओर बढ़ता और प्रयास करता है। वह अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीयमान स्व का अतिक्रमण करके वास्तविक आत्मा बनने की अभीप्सा करता है। बनायी हुई चीज अस्तित्व रखनेवाली चीज की ओर आकर्षित होती है, संभूति सत्ता की ओर, प्राकृतिक अतिप्राकृतिक की ओर, प्रतीक वास्तविक वस्तु की ओर, प्रकृति भगवान् की ओर आकर्षित होती है।

ऊर्ध्वमुखी गति जगत् में जीवन की परिपूर्णता का साधन है और अधोमुखी गति विनाश, नरक और सत्यानाश का रास्ता है। एक बार किसी चीज को अपने स्वाभाविक या प्राकृतिक अस्तित्व का विश्वास हो जाये तो वह ऊपर की ओर प्रवृत्त होती है, अधिप्राकृतिक को ढूंढती है। हर प्रकृति किसी अधिप्रकृति की ओर एक सीढ़ी है जो अपने लिये तो प्राकृतिक है परंतु जो उसके नीचे है उसके लिये अधि-प्राकृतिक। प्राण जड़ के लिये अधिप्राकृतिक है, मन प्राण के लिये अधिप्राकृतिक है, आदर्श सत्ता मानसिक सत्ता के लिये अधिप्राकृतिक है, अनंत सत्ता आदर्श सत्ता के लिये अधिप्राकृतिक है। इसी तरह मनुष्य पशु से अधिप्राकृतिक है, भगवान् मनुष्य से अतिप्राकृतिक हैं। जैसे ही मनुष्य अपने प्राकृतिक अस्तित्व के बारे में आश्वस्त हो जाये, उसे भगवान् की ओर ऊर्ध्व गति पर जोर देना चाहिये। ऊर्ध्वमुखी गति स्वर्ग की ओर है और निम्नमुखी गति नरक की ओर।

पाशविक आत्मा जब अपनी पाशविकता का अतिक्रमण करके मानव सत्ता बनती है तो वह अपने-आपको परिपूर्ण करती है। मानवजाति भी तब अपने-आपको परिपूर्ण करती है जब वह मानवता का अतिक्रमण करके भगवान् बन जाती है।

*

व्यक्ति के अंदर भगवान् को संपादित करने के लिये हमें व्यक्ति का अतिक्रमण करना होगा। हमारी साधना का पहला लक्ष्य है अपने सीमित अहंकार को निकाल बाहर करना और वैश्व चेतना को पाना।

विश्व के अंदर भगवान् को संपादित करने के लिये व्यक्तिगत रूप से हमें विश्व का अतिक्रमण करना चाहिये। साधना का दूसरा लक्ष्य है परात्पर चेतना में आरोहण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

. . . मानव अहंकार हमारी चेतना की निम्नतर अपूर्ण अवस्था है और भगवान् उसकी उच्चतर पूर्ण अवस्था।

"योग अपने लिये नहीं भगवान् के लिये"

हमारे समस्त ऊर्ध्वमुखी प्रयास में स्वभावतः पहले कामना का निम्नतर तत्त्व प्रवेश करता है। क्योंकि जिस चीज को प्रबुद्ध इच्छा करने लायक काम के रूप में देखती है और जिसे जीतने लायक मुकुट मानकर उसका अनुसरण करती है, जिसे हृदय एकमात्र आनंददायक वस्तु मानकर गले लगाता है; जो चीज अपने-आपको सीमित और सीमित होने के कारण विरोधी समझती है, लालसा करती और संघर्ष करती है, वह अहंकारमय कामना के पीड़ित आवेग के साथ खोज करेगी। हमारे अंदर लालसा करनेवाली इस प्राण-शक्ति और कामना-पुरुष को पहले स्वीकार करना पड़ता है लेकिन सिर्फ इस हेतु कि उसे रूपांतरित किया जा सके। एकदम शुरू से ही उसे अन्य सभी कामनाओं को त्याग कर अपने-आपको भगवान् के लिये आवेग पर केंद्रित होना सिखाना जरूरी होता है। यह प्रधान बिंदु प्राप्त हो जाये तो फिर उसे कामना करना सिखाना पड़ता है, स्वयं अपने अकेले के लिये नहीं बल्कि जगत् के अंदर भगवान् के लिये और अपने अंदर भगवान् के लिये। उसे अपने-आपको किसी व्यक्तिगत आध्यात्मिक लाभ पर केंद्रित नहीं करना होता; यद्यपि सभी संभव आध्यात्मिक लाभों के बारे में हमें निश्चय रहता है, बल्कि उसे दृढ़ रहना चाहिये उस महान् कार्य पर जो हमारे अंदर और औरों के अंदर किया जाना है, उस अवतरित होती हुई अभिव्यक्ति पर जिसे इस जगत् में भगवान् की महिमामय परिपूर्ति बनना है, उस सत्य पर जिसे सीखना और जीना और हमेशा के लिये सिंहासनारूढ़ होना है। लेकिन अंतिम और उसके लिये सबसे कठिन, उचित उद्देश्य के साथ खोजने से भी ज्यादा कठिन, उसे ठीक ढंग से खोजना सिखाना होगा। उसे कामना करना, अपने अहंकार भरे तरीके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से नहीं, भगवान् के तरीके से कामना करना सीखना होगा। उसे अब, जैसे प्रबल पृथक्कारी इच्छा सदा आग्रह करती है, हमेशा अपने ही परिपूर्ण करने के तरीके पर, अपने ही वश में करने के स्वप्न पर, अपने ही उचित और वांछनीय के विचार पर आग्रह न करना चाहिये। उसे एक महत्तर और विशालतर इच्छा को पूरा करने के लिये लालायित होना और कम पक्षपाती और कम अज्ञानी पथ-प्रदर्शन की सेवा में रहना चाहिये। इस तरह प्रशिक्षित होने पर कामना—मनुष्य की वह सबसे बड़ी, बेचैन उत्पीड़क और कष्ट देनेवाली और हर तरह की लड़खड़ाहट का कारण वह कामना इस योग्य हो जायेगी कि वह अपने दिव्य प्रतिरूप में रूपांतरित हो जाये। क्योंकि कामना और आवेग के भी अपने दिव्य रूप होते हैं। समस्त लालसा और दुःख के परे अंतरात्मा की खोज का एक शुद्ध आनंद है, आनंद का एक संकल्प है जो परमानंद के अधिकार में विराजमान होता है।

जब एक बार एकाग्रता का विषय तीन प्रधान यंत्रों पर, विचार, हृदय और इच्छा-शक्ति पर अधिकार कर ले या उनके अधिकार में आ जाये—यह ऐसी निष्पत्ति है जो पूरी तरह तभी संभव होती है जब हमारे अंदर कामना-पुरुष दिव्य विधान के प्रति समर्पित हो जाये—तब मन, प्राण और शरीर की पूर्णता हमारी रूपांतरित प्रकृति में प्रभावी रूप से परिपूर्ण हो सकती है। यह अहंकार की व्यक्तिगत तुष्टि के लिये नहीं बल्कि इसलिये होगा कि सब कुछ दिव्य उपस्थिति के लिये एक उचित मंदिर, दिव्य कर्म के लिये निर्दोष यंत्र बन जाये। क्योंकि काम सचमुच तभी हो सकता है जब समर्पित और पूर्णतया निर्मित यंत्र निःस्वार्थ कर्म के लिये उपयुक्त बन जाये और यह तब होगा जब व्यक्तिगत कामना और अहंकार तो समाप्त हो जायें पर मुक्त व्यक्ति नहीं। जब छोटा-सा अहंकार समाप्त हो जाये तब भी सच्चा आध्यात्म पुरुष बना रह सकता है और उसके अंदर भगवान् की इच्छा और क्रिया और आनंद और उनकी पूर्णता और परिपूर्ति का आध्यात्मिक उपयोग बना रह सकता है। तब हमारे कर्म दिव्य होंगे और दिव्य रीति से किये जायेंगे; मन, प्राण और शरीर भगवान् के प्रति अर्पित होंगे और उनके उपयोग अन्यों में और संसार में उस चीज को परिपूर्ण करने में सहायक होंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो हमारे अंदर चरितार्थ हो चुकी है—हम मूर्त ऐक्य, प्रेम, स्वाधीनता, बल, शक्ति, भव्यता, अमर आनंद का जो कुछ भी अभिव्यक्त कर सकते हैं—यही तो आत्मा के पार्थिव अभियान का लक्ष्य है।

लक्ष्य को कभी न भूलो

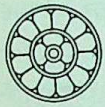

तुम चाहे जो करो परंतु अपने जीवन में जो लक्ष्य तुमने अपने सामने रखा है उसे कभी न भूलो। तुम एक बार इस महान् खोज के लिये चल पड़ो तो कोई भी चीज बड़ी या छोटी नहीं रहती। सभी चीजें समान रूप से महत्त्वपूर्ण होती हैं और तुम्हारी सफलता को तेज बना सकती हैं या उसमें देर लगा सकती हैं। अतः जब तुम खाना खाओ, कुछ सेकेंड इस अभीप्सा में केंद्रित रहो कि तुम जो भोजन खानेवाले हो वह तुम्हारे शरीर में ऐसा पदार्थ लाये जो इस महान् खोज का और तुम्हारे प्रयास के लिये ठोस आधार बन सके और उस प्रयास के लिये जरूरी अध्यवसाय और दृढ़ता की ऊर्जा दे।

सोने से पहले कुछ क्षण इस अभीप्सा पर एकाग्र होओ कि नींद तुम्हारी थकी स्नायुओं को ताजा करे, तुम्हारे दिमाग में अचंचलता और स्थिरता लाये ताकि जगने पर तुम फिर से नये उत्साह और ऊर्जा के साथ चरम शोध के मार्ग पर अपनी यात्रा में आगे बढ़ सको।

कुछ क्रिया करने से पहले इच्छाशक्ति पर केंद्रित होओ कि तुम्हारी क्रिया चरम शोध के मार्ग में तुम्हारी सहायता करे, या कम-से-कम उसमें किसी तरह की बाधा न दे।

जब तुम बोलो, मुंह से शब्दों के बाहर निकलने से पहले इतनी पर्याप्त एकाग्रता करो कि अपने शब्दों पर नियंत्रण कर सको और केवल वही शब्द निकलें जो एकदम जरूरी हैं, केवल ऐसे ही शब्द निकलें जो तुम्हारे परम शोध की यात्रा की प्रगति में बाधक न हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षेप में, अपने जीवन के प्रयोजन और लक्ष्य को कभी न भूलो। परम शोध के लिये इच्छा-शक्ति तुम्हारे ऊपर और तुम जो कुछ हो उसके ऊपर हमेशा बनी रहे, जैसे कोई प्रकाश का विशाल पक्षी हो जो तुम्हारी सत्ता की सभी गतिविधियों पर छाया रहे।

कैसे शुरू करें

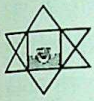

इस योग की साधना किन्हीं निश्चित मानसिक शिक्षाओं या निर्धारित ध्यान-पद्धतियों, मंत्रों या ऐसी ही अन्य चीजों से नहीं बल्कि अभीप्सा, भीतर या ऊपर की ओर आत्म-एकाग्रता, अपने-आपको एक प्रभाव के प्रति खोलने, अपने से ऊपर की दिव्य शक्ति और उसकी क्रिया की ओर हृदय में भागवत उपस्थिति की ओर खोलने और उस सबके त्याग से शुरू होती है जो इन चीजों के विरुद्ध हो।

*

तुमने पूछा है कि मानसिक अन्वेषण को जीवित-जाग्रत् आध्यात्मिक अनुभव में बदलने के लिये कौन-सी तपस्या का अनुसरण करना चाहिये। पहली आवश्यकता है तुम्हारी चेतना की स्वयं अपने अंदर एकाग्रता के अभ्यास की। साधारण मानव मन की क्रिया सतह पर होती है जो सच्ची आत्मा को छिपाये रहती है। लेकिन सतह के पीछे, अंदर एक और छिपी चेतना होती है जिसमें हम अपनी सच्ची आत्मा और प्रकृति के गहनतर, विशालतर सत्य के बारे में अभिज्ञ हो सकते हैं, आत्मा को उपलब्ध कर सकते और प्रकृति को मुक्त और रूपांतरित कर सकते हैं। इस एकाग्रता का उद्देश्य है सतही मन को स्थिर करना और भीतर निवास करना शुरू करना। सतही चेतना से भिन्न इस सत्य चेतना के दो मुख्य केंद्र हैं, एक हृदय में (भौतिक हृदय नहीं बल्कि वक्ष के बीच में हृदय-चक्र) और दूसरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तिष्क में। हृदय में एकाग्रता भीतर की ओर खुलती है और इस भीतरी उन्मीलन का अनुसरण करके और गहराई में जाकर हम अंतरात्मा या चैत्य पुरुष के बारे में अभिज्ञ होते हैं, जो व्यक्ति के अंदर दिव्य तत्त्व है। यह सत्ता अनावृत्त होकर आगे आना, प्रकृति पर नियंत्रण करना, उसे और उसकी सभी गतिविधियों को सत्य की ओर, भगवान् की ओर मोड़ना शुरू करती है और जो कुछ उसके ऊपर है उसका नीचे आह्वान करती है। वह परम उपस्थिति की चेतना को, सत्ता के उत्सर्ग को उच्चतम की ओर लाती है और हमारी प्रकृति में हमारे ऊपर स्थित बृहत्तर शक्ति और चेतना के अवतरण को नीचे बुलाती है। हृदय-चक्र में एकाग्र करने के साथ भगवान् के प्रति अपना समर्पण और इस आंतरिक उन्मीलन तथा हृदय में भागवत उपस्थिति के लिये अभीप्सा पहला मार्ग है। अगर यह किया जा सके, जो स्वाभाविक आरंभ है, एक बार उसका परिणाम प्राप्त हो जाये तो आध्यात्मिक पथ, दूसरे ढंग से शुरू करने की अपेक्षा कहीं अधिक सरल और सुरक्षित हो जाता है।

*

१—अपने-आपको अधिकाधिक समर्पित करो—समस्त चेतना, उसमें जो कुछ होता है, अपना समस्त कर्म और सभी क्रियाएं, सब कुछ अर्पित कर दो।

२—और तुम्हारे अपने दोष और दुर्बलताएं हैं तो उन्हें भगवान् के आगे बदलने या समाप्त करने के लिये प्रस्तुत कर दो।

३—मैंने तुमसे जो कहा है वह करने की कोशिश करो। जबतक तुम सदा हृदय के अंदर दिव्य उपस्थिति का अनुभव न करने लगो तबतक हृदय में एकाग्र होओ।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंतरिक एकाग्रता की साधना में ये चीजें होती हैं :

१—हृदय में चेतना को स्थिर करना और वहांपर दिव्य जननी के भाव, मूर्त रूप या नाम पर एकाग्र होना, जो भी तुम्हारें लिये सबसे आसान हो।

२—हृदय में इस एकाग्रता द्वारा धीरे-धीरे, क्रमशः मन को स्थिर करना।

३—हृदय में माताजी की उपस्थिति के लिये और उनके द्वारा मन, प्राण और क्रिया के नियंत्रण के लिये अभीप्सा।

लेकिन मन को स्थिर करने के लिये और आध्यात्मिक अनुभूति पाने के लिये पहली जरूरत है प्रकृति को शुद्ध करने और तैयार करने की। इसमें कभी-कभी कई वर्ष लग जाते हैं। उचित वृत्ति के साथ किया गया कार्य उसके लिये सबसे सरल उपाय है . . .

कर्म—भगवान् की सेवा

. . . कर्म ऐसी क्रिया है जो किसी निश्चित उद्देश्य के लिये, सुव्यवस्थित रूप से निरंतर की जाती है। सेवा ऐसा कर्म है जो माताजी के लिये, उनके दिग्दर्शन में किया जाता है।

*

कर्म से मेरा मतलब है, भगवान् के लिये, भगवान् के साथ अधिकाधिक ऐक्य में किया गया काम—केवल भगवान् के लिये और किसीके लिये नहीं।

*

अपने कर्म और क्रियाओं में तुम्हें उसी तरह करना चाहिये जैसे अपनी एकाग्रता में करते हो, माताजी की ओर खुलो, उन्हें माताजी के पथ-प्रदर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रख दो, शांति को बुलाओ, सहारा देनेवाली शक्ति को, संरक्षण को बुलाओ और वे काम कर सकें इसके लिये उन सभी गलत प्रभावों को अस्वीकार करो जो गलत, लापरवाही भरी, असचेतन गतियों द्वारा तुम्हारे रास्ते में आ सकते हैं।

इस सिद्धांत का अनुसरण करो तो तुम्हारी सारी सत्ता शांति और आश्रय देनेवाली शक्ति और प्रकाश के नीचे एक हो जायेगी।

*

यहां कर्म अपनी क्षमता दिखाने, कोई पद पाने या माताजी का भौतिक सामीप्य पाने के उद्देश्य से नहीं किया जाता बल्कि पूर्ण योग के एक अंग, कर्म-योग के लिये एक क्षेत्र और अवसर के रूप में, सच्ची यौगिक पद्धति से काम करना सीखने के लिये, सेवा द्वारा व्यावहारिक निःस्वार्थता, आज्ञापालन, कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन, भगवान् और उनके कार्य को सबसे पहले और अपने-आपको अंतिम रखना सीखने के लिये, सामंजस्य, धैर्य, सहिष्णुता आदि के द्वारा करना सीखने के लिये किया जाता है। जब कार्यकर्ता ये चीजें सीख लेते हैं और अहं-केंद्रित नहीं रहते, जैसे कि तुममें से अधिकतर इस समय हो, तब काम का वह समय आयेगा जब सचमुच क्षमता दिखलायी जा सकती है यद्यपि उस अवस्था में भी क्षमता दिखलाना आनुषंगिक होगा, वह कभी भागवत कर्म का मुख्य विचार या उद्देश्य नहीं हो सकता।

*

तुमने जो लिखा है उससे मालूम होता है कि तुम्हारे अंदर काम के बारे में एक गलत विचार था। आश्रम में कार्य मानवजाति की या आश्रम के साधक नामधारी किसी अंग की सेवा के लिये नहीं था। और न ही वह सुखपूर्वक सामाजिक कार्य के अवसर या साधकों के बीच भावों और आसक्तियों के प्रवाह, कुछ के या सबके साथ खुला प्राणिक आदान-प्रदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही था। कर्म का उद्देश्य था भगवान् की सेवा या भगवान् की ओर आंतरिक रूप से खुलने का क्षेत्र, केवल भगवान् के प्रति समर्पण, अहंकार और सभी सामान्य प्राणिक गतिविधियों का त्याग और चैत्य उत्थान, निःस्वार्थता, आज्ञापालन के लिये प्रशिक्षण, सभी मानसिक, प्राणिक और अन्य सीमित व्यक्तित्व के सभी स्वाग्रहों का त्याग। स्वाग्रह लक्ष्य नहीं है, एक सामुदायिक प्राणिक अहंकार की रचना भी लक्ष्य नहीं है। कर्मयोग का लक्ष्य है छोटे-से अहंकार का भागवत ऐक्य में मिल जाना, शुद्धि, समर्पण, अपने अज्ञान भरे आत्म-निर्देशन के स्थान पर—जो अपने वैयक्तिक विचारों और वैयक्तिक भावों पर आधारित हो—भागवत पथ-प्रदर्शन का प्रतिस्थापन, अपनी इच्छा का भागवत इच्छा के प्रति समर्पण।

अगर तुम यह अनुभव करते हो कि भगवान् की अपेक्षा मनुष्य तुम्हारे अधिक निकट हैं और तुम सीधे भगवान् की सेवा और उनके प्रेम की जगह मनुष्यों की सेवा और उनके लिये प्रेम द्वारा भगवान् को खोजते हो तो तुम एक गलत सिद्धांत का अनुसरण करते हो। क्योंकि यह मानसिक, प्राणिक और नैतिक जीवन का सिद्धांत है, आध्यात्मिक जीवन का नहीं।

*

कर्म कहीं अधिक सरल मार्ग है बशर्ते कि तुम्हारा मन भगवान् को छोड़कर कर्म पर ही स्थित न रहे। लक्ष्य होना चाहिये भगवान् और कर्म केवल एक साधन हो। कविता आदि का उपयोग अपनी आंतरिक सत्ता के साथ संपर्क बनाये रखने के लिये है और इससे अंतरतम के साथ सीधे संपर्क की तैयारी होती है लेकिन तुम्हें उसीपर ठहर न जाना चाहिये, तुम्हें आगे वास्तविक वस्तु की ओर बढ़ते जाना चाहिये। अगर तुम साहित्यवाद, कवि या चित्रकार बनने को अपने-आपमें पाने लायक चीज समझते हो तो यह यौगिक भाव नहीं है। इसीलिये कभी-कभी मुझे कहना पड़ता है कि हमारा काम है योगी बनना, निरे कवि, चित्रकार आदि बनना नहीं।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग हर कलाकार में (कुछ विरले अपवाद हो सकते हैं) उसके प्राणिक-भौतिक भागों में सार्वजनिक व्यक्ति होता है जो उससे श्रोताओं की दी हुई उत्तेजना, सामाजिक सराहना, संतुष्ट दर्प, प्रशंसा और कीर्ति की लालसा करवाता है। अगर तुम योगी होना चाहते हो तो इन सबको पूरी तरह जाना चाहिये। तुम्हारी कला को अपने अहंकार की, किसी और चीज या किसी और व्यक्ति की नहीं बल्कि पूरी तरह से भगवान् की सेवा होना चाहिये।

*

साधक के लिये बाहरी संघर्ष, कष्ट और मुसीबतें अहंकार और राजसिक कामनाओं को जीतने के लिये, संपूर्ण समर्पण कर सकने के लिये साधन मात्र हैं। जबतक तुम सफलता पर आग्रह करते हो तबतक तुम कम-से-कम अंशतः अहंकार के लिये काम करते हो और कठिनाइयां और बाहरी असफलताएं तुम्हें यह चेतावनी देने आती हैं कि बात ऐसी है : तुम्हें पूर्ण समता लानी चाहिये।

सूर्यालोकमय पथ

अगर तुम्हें भगवान् की चाह है तो भगवान् अपने-आप हृदय की शुद्धि करेंगे, साधना को विकसित करेंगे और आवश्यक अनुभूतियां प्रदान करेंगे। अगर तुम्हारे अंदर भगवान् पर विश्वास और भरोसा हो और समर्पण करने की इच्छा हो तो ऐसा हो सकता और होता है। इसका मतलब होता है केवल अपने ही प्रयास पर निर्भर रहने की जगह अपने-आपको भगवान् के हाथों में सौंप देना और इसमें निहित होता है भगवान् पर विश्वास और भरोसा और उत्तरोत्तर आत्म-दान। वस्तुतः यह साधना का वह सिद्धांत है जिसका स्वयं मैंने अनुसरण किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। मेरा ख्याल है कि श्रीरामकृष्ण का बिलौटे के रूपक से यही मतलब होगा। लेकिन सभी इसका एकदम अनुसरण नहीं कर सकते, वहांतक पहुंचने में उन्हें समय लगता है—जब मन और प्राण अचंचल और स्थिर हो जायें तब इसका सबसे बढ़कर विकास होता है।

समर्पण से मेरा मतलब है मन और प्राण का आंतरिक समर्पण। बाहरी समर्पण भी होता है, साधना के भाव या आवश्यकता की विरोधी हर चीज को छोड़ देना, उत्सर्ग, भगवान् के पथ-प्रदर्शन के आगे आज्ञाकारिता, चाहे तुम सीधे वहांतक जा पहुंचो या चैत्य द्वारा या गुरु के पथ-प्रदर्शन द्वारा। मैं यह कह सकता हूं कि लंबे उपवास, **प्रायोपवेशन**, का समर्पण के साथ कोई संबंध नहीं है। वह एक बहुत ही कठोर प्रकार की और मेरी राय में अत्यधिक उग्र तपस्या है जो प्रायः संकटाकीर्ण होती है।

आंतरिक समर्पण का मर्म है भगवान् पर विश्वास और भरोसा। तुम यह मनोवृत्ति अपनाते हो, 'मैं भगवान् को चाहता हूं और कुछ भी नहीं। मैं अपने-आपको पूरी तरह उनके अर्पण करना चाहता हूं और चूंकि मेरी अंतरात्मा यह चाहती है इसलिये यह अवश्यंभावी है कि मैं उनसे मिलूंगा और उन्हें चरितार्थ कर लूंगा। मैं और कुछ नहीं चाहता। बस इतना ही कि मेरे अंदर उनकी क्रिया मुझे उनके निकट ले आये, उनकी क्रिया गुप्त हो या प्रकट, अवगुंठित हो या अभिव्यक्त, वे सब कुछ अपने तरीके से, अपने समय पर करें, मैं अपने समय या तरीके पर आग्रह नहीं करता। मैं उनपर विश्वास करूंगा, उनकी इच्छा को स्वीकार करूंगा, उनके प्रकाश और आनंद और उनकी उपस्थिति के लिये सतत अभीप्सा करूंगा, उनपर भरोसा रखते हुए सभी कठिनाइयों और विलंबों में से निकलूंगा और कभी हार न मानूंगा। भगवान् करे कि मेरा मन स्थिर हो और उनपर भरोसा करे, वे उसे अपने प्रकाश की ओर खोलें, मेरा प्राण अचंचल और स्थिर हो और केवल उन्हींकी ओर मुड़े और वे उसे अपनी अचंचलता और आनंद की ओर खोलें। सब कुछ उनके लिये हो; मैं उन्हीके लिये होऊं, जो कुछ भी हो मैं अपनी इस अभीप्सा और आत्म-समर्पण को बनाये रखूंगा और इसपर पूरा भरोसा रखूंगा कि यह होकर रहेगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हें इस मनोवृत्ति में विकसित होना चाहिये; निश्चय ही यह सब एक साथ पूरा नहीं किया जा सकता। मानसिक और प्राणिक वृत्तियां आड़े आती हैं लेकिन अगर तुम इसके लिये इच्छा बनाये रखो तो यह सत्ता में बढ़ेगी। बाकी सब जब पथ-प्रदर्शन प्रकट हो तो उसकी आज्ञा मानने पर निर्भर है, तब अपने मन और प्राण की गतिविधियों को बाधा न डालने दो।

मेरे कहने का यह आशय नहीं है कि यही एकमात्र पथ है और यह कि साधना अन्यथा की नहीं जा सकती—दूसरे बहुत-से पथ हैं जिनसे तुम भगवान्‌तक पहुंच सकते हो। लेकिन यही वह एकमात्र पथ है जिसे मैं जानता हूं कि इसके द्वारा—प्रकृति की तैयारी के पहले ही—भगवान् द्वारा अपने ऊपर ली गयी साधना एक अनुभवगम्य तथ्य बन जाती है। दूसरे तरीकों में भागवत क्रिया का समय-समय पर अनुभव किया जा सकता है, लेकिन अधिकतर वह तबतक परदे के पीछे ही रहती है जबतक सब कुछ तैयार न हो जाये। कई साधनाओं में भागवत क्रिया को स्वीकारा नहीं जाता, सब कुछ तपस्या द्वारा करना आवश्यक होता है। अधिकतर तपस्याओं में दोनों चीजें मिली-जुली होती हैं—तपस्या अंत में प्रत्यक्ष सहायता तथा हस्तक्षेप का आह्वान करती है। सब कुछ भगवान् कर रहे हैं यह भाव और अनुभूति उस योग से संबद्ध है जो समर्पण पर आधारित होता है। लेकिन चाहे जिस किसी पथ का अनुसरण किया जाये, एकमात्र करने लायक कार्य है निष्ठावान् रहना और अंततक जाना।

भगवान् के द्वारा सब कुछ किया सकता है,—हृदय तथा प्रकृति शुद्ध किये जा सकते हैं, आंतरिक चेतना प्रबुद्ध की जा सकती है, आवरण हटाये जा सकते हैं,—अगर तुम अपने-आपको भरोसे तथा विश्वास के साथ भगवान् को दे सको, अगर तुम पूरी तरह से तुरंत ऐसा न भी कर सको, फिर भी तुम जितना अधिक यह कर सको, उतना ही अधिक आंतरिक सहायता तथा पथ-प्रदर्शन प्राप्त होगा तथा तुम्हारे अंदर भगवान् की अनुभूति बढ़ती जायेगी। अगर संदेहशील मन कम सक्रिय हो जाये तथा विनम्रता तथा समर्पण का संकल्प बढ़े तो ऐसा करना पूरी तरह से संभव हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। तब बस इसके सिवाय और किसी शक्ति तथा तपस्या की आवश्यकता नहीं होती।

*

साधना की प्राथमिक अवस्था में—और प्राथमिक से मेरा मतलब किसी छोटे अंश से नहीं है—प्रयास अपरिहार्य होता है। निस्संदेह समर्पण तो होता ही है लेकिन समर्पण कोई ऐसा कार्य नहीं है जो एक दिन में हो जाये। मन के अपने विचार होते हैं और वह उनसे चिपका रहता है; मानव प्राण समर्पण का प्रतिरोध करता है क्योंकि प्रारंभिक अवस्थाओं में वह जिसे समर्पण कहता है वह संशयात्मक प्रकार का आत्मदान होता है जिसमें प्राण की मांग मिली रहती है। भौतिक चेतना पत्थर की तरह होती है और वह जिसे समर्पण कहता है वह बहुधा तमस् से बढ़कर और कुछ नहीं होता। केवल चैत्य ही समर्पण करना जानता है और साधारणतः आरंभ में यह चैत्य बहुत अधिक छिपा रहता है। जब चैत्य प्रबुद्ध होता है तो वह समग्र सत्ता का अचानक और सच्चा समर्पण ला सकता है, क्योंकि फिर बाकी सबकी जो कठिनाई होती है उसका तुरंत उपाय हो जाता है और वह गायब हो जाती है। लेकिन तबतक प्रयास अपरिहार्य है। या फिर वह तबतक अनिवार्य है जबतक ऊपर से शक्ति सत्ता में बाढ़ की तरह उतरकर साधना को अपने हाथ में न ले ले, व्यक्ति के लिये साधना का अधिकाधिक कार्य स्वयं करने लग जाये और व्यक्ति के प्रयास पर कम-से-कम कार्यभार छोड़े—लेकिन उस समय भी, प्रयास न सही पर कम-से-कम तबतक अभीप्सा और सतर्कता तो आवश्यक हैं ही जबतक मन, इच्छा, प्राण तथा शरीर को भागवत शक्ति पूर्णतया अधिकृत न कर ले। मेरे ख्याल से इस विषय की चर्चा मैंने "माता" पुस्तक के किसी एक अध्याय में की है।

*

समर्पण की बातें करने या सर्वांगीण समर्पण के लिये मात्र एक विचार या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक धीमी-सी इच्छा रखने से कोई लाभ न होगा; एक मौलिक तथा सर्वांगीण परिवर्तन के लिये एक प्रबल इच्छा होनी ही चाहिये।

केवल मानसिक मनोवृत्ति अपनाने से यह काम नहीं किया जा सकता, यहांतक कि बहुत-से आंतरिक अनुभव पा लेने से भी यह नहीं किया जा सकता, जो बाहरी मनुष्य को वैसा ही छोड़ देते हैं जैसा वह पहले था। इस बाहरी मनुष्य को ही खुलना, समर्पण करना और परिवर्तित होना है। उसकी प्रत्येक छोटी-से-छोटी गति, आदत तथा क्रिया को समर्पित होना होगा, उन सबको भागवत प्रकाश के सामने देखना, उसके सम्मुख रखना और उद्घाटित करना होगा, भागवत शक्ति के प्रति उन्हें अर्पित कर देना होगा ताकि उनके पुराने रूप तथा ध्येय नष्ट कर दिये जायें और उनका स्थान भागवत सत्य तथा दिव्य माता की रूपांतरकारी चेतना की क्रिया ले ले।

*

यह (यह विचार कि साधना स्वयं अपने-आपकी अपेक्षा भगवान् द्वारा की जाती है) एक सत्य है लेकिन ऐसा सत्य जो चेतना के लिये तबतक प्रभावकारी नहीं बनता जबतक उसे चरितार्थ या जितनी मात्रा में अनुभूत किया जाता है उतनी मात्रा में चरितार्थ नहीं किया जाता। जो व्यक्ति इस कारण बंध जाते हैं वे ऐसे लोग होते हैं जो विचार को तो स्वीकार करते हैं लेकिन उसे चरितार्थ नहीं करते—अतः न उनके अंदर तपस्या की शक्ति होती है और न ही भागवत कृपा की शक्ति। दूसरी ओर, जो इसको चरितार्थ कर सकते हैं वे अपनी तपस्या के पीछे तथा उसके अंदर भागवत शक्ति की क्रिया का अनुभव करते हैं।

*

अगर पूर्ण समर्पण नहीं है तो बिल्ली के बच्चे की मनोवृत्ति अपनाना संभव नहीं है—वह केवल तामसिक निष्क्रियता बन जाती है जो अपने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको समर्पण का नाम दे देती है। अगर आरंभ में पूर्ण समर्पण संभव नहीं है तो इसका अर्थ यह है कि व्यक्तिगत प्रयास अनिवार्य है।

*

[देवी-देवताओं इत्यादि के बारे में कुछ थोड़ी-सी जानकारी पाने के बाद अब चमत्कारों की बातें सुनिये।

सामान्य आदमी चमत्कार को नमस्कार करता है। एक भ्रांत धारणा फैली हुई है कि योगी को तो चमत्कार दिखलाने ही चाहियें। एक समय था जब श्रीअरविंद के बारे में यह विचार फैला हुआ था कि वे एक घने जंगल में रहते थे और ध्यान करते समय धरती से बहुत ऊपर उठ जाते थे, कि वे ध्यान करते हुए ॐ का जाप करते थे जो दो मील दूरतक सुनायी देता था। आज भी कई योगियों के बारे में कहा जाता है कि वे आकाश में हाथ हिलाकर घड़ी, फांउटेनपेन, मिठाई आदि नाना प्रकार की चीजें पैदा कर देते और लोगों को देते हैं। इस तरह की बातें झूठी, सच्ची और मिली-जुली होती हैं।

यह वार्तालाप भी श्रीअरविंद की सांध्य-वार्ताओं से लिया गया है।—सं]

शिष्य—मैं यह जानना चाहता हूं कि कवियों ने कृष्णलीला की जो घटनाएं गायी हैं क्या वे सचमुच भौतिक रूप से उनके जीवन में घटी थीं या यह अतीन्द्रिय का चित्रण है ?

श्रीअरविंद—इससे तुम्हारा मतलब क्या है ?

शिष्य—ऐसी घटनाएं जैसे असुर-संहार।

श्रीअरविंद—वर्णन पढ़कर ही तुम समझ सकते हो कि यह वास्तव में भौतिक घटना है या नहीं। तुम हर चीज को भौतिक रूप में नहीं ले सकते। इनमें तथ्यों, परंपरा, अतीन्द्रिय अनुभूति और इतिहास का मिश्रण है।

शिष्य—कवि ने इन्हें कैसे पाया ? केवल भौतिक जीवन से या अतीन्द्रिय अंतर्भास से ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—तुम इन बातों को शब्दशः और भौतिक विज्ञान की दृष्टि से नहीं ले सकते। कवि इतिहास नहीं कविता लिख रहा था। हो सकता है कि उसे अपनी सामग्री अतीन्द्रिय अंतर्भास से मिली हो। अपनी कल्पना से या चैत्य-मनोमय या किसी अन्य लोक से भी संभव है।

शिष्य—मेरा एक प्रश्न है, कवि कृष्ण के रूप का वर्णन करता है। यह वर्णन उनके भौतिक शरीर का है या अतीन्द्रिय शरीर का क्योंकि हम आज भी अपने अतीन्द्रिय अंतर्दर्शन में वह रूप देखते हैं।

श्रीअरविंद—इसका आखिर मूल्य ही क्या है कि वे भौतिक जगत् में रहे थे या नहीं। अगर चीज चैत्य और आध्यात्मिक स्तर पर ठीक है तो बस यही बात महत्त्वपूर्ण है। अगर तुम कृष्ण को चैत्य या आध्यात्मिक स्तर पर दिव्य शक्ति के रूप में पाते हो तो बस इसी बात का मूल्य है और किसीका नहीं। हमारे लिये वे सत्य हैं, भौतिक तो केवल चैत्य की छाया है।

शिष्य—आज मेरे एक मित्र ने फिर मुझसे हिंदू और ईसाई अंतर्दर्शनों के बारे में पूछा। यह बात उसकी समझ में नहीं आती कि अगर सत्य एक है तो अलग-अलग लोग अलग-अलग अंतर्दर्शन क्यों पाते हैं? अगर चीज सत्य है तो सबके अंतर्दर्शन एक-से होने चाहियें।

श्रीअरविंद—मानों जगत् इतना दरिद्र है कि एक ही स्तर पर अनेक अंतर्दर्शन नहीं दे सकता।

शिष्य—जब कभी अवतार आते हैं तो क्या वे एक काल साधना में नहीं बिताते ताकि मानव जाति के लिये उच्चतर चेतना को प्राप्त करना संभव हो सके।

श्रीअरविंद—तुम्हारा सचमुच मतलब क्या है?

शिष्य—भागवत में कृष्ण को पूर्णावतार बताया गया है जो पूर्ण ज्ञान, शक्ति और आनंद को बचपन से ही व्यक्त करते आये थे। क्या उन्होंने साधना की थी?

श्रीअरविंद—भागवत एक धर्मग्रंथ है, इतिहास नहीं, महाभारत भी इतिहास नहीं है। कविता, कहानी, परंपरा सब कुछ, कुछ घटनाओं के चारों ओर बुनी हुई कविता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन सवाल यह है कि क्या सभी अवतार मानवजाति की चेतना को ऊपर उठाने के लिये आते हैं ?

जो इसके लिये आते हैं साधना करते हैं।

शिष्य—कहते हैं कृष्ण ने साधना की थी।

श्रीअरविंद—कहते हैं कृष्ण ने घोर ऋषि के साथ साधना की थी लेकिन ऐसा नहीं लगता कि वराह अवतार ने कोई साधना की हो (हंसी)।

शिष्य—और न मत्स्यावतार ने।

श्रीअरविंद—और पूर्णावतार से तुम्हारा क्या मतलब है ?

शिष्य—मेरा मतलब है सत्य के पूर्ण मूर्त रूप।

श्रीअरविंद—किस सत्य के ?

शिष्य—पार्थिव जगत् पर सच्चिदानंद के मूर्त रूप।

श्रीअरविंद—"पार्थिव जगत् पर मूर्त रूप" से तुम्हारा क्या मतलब है ?

शिष्य—अनंत आनंद को पृथ्वी लोक पर लानेवाले।

श्रीअरविंद—इसका चिह्न क्या है कि वे दिव्य आनंद के मूर्त रूप थे।

शिष्य—क्या भूतकाल में किसीने शरीर को अतिमानसिक बनाया था ?

श्रीअरविंद—अतिमानसभावापन्न शरीर से तुम्हारा क्या मतलब है ?

शिष्य—मेरा मतलब है भौतिक नियमों पर अधिकार।

श्रीअरविंद—वैज्ञानिकों को भौतिक पर अधिकार होता है।

शिष्य—जी नहीं, मेरा मतलब है आध्यात्मिक अधिकार।

श्रीअरविंद—उदाहरण के लिये तैलंग स्वामी पानी में रहा करते थे, क्या उसे तुम भौतिक पर अधिकार कहोगे ? चमत्कार करना क्या अतिमानसिक शक्ति नहीं है ?

शिष्य—मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या पहले किसीने इस योग के लिये प्रयास किया था ? क्या किसीने सत्य को जड़-भौतिक स्तरतक उतारा ?

श्रीअरविंद—निश्चय ही, इसका कोई प्रमाण नहीं है। अगर किसीने भूतकाल में यह किया होता तो हमें इस तरह प्रयास न करना पड़ता जैसे आज करना पड़ रहा है। स्पष्ट है कि ऐसा प्रयास नहीं किया गया।

शिष्य—क्या किसीने कोशिश नहीं की ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—उस तरह से देखा जाये तो ऐसी कोई चीज नहीं की जाती जिसके लिये पहले प्रयास और तैयारी न की गयी हो। जो कुछ भी किया जाता है उसे पहले किया जा चुका है और आंशिक सफलता के साथ किया जा चुका है। अगर किसीने किया था तो वह परंपरा में गुम हो गया और काल-चक्रों में भुलाया जा चुका है।

शिष्य—क्या यह संभव नहीं है कि पहले सत्य का अवतरण हुआ हो और बाद में वह वापिस चला गया ?

श्रीअरविंद—अगर अवतार आया था तो यह एक प्रतिज्ञा थी। सत्य जो जड़ के अंदर तथ्य नहीं बनाया गया था। मैं इतना कह सकता हूं कि हो सकता है कि इसके लिये कोशिश की गयी हो पर उसे जगत् में एक क्रियाशील तत्त्व नहीं बनाया गया। सत्य को नीचे लाने में कठिनाई ऊपरी भौतिक परतों में इतनी नहीं है जितनी एकदम ठोस जड़, अधिकतम भौतिक स्तर पर है।

पार्थिव विधान को बदलना होगा और एक नये वातावरण को बनाना होगा। प्रश्न केवल ज्ञान, शक्ति आदि को पाने का नहीं, उन्हें नीचे उतारने का है। सारी कठिनाई उसके प्रवाह को नीचे लाने में है !

इस बारे में लोगों के बड़े सरल-से विचार हैं परंतु यह इतना सरल नहीं है जितना कि समझा जाता है। यह एक बहुत ही जटिल गति है। ऊपर सत्य विद्यमान है और जब तुम ज्ञान में बढ़ते जाते हो तो तुम ऊपर, और ऊपर चढ़ते हो लेकिन सत्य नीचे नहीं उतरता। वह एकदम नीचे नहीं आता। वह तभी नीचे उतरता है जब सब कुछ तैयार हो। अगर एक बार सत्य को पार्थिव जगत् का विधान बनाया जा सके तब वह उसे सह सकेगा। उसे नीचे प्रवाहित करना तबतक कठिन है जबतक गति मिश्रित हो।

शिष्य—क्या आपका ख्याल है कि यह काम इस बार पूरा हो जायेगा ?

श्रीअरविंद—तुम चाहते हो कि मैं भविष्यवाणी करूं ? प्रतीक्षा करो और देखो।

शिष्य—मैं आपसे जानना चाहता हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—मैं जानता हूं कि यह किया जा सकता है लेकिन मैं भविष्यवाणी नहीं कर सकता। मैं यह नहीं कह सकता कि यह हो जायेगा। लेकिन मैं इतना कहता हूं, "इस बार कुछ किया जायेगा।"

मानसिक सत्ता में कहीं पर कुछ संदेह है, कुछ अनिश्चितता है। पीछे सब कुछ तैयार है, अगर मानसिक स्तर पर निश्चिति होती तो काम पूरा हो जाता। शायद अभीतक यह इसलिये नहीं किया जा सका क्योंकि विरोधी शक्तियां बहुत प्रबल थीं। तुम नहीं जानते कि वे कितनी प्रबल हैं। केवल मैं ही जानता हूं। तुम्हें तो उनकी एक झलक ही मिली है।

२४-४-१९२४

शिष्य—डा० कूए अपनी चिकित्सा की पुस्तक में कहते हैं कि आत्म-सुझाव के लिये मनुष्य को कल्पना का प्रयोग करना चाहिये, इच्छाशक्ति का नहीं। उनका ख्याल है कि इच्छाशक्ति के प्रयोग से तुम अपने-आपको थका देते हो।

श्रीअरविंद—हां, उनका कहना है कि इच्छाशक्ति विरोध पैदा करती है लेकिन कल्पना के बारे में भी यही बात है। तुम जो भी करो उसके विरोध में शक्तियां गतिशील हो जाती हैं।

शिष्य—उनका 'कल्पना और इच्छाशक्ति का भेद' मेरी समझ में नहीं आया।

श्रीअरविंद—कल्पना में तुम कहते हो "मैं स्वस्थ हूं," और बार-बार इसे दोहराते रहते हो जब कि इच्छाशक्ति में तुम कहते हो, "मुझे स्वस्थ होना चाहिये!"

शिष्य—एक भारतीय शराब-विक्रेता का फोटो लिया गया है और उससे मालूम होता है कि उसके अंदर से नीला प्रकाश निकलता है!

श्रीअरविंद—इस तरह मानव शरीर से प्रकाश का निकलना एक प्रमाणित सत्य है। वैज्ञानिकों ने जाकर देखा और प्रकाश की लहरें पायीं। उन्होंने सोचा कि यह सम्मोहन के कारण था। तब उन्होंने फोटो लिया और वहां एक हाथ का फोटो पाया। बिना आंखों के देखना, प्रकाश की तरंगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का निकलना या गुह्य शक्तियों द्वारा रोग निवारण अतीन्द्रिय व्यापार है। मन से इन्हें समझाना बेकार है और इनपर संदेह करना उससे भी बढ़कर।

शिष्य—कहते हैं कि एक पादरी ने किसी अंधे को ठीक कर दिया है। गोआ के संत जाविये अब भी लोगों को रोगमुक्त करते हैं।

श्रीअरविंद—यह तो बहुत सामान्य चीज है। नोत्र दाम के गिरजाघर में बहुत-से लंगड़े लोग ठीक होते हैं न। जिसे ऐसे मामलों के बारे में विश्वस्त होने की जरूरत है वह फ्रांस में ऐसे बहुत-से उदाहरण देख सकता है। लेकिन ऐसे मामलों में काम करनेवाली शक्तियां बहुत अनियमित होती हैं। कुछ लोग पूरी तरह रोग-मुक्त हो जाते हैं और कुछ पर कोई असर नहीं होता। माताजी की एक लंगड़ी सहेली एकदम ठीक हो गयी थी। ये प्रभाव किन्हीं अतीन्द्रिय शक्तियों के कारण होते हैं और उनकी क्षमता की कोई सीमा नहीं होती।

ऐसे उदाहरण भी हैं कि रोगी की चिकित्सा करनेवाले डाक्टर अपनी अतीन्द्रिय शक्ति से रोगी को ठीक करते हैं परंतु वे अपनी बुद्धि से इस प्रक्रिया के बारे में कुछ भी नहीं जानते।

पांडिचेरी से फ्रेंच संसद के लिये सदस्य चुने जाते थे। चुनाव में घूंस और मारपीट का बाजार गर्म रहा करता था। एक शिष्य ने आकर श्रीअरविंद को समाचार दिया कि 'स' चुनाव के लिये खड़ा हो रहा है।

श्रीअरविंद—ऐसा लगता है कि इन सदस्यों का मुख्य काम होता है घूंस लेना और घूंस देना। ये गणतंत्र के बारे में बड़ा सुंदर पाठ पढ़ाते हैं, अगर मैं पांडिचेरी न आया होता तो शायद गणतंत्र के बारे में सारा विश्वास इस तरह न खो पाता।

शिष्य—ये लोग फासिस्टों की तरह व्यवहार कर रहे हैं। विरोधी उम्मीदवार बल-प्रयोग करते हैं। आखिर ये इस तरह मार-पीट क्यों करते हैं?

श्रीअरविंद—तुम देखते नही, यह गणतंत्र है! (हंसी)

शिष्य—लेकिन विरोधियों को पीटते क्यों हैं?

श्रीअरविंद—तुम्हारा बहुमत हैं और बहुमत की रजामंदी से तुम पिटाई कर सकते हो!

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

१५ अगस्त १९८९ श्रीअरविंद का ११७ वां जन्मदिन था, साथ ही यह उनकी पत्रिका "आर्य" का भी ७५ वां जन्मदिन था। इसी पत्रिका में साढ़े छः साल की अवधि में उनकी "दिव्य जीवन", "योग समन्वय", "वेद रहस्य", "भावी कविता" आदि महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन हुआ था।

इस अवसर पर छः हजार से ऊपर लोगों ने उनके कमरे में जाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रीअरविंद के चित्र के साथ माताजी का एक संदेश भी बांटा गया जिसमें कहा गया है, "हे परम प्रभु, हमें नीरव रहना सिखा ताकि उस नीरवता में हम तेरी शक्ति पा सकें और तेरी इच्छा को समझ सकें।"

सोसायटी के केंद्रों और शाखाओं ने अपने-अपने स्थान पर उत्सव का आयोजन किया था। इनमें भारत और श्रीअरविंद के विशेष संबंध के बारे में अनेक प्रकार के कार्यक्रम हुए। बैंग्लोर में एक चित्रकारी की प्रतियोगिता की गई जिसमें लगभग ३३० विद्यार्थियों ने भाग लिया। हैदराबाद में निबंध-लेखन की प्रतियोगिता, अमरावती में शिक्षकों के लिये शिक्षा-सप्ताह, नईवेली में नेत्र चिकित्सा-शिविर का आयोजन हुआ।

पश्चिम जर्मनी में १९ और २० अगस्त को श्रीअरविंद-संबंधी सभाएं हुईं जिनमें पुस्तकों, चित्रों और आश्रम की अन्य चीजों की प्रदर्शनी की गयी। इंग्लैंड में भी इस अवसर पर सभाएं और सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

घोषणाएं

अभीतक पांच वृत्तचित्रों के वीडियो केवल अंग्रेजी में उपलब्ध थे। अब गुजराती, बंगला और हिंदी में भी कैसेट मिल सकते हैं, अन्य भाषाओं में भी तैयार हो रहे हैं। ये सब वृत्तचित्र मिलाकर १ घंटा ४५ मिनट के हैं। इनके विषय हैं—

१. श्रीअरविंद जीवन और झांकी
२. श्रीअरविंद आश्रम
३. शिक्षा में नया परीक्षण
४. फूलों की मूक भाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. फूल और उनका आध्यात्मिक अर्थ। अंग्रेजी का दाम है ५७२ रु. गुजराती, हिंदी और बंगला का ४१६, पैकिंग और डाक खर्च के २० रु. अलग। इनके लिये नवविहान, श्रीअरविंद आश्रम, पांडिचेरी-६०५००२ के नाम ड्राफ्ट भेजें।

नववर्ष की शुभ कामनाएं

नववर्ष की शुभकामनाओं की एक सचित्र पुस्तिका तैयार की गई है जिसका दाम ४ रु. और डाक खर्च १ रु. है। ये 'शब्द', श्रीअरविंद आश्रम, पांडिचेरी-६०५००२ से प्राप्त हो सकती हैं।

उत्तर प्रदेश की सोसायटी की वार्षिक सभा ३, ४, ५ नवंबर को आगरे में होगी।

जुलाई में कोयंबटूर में सोसायटी का एक नया केंद्र खुला। उसका पता है—

श्रीअरविंद सोसायटी सेंटर, द्वारा, श्री एम. रामनाथन
७२५-डी अवनाशी रोड, कोयम्बटूर।

वैज्ञानिक शोधकार्य

श्रीअरविंद इंस्टिट्यूट ऑफ एप्लाइड साइंटिफिक रिसर्च एक ऐसे व्यक्ति की खोज में है जो पांडिचेरी में रहकर जियोबायलोजी, क्रीलियन फोटोग्राफी और एलेक्ट्रो फोटोग्राफी के क्षेत्र में काम कर सके। अधिक जानकारी के लिये कृपया प्रभात पोद्दार, एकेडमी हाऊस नं. १२ मारवाड़ी स्ट्रीट पांडिचेरी—६०५००१ से पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सच्चे लोकतंत्र को केवल केन्द्र में बैठे 20 व्यक्ति ही नहीं चला सकते, इसे नीचे से प्रत्येक गांव के लोग ही चला सकते हैं।"

....गांधीजी

सत्ता सीधे जनता को

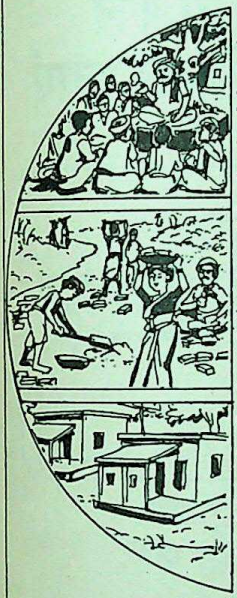

मुख्य विशेषताएं

पंचायती राज विधेयक

- गांव, ब्लाक और जिला स्तरों पर पंचायतों का गठन
- चुनाव आयोग की देखरेख में तीनों स्तरों पर सभी स्थानों के लिए प्रत्यक्ष चुनाव
- कार्यकाल – 5 वर्ष। यदि कोई पंचायत समय से पहले भंग कर दी जाती है तो छह माह के अन्दर पुनः चुनाव
- अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या के अनुपात के आधार पर स्थान आरक्षित
- महिलाओं के लिए 30 प्रतिशत आरक्षण
- पंचायतों द्वारा सामाजिक न्याय दिलाये जाने के साथ-साथ स्थानीय विकास योजनाएं बनाना और उन्हें क्रियान्वित करना
- पंचायतों के कार्य को सुगम बनाने के लिए पर्याप्त धन का प्रावधान

नगरपालिका विधेयक

- तीन प्रकार की नगरपालिकाओं – नगर पंचायतें, नगर परिषदें और नगर निगम – के गठन का प्रावधान
- चुनाव आयोग की देखरेख में प्रत्यक्ष चुनाव – कार्यकाल – 5 वर्ष
- यदि कोई भी नगर निकाय समय से पहले भंग हो जाता है तो उसके लिए छह महीने के भीतर पुनः चुनाव
- समाज सेवा के इच्छुक व्यक्तियों को अपने क्षेत्र की सेवा करने का अवसर उपलब्ध कराने के लिए वार्ड समितियां बनाने का प्रावधान
- स्थानीय निकायों को प्रभावी रूप से सत्ता की सुपुर्दगी
- नियोजन प्रक्रिया में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अधिकार
- नगर निकायों के लिए पर्याप्त धन की सुविधा

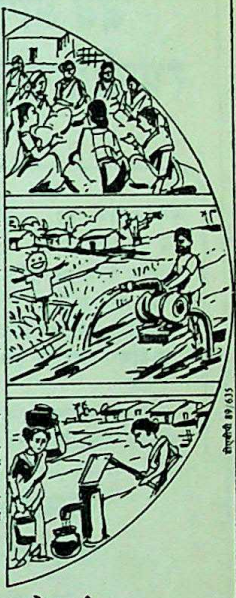

जन-जन के द्वार पर विकास और लोकतंत्र पहुंचाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म या मृत्यु

जब आपके परिवार में हो तो अपने स्थानीय रजिस्ट्रार के यहां रजिस्टर कराएं

क्योंकि

जन्म प्रमाण-पत्र
उम्र का सबूत है :

* स्कूल में प्रवेश के लिए
* रोजगार के लिए
* मताधिकार प्राप्त करने के लिए
* ड्राईविंग लाइसेंस प्राप्त करने के लिए
* पासपोर्ट प्राप्त करने के लिए
* बीमा पालिसी प्राप्त करने के लिए

मृत्यु प्रमाण-पत्र
आवश्यक है :

* सम्पत्ति के उत्तराधिकार के लिये
* बीमा राशि वसूल करने के लिए
* सम्पत्ति के दावे निपटाने के लिए

समय पर रजिस्टर कराएं और प्रमाण-पत्र निःशुल्क प्राप्त करें

जन्म और मृत्यु रजिस्ट्रीकरण कानूनन जरूरी है ।
विलम्ब रजिस्ट्रीकरण की भी अनुमति है ।

महारजिस्ट्रार, भारत

davp 89/490

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
A good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.
PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered with Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"The constant remembrance of the Divine is indispensable for transformation."

— THE MOTHER

With Best Wishes from:

MRS. KOYAL DEORAH CHARITABLE TRUST

28, VARSHA, 69/B, NEPEANSEA ROAD

BOMBAY - 4000 006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा

अखिल भारतीय पत्रिका

दिसम्बर १९८९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसम्बर १९८९ वर्ष २०, अंक ५, पूर्णांक २३३

विषय-सूची

सन्देश :		१
'संपादकीय' : आगामी का स्वागत	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		४
चमत्कार के बारे में वार्तालाप		७
जिस मरने से जग डरे		२७
चमत्कार		३५
सोसायटी समाचार		३८
रामकृष्ण वचनामृत		३९

आवरण पृ० १ — पुष्प का माताजी का बतलाया हुआ अर्थ:

अमरता

(रूप सदा रूपान्तरित होते रहते हैं; अमर चेतना के साथ अपने-आपको एक कर लो और तुम वही बन जाओगे।)

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के १० और पुरोधा के १४ शीघ्र भेजें अन्यथा अगला अंक वी. पी. पी. से जायगा। वी. पी. पी लौट आने से हमें बहुत हानि होती है। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो २२५ और २७५ एक साथ या किस्तों में देकर अग्निशिखा और पुरोधा के या ५०० देकर दोनों के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

अग्निशिखा वार्षिक १०.०० आजीवन २२५.००

श्रीअरविंद सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी–६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी–६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

अब हमें कौन-सी नयी चीज प्राप्त करनी है : प्रेम, क्योंकि अभीतक हमने जो कुछ पाया है वह है घृणा और आत्म-सुख; ज्ञान, क्योंकि अभीतक हमने भूल-भ्रांति, प्रत्यक्ष बोध और कल्पना को ही पाया है; आनंद, क्योंकि अभीतक हमने सुख, दुःख और उदासीनता को ही पाया है; शक्ति, क्योंकि अभीतक हमने दुर्बलता, प्रयास और पराजित विजय को ही पाया है; जीवन, क्योंकि अभीतक हमने जन्म, वृद्धि और मरण को ही पाया है; ऐक्य, क्योंकि अभीतक हमने केवल युद्ध और संघ की ही प्राप्ति की है।

एक शब्द में कहें तो 'देवत्व' ताकि हम अपने-आपको दिव्य मूर्ति में घड़ सकें।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

आगामी का स्वागत

१९८९ का वर्ष समाप्त हो रहा है। नया वर्ष शुभ हो, केवल हमारे लिये, हमारों के लिये ही नहीं प्राणी मात्र के लिये शुभ हो ऐसी प्रार्थना गहराई से उठती प्रतीत होती है। उपनिषदों ने हमें बताया है कि जो हर जगह आत्मा को देखता है और आत्मा में सबको देखता है वह किसी चीज से, किसी घटना से नहीं सकुचाता या कतराता। उसे सब जगह आत्मा का साक्षात्कार प्राप्त होता है।

बात समझ में आती है। मन स्वीकार करता है कि सब कुछ आत्मा ही है और प्राण भी हर रूप में उसका स्वागत करने के लिये तैयार हो जाता है, लेकिन शुद्ध रूप से भौतिक शरीर अपनी जड़ता में ऐसा फंसा रहता है कि उसे मन के निर्णयों और हृदय के अनुभव को स्वीकार करने के लिये अवकाश ही नहीं होता। वह सारे समय अपनी निश्चेतना के पुराने संस्कारों और आभासों को ही उछालता रहता है, ऊंची-से-ऊंची आंतरिक अनुभूतियां पा लेने पर भी अपनी बाह्य चेतना में वह एक सामान्य कीट-पतंग से बढ़कर नहीं होता।

मनुष्य को इस स्थिति में से निकालने के लिये ही बार-बार हथौड़े पड़ा करते हैं और पड़ते रहेंगे जबतक आंतरिक चेतना अपनी गुफा में से निकलकर हमारे जीवन पर अधिकार न कर ले। महान् द्रष्टा दांते का कहना है कि भगवान् ने अत्यधिक प्रेम के वश होकर नरक की रचना की थी। इतिहास में भी हम देखते हैं कि रावण-राज्य के बाद ही राम-राज्य आया था। प्रथम महायुद्ध ने जब सारी मानवजाति को झकझोर डाला तब राष्ट्रों ने मिलकर काम करने की सोची और 'लीग ऑफ नेशन्स' की स्थापना की। यद्यपि उसे चला नहीं पाये, सामुदायिक अहंकारों की टक्कर के कारण उसकी अकाल मृत्यु हो गयी।

संसार में अभीतक संहार के जितने यंत्र बने हैं उनमें अणुबम सबसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयंकर है। वह शत्रु और मित्र में भेद किये बिना सारे संसार का विनाश करने के लिये ठुनक रहा है।

प्रामाणिक वाणियों ने हमें बताया है कि भारत भगवान् का चुना हुआ यंत्र है, शायद इसीलिये उसे विशेष रूप से तपाया और पीटा जा रहा है। अब हमारा दायित्व यह है कि प्राचीन को भुलाकर आगामी का स्वागत करने की तैयारी करें, उसे पीछे छोड़कर आगे उड़ान भरने के लिये पर तोलें और भगवान् से पूरी सचाई के साथ कहें :—

"हे भगवान्, तेरी जय हो, हमें वर दे कि हमारे अंदर कोई भी चीज तेरे कार्य में बाधक न हो। हमें श्रद्धा प्रदान कर, ऐसी श्रद्धा जो सब विघ्न-बाधाओं को पार कर सके और हमें तेरे पासतक, तेरे अंदर पहुंचा सके।"

————

अगर तुम तकलीफ के बारे में सोचते ही रहोगे तो वह बढ़ती चली जायेगी। अगर तुम उसपर एकाग्रचित्त हुए तो वह फूल उठेगी, उसे लगेगा कि उसका स्वागत किया जा रहा है। लेकिन अगर तुम उसपर कोई ध्यान न दो तो उसे तुम्हारे अंदर कोई रस न रह जायेगा और वह दूर चली जायेगी।

सबसे अच्छा उपचार यह है कि अपने बारे में, अपने विकारों और अपनी कठिनाइयों के बारे में सोचना बंद कर दो।

*आओ, हम **केवल** उस महान् कार्य के बारे में सोचें, उस आदर्श के बारे में जिसे श्रीअरविंद ने हमें चरितार्थ करने के लिये दिया है। **उस काम** के बारे में, **हम** उसे किस तरह करते हैं उसके बारे में **नहीं**।*

मैं सहायता करूंगी।

(५ जून १९६१)

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

दिसंबर

१. जो भगवान् का है उसे भला किसका डर हो सकता है? क्या वह भगवान् के बताये मार्ग पर—चाहे वह उसकी सीमित तर्क-बुद्धि के लिये एकदम से अबोध्य हो—विस्तृत होती हुई अंतरात्मा और प्रदीप्त मस्तक के साथ नहीं चल सकता?

२. समस्त भय पर विजय पानी चाहिये और उसके स्थान पर 'भागवत कृपा' में पूर्ण आस्था स्थापित करनी चाहिये।

३. मेरी सुरक्षा हमेशा तुम्हारे साथ है और कोई अनिष्ट नहीं घट सकता। लेकिन तुम्हें डर को झाड़कर दूर फेंक देने का निश्चय करना होगा और तब मेरी शक्ति पूरी तरह काम कर सकेगी।

४. संदेह कोई ऐसा खेल नहीं है जिसमें तुम निर्भय होकर खुल खेलो। यह एक ऐसा विष है जो बूंद-बूंद करके आत्मा को नष्ट करता है।

५. हमें सभी संदेहों से मुक्त होने का निश्चय करना चाहिये, वे हमारी प्रगति के बुरे-से-बुरे शत्रु हैं।

६. तुमसे मुझे यह कहना है: दुःख को दुलारो मत और दुःख तुम्हें पूरी तरह छोड़ देगा। प्रगति के लिये दुःख अनिवार्य बिल्कुल नहीं है। सबसे महान् प्रगति स्थिर और प्रसन्नतापूर्ण समचित्तता में की जाती है।

७. थकान प्रगति की इच्छा के अभाव को दिखलाती है। जब तुम थकान या श्रांति का अनुभव करते हो तो वह प्रगति की इच्छा का अभाव होता है।

अग्नि हमेशा तुम्हारे अंदर जलती रहती है।

८. भौतिक जगत् में, हमें जो स्थान पाना है उसके अनुसार हमारे जीवन और कार्य के लिये जो कुछ अनिवार्य हो वह हमें मिल जाता है। हम अपनी आंतरिक सत्ता के साथ जितने अधिक सचेतन रूप से संपर्क में हों, उतने ही अधिक यथार्थ साधन हमारे लिये जुटा दिये जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९. तुम अपने-आपको दुर्बल बनाकर नहीं, केवल बल, संतुलन और शांति में ही अपनी कामनाओं पर विजय पा सकते हो।

१०. अगर तुम अपनी कामनाओं के स्वामी नहीं हो, तो तुम अपने विचारों के स्वामी नहीं हो सकते।

११. हम भागवत मुस्कान का ध्यान तभी कर सकते हैं जब हम अहंकार पर विजय पा लें।

१२. ईर्ष्या मन की संकीर्णता और हृदय की दुर्बलता से आती है। बड़े खेद की बात है कि इतने सारे लोगों पर उसका आक्रमण होता है।

१३. यह वृत्ति अपनाओ : किसी व्यक्तिगत झगड़े में किसीका पक्ष मत लो। केवल 'दिव्य शांति', 'सामंजस्य', 'प्रकाश', और 'सुख' के बारे में सोचो और उनके अधिकाधिक पवित्र और शांत यंत्र बनो।

१४. जब तुम झगड़ा शुरू करते हो तो यह मानों भगवान् के कार्य के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करना होता है।

१५. स्वार्थपरता और आत्म-दया से कोई लाभ नहीं होता। ज्यादा अच्छा है कि तुम इन दोनों से पिंड छुड़ा लो—क्योंकि यही दो संकीर्ण गतिविधियां तुम्हें भगवान् की सहायता और उनके प्रेम का अनुभव करने से रोकती हैं।

१६. यह निर्णय करने से पहले कि औरों में या परिस्थितियों में कुछ भूल है, तुम्हें अपने मूल्यांकन के ठीक होने का पूरा विश्वास होना चाहिये। और कौन-सा मूल्यांकन ठीक हो सकता है जबतक कि तुम सामान्य चेतना में निवास करते हो जो अज्ञान पर आधारित और मिथ्यात्व से भरी है। केवल सत्य चेतना ही मूल्यांकन कर सकती है इसलिये ज्यादा अच्छा यह है कि सभी परिस्थितियों में निर्णय भगवान् पर छोड़ दो।

१७. मन जितना अज्ञानी होता है उतनी ही ज्यादा आसानी से हर उस चीज का मूल्यांकन करता है जिसे वह नहीं जानता या जिसे समझने में वह अक्षम है।

१८. आवश्यक जानकारी प्राप्त होने से पहले मन को अचंचल रखना और जल्दबाजी में निष्कर्ष निकालने से बचना हमेशा अच्छा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९. औरों की मूर्खताओं की परवाह न करो, अपनी मूर्खताओं को देखो।

२०. हम दूसरों में वही पाते हैं जो हमारे अंदर है। अगर हम सदा अपने चारों ओर कीचड़ ही पायें तो यह प्रमाणित करता है कि हमारे अंदर कहीं पर कीचड़ है।

२१. हमेशा, जब कभी तुम कठिनाइयों का सामना करते हो और उनपर विजय पा लेते हो तो एक नये आध्यात्मिक उद्घाटन और विजय का आरंभ होता है।

२२. जब तुम कोई प्रगति करना चाहते हो, तो जिस कठिनाई को तुम जीतना चाहते हो वह तुम्हारी चेतना में महत्त्व और तीव्रता में दसगुनी बढ़ जाती है। तुम्हें केवल डटे रहना है। बस इतना ही; और वह चली जायेगी।

२३. अग्निपरीक्षाएं सबके लिये हैं। उनका सामना करने के तरीके में फर्क होता है। कुछ लोग मुस्कराते और कुछ बात का बतंगड़ बनाते हैं।

२४. अंतरात्मा के आंतरिक बल से जीवन की आंखों में देखो और परिस्थितियों के स्वामी बन जाओ।

२५. किसी बाधा पर एकाग्रचित्त न हो; वह उसमें अधिक बल भर देती है।

२६. परिस्थितियां हमेशा छिपी हुई दुर्बलताओं को प्रकट करने के लिये आती हैं ताकि उन्हें जीता जा सके।

२७. अभ्यास की एक बूंद सिद्धांतों, सलाहों और अच्छे संकल्पों के समुद्र से कहीं अच्छी है।

२८. भगवान् से सचमुच प्यार करने के लिये हमें आसक्तियों से ऊपर उठना चाहिये।

२९. 'भागवत प्रेम' अशुभ और क्रूर पर विजय पा सकता है—बाघ योगी पर हमला नहीं करता।

३०. सत्य-शक्ति हमेशा अचंचल होती है। बेचैनी, उत्तेजना, अधीरता दुर्बलता और अपूर्णता के निश्चित लक्षण हैं।

३१. अचंचलता हमेशा अच्छी होती है, सच्ची और स्थायी प्रगति के लिये अनिवार्य भी होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जापान के बारे में वार्तालाप

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(गतांक से आगे)

२१-९-१९२५

शिष्य—क्या जापान में होनेवाले भूकंपों और अग्निकांडों का कोई विशेष अर्थ है ?

श्रीअरविंद—कोई विशेष अर्थ नहीं है ! ये चीजें तो वहां एक जमाने से चली आ रही हैं।

शिष्य—इन चीजों के लिये जापान को क्यों खास तौर पर चुना गया है ?

श्रीअरविंद—ये चीजें नयी नहीं हैं। बीस हजार साल से चली आ रही हैं, जापान लकड़ी के मकानों का देश है और जापानी पूरी तरह लैस होकर सोने जाता है ताकि खतरे के पहले संकेत पर ही बिस्तर से उछलकर भाग सके। जापानियों को आदत होती है कि अपनी कीमती चीजें एक ही स्थान पर रखते हैं ताकि अगर आग, भूकंप आदि हो तो उन्हें लेकर बाहर निकल सकें। संकट के बाद फिर से नया मकान बनने लगता है।

वे खतरे के साथ रहने के अभ्यस्त हैं। हाल ही में उन्होंने अमरीकन शैली अपनायी है और वे पत्थर के मकान बनाने लगे हैं लेकिन इसके परिणाम खतरनाक हैं। योकोहामा शहर का शहर बरबाद हो गया है।

शिष्य—अब वह मलबे का ढेर है। लेकिन वहां की आबादी भी इतनी तेजी से बढ़ रही है कि भूकंप से हुई जनहानि का कोई असर नहीं पड़ता।

श्रीअरविंद—पहले भी तो भूकंप हुआ करते थे लेकिन वे इतने खतरनाक न होते थे। इनके सिवा बिजली, पानी आदि की व्यवस्था भी संकट को बढ़ा देती है। अब वे रीइनफोर्स्ड कांक्रीट का उपयोग करने लगे हैं और उन्हें आशा है कि इससे खतरा कम हो जायेगा। जापान में शिशु-मरण सबसे कम है। और वे बहुत ज्यादा साफ-सुथरे लोग भी हैं। वे दुनिया भर में सबसे ज्यादा साफ रहनेवाले हैं।

शिष्य—अब भारत में भी सफाई के लिये आंदोलन हो रहे हैं . . .

श्रीअरविंद—इन चीजों के लिये प्राणिक ऊर्जा चाहिये। हमारे देश में जहां प्राणिक अवसाद भरा है, ऐसा प्रयास अच्छा और जरूरी है। वह उसे तमस् में से निकाल लाता है, जिसमें वह पड़ा हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—क्या आपका मतलब यह है कि हर आदमी को प्राणिक अवसाद में से निकलना होगा ?

श्रीअरविंद—हां, अगर तुम प्राणिक अवसाद के शिकार हो तो तुम सावधान मन से भौतिक स्तर पर कोई काम लंबे समयतक न कर सकोगे।

शिष्य—'क' संगीत सीख रहा है।

श्रीअरविंद—प्राणिक अवसाद से पिंड छुड़ाने से मेरा यह मतलब नहीं है। मेरा मतलब है भौतिक स्तर पर कुछ करना—नियमित रूप से, निश्चित समय पर, बिना भूले, सावधान होकर, बिना थके, बिना भूल या लापरवाही किये, जरूरी नहीं है कि यह शारीरिक काम ही हो।

शिष्य—अगर ऐसा काम यांत्रिक तौर पर किया जाये ?

श्रीअरविंद—यह करने के लिये नहीं कहा जा रहा, मन सदा जाग्रत् रहना चाहिये। यूरोपीय लोग अपने काम में सफल होते हैं क्योंकि उन्हें सतर्क मन की आदत होती है।

शिष्य—मैंने 'क' को हलवा बनाना सिखाया और कहा कि यह रोज दस मिनट में हो सकता है। उसने बहस करना शुरू किया कि उसे इस काम का अभ्यास नहीं है और रोज-रोज करना बहुत कठिन है ! लेकिन मजे की बात यह है कि अंत में उसने स्वीकार किया, "आखिर, यह हमारा काम नहीं है।" (हंसी)

श्रीअरविंद—लो देख लो !

६-१०-१९२५

श्रीअरविंद—(एक शिष्य की ओर मुड़कर) मैंने माताजी से इस मान्यता के बारे में बात की कि अंगूठे की लकीरें बदलती हैं। उन्होंने हमारे सामुद्रिकों की बात की पुष्टि की कि हाथ की रेखाएं बदला करती हैं। कई कानूनी भूलें प्रसिद्ध हैं जिनमें अंगूठे के निशान झूठे सिद्ध हुए हैं।

एक जर्मन सैनिक का मामला तो प्रसिद्ध ही है जिसपर आरोप लगा कि उसने जर्मनों से घूस ली थी। कई अदालतों ने इस मामले पर विचार किया और आखिर अपराधी को छोड़ दिया गया। जब सरकारी वकील ने अंगूठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के निशान पेश किये तो जज ने उन्हें यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि वे रद्दी कागज के टुकड़े थे।

४-६-१९२६

प्रतीकों के बारे में बात चली तो श्रीअरविंद ने कहा—

श्रीअरविंद—एक अर्थ में यहां सब कुछ प्रतीक है। यहां धरती पर जो कुछ है वह धरती के परे की किसी-न-किसी चीज का प्रतीक है। हमारे शरीर, प्राणिक सत्ता, मानसिक सत्ता यह सब कुछ प्रतीकों का क्रम है।

कुछ प्रामाणिक प्रतीक हैं जैसे वैदिक गो जिसका अर्थ है प्रकाश और गाय। यह आर्यों के लिये बहुत मूल्यवान् वस्तु थी जिसे पणि या डाकू चुरा ले गये। ऋषियों ने इस प्रतीक को जीवन दिया, रूप मन ने दिया और वह अनुभूति बन गया।

कुछ लोग कहते हैं कि गो का मतलब प्रकाश नहीं होना चाहिये। तब फिर 'सूर्य के गोवृंद' का क्या अर्थ होगा? उसका अर्थ सौर प्रकाश की किरणें ही हो सकता है। जीवन में आनेवाले कुछ और प्रतीक हैं जैसे पर्वत आरोहण के लिये। पुल और नदी पार करना भी जीवन से लिये गये प्रतीक हैं।

कुछ ऐसे प्रतीक हैं जिनकी अपनी प्रासंगिकता होती है जैसे आकाश जो शाश्वत ब्रह्म का प्रतीक है। किसी भी जाति या किसी भी संस्कृति में आकाश अनंतता का ही प्रतीक है। सूर्य हमेशा अतिमानसिक प्रकाश का अर्थ देता है, वह ज्ञान का सूर्य है।

कुछ मानसिक प्रतीक हैं। एक बार निश्चित हो जाने पर ये अपने स्तर पर सक्रिय हो जाते हैं जैसे ॐ, संख्याएं, अक्षर, ज्यामिति के रूप—इनके अपने रूप होते हैं जैसे सम-चतुष्कोण मेरे लिये अतिमानस का चिह्न है, यह पूर्ण रूप है।

शिष्य—आपने यह कैसे जाना कि सम-चतुष्कोण अतिमानस का प्रतीक है?

श्रीअरविंद—शायद पहले ही किसीने मानसिक स्तर पर इसे पाया हो या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकता है कि यह किसी शक्ति द्वारा मेरे मन में आ गया। मैंने खोज नहीं की। मुझे इससे अतिमानस का संकेत मिला और मैं उससे संतुष्ट हो गया।

त्रिभुज का अर्थ है तीन निम्नतर शक्तियों द्वारा बना जगत्, एक और त्रिभुज जिसका शिखर नीचे को है वह सत्ता के तीन स्तरों का प्रतीक है और जब ये दोनों त्रिभुज एक दूसरे पर लगा दिये जाते हैं तो इनका कुछ और ही अर्थ हो जाता है प्राचीन लोगों को इस तरह की कल्पनाओं में मजा आता था।

यह भी संभव है कि एक ही सत्य भिन्न-भिन्न प्रतीकों द्वारा प्रकट हो और अगर तुम उनके पीछे जाओ तो देखोगे कि वह एक ही चीज है, अनंत और प्रतीकों से असीमित।

शिष्य—तांत्रिक ध्वनियों ह्रीं, क्लीं के बारे में आपकी क्या राय है?

श्रीअरविंद—वे केवल ध्वनियां नहीं हैं, उनके पीछे शक्ति होगी। मंत्र-सिद्धि के बारे में भी यही बात है। 'ॐ' तीन भिन्न स्थितियों का प्रतिनिधित्व करता है और अलग-अलग लोगों पर उनका अलग-अलग प्रभाव हो सकता है।

शिष्य—संख्या तो सार्वभौम है, तब उनका प्रतीक भी सार्वभौम क्यों नहीं हो सकता?

श्रीअरविंद—वे केवल मानव मन के लिये सार्वभौम हैं। हमारी दृष्टि के लिये वे अनिवार्य हैं। हो सकता है कि चेतना के किसी और लोक में वे इतनी निरपेक्ष न हों जहां एक एक होने के साथ-ही-साथ दो भी हो सकता हो।

संख्याएं कुछ अपरिवर्तनशील तथ्यों को भौतिक लोक में देखने का एक तरीका है। इसका मतलब है कि मन अनंत के खंड-खंड कर सकता है। एक ओर एक और एक को ले लो और फिर कहो, 'यह एक है।' भौतिक रूप से कुछ अपरिवर्तनशील नियम हैं जैसे दरवाजा खोले बिना उसमें से निकलना संभव नहीं है लेकिन हो सकता है कि कहीं और इससे उल्टी बात भी इतनी ही सच्ची हो . . .

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—ऋण १ क्या है ? यह एक ऐसी संख्या है जो हमारी गिनती के पार जाती है जैसे कुछ ध्वनि तरंगें जिनका अस्तित्व है पर हम उन्हें सुन नहीं सकते। हमारा क्रम सकारात्मक संख्याओं से संबंध रखता है जब कि नकारात्मक इनसे उल्टे हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि उनका अस्तित्व ही नहीं है। वे अपने-आपका परिचय मन को दे सकते हैं।

(एक शिष्य से) क्या तुम्हें लगता है कि तुम एक सत्ता हो ? और क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारे अंदर कोई और व्यक्तित्व नहीं है ? तो, तुम अनुभव करते हो कि तुम एक शरीर हो लेकिन साथ ही तुम्हारे अंदर बहुत-से व्यक्तित्व हैं। तुम्हारे अंदर सकारात्मक व्यक्तित्व हैं लेकिन नकारात्मक व्यक्तित्व भी तो हो सकते हैं !

८-६-१९२६

शिष्य—कहा जाता है कि मनुष्य के जीवन पर ग्रहों का शासन है—क्या यह सच है या यह भी कोई प्रतीक है ?

श्रीअरविंद—यह बात पूरी-पूरी सच नहीं है कि मनुष्य का जीवन ग्रहों से शासित है। ग्रह योग शक्तियों के, विशेष रूप से प्राणिक और भौतिक शक्तियों के, सूचक होते हैं। वे मनुष्य और उसके जीवन क्रम पर कुछ प्रभाव डालती हैं। शायद पहले केल्डिया के गुह्यवादियों ने इनकी गणना के आंतरिक आधार का पता लगाया था।

अब केवल परंपरा रह गयी है। अभीतक फलित ज्योतिष एक यथातथ्य विज्ञान नहीं है और न वह पूरी तरह मानसिक है। वही आदमी सच्ची भविष्यवाणियां कर सकता है जिसका मन उन शक्तियों को छू सकता है जो ग्रहों के पीछे हैं। आदमी के लिये महत्त्वपूर्ण है आध्यात्मिक जीवन और उसपर ग्रहों का प्रभाव कम ही होता है।

१८-६-१९२६

शिष्य—भविष्यवाणी करने के दो तरीके हैं; फलित ज्योतिष की गणना, यह ग्रहों की बतलायी गयी रेखाओं के आधार पर होता है, दूसरा है सूक्ष्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टि द्वारा, जिसमें भावी घटनाओं का पूरा चित्र आंखों के आगे आ जाता है। यह कैसे होता है ?

श्रीअरविंद—ये सूक्ष्म दृष्टिवाले भौतिक स्तर पर खुले होते हैं और चूंकि वे निष्क्रिय होते हैं इसलिये ये चित्र जो पहले ही से सूक्ष्म में मौजूद होते हैं वे अपने-आपको उनकी दृष्टि पर अंकित कर देते हैं। हां, भविष्य जानने के लिये तुम्हारे अंदर यह दृष्टि होनी चाहिये।

शिष्य—क्या इस तरह देखी गयी घटनाओं को बदला जा सकता है? बहुधा इन दर्शनों में कोई-न-कोई चीज गायब होती है जैसे घटना का स्थल या समय नहीं मालूम होता जिसकी वजह से उससे बचा नहीं जा सकता। लेकिन ऐसे उदाहरण भी हैं जहां भावी दृष्टि ने मनुष्य को इस योग्य बना दिया कि वह देखी हुई घटना के परिणाम को बदल सके।

श्रीअरविंद—प्राणिक चित्र में एक संभावना होती है और उसे रोका जा सकता है, दूसरे सूक्ष्म भौतिक स्तर का चित्र होता है जो अगर निश्चित हो तो उसे नहीं बदला जा सकता।

शिष्य—क्या एकदम से निश्चित घटनाएं भी होती हैं जिन्हें बदला नहीं जा सकता ?

श्रीअरविंद—हां, होती हैं। अगर तुम उन्हें बदलना चाहो तो तुम्हें, जहां निश्चय हुआ है उससे ऊंचे स्तर पर जाना होगा और यह हमेशा आसान नहीं होता।

भविष्य देखते समय तीन प्रकार की गतियों में तुम्हें भेद देखना होगा। पहला है तथ्यों का परिणाम। यह बहुत संकरा क्षेत्र होता है और वहां की चीजें प्रायः निश्चित होती हैं और सामान्यतः यह सन्निकट भविष्य होता है। दूसरा सम्भाव्यताओं का खेल होता है जिसमें कुछ शक्तियां संघर्षरत होती हैं और तुम देख सकते हो कि कौन-सी शक्ति में जीतने की अधिक संभावना है। परंतु साधारणतः यह वह शक्ति होती है जो उस स्तर पर उच्चतर निश्चय का प्रतिनिधित्व करती है। लेकिन जबतक तुम्हें निश्चित रूप से यह न मालूम हो कि वह उच्चतम निश्चय—सत्य—का प्रतिनिधित्व कर रही है तबतक तुम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि वह जीतेगी। तीसरा है उच्चतर लोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां महत्त्वपूर्ण निश्चय किये जाते हैं, इसके लिये तुम्हें बहुत ऊपर जाना होगा। इन तीनों के बीच फर्क करना मुश्किल है और अधिकतर सूक्ष्मदर्शी इसमें चकरा जाते हैं।

शिष्य—लेकिन ऐसे भी उदाहरण हैं जहां सूक्ष्म दृष्टि द्वारा अत्यंत सूक्ष्म व्यौरे की बातें भी मालूम हो जाती हैं।

श्रीअरविंद—इसके लिये तुम्हें निष्क्रिय होना चाहिये और बहुधा जो निश्चय लिया जानेवाला है या जो घटना होनेवाली है वह स्वयं तुम पर असर डालती है।

शिष्य—क्या भूतकाल को देखना और भविष्य को देखना, दोनों एक ही हैं?

श्रीअरविंद—हां, लेकिन भूत को देखना ज्यादा आसान है। बहुत-सी चीजों पर उसकी छाप और स्मृति बनी रहती है।

शिष्य—ए० ई० (एक अंग्रेजी कवि) अपनी एक पुस्तक में पृथ्वी की स्मृति की बात कहता है। क्या यह वही चीज है?

श्रीअरविंद—पृथ्वी की स्मृति से तुम्हारा क्या मतलब है?

शिष्य—जगत् के ऊपर सभी चीजों की छाप पड़ती है और वे छापें पार्थिव चेतना में जमा रहती हैं। जब ए० ई० मिस्र में यात्रा कर रहा था तो उसने सूक्ष्म स्तर से मिस्र के इतिहास का बहुत कुछ देखा था।

श्रीअरविंद—यह पृथ्वी की स्मृति से बिलकुल भिन्न चीज है।

शिष्य—हर स्थान की एक सत्ता होती है। उदाहरण के लिये मुझे लगता है कि पांडिचेरी के पीछे एक सचेतन सत्ता है।

श्रीअरविंद—तुम्हारा मतलब नगर-देवता से है?

शिष्य—कुछ-कुछ ऐसा ही।

श्रीअरविंद—यह सच है कि सामूहिक इकाइयों के पीछे सत्ताएं होती हैं जैसे देशों के पीछे जिन्हें तुम राष्ट्रीय देवता या राष्ट्रीय शक्ति कह सकते हो।

शिष्य—क्या भारत के पीछे ऐसी कोई शक्ति है?

श्रीअरविंद—हां।

शिष्य—क्या उसे जानना और उसके संपर्क में आना संभव है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा शिष्य—इस सत्ता के साथ संपर्क में आकर क्या राष्ट्र के भविष्य को जानना संभव है ?

श्रीअरविंद—हां, मेरा ख्याल है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि इस तरह से भविष्य को जाना जा सकता है।

शिष्य—क्या वह सत्ता देश के भविष्य को गढ़ती है ?

श्रीअरविंद—उसे एक भूमिका अदा करनी होती है। वह क्रिया करनेवाली कुछ शक्तियों का नियंत्रण करती है।

शिष्य—क्या यह शक्ति सामुदायिक चेतना से बढ़कर कुछ है ?

श्रीअरविंद—इसमें सामुदायिक चेतना होती है और एक अपनी व्यक्तिगत चेतना भी होती है। यह अधिष्ठाता देवता नहीं है यानी वही देश के भविष्य का निर्माण नहीं करती परंतु वह जातीय या राष्ट्रीय अंतरात्मा का प्रतिनिधित्व करती है।

शिष्य—क्या इसी तरह राष्ट्र की दुष्टात्मा भी होती है ?

श्रीअरविंद—यह विचार इस ईसाई धारणा से आया है कि शुभ और अशुभ हमेशा एक-दूसरे का संतुलन करते रहते हैं और यह उस पुराने विचार से भी मेल खाता है कि कुछ अच्छी आत्माएं होती हैं और कुछ दुष्ट आत्माएं। लेकिन ऐसा कोई नियम नहीं है कि जहां कहीं कोई अच्छी आत्मा हो वहां दुष्टात्मा भी होनी चाहिये।

२८-६-१९२६

आज का विषय था अद्भुत चमत्कार या ऐसे कार्य जो महान् योगियों के जीवन में असाधारण रूप से होते हैं। एक बार तिरुवण्णमल्लै के योगी रमण महर्षि को डाकुओं ने बुरी तरह से पीटा। उनका ख्याल था कि महर्षि के पास बहुत-सा छिपा हुआ धन होगा। जब धन न मिला तो उन्होंने महर्षि को पीटा। आखिर उन्हें कुछ बरतन मिले और वे उन्हें लेने लगे। महर्षि ने कहा, खाना तैयार है, पहले खा लो फिर बरतन ले जाना। उन्होंने इनकी बात पर कान न दिया और लगे फिर से पीटने। महर्षि समाधि में चले गये लेकिन मार की वजह से उनके हाथ-पांव सूज गये। पुलिस ने डाकुओं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़ा और महर्षि के सामने पहचानने के लिये ले आयी। महर्षि ने उन्हें पहचानने से इंकार कर दिया।

शिष्य—कहा जाता है कि एक बार डाकुओं ने तैलङ्ग स्वामी को पीटा था तो पिटाई के निशान डाकू के बेटे के शरीर पर उभर आये।

अन्य शिष्य—नहीं बात ऐसी नहीं है। कहते हैं कोई राजा अपनी दो रानियों के साथ गंगा स्नान के लिये आ रहा था। रानियों के लिये घाट की ओर जानेवाले रास्ते के एक हिस्से पर परदा कर दिया गया। जब रानियां नहा रही थीं तो तैलंग स्वामी, जो कई-कई दिनतक गंगा में डूबे रहते थे, अचानक वहां पर प्रकट हो गये। राजा ने निर्दयता के साथ उनको कोड़े लगाये। जब राजा घर पहुंचा तो उसने कोड़ों के दाग अपने बेटे के शरीर पर पाये।

और एक शिष्य—रामकृष्ण को भी इस तरह का अनुभव हुआ था। कोई माली बैल को मार रहा था। रामकृष्ण के मना करने पर भी वह न माना तो उनके शरीर पर चाबुक के निशान उभर आये।

शिष्य—रामकृष्ण कथामृत में यह कहानी और तरह से है। कहते हैं दो मछुआरे आपस में लड़ रहे थे। एक ने दूसरे की पीठ पर जोर से मारा। रामकृष्ण उस समय नदीतट पर ही थे। उस मार के निशान उनके शरीर पर उभर आये।

श्रीअरविंद—ये सब कहानियां प्रचलित तो हैं लेकिन प्रश्न यह है कि उनमें से कितनी सच्ची हैं।

शिष्य—ये सच्ची हों या न हों। क्या ये संभव हैं ?

श्रीअरविंद—मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूं, 'सब कुछ संभव है'। आत्म-सुझाव की शक्ति लगभग असीम है। जैसे संत फ्रांसिस के बारे में कहा जाता है, आत्म-सुझाव के बल पर उनके शरीर पर ईसा के क्रूस के निशान दिखायी देते थे। अगर तुम्हारे अंदर आत्म-सुझाव की प्रबल शक्ति है तो तुम अपने शरीर पर सब तरह के निशानों का अनुभव कर सकते हो। स्वयं रामकृष्ण ने कहा था कि जब वे हनुमान साधना कर रहे थे तो उनके एक छोटी-सी पूंछ निकल आयी थी।

शिष्य—उन्होंने यह भी कहा था कि जब वे सखी भाव में रहते थे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधा की वृत्ति में थे तो उनके अंदर नारी-शरीर के चिह्न आ गये थे।

अन्य शिष्य—लेकिन यह भी तो कहा जाता है कि आपमें आत्मोत्थापन की शक्ति थी !

श्रीअरविंद—किसने कहा तुमसे ?

शिष्य—कहते हैं कि जब आप जेल में थे, और यहां पांडिचेरी में थे, ध्यान करते समय आपका शरीर जमीन से ऊपर उठ जाया करता था।

श्रीअरविंद—बकवास। और 'क' के लेखों में शायद यह भी कहा गया है कि मैं धरती से ऊपर चलता था। देखो कहानियां कैसे बनती हैं।

शिष्य—लेकिन स्वयं आपने मुझसे कहा था कि यह सच है, बकवास नहीं। मैंने एक दिन आपसे पूछा था कि क्या शरीर को जमीन से ऊपर उठाना संभव है तो आपने कहा हां, इसलिये मैंने मान लिया कि आपके बारे में बात ठीक होगी।

श्रीअरविंद—यह लो ! अगर मैं कहूं कि कोई चीज संभव है तो इसका अर्थ यह कैसे हो गया कि यह सचमुच की जाती है। उदाहरण के लिये अगर मैं कहूं कि शारीरिक अमरता पाना संभव है तो क्या इसका यह मतलब होगा कि मैंने उसे पा लिया है ? बिल्कुल नहीं ?

शिष्य—तो क्या इस प्रचलित बात का कोई आधार नहीं है ? मैंने इसे प्रामाणिक लोगों से सुना है।

अन्य शिष्य—लेकिन जब कोई गप शुरू होती है तो यही कहा जाता है कि यह प्रामाणिक सूत्रों से आयी है।

शिष्य—लेकिन क्या यह सच नहीं है कि जब आप जेल में थे तो आपके शरीर का कोई भाग अजीब ढंग से उठा हुआ था।

श्रीअरविंद—यह जेल में एक बार हुआ। तब प्राणिक स्तर पर मेरी तीव्र साधना चल रही थी और मैं एकाग्र था। मेरे मन में प्रश्न उठ रहा था कि क्या उत्थापन-सिद्धि जैसी चीज संभव है। अचानक मैंने अपने-आपको इस तरह उठा हुआ देखा जिस तरह मैं मांसपेशियों के बल पर न कर पाता। शरीर का एक जरा-सा हिस्सा ही धरती के संपर्क में था और बाकी दीवार के सामने उठा हुआ था, मैं जानता हूं मैं चाहकर भी अपने शरीर को इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह न उठा सकता। मैंने देखा कि मेरे जरा भी प्रयास के बिना शरीर इस तरह लटका रहा। बस इतना ही हुआ था। जेल में इस तरह के बहुत-से असामान्य या अस्वाभाविक अनुभव हुए थे। चूंकि मैं प्राणिक स्तर पर साधना कर रहा था इसलिये मेरा ख्याल है कि शक्ति वहीं से आयी होगी। ये सारे अनुभव गुजर गये और फिर से नहीं आये।

शिष्य—मोती बाबू का कहना है कि जब आप दारजीलिंग में थे तो पांच वर्ष की उम्र में ही आपको एक महान् प्रकाश का अंतर्दर्शन हुआ और आप मूर्छित हो गये।

श्रीअरविंद—और फिर क्या हुआ ? (कुछ समय बाद) यह सब कहानी है। वह हमेशा मेरे बचपन की बातें पूछा करते थे इसलिये मैंने उन्हें कुछ बतलाया था। बचपन में मुझे प्रकाश का ऐसा कोई अनुभव नहीं हुआ था। मेरे चाचा ने बतलाया था कि मैं बहुत प्रतिभावान् था लेकिन मुझे उन दिनों की कोई याद नहीं है। और अगर तुम सच जानना ही चाहो तो दारजीलिंग में मुझे प्रकाश का नहीं, अंधकार का अनुभव हुआ था। एक बार मैं दिन के समय लेटा हुआ था और मैंने देखा कि एक विशाल अंधकार मेरे अंदर धंसता जा रहा है, उसने मुझे और सारे विश्व को लपेट लिया। मैंने मोती बाबू से कहा था कि उसके बाद से मेरे ऊपर एक बहुत बड़ा अंधकार, तमस्, छाया रहता और मेरे इग्लैंड प्रवास में हमेशा रहा। मेरा ख्याल है कि इसका उस तमस् के साथ कुछ संबंध था जो मेरे ऊपर आया था। उसने मुझे तभी छोड़ा जब मैं भारत लौट रहा था।

अगर लोग मेरे जीवन के बारे में सभी सच्ची बातें जानें तो वे कभी विश्वास न करेंगे कि ऐसा आदमी कभी कुछ कर सकेगा।

शिष्य—मोती बाबू ने मुझे आपके ईसाई होने के बारे में बतलाया था, कि कैसे एक बार जब आप गिरजाघर नहीं गये पादरी ने दूसरे दिन आपसे उसका कारण पूछा। आपने कोई जवाब न दिया, सिर्फ रो पड़े।

श्रीअरविंद—यह ऊटपटांग कहानी किसने बनायी ? मैं कभी ईसाई नहीं बना और कभी गिरजाघर न जाया करता था। यह अद्भुत कहानी किसने सुनायी ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—मोती बाबू ने हमें यह सुनायी थी।

श्रीअरविंद—मैंने उनसे कुछ और ही कहा था और उन्होंने जो पाण्डुलिपि यहां भेजी थी उसमें पांच वर्ष की उम्र में मेरे प्रकाश देखने की बात नहीं थी !

केवल एक बात हुई थी। जब हम इंग्लैंड में थे तो नॉन-कनफर्मिस्ट पादरियों की एक सभा कम्बरलैंड में हो रही थी जहां हम लोग टिके हुए थे। एक वृद्ध महिला जिनके घर हम टिके हुए थे, मुझे वहां ले गयीं। ऐसी सभाओं में प्रार्थना के बाद जब लोग तितर-बितर हो जाते हैं कुछ भक्तजन कुछ देर और ठहर जाते हैं और उस समय उनमें बातचीत होती है, उस समय यह बातचीत हुई थी।

उस समय मैं बिलकुल ऊब गया था। तब एक पादरी मेरे पास आया और उसने मुझसे कुछ प्रश्न किये। मैंने कोई जवाब न दिया। वे सब चिल्लाने लगे 'यह बच गया, यह बच गया' और मेरे लिये प्रार्थना करने लगे और भगवान् को धन्यवाद देने लगे ! तब पादरी मेरे पास आया और मुझसे कहा कि मैं प्रार्थना करूं। मुझे प्रार्थना करने की आदत न थी। मैंने दिखावे के लिये उस तरह प्रार्थना की जैसे बच्चे सोने से पहले करते हैं। बस इतनी ही बात थी। लेकिन मैं नियमित रूप से चर्च नहीं जाता था। तब मैं लगभग दस वर्ष का था। वृद्ध महिला का पुत्र मिस्टर ड्रुएट् इन बातों में कभी न पड़ा करता था क्योंकि वह समझदार आदमी था। वह आगे चलकर आस्ट्रेलिया चला गया और हम हिन्दुस्तान चले आये।

जब हम लन्दन में रहते थे तो इन महिला के घर रोज पारिवारिक प्रार्थना हुआ करती थी और बाइबल में से कुछ अंश पढ़े जाते थे। एक दिन मनमोहन ने मूसा के बारे में कोई ऐसी बात कह दी जिससे वह आपे से बाहर हो गयीं। उसने कहा कि वह अविश्वासी लोगों के साथ एक ही घर में नहीं रहना चाहती और कहीं और रहने चली गयीं। मुझे बड़ी राहत का अनुभव हुआ और मनमोहन को धन्यवाद दिया। हम अपने विकास में अज्ञेयवाद की स्थिति में प्रवेश कर रहे थे।

मैं वस्तुतः बहुत भीरु था और शारीरिक दृष्टि से भी बहुत कमजोर था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कुछ भी न कर पाता था। हां, मेरी इच्छा-शक्ति ज्योतिर्मय थी। कोई यह कल्पना न कर सकेगा कि मैं फांसी का सामना कर सकूंगा या क्रान्तिकारी आन्दोलन चला सकूंगा। मेरे मामले में ये सारी ऐसी मानव कमजोरियां थीं जिनसे मुझे शुरू करना था और सभी कठिनाइयों का अनुभव करना था, इससे पहले कि मैं भागवत चेतना को मूर्त्त रूप दे सकूं।

शिष्य—मोती बाबू ने हमें बताया था कि आपके अंदर क्रांतिकारी भावना शैली की कविता 'रिवोल्ट ऑफ इस्लाम' से आयी।

श्रीअरविंद—यह बिलकुल ठीक नहीं है। यह ठीक है कि जब मैं बहुत छोटा था तब भी 'रिवोल्ट ऑफ इस्लाम' मुझे बहुत प्रिय थी यद्यपि तब मैं उसे पूरी तरह समझ न पाता था। फिर भी बार-बार पढ़ता था। स्पष्ट है कि यह मेरी सत्ता के किसी भाग को बहुत अच्छी लगती थी। उसे पढ़ने का इसके सिवा कोई और असर न था कि मैं सोचता था कि मैं भी अपने जीवन को इसी तरह के किसी जगत्-परिवर्तन के अर्पण कर दूंगा और उसमें भाग लूंगा।

(कुछ ठहरकर) नहीं, अपने प्रारंभिक जीवन में मुझे कोई असाधारण आध्यात्मिक अनुभूतियां नहीं हुईं।

मुझे केवल तीन अनुभूतियां याद हैं। एक तो थी दारजीलिंग की अनुभूति। दूसरी आयी जब मैं बारह-तेरह वर्ष का था। मैं बहुत ज्यादा स्वार्थी था। तब मेरे अंदर कोई चीज आयी और मुझे लगा कि मुझे स्वार्थ त्याग देना चाहिये और मैंने अपने तरीके से कोशिश की, हां, अधकचरे ढंग से, उसे व्यवहार में लाने की कोशिश की। लेकिन यह एक तरह से मेरे आंतरिक जीवन में मोड़ था। अंतिम अनुभूति तब आयी जब मैं इंग्लैंड छोड़नेवाला ही था। यह आत्मा की आध्यात्मिक नहीं मानसिक अनुभूति थी। मैंने अनुभव किया कि एकमेव ही सत्य है, कह सकते हैं कि यह पूरी तरह शंकर के मार्ग की अनुभूति थी। वह कुछ ही समय रही।

शिष्य—क्या यह सच है कि आप धर्म-कार्यालय से सीधे चन्दननगर चले आये थे और भागवत कृपा से गुप्तचर वहां न थे?

श्रीअरविंद—मैं कर्मयोगी के कार्यालय में था और वहां पता चला कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे गिरफ़्तार करने के लिये हमारे दफ़्तर की तलाशी होनेवाली है, वहां कुछ लोग और रामचन्द्र मजूमदार भी थे जो पुलिस के साथ टक्कर लेना चाहते थे। बहुत सारे विचार इधर-उधर उड़ रहे थे अचानक मुझे ऊपर से आवाज सुनायी दी, 'नहीं, चन्दननगर जाओ।'

जेल से आने के बाद मैं उन दिनों ऐसी आवाजें सुना करता था और बिना ननुनच के उनकी आज्ञा मानता था। मैंने अपने साथियों से कह दिया कि मैं फ्रेंच-भारत में जाऊंगा और व्यवस्था कर दी गयी। पता नहीं गुप्तचर वहां भगवान् की कृपा से या वेश्या की कृपा से अनुपस्थित थे।

शिष्य—तब फिर पांडिचेरी आने के बारे में भी आपने एक आवाज सुनी थी ?

श्रीअरविंद—हां, यह सच है।

३०-७-१९२६

शिष्य—क्या इस बात में कोई सत्य है कि त्रिकाल संध्या के लिये बतलाये गये समय ध्यान के लिये अधिक उपयुक्त होते हैं ?

श्रीअरविंद—हां, ये संध्याकाल और विशेष रूप से शाम का समय ऐसा है जब तुमपर विरोधी शक्तियों के आक्रमण की संभावना ज्यादा होती है।

शिष्य—क्या ऐसा कोई समय नहीं है जो हमें इन शक्तियों के आक्रमण से सुरक्षित रख सके ?

श्रीअरविंद—मुझे नहीं लगता कि ऐसा कोई समय है। अगर तुम उनकी ओर खुले रहो तो उनका आक्रमण हमेशा हो सकता है, विशेषकर इन संध्याकालों में।

शिष्य—यह माना जाता है कि कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष साधना के लिये ज्यादा सहायक है।

श्रीअरविंद—मेरा ख्याल है कि इसमें कुछ सत्य है।

शिष्य—लोग बहुत-से शकुनों पर विश्वास करते हैं। क्या उनमें कुछ सत्य है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—तुम चाहो तो उन्हें सच्चा कह सकते हो।

शिष्य—क्या उनमें सत्य नहीं होता ?

श्रीअरविंद—मैंने कहा कि अगर तुम उनके सुझाव को स्वीकार कर लो और चाहो कि वह ठीक निकले तो जो शक्तियां उन्हें मूर्त रूप देने की कोशिश कर रही हैं वे सफल हो सकती हैं।

शिष्य—मुझे एक अनुभूति हुई थी जिसे भुलाया नहीं जा सकता। मैं घर से निकला तो मेरा सिर दरवाजे से टकराया। लोगों ने सलाह दी कि अभी मत जाओ। मैंने उसकी परवाह न की और चल पड़ा। मैं जिस रेल से चला था वह एक और रेल से टकरा गयी और बहुत-से लोग हताहत हुए। मैं बाल-बाल बच गया।

श्रीअरविंद—क्या जितने लोग उस रेल से चले थे उन सबका सिर इसी तरह टकराया था ? और उसके बावजूद तुम जो बच गये !

शिष्य—एक बार मेरे पिता अचानक नींद में से जाग पड़े और आधी रात को मुझसे बोले, 'अभी यहां से भाग चलो, मकान ढहनेवाला है।' उन्होंने मुझे घसीटकर बाहर निकाला और हमारे निकलते ही मकान का एक हिस्सा नीचे आ रहा।

श्रीअरविंद—यह शकुन नहीं पूर्वाभास है। बहुतों को इस तरह की सूचना मिलती है। यह तुम्हें हमेशा मिल सकती है बशर्ते कि तुम अवचेतना में उसके लिये खुले हो और उसे अपनी सचेतन सत्ता में ऊपर उठने दो।

शिष्य—क्या आपका मतलब यह है कि ऐसी शक्तियां हैं जो इस तरह की घटनाओं की सूचनाएं देती हैं।

श्रीअरविंद—हां, मनुष्य इन छोटी-मोटी भौतिक-प्राणिक सत्ताओं से घिरा रहता है और उनमें से कुछ को मनुष्य में बहुत रस होता है। वे सन्निकट भविष्य जानती हैं, उन्हें पता होता है कि निकट भविष्य में क्या होनेवाला है और अगर तुम खुले हो तो वे तुम्हें उसकी सूचना दे सकती हैं।

शिष्य—क्या ये भूत-प्रेत हैं ?

श्रीअरविंद—भूत-प्रेत मृत लोगों की आत्मा होते हैं जब कि यहां आत्मा शब्द व्यापक अर्थ में है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—मुझे भूत-प्रेतों का डर लगता था लेकिन जब मुझे पता लगा कि भूत-प्रेत नहीं होते तो डर चला गया।

श्रीअरविंद—इसके विपरीत मेरा डर तब गया जब मुझे पता लगा कि भूत-प्रेत होते हैं !

शिष्य—भय आता कहां से है ? कुछ लोगों का कहना है कि यह प्लीहा (तिल्ली) से आता है जैसे क्रोध यकृत से।

श्रीअरविंद—सच पूछो तो भय प्राणिक सत्ता की चीज है। जब तुम उसे मन से और अन्य भागों से निकाल देते हो तो फिर भी वह तुम्हारे अंदर गति करता रहता है—नाभि के नीचे, नीचे। भय और आंतों में कुछ संबंध होता है।

शिष्य—कहते हैं कि उच्च जाति के हिन्दुओं में दूरबोध की क्षमता यूरोपीय लोगों से अधिक होती है क्योंकि उनकी ग्रंथि (पीनियल ग्लैंड) उनसे दोगुनी बड़ी होती है।

श्रीअरविंद—लेकिन शंकु ग्रंथि का कार्य क्या है ?

शिष्य—अभीतक उसके ठीक कार्य का पता नहीं।

श्रीअरविंद—कुछ ऐसा माना जाता था कि उसका रक्त-संचार के साथ कुछ संबंध है। वह कहां होती है ?

शिष्य—मस्तिष्क के दो गोलार्धों के नीचे के स्तर पर।

श्रीअरविंद—भौंहों के स्तर पर ?

शिष्य—शायद जरा ऊपर।

श्रीअरविंद—सच तो यह है कि ये भाग उच्चतर क्रियाओं को ग्रहण करनेवाली वाहिकाओं के रूप में काम करते हैं। उदाहरण के लिये अब यह जानी हुई बात है कि मस्तिष्क विचार का आधान नहीं है। वह केवल संचार-वाहक है।

६ से १० अगस्त, १९२६

बाहरी क्षेत्र में काम-काज के बारे में बात हो रही थी।

श्रीअरविंद—काम कई तरीकों से किया जा सकता है। उदाहरण के लिये मैं सारे हिन्दुस्तान में, बिना लेक्चर झाड़े या लिखित प्रचार किये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्प्रदायिक संगठन द्वारा गड़बड़ कर सकता हूं। एक बार योग-शक्ति प्राप्त हो जाये तो तुम बहुत-सी चीजें कर सकते हो। लेकिन प्रश्न यह होता है कि क्या अमुक कार्य सत्य की गति के साथ मेल खाता है। यह एक अलग ही बात है। यह देखना जरूरी होता है कि तुम सत्य के अनुकूल कार्य करो।

इसके बाद सत्य के ऊपर आधारित विशाल भारत बनाने का प्रश्न उठाया गया।

श्रीअरविंद—मेरे अंदर ऐसी कोई महत्त्वाकांक्षा नहीं है। मेरी महत्त्वाकांक्षा है कि इस सत्य को जगत् में उतार सकूं। और मुझे नहीं लगता कि उसका क्षेत्र भारततक सीमित होगा। भारत आरंभ-बिंदु हो सकता है पर वह सारे जगत् पर कार्य करेगा।

और जगत् में कैसा कार्य किया जायेगा इस विषय में मैं अभी कुछ नहीं कहना चाहता। इसे उचित समय के लिये छोड़ा जा सकता है। लेकिन सत्य को नीचे आना और यह बतलाना होगा कि काम को किस रूप में करना है वह चाहे जो रूप ले हमारा काम होगा सत्य की अभिव्यक्ति के लिये उचित यंत्र बनना।

शिष्य—क्या हम लोग भारत को महान् बनायेंगे ?

श्रीअरविंद—यह कहना बिलकुल गलत है कि यह हम करेंगे। अगर भारत अपने-आपको महान् बनाना चाहे तो यह उसका अपना धंधा है। कोई भी पूरे राष्ट्र को नहीं बना सकता।

यह हो सकता है कि जब शक्तियां बिलकुल तैयार हों तो एक ऐसा आदमी प्रकट हो जो अपने अंदर काल पुरुष को प्रकट करे और तब ऐसा मालूम हो कि उसने राष्ट्र को बनाया है। लेकिन वास्तव में स्वयं राष्ट्र को अपना निर्माण करना होगा। यह ऐसा नहीं जैसे तुम कह दो कि 'क' ने केक बनायी है। तुम इस तरह से राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकते। राष्ट्र को और ऐसी ही अन्य जीवित सत्ताओं को विकसित होना होता है, उसी तरह जैसे कोई भी जीवित वस्तु विकसित होती है। कोई उनका निर्माण नहीं कर सकता।

अगर महत्तर भारत को उठना है तो कम-से-कम जहांतक हमारा संबंध है, उसे उस सत्य की प्रतिमूर्ति होना चाहिये जिसे हम उतारने की कोशिश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहे हैं। अगर वह सफल हो जाये तो स्वयं सत्य अपने रूप बनायेगा और तब यह कहना ठीक न होगा कि हमने रूपों की रचना की है क्योंकि हर हालत में, हम जिस सत्य को उतारने की कोशिश कर रहे हैं वह हमसे ज्यादा महान् है।

इसके बाद मिस्र के बारे में बात चली और किसी ने पूछा कि वहां के पिरामिड और स्फिंक्स किस चीज के प्रतीक हैं।

श्रीअरविंद—मुझे इनकी ब्योरेवार जानकारी नहीं है लेकिन स्पष्ट है कि पिरामिड और स्फिंक्स का संबंध प्राचीन मिस्री धर्म और गुह्य विद्या से रहा होगा। मिस्रवालों ने गुह्य ज्ञान को काफी दूरतक विकसित कर लिया था जिसमें एक क्रियाशील तत्त्व भी था लेकिन मुझे लगता है कि उन्हें आध्यात्म-ज्ञान का बहुत परिचय न था।

फिर बात उठी ममी के बारे में :

श्रीअरविंद—मिस्रवाले मानते थे कि एक प्राणिक व्यक्तित्व शरीर के साथ चिपका रहता है और शायद मृत शरीर को बनाये रखने के पीछे यह विचार था कि शायद मृत व्यक्ति फिर से अपने उसी शरीर में पार्थिव-जगत् पर वापिस आ सके।

शिष्य—अगर सत्य को नीचे लाने का कार्य भारत में सफल नहीं होता तो क्या भारत हमेशा के लिये अवसर खो बैठेगा ?

श्रीअरविंद—भारत को अपने अतीत के कारण बहुत बड़ा अवसर मिला है। यहां आध्यात्मिक शक्ति संचित है, असली गति तो ऊपर से है, सत्य ऊपर से नीचे उतरने की कोशिश कर रहा है। फिर बड़ी उथल-पुथल है और सत्य के नीचे उतरने का अस्पष्ट भाव है—अवतारों के बारे में विचार, सब तरह के विचारों पर तर्क, वितर्क और उस सत्य की विकृतियां। लेकिन ये सब ऊपर से आती हुई गति के कारण हैं।

लेकिन अगर भारत उदासीन बना रहे और पुराने घिसे-पिटे रूपों से चिपका रहे और आगे बढ़ने से इंकार करे या अपनी अंतरात्मा की पुकार को न सुने तो सत्य वापिस लौट सकता है और कहीं और प्रयास कर सकता है। सत्य केवल भारततक सीमित नहीं है, वह भारत की सम्पत्ति नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह ईसाइयत की तरह कहीं और असफल या आंशिक रूप से सफल प्रयास कर सकता और फिर निवृत्त हो सकता है।

३-९-१९२६

शिष्य—भारतीय आध्यात्मिक सोसायटी के सभापति कोई शर्मा हैं। उनका कहना है कि मृतात्माओं के साथ संचरण केवल संभव ही नहीं, उससे भी बढ़कर है। मेजों पर टकोरे लगाने की भी बैठकें होती हैं जिनमें मृतात्माएं प्रश्नों का उत्तर देती हैं। इन सबके पीछे सत्य क्या है ?

श्रीअरविंद—साधारणतः कोई भी आत्मा बाहर से नहीं आती। माध्यम की इच्छा के साथ भाग लेनेवालों की इच्छा मिलकर एक शक्ति बना लेती है जो यह अभिव्यक्तियां लाती है। उत्तर प्रायः उन लोगों के मन से आते हैं जो उस बैठक में भाग ले रहे हैं। ये उत्तर प्रायः अवचेतन और अंतस्तलीय मन से आते हैं जो मनुष्य जितना जानते हैं उससे कहीं अधिक जानते हैं। जैसा मैंने कहा, मनुष्यों का जमघट जरूरी वातावरण तैयार कर देता है। हस्तक्षेप की, यानी बाहर से आत्माओं के आने की घटनाएं बहुत ही विरल होती हैं। मृत लोग अगर नजदीक ही हों और इस जीवन में या कुछ व्यक्तियों में विशेष रुचि रखते हों तो यहां के लोगों से संपर्क कर सकते हैं। माताजी इस तरह की बैठकों को जानती हैं, वे मेज को अपनी शक्ति से कमरे में इधर-उधर चला सकती थीं।

लेकिन यह विचार कि सैंकड़ों वर्ष पहले के भी, सब प्रकार के लोग इधर-उधर मटरगश्ती करते रहते हैं और मेज की टकोरों को उत्तर देते हैं, बड़ा हास्यास्पद है।

शिष्य—लेकिन ऐसे उदाहरण हैं जहां मृत लोगों ने अपने मित्रों या रिश्तेदारों को सूचना दी है। ऐसे भी हैं जहां मृतात्माओं ने लोगों पर अधिकार कर लिया है।

श्रीअरविंद—शायद मरते समय लोग ऐसे विचार-रूप बना सकते हैं जो दूर रहनेवाले रिश्तेदारों के आगे प्रकट हों। मरते हुए लोग ऐसे प्रभाव भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ सकते हैं जिन्हें प्राणिक सत्ताएं लेकर काम में लायें। सच्ची घटनाओं या भूत-ग्रहण की घटनाओं का समाधान इससे हो सकता है।

शिष्य—क्या कोई आसुरी शक्ति मानव रूप में प्रकट हो सकती है?

श्रीअरविंद—यह बहुत जटिल चीज है। अगर आसुरी शक्ति जन्म के समय ही अधिकार कर ले तो वह मानव रूप में प्रकट हो सकती है।

४-९-१९२६

शिष्य—कल आपने कहा था कि एक मेज कमरे के अंदर घुमाई जा सकती है। आपने कहा था कि इसका स्पष्ट रूप से भौतिक असर इच्छा-शक्ति से किया जा सकता है।

श्रीअरविंद—यह ठीक इच्छा-शक्ति नहीं है—यह तो कहने का एक ढंग है। हां वह शक्ति आदमी के मन के आगे इच्छा-शक्ति के रूप में ही प्रकट होती है। इच्छा-शक्ति नियंत्रण करती है परंतु सचमुच वह होती है प्राणिक ऊर्जा। तुम कह सकते हो कि यह क्रियाशील प्राणिक ऊर्जा होती है। अगर वह काफी मजबूत हो तो वह प्राणिक-भौतिक सत्ता पर अधिकार कर सकती है। सचमुच प्राणिक-भौतिक जड़-भौतिक वस्तुओं को पकड़ कर उनके साथ व्यवहार करता है।

शिष्य—एक का भौतिक मन जब दूसरे के भौतिक मन पर प्रभाव डालता है तो वह मेसमेरिज़म होता है।

श्रीअरविंद—मेसमेरिज़म में उसी ऊर्जा का उपयोग होता है। अगर वह काफी मजबूत हो तो वह सीधी वस्तुओं पर भी कार्य कर सकती है।

शिष्य—आपने कहा था कि मेज की टकोरों को रोकना आसान है।

श्रीअरविंद—मैं प्राणिक स्तर पर इन चीजों के प्रभाव की बात नहीं कर रहा था। मैं अतिमानस की बात कर रहा था। यह तो बिजली जैसी शक्ति होती है। वह भिन्न स्थितियों में भिन्न तरीके से काम करती है। इन प्रेतात्माओं के संचार में वातावरण में अमुक परिस्थितियां साधारणतः पैदा हो जाती हैं जो शक्ति की वाहक और उन्हें प्रभावशाली बनानेवाली होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस मरने से जग डरे

आज महादेवी वर्मा की कविता पढ़ानी थी : "तू धूल भरा ही आया, ओ चंचल-जीवन बाल, मृत्युजननी ने अंक लगाया . . . "

मैं बैठा सोच रहा था : "उफ ! पढ़ाना भी कितना कठिन काम है। सोलह-सतरह वर्ष के कोमल बालक-बालिकाओं को मृत्यु के बारे में क्या और कैसे बताऊंगा ?"

मैंने मन-ही-मन चित्र बनाना शुरू किया, एक कोमलांगी प्रौढ़ा मकान की देहली पर खड़ी है। बाहर से एक छोटा-सा नटखट बालक दौड़ता हुआ अंदर आता है। हाथ-मुंह पर मिट्टी और पसीने के मिलने से अच्छा खासा गारा तैयार हो गया है, कपड़े उस अवस्था को पहुंच चुके हैं कि उन्हें और मैला करना संभव नहीं है। मां ने मिट्टी, मैल किसी की परवाह नहीं की। बालक को अपने अंक में भर लिया। उसे नहलाया, धुलाया और खाना खिलाकर फिर से खेल-कूद के लिये तैयार कर दिया। जीव ने फिर से नया जन्म पा लिया। स्नेहमयी मृत्यु ने उसके सभी कलुष धोकर नये उत्साह के साथ कर्मभूमि में भेज दिया।

ऊं हूं ! इतना काफी नहीं होगा। इसी प्रसंग में कबीर का यह उद्धरण भी दिया जा सकता : *"जिस मरने से जग डरे मेरे मन आनंद,"* और चकबस्त की वे पंक्तियां जिनमें उन्होंने कहा है कि पंच तत्त्वों का सामंजस्य के साथ रहना ही जीवन है और सामंजस्य का बिगड़ जाना ही मृत्यु है :

जिन्दगी क्या है अनासिर का जुहूरे तरतीब।
मौत क्या है इन्हीं अजजा का परेशां होना ॥

लेकिन मेरे सामने कई चेहरे ऐसे होंगे जिन्होंने अपनी इस छोटी-सी अवस्था में ही अपने हिस्से से बहुत अधिक दुःख पा लिया है, उनके आंसू सूख चुके हैं। वे मूक भाषा में कहते हैं :

आगे आती थी हाले दिल पै हंसी।
अब किसी बात पर नहीं आती ॥

साथ ही कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने कभी गुलाबों की सेज छोड़कर जमीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पांव नहीं रखा। उन्हें बिवाई फटने की बात सुनकर ही तकलीफ होती है, चेहरा लाल-सुर्ख हो जाता है और सीपों से मोती झांकने लगते हैं। उनमें से एक ने अभी कुछ दिन पहले ही तो मुझ से कहा था, मेरे लिये स्वर्गवास का मतलब कुछ नहीं है। मैं तो यही मानती हूं कि कोई कलकत्ता जाता है, कोई बंबई जाता है, कोई लंबी छलांग लगाता है तो लंदन और न्यूयार्क जा पहुंचता है, इसी तरह स्वर्ग भी कोई देश-विदेश होगा जिसके सौंदर्य और आकर्षण से बंधकर आदमी लौट नहीं पाता।

मैं सोच रहा था कि इस सम्मिलित वर्ग को मृत्यु के बारे में क्या बताया जा सकता है और कैसे। मैं शुष्क दार्शनिक भी नहीं बनना चाहता और भावुक कवि भी नहीं, फिर यह समस्या कैसे सुलझे ? मैं इसी उधेड़-बुन में था कि अचानक वन्दना ने धम से प्रवेश किया और बोली :

"तार आया है कि मेरी दादी का स्वर्गवास हो गया।"

उसने बात बड़े ही मामूली ढंग से कही थी जिससे लगता था कि या तो वह इसका पूरा मतलब नहीं समझती या जन्म-मरण की समस्या की तहतक पहुंचकर समानता प्राप्त कर चुकी है। मैंने जरा कुरेदने की कोशिश की। वह कह उठी :

"मैं आपका मतलब समझ गई। दादी मुझे बहुत प्रिय थीं परंतु मुझे उनके मरने का दुःख नहीं हो रहा। जानते हैं क्यों ? यही जानने के लिये तो आप उत्सुक हो रहे हैं।

"कुछ ही दिन पहले की बात है। पिताजी की चिट्ठी आयी थी कि दादी बहुत बीमार हैं, देखना चाहो तो आकर देख जाओ। इसके बाद शायद अवसर न मिले। चिट्ठी पढ़कर मैं शोक-सागर में डूब गई। दादी, मेरी प्यारी दादी दुनिया में नहीं रहेगी, मैंने सोचा। आह ! यह मौत क्यों आती है ? क्या इससे बचने का कोई उपाय नहीं है ? यही सोचते-सोचते मेरी आंख लग गयी।

"मैंने देखा कूड़े-कबाड़ का एक अंबार लगा है। कहीं प्राण के चिह्न नहीं, चारों ओर मुरदनी छाई है। अचानक किसी ने उसमें प्राण फूंक दिया और नाना प्रकार के जीव कुलबुलाने लगे। यह धरती पर जीवन का उदय था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जानते हैं, इसके बाद मैंने क्या देखा? मैंने अपना बहुत बड़ा रूप देखा। जिसे आप छोटी-सी वन्दना कहते हैं वह कम-से-कम बीस फुट ऊंची थी और उसमें से एक तेज प्रसारित हो रहा था। हां, तो मैंने नीचे झुककर देखा हजारों जीवाणु पैदा होते जा रहे थे और उनकी संख्या क्षण-क्षण बढ़ रही थी। वे आपस में एक-दूसरे को धकेल कर अपने लिये जगह बना रहे थे। कभी एक-दूसरे को निगल जाते और कभी फट कर औरों को जन्म दे देते।

"मैं काफी देरतक खड़ी इस दृश्य को देखती रही। मैंने कुछ जीवाणुओं को हाथ में उठा लिया। उन्हें मानों गृहयुद्ध से सुरक्षा मिल गयी और उन्होंने आकार में बढ़ना शुरू किया। उनके शरीर जेली के जैसे थे। वे अपने-आप बढ़ते जा रहे थे। उनके अंदर एक बाढ़-सी आ रही थी। लेकिन इसके साथ-ही-साथ उनके शरीर कुछ कठोर-से, कुछ शुष्क-से होते जा रहे थे। कुछ देर के बाद मैंने देखा (अभी समय का जन्म नहीं हुआ था, इसलिये मैं नहीं कह सकती कि कितना समय लगा होगा इसमें), उनके शरीर बढ़ने की प्रक्रिया तेज होने के कारण तड़कने लग गये और फिर टूटकर पीछे रह गये। उनके अंदर जो चीज बढ़ रही थी (वह जीवन की बूंद) वह बढ़ती चली गयी, उसने अपने चारों ओर कुछ और द्रव्य इकट्ठा करके नया शरीर बना लिया और लगा बढ़ने।

"इस बार भी वही नाटक दोहराया गया। फिर से शरीर जीव की प्रगति में साथ न दे सका और उसे तड़ककर टूट जाना पड़ा। शायद यही मृत्यु का पहला रूप था। लेकिन अभी इन जीवों को दुःख-सुख का भान न था, अपने-पराये का अभीतक ख्याल भी न आया था इसलिये यह मृत्यु दुःखदायिनी नहीं थी। जैसे-जैसे जीव बढ़ता जाता था वैसे-वैसे शरीर बनते-बिगड़ते जाते थे। शायद उन दिनों की अवस्था के लिये कहा जा सकता है :

लायी हयात आये कज़ा ले चली चले
अपनी खुशी न आये न अपनी खुशी चले।"

संकोचशील वन्दना का यह अबाध भाषण सुनकर मैं हतप्रभ-सा रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। मैं देख रहा था कि पढ़ी हुई या सुनी हुई बातों को दोहराने में और अपनी अनुभूति सुनाने में क्या फर्क है। वह सांस लेने के लिये रुकी और मेरी सांस रुकने लगी कि कहानी का अन्त तो नहीं आ गया।

लेकिन चिंता की कोई बात न थी। वन्दना के होठ फड़के और उसने फिर से कहना शुरू किया : "मैंने जो जीवाणु उठाये थे वे आकार में बढ़ते जा रहे थे और मेरे लिये उन्हें रखना भारी पड़ रहा था। एक-एक नन्हा जीवाणु अब बढ़कर व्हेल मछली जैसा हो गया था। प्रक्रिया वही थी, पुराने शरीर टूटते और नये बनते जाते थे। हर नया आकार अपनी नयी विशेषता लिये आता था। सच मानिये, इस दृश्यावलि में मैंने मानों चौबीस अवतारों की कहानी मंचपर देख ली। हर अवतार मानों विकासक्रम की एक नयी सीढ़ी का प्रतिनिधि था। शुरू-शुरू में जीव या चैत्य-पुरुष एक छोटे-से स्फुलिंग के रूप में दिखायी देता था, मनुष्य की स्थितितक पहुंचते-पहुंचते उसने मन, प्राण आदि के कई आवरण पहन लिये। चैत्य-पुरुष चैत्य लोक से यहां आते-आते बीच में प्राण और मन के कई लोकों की यात्रा करता था और हर जगह से वहां की निशानी के रूप में एक आवरण अपना लेता था।

"लेकिन एक मजेदार चीज देखी। हम जब कोई कपड़ा पहनते हैं तो कपड़ा हमारे ऊपर अधिकार नहीं जमा लेता—हां, बहुत अमीराना ठाठ हों तो और बात है। परंतु वहां मन और प्राण चैत्य पर इस तरह छा जाते थे मानों वही सब कुछ हों। हमने देखा है कि मजबूत लोग यह प्रमाणित करने की परवाह नहीं करते कि वे मजबूत हैं, कमजोर को ही इसकी चिंता खाये जाती है।

"मैंने देखा कि जिनके मन और प्राण अपना हठ छोड़कर चैत्य के साथ गठबंधन कर लेते हैं वे विकास की ऊंची सीढ़ी पर जा पहुंचते हैं, लेकिन जो अपना बड़प्पन दिखाने में लगे रहते हैं वे जहां-के-तहां रह जाते हैं।

"आप सोच रहे होंगे कि मैं क्या बकवास कर रही हूं। सच मानिये, मैंने ये सब चीजें देखी हैं और स्वप्न में नहीं, अर्द्ध जाग्रत् अवस्था में। सारी चीजें एक साथ चित्र पर आती गयीं। वर्णन में जितना समय लग रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका चौथाई समय भी न लगा होगा देखने में और फिर जो दृश्य देखे थे उनका वर्णन संभव है क्या ?

"खैर, जब मैंने आदमियों को देखना शुरू किया तो एक और दृश्य था। हर एक के अंदर कहीं जाग्रत् और कर्मठ और कहीं छिपा हुआ चैत्य-पुरुष था। यह चैत्य-पुरुष ही उसका सबसे प्रधान व्यक्तित्व होता है, पर यह एक भौतिक शरीर में निवास करता है। मैंने देखा कि यह शरीर अत्यंत कोमल और लचीला होता है लेकिन साथ ही जरा मूढ़ भी। वह मन और प्राण को अपना स्वामी मानता है और उनके नचाये नाचता जाता है। मन और प्राण डाकू बनकर इस बेचारे को लूटते रहते हैं। अपनी-अपनी सनक की तुष्टि के लिये उसका उपयोग करते रहते हैं, वह उनके आगे दबता चला जाता है, यहांतक कि वह अपना सब कुछ खो बैठता है और एक चूसे हुए आम की तरह बेकार हो जाता है। चैत्य-पुरुष नये-नये अनुभव प्राप्त करने में लगा रहता है।

"उस समय मेरी आंखों में शायद एक्सरे लगी थी। मैं साधु और असाधु कहानेवाले सभी तरह के लोगों के आर-पार देख रही थी। मुझे सबके अंदर शुद्ध पवित्र अग्नि जैसा चैत्य-पुरुष दिखायी दिया। हां, कहीं उसमें अधिक विकास के कारण ज्यादा प्रकाश था और कहीं कम, उनकी साधुता और असाधुता मुख्य रूप से प्राण और कुछ हदतक मन के कारण थी। जहां मन, प्राण और शरीर चैत्य-पुरुष के साथ कदम मिलाकर चल रहे थे वहां विकास की गति तेज थी। जहां मन और प्राण का ही राज था अफरा-तफरी फैली हुई थी।

"मैंने देखा विकास यहां का मूलमंत्र था। जो चैत्य के साथ थे उनकी गति तेज थी, वे बिना विशेष कठिनाई के आगे बढ़े चले जा रहे थे, जो अपनी मनमानी चला रहे थे उन्हें भी रोते-झींकते, गिरते-पड़ते आगे घिसटना पड़ रहा था। मन और प्राण काफी लचीले होने के कारण अपने-आपको परिस्थितियों के अनुसार ढाल लेते थे पर बेचारा शरीर अपने-आपको न बदल पाता था और पीछे रह जाता था। यहां भी वही पहले की चीज दिखायी दी। मैंने पहले बताया था कि जब व्हेल मछलियों का शरीर उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंतरिक प्रगति का साथ न दे पाता था तो वे उस पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर अपना लेती थीं।

"यहां भी कुछ वैसा ही नाटक खेला जा रहा था। जिनके शरीर आंतरिक सत्ता के साथ मिल-जुल कर न चल पाते थे, जिनके मन, प्राण, शरीर अपनी-अपनी तुरही बजाते रहते थे, उन्हींमें रोग, शोक, दुःख का डेरा पड़ता था। जब शरीर कदम मिलाने में असमर्थ हो जाता था तो उसे पुराने जूते की तरह पीछे छोड़कर बाकी लोग आगे चल पड़ते थे। मानव भाषा में इसीको मृत्यु कहते हैं। इससे शरीर का तो नाश हो जाता है पर अंदर के जीव का बाल भी बांका नहीं होता।

"वहां मैंने एक और मजेदार चीज देखी। बहुत से जीव अपने शरीर छोड़कर आगे जाने की कोशिश कर रहे थे पर सूक्ष्म बेड़ियां उन्हें रोक रही थीं और उनकी यात्रा को कठिन बना रही थीं। मैंने नजदीक जाकर पता लगाने की कोशिश की कि मामला क्या है। जानते हैं मैंने क्या देखा? सगे-संबंधियों का रोना-धोना, उनका शोक ही बेड़ियां बनकर इन जीवों के मार्ग को रोक रहा था।

"उसी समय मैंने देखा कि मेरी दादी अपना शरीर छोड़कर निकल रही हैं और मैं बड़ी शांत सद्भावना के साथ उनकी सहायता करने में, उनके मार्ग को सरल बनाने में लगी हूं। मुझे एक दिव्य संगीत-सा सुनायी दिया:

"मृत्यु हमारे जीवन वन में,
विचरण करती हैं स्वच्छंद,
व्यस्त हमारा श्वास-श्वास ले
मृत्यु माधुरी अति सानन्द।

क्यों डरते हो उससे भाई?
देखो तो उस मुख का मोद,
हंसने से जो हुआ गुलाबी,
दमक रहा है जो सविनोद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपवती अरु दयावती वह
एक कुमारी अति अनुकूल,
वर्षा-धौत मधुर उपवन में
चुनती है जो ताजे फूल।

जीवन-जन्य उघाड़ देती वह
ज्योतिर्मय लोकों के द्वार,
फिर भी उस शोभन युवती से
डरते हो तुम कितना यार।

क्या कारण यह डाल मरोड़ी
भोगेगी पीड़ा अनिवार्य,
हाथ मृदुलतम हीन करें क्या
शोभा को हरने का कार्य ?

अथवा यह कि ढलक पड़ता है
पुष्प-हीन वृन्त परिम्लान,
अभी-अभी जो था अति सुंदर
लगता है वह मृतक समान ?

अथवा यह कि उघड़ते फाटक
की कर्कश ध्वनि से भयभीत
दहल उठा है हृदय तुम्हारा,
साहस-विरहित, निर्बल जीव ?

मृत्यु जानते हो तुम जिसको
वह तो केवल वस्त्र उतार
होना खड़ा अनंत द्वार पर
लग्न-वेश-भूषा को धार।''

(श्रीअरविन्द की एक कविता का अनुवाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वहां से निकलकर दादी कुछ प्राणमय मार्गों से गुजरीं। यहां भी मेरी शांति और मेरी प्रार्थना ने उनकी मदद की। वे भिन्न-भिन्न लोगों की कल्पनाओं और उनके विश्वासों के द्वारा बने स्वर्ग-नरक आदि को देखती हुई आगे बढ़ गयीं, बहुतों के प्राण इन्हीं में भटक रहे थे। ऐसा लगता था कि दादी के चैत्य-पुरुष ने शीघ्र ही कहीं जन्म लेने का निश्चय कर लिया था और वह इधर-उधर घूमे बिना अपने प्राण और मन के आवरणों को साथ लिये आगे बढ़ गया।

"वहीं दूसरी सत्ताओं को देखा। उन्हें नये जन्म की कोई जल्दी नहीं थी। उनके चैत्य अपने आवरणों को मन और प्राण-लोक में छोड़कर अपने-आप चैत्य-लोक में विश्राम करने जा रहे थे। कुछ के प्राण, प्राण की गलियों में तड़प रहे थे। उन्हें दूसरे प्राणी नोच-नोच कर खाने में लगे थे। उन्हें देखकर बड़ी दया आयी। पता लगाने की कोशिश की तो मालूम हुआ उन्होंने धरती पर रहते हुए आत्म-हत्या की थी और परिणामस्वरूप अपने चारों ओर एक घोर वातावरण तैयार कर लिया था, यह सब उसके कर्म का फल है। यहीं मुझे इस बात का पता लगा कि स्वर्ग-नरक कोई अलग लोक नहीं हैं। मनुष्य की अपनी कल्पना, उसकी पैदा की हुई परिस्थितियां और उसके चारों ओर का वातावरण मिलकर इनका निर्माण करते हैं।

"वहां से लौटते हुए मारकण्डेय मिल गये। मैंने उनसे अमरता का रहस्य पूछा। उन्होंने कहा : 'जड़-वस्तुओं में समय के साथ विकार आ ही जाता है। जब शरीर चेतना के विस्तार में बाधक बनता है तो उसका छूट जाना जरूरी हो जाता है। अगर उच्चतर चेतना आकर शरीर के जड़-तत्त्वों को भी लचीला बना ले, वे भी अंतरात्मा की आवश्यकता के अनुसार बदल सकें तो बुढ़ापा और मृत्यु दोनों भूतकाल की चीजें बन जायें। लेकिन यह काम बहुत कठिन है; अतिमानस चेतना के सिवाय और किसी के बस का नहीं।'

"इतना कहकर मारकण्डेय अपने रास्ते चले गये और मैं अपने शरीर में लौट आयी। लेकिन अब भी मुझे वह संगीत सुनायी दे रहा था जो कहता था : जन्म और मरण, मरण और जन्म ये दो शब्द युगों से हमारी चेतना में एक-दूसरे के विरोधी बने बैठे हैं। आज मैं रहस्य जान गयी हूं। सत्य प्रकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया है। केवल जीवन का अस्तित्व है, मृत्यु जीवन का ही एक मुखौटा है। जीवन अपने-आपसे आंख मिचौनी खेलने के लिये मृत्यु का वेश बना लेता है। तभी से सोच रही थी कि आप के यहां आकर यह सब सुनाऊं और आप से पूछूं कि यह सब क्या है, आपके शास्त्र क्या कहते हैं, पर समय नहीं मिला। दादी सचमुच सिधार गयीं और मैं घर के झमेले में लग गयी।''

ये सारी बातें सुनकर मुझे काठ-सा मार गया। मैं सोच रहा था मैं इसे बता ही क्या सकता हूं ?

ऋषिवर बोले :

चमत्कार

ऋषिवर ने कहा चलो आज हम लोग चमत्कारों के बारे में कुछ बातचीत करेंगे। शुरू मैं करूंगा तुम लोग आगे चलाना। अंत देखें कौन करता है।

हां, तो एक बार किसी पथिक ने दोपहर के समय थककर, एक पेड़ के नीचे सुस्ताना शुरू किया। उसके मुंह से निकला, ''आह, कितना तेज प्रकाश है !'' एक झाड़ी में से एक आवाज आयी, ''हां, सूर्य, चंद्र, तारे और मैं, हम सभी प्रकाशमान हैं।''

पथिक चकराया कि यह ''मैं'' कौन है। इधर देखा, उधर देखा, एक झाड़ी में एक ज्योतिरिंगण दिखायी दिया। पथिक ने पूछा, ''मियां जुगनू, क्या यह तुम्हारी आवाज थीं ?'' उधर से उत्तर आया, ''मुझे जुगनू न कहिये, मैं ज्योतिरिंगण हूं, सूर्य, चंद्र और तारों का सजातीय, प्रकाश देनेवाला।

छोटे मुंह बड़ी बात सुनकर पथिक मौन रह गया।

यह था अहंकार का चमत्कार।

विद्या ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा, अधिकतर चमत्कार तो अहंकारभरे ही होते हैं। रामकृष्ण परमहंस के पास एक आदमी गंगा पार करके आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते ही उसने परमहंस पर अपना रौब गांठना चाहा, आपने देखा मैं गंगा के ऊपर से चलकर आया हूं, तैरकर या नौका में नहीं। जानते हैं बारह बरस साधना की है इसके लिये।

"बारह बरस", परमहंस ने धीरे से कहा, "चार पैसे देने से यह माझी मुझे गंगा के पार ले जा सकता है। तो तुम्हारी बारह बरस की साधना का मूल्य हुआ चार पैसे !"

दंभी अपना-सा मुंह लेकर चला गया।

विमल बोला, मेरे पिताजी अभी किसी समारोह से लौटे हैं। वहां उन्हें एक साध्वी के दर्शन हुए। वह यूं ही हवा में हाथ घुमाकर बरफी, घड़ी फाउंटेनपेन आदि ले आती थीं। उन्होंने मेरे पिताजी को एक अंगूठी दी।

अभी यह बातचीत चल ही रही थी एक कंबल का कोट पहने हुए साधु उधर से आ निकला। इन लोगों की बातें सुनकर वहीं ठिठक गया और लगा अपने कोट पर हाथ फिराने। सबके देखते-देखते कहींसे पांच रुपये का नोट पैदा हो गया कहीं से दस का। इस तरह काफी रकम के नोट वहां छोड़कर साधु जैसा आया था वैसा ही चल पड़ा।

विद्यार्थी स्तब्ध रहे गये। कुछ देर के लिये तो वे ऋषिवर की उपस्थिति को भी भूल गये। जब अपने-आपे में आये तो अनुपम ने कहा, "ऋषिवर क्षमा करें, बातें तो हम लोग रोज कर सकते हैं, आपकी अनुमति हो तो मैं इन रुपयों की मिठाई ले आऊं और हम सब छक कर खा लें।"

ऋषिवर बच्चों की ओर देखकर हंस पड़े और बोले, "अच्छा ऐसा ही सही, आज इस चमत्कार की मिठाई खाओ कल हम लोग चमत्कार के बारे में बात करेंगे।"

अगले दिन विद्यार्थी इकट्ठे हुए तो उनके मुंह में कल की मिठाइयों का, तरह-तरह के व्यंजनों का स्वाद बाकी था और हर एक अपना-अपना पराक्रम सुनाने में दूसरों से आगे बढ़ जाना चाहता था।

ऋषिवर के आते ही सब चुप हो गये। उन्होंने आते ही पूछा, "क्यों भई, कल का चमत्कार कैसा लगा ?" बहुतों ने एक स्वर में कहा, "बहुत अच्छा। ऐसा चमत्कार तो हम भी करना चाहेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिवर बोले, अच्छा लो, अब मेरी सुनो। मान लो किसी चमत्कार से हमारे आसपास के तालाब, तरह-तरह की बढ़िया आइसक्रीम से भर जायें, यह पास की पहाड़ी कहीं से कलाकंद, कहीं से मथुरा की खुरचन देने लगे, इस नीम में रसगुल्ले गुलाब जामुन लटकने लगें तो यह चमत्कार तो बहुत बड़ा होगा परंतु क्या यह मनुष्य को सुखी बना सकेगा ?

यूरोप और अमरीका में, अरब देशों में इतना धन है कि उनके लिये किसी भी भौतिक चीज का अभाव नहीं हो सकता परंतु क्या वहां के लोग सुखी हैं। वहां से आनेवाले बतलाते हैं कि वहां के बड़े-से-बड़े लोगों को खाना हजम करने के लिये, रात को सोने के लिये और दिन में शरीर में फुरती लाने के लिये हमेशा दवाइयां खाते रहना पड़ता है। गेहूं की रोटी को सुंदर बनाने के लिये उसका सारा पोषण-तत्त्व निकाल दिया जाता है फिर उसकी कमी पूरी करने के लिये अनेक दवाइयां मिलायी जाती हैं। हमारे यहां सड़क की पटरी पर सोनेवाला अपनी भूख खाता और अपनी नींद सोता है। वहां सब सुख होते हुए भी आदमी परेशान रहता है, जैसे-जैसे बाहरी सुख बढ़ते हैं परेशानी भी बढ़ती जाती है।

हमें हवा का मूल्य नहीं मालूम होता क्योंकि मुफ़ में, बिना कष्ट उठाये मिल जाती है। कहीं घुटन होने लगे या उमस हो तब हवा का मूल्य मालूम होता है। जबतक तुम्हें मिठाइयां आसानी से नहीं मिलतीं तभीतक उनका मूल्य है। किसी हलवाई से पूछो मिठाई खाने की इच्छा होती है ?

चमत्कार हमें असाधारण रीति से वही चीज देते हैं जो हमें साधारण रीति से भी मिल जाती है या मिल सकती है। इनमें एक सूक्ष्म प्रकार का विज्ञान काम करता है, बस इतना ही।

मैं तो असली चमत्कार उसे कहूंगा जब मन स्थिर, अचंचल और शांत हो, प्राण में उत्तेजना, आवेग और कामनाओं को पूरा करने के लिये भागदौड़ न हो और काया रोगरहित हो। शरीर स्वस्थ हो, भूख लगी हो और जीभ चटोरी न हो तो मकई या बाजरे की रोटी और एक डली गुड़ या नमक चमत्कार द्वारा पैदा किये गये व्यंजनों से बढ़कर होते हैं।

असली चमत्कार हमारे बाहर नहीं हमारे अंदर होते हैं लेकिन इन्हें देखने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनने या चखने के लिये इन्द्रियों को जरा अंदर की ओर मुड़ना होगा।

लो आज बस इतना ही। किसीके मन में कोई प्रश्न उठ रहा हो तो उसे अगली बैठक के लिये उठा रखे।

सोसायटी समाचार

श्रीमती मनोरमा वीरा और बेंगलोर सोसायटी के दो अन्य सदस्यों ने ३१ अगस्त से ७ सितम्बर के बीच कर्णाटक के कई सोसायटी-चक्रों का दौरा किया। हर जगह के काम के बारे में बातचीत हुई। विचार यह है कि १९९० की फरवरी की १७ से १९ तारीखतक बेंगलोर में इन सबका एक सम्मिलित शिविर होगा।

पांडिचेरी मुख्यालय से श्री देवव्रत ने सितम्बर और अक्तूबर में बंगाल और बिहार के अनेक चक्रों का दौरा किया और पाठ-चक्र तथा बाल-विभाग खोलने के बारे में विचार-विमर्श हुआ। कई सदस्यों में 'आज के बच्चे के साथ कैसे व्यवहार किया जाये' पर बातचीत हुई।

दंडेली—कर्णाटक—में श्रीअरविंद-माताजी केन्द्र की रजत जयन्ती १६, १७ दिसम्बर को मनायी जायेगी जिसमें श्री किशोरीलाल ढांढणिया और श्री महेश्वरी के आने की आशा हैं। जो अधिक जानकारी चाहते हों वे एस० एस० पाटिल, श्रीअरविंद और माताजी केन्द्र, बांगुड़ नगर, दण्डेली-५८१३२५ से पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकृष्ण वचनामृत

(माताजी द्वारा चुने हुए कुछ वचन)

जब मेंढक की पूंछ गिर जाती है तो वह जमीन पर भी रह सकता है और पानी में भी। जब मनुष्य के अज्ञान की पूंछ गिर जाती है तो वह मुक्त हो जाता है। तब वह भगवान् में और इहलोक में समान रूप से भली-भांति रह सकता है।

*

जो इस जगत् में रहते हुए मुक्ति पाने की कोशिश करते हैं वे उन सिपाहियों की भांति हैं जो किले में सुरक्षित रहकर लड़ाई कर रहे हों। जब कि इस जगत् का त्याग कर भगवान् की खोज में गये हुए संन्यासी खुले मैदान में लड़नेवाले सिपाहियों के समान हैं। खुले मैदान में लड़ने की अपेक्षा किले में रहकर लड़ना कहीं अधिक सुविधाजनक और सुरक्षित है।

*

जिस आदमी ने अपने पिता, माता या पत्नी के साथ हुई किसी गलतफहमी के कारण संन्यास लिया हो वह विरक्त संन्यासी है। उसका संन्यास क्षणभंगुर है और विदेश में कोई अच्छी नौकरी मिलते ही समाप्त हो जाता है। वह आदमी निश्चित रूप से धन-दौलत इकट्ठी करके अपने परिवार में लौट आयेगा।

*

अगर कोई सफेद कपड़ा छोटे-से दाग के कारण गंदा हो जाये तो तुलना में वह दाग और भद्दा लगता है। इसी प्रकार सत्पुरुष का नगण्य-से-नगण्य दोष भी उसके पवित्र वातावरण के कारण बहुत ही शोचनीय रूप से सुस्पष्ट हो जाता है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही वह युगपुरुष थे

जिन्होंने भारत और भारत के लोगों को असीम प्यार दिया और उनसे वैसा ही प्यार पाया।

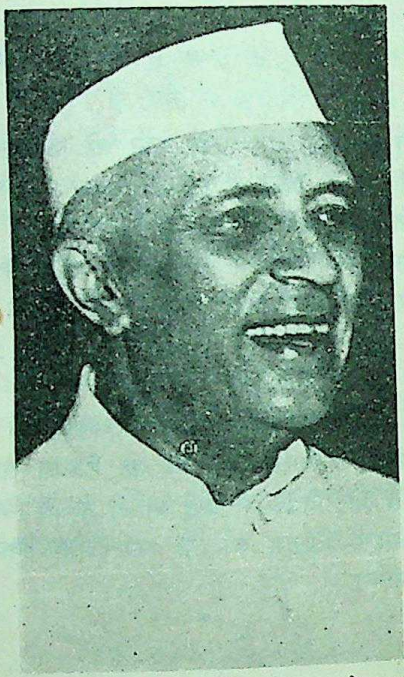

उनका विश्वास था कि कोई भी देश तभी तरक्की कर सकता है जब उसकी महिलाएं आगे बढ़ें और इसी विश्वास के साथ उन्होंने भारतीय महिलाओं के उत्थान के लिए अनवरत कार्य किया

यह पिछड़ेपन तथा उत्पीड़न के शिकार और मानवीय अधिकारों से वंचित लोगों के लिए मुक्ति के पुरोहा थे।

पंडित जवाहर लाल नेहरू एक असाधारण कर्मयोगी थे। स्वयं भी कार्य में जी-जान से जुट जाते थे तथा औरों से भी यही अपेक्षा रखते थे।

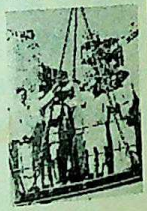

davp 89/739

भारत आगे बढ़े, यही उनका ध्येय था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
A good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

079503

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"The constant remembrance of the Divine is indispensable for transformation."

— THE MOTHER

079503

With Best Wishes from:

MRS. KOYAL DEORAH CHARITABLE TRUST

28, VARSHA, 69/B, NEPEANSEA ROAD

BOMBAY - 4000 006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar